

**अथ श्री गजानन विजय**

**ग्रंथ प्रारंभ**

(हिंदी गद्य अनुवाद )

**मूल लेखक**

**ह. भ. प. संतकवि श्री दासगणू महाराज**

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

श्री गणेशाय नमः

श्री गजानन विजय (हिंदी) ग्रंथ प्रारंभ

पहला अध्याय १

श्री गणेशाय नमः। हे गौरीपुत्र गणपती, मयूरेश्वर आपकी जय हो । आप प्रचंड प्रतापी तथा उदारकीर्ति हैं । आपका स्मरण - कार्यारंभ में- साधूपुरुष तथा विद्वान करते आये हैं। हे दयाघन जैसे अग्नि के सामने तृण की कोई गणना नहीं वैसे ही आपकी कृपाशक्ति इतनी अगाध है कि सारे विघ्न भस्म हो जाते हैं । इसीलिये यह दासगणू आपके चरणों में वन्दना करता है की जिससे उसके मुख से रसयुक्त रचना हो । मुझमें कोई काव्य प्रतिभा नहीं है मैं मतिमंद और अज्ञानी हूँ । किन्तु आपका हृदय में वास होने पर मेरा कार्य पूरा होगा । अब मैं ब्रह्म की प्रकृतिस्वरूप आदि माया- कवि श्रेष्ठों द्वारा ध्यात ब्रह्मकुमारी शारदा का वंदन करता हूँ। उस माता जगदंबा को मेरा साष्टांग प्रणिपात । मैं अज्ञानी बालक हूँ इस दृष्टि से मेरे साहस का अभिमान वह करे। हे माता तुम्हारी कृपा से जो कि अगाध है, पंगु पहाड़ पर चढ़ सकता है, और गूंगा धारा प्रवाहित भाषण सभा में दे सकता है । ऐसी जो आपकी

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

महिमा है उसमे न्यूनता न आने पावे इसलिये दासगणू का इस ग्रंथ रचना मे सहाय करें। हे दीनबंधो-पुराणपुरुष पंढरीनाथ मेरी रक्षा करें। आप सर्वसाक्षी और जगत के आश्रयभूत हैं।

आप सर्वव्यापी चराचर में रहनेवाले सर्वेश्वर और कर्ता-धर्ता सब कुछ आप ही हैं। हे मातापिता आप ही जगत जनता जनार्दन हैं। केवल आप ही परिपूर्ण हैं। आप सगुण तथा निर्गुण दोनो मे हैं। आपकी महिमा वेद शास्त्रों से भी नहीं जानी जाती। फिर दासगणू की क्या गिनती। किंतु राम की महिमा से मर्कट अपार शक्तिशाली हो गये और कृष्णकृपा से यमुनातीर के गोपाल अपरिमित बलशाली हो गये। फिर आपकी कृपा के लिये धन की आवश्यकता नहीं। अनन्य शरणगति से आपकी कृपा सहजतया प्राप्त होती हैं, इसी भरोसे पर मैं आपके द्वार आया हूँ और आप मुझे विन्मुख न करें। मैं यह संत चरित्र लिखने के लिये प्रवृत्त हुआ हूँ सो हे पंढरीनाथ, आप इसे पूर्ण करने मे सहायभूत हो। हे भव भवान्तक भवानी पती निलकंठ; स्वर्ग से गीरनेवाली गंगा को धारण करनेवाले गंगाधर। ॐ कार स्वरूप त्र्यंबकेश्वर। आप अपना वरदहस्त मेरे सिरपर रखिये, जो सबकुछ देनेवाला हैं। आपकी सहायता होने पर मुझे काल का भी भय नहीं। क्योंकि पारस पत्थर लोहे को भी सोना बना देता हैं। आपका हाथ हीं पारस हैं और दासगणू लोहा हैं। अतः इस बालक की सहायता करे। दूर मत ढकेलिये। आपके लिये कुछ भी असम्भव नहीं। सब कुछ आपके पास हैं। इस बालक के लिये दौडकर आईये और इस ग्रंथ रचना को सहाय करिये। कोल्हापूर निवासीनी महालक्ष्मी मेरी कुलदेवता है, जिसके चरणकमलोंमे मैं अपना मस्तक रखता हूँ। वह मेरा मंगल करे। हे तुलजा भवानी मृडानी ( रुद्रपत्नी ) अंबे, अपर्णे -दुर्गे। इस दासगणू के मस्तक पर अपना वरदहस्त रखिये। हे दयाघन दत्तात्रेय आपके चरण कमलों की मैं वन्दना करता हूँ। आप प्रसन्न होकर मुझे गजानन चरित्र लेखन में सहायता करें। इसके पश्चात ऋषिश्रेष्ठ

शांडिल्य (भक्ति के परमाचार्य) वसिष्ठ गौतम -पाराशर (बादरायण व्यास ब्रह्मसूत्रमहाभारत - पुराणकर्ता ) आदि को वन्दन करता हूँ।

ज्ञान के आकाश में जिनका सूर्य के समान प्रकाश हैं ऐसे भगवान शंकराचार्य को मेरा नमस्कार। उसी तरह सारे संत महंतो को दासगणू की वंदना। वे सब मेरे इस ग्रंथ रचना मे सहायता करे। गहनीनाथ निवृत्तिनाथ -ज्ञाननाथ -देहूनिवासी तुकाराम - जो इस भवसागर तरने के लिये नौकारूप है ऐसे संत रामदास को मेरा प्रणाम। हे शिरडीके निवासी साईसमर्थ तथा पुण्यवान वामनशास्त्री को मेरा प्रणाम। ये सब ये सब दासगणू को सहायक हो। आप लोगों की कृपा से तथा सहायता से यह कार्य मैं कर सकूँगा। दासगणू अज्ञानी बालक है , उसकी इस उद्धंडता के बारे मे आप लोग कठोर न बने । आप लोगों का मेरा सम्बन्ध माता और पुत्र के समान है। आदर्श माता ही बालक को बोलना सिखाती है। लेखनी लेखन का निमित्तमात्र होती है। उसका स्वयं का कोई बल नहीं होता। हे संतगण यह दासगणू लेखनी के सामान है। आप लोग उसके द्वारा रसमय चरित्रका लेखन करे। अब श्रोतागण आप लोग सावधान होकर अपने कल्याण की कामना से संत चरित्रका श्रवण कीजिये। इस भूमीपर संत मूर्तिमान चलते -बोलते हुए ईश्वर ही हैं। वे वैराग्य के सागर तथा मोक्षपद दाता होते हैं। सत्य -नीती के मुर्तिमान प्रतिक तथा कल्याण - मङ्गल के हाट होते हैं। ऐसे संतचरित्र का आप लोग एकाग्र मनसे श्रवण करें। संत किसीको धोखा नहीं देते। संत भगवन मार्ग के पथ प्रदर्शक तथा ज्ञान के भंडार होते है। जिन्होंने संतों का आश्रय लिया। उनके ऋणी साक्षात भगवान श्रीकृष्ण होते हैं। इसलिये मनोविक्षेपादि रहित संत चरित्रका श्रवण कीजिए।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

इस भारतवर्षमें अनेक संत हो गये और द्वीपान्तरों कप ऐसा सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। यह जम्बुद्वीप पहले से ही पुण्यवान -धन्य है। यहाँ पर किसी प्रकारकी सुखोंकी न्यूनता कभी नहीं थी। यही कारन है कि इस भूमीपर अनंतकालसे संतचरणोंका स्पर्श होता रहा है। नारद, ध्रुव, कयाधूपुत्र प्रल्हाद -परमभक्त उद्धव सुदामा, अर्जुन, महाबली अंजनीपुत्र हनुमान, अजातशत्रु धर्मराज। शरणागतोंके कल्पवृक्ष अध्यात्मविद्याके महामेरु जगद्गुरु शंकराचार्य इसी देशमें हुये। द्वैतमत प्रस्थापक मध्वाचार्य, विशिष्टद्वैत मतप्रस्थापक रामानुजाचार्य शुद्धाद्वैत मतप्रस्थापक वल्लभाचार्य आदि संप्रदाय प्रवर्तक इसी देशमें हुए जिनके ऋणी प्रत्यक्ष भगवान विष्णु है। क्योंकि इन्होंनेही धर्मप्रवर्तन कर सनातन धर्मकी रक्षा की। गुजरातके प्रसिद्ध संत नरसी मेहता। मानसके रचयीता परमभक्त संत तुलसीदास। कबीर -कमाल - सुरदास - मधुराभक्ति के प्रवर्तक महाप्रभु -गौरांग अर्थात् चैतन्यमहाप्रभु जिनकी लीलाओंका वर्णन नहीं किया जा सकता, इसी देशमें हुये। राजकुलोत्पन्न प्रेम परायणा मीरा। जिसकी भक्तीकी चाह नहीं जानी जा सकती। क्योंकि उसके लिये साक्षात् भगवान विष्णुने विष पान किया। योग -योगेश्वर गोरक्षनाथ -मच्छिंद्रनाथ जालंदरनाथ - आदिनाथोंकी लीलाका समग्र वर्णन नवनाथ भक्तिसार नामके ग्रंथमें है। जिन्होंने केवल हरिभक्तिका आश्रय लेकर भगवान प्राप्ती की , ऐसे संत नामदेव -नरहरी सोनार - जनाबाई -कान्होपात्रा -संतसखुबाई -चोखामेळा-सावतामाळी - कूर्मदास -दामाजीपंत, महान पुण्यराशी संत थे जिनके लिये वेदवर्णित भगवान पंढरीनाथने विठू महारका रूप धारण करके उन्हें छुड़ाया। भक्तराज -मुकुंदराज -जनार्दन - इन सब संतोंका चरित्र महीपतीने अपने ग्रंथमे किया है।

में उन सबके नाम यहाँ नहीं देता, क्योंकि भक्तिविजय ग्रंथमें संतोंका चरित्र महीपती ने गाया है। उसे आप लोग पढ़ें। उसी प्रकार नाथादासजी ने अपने 'भक्तमाला' ग्रंथमें संत चरित्रोंका वर्णन विस्तार से किया है। इनके बारेमें जो महान संत हुये उनके चरित्रोंका वर्णन मैंने अपने तीन ग्रंथोंमें किया है आप लोग अवलोकन करें। इन्हीं संतोंकी पंक्तिमें संत श्री गजानन महाराज हो गये। जिनका लोकोत्तुर प्रभाव था और वे अवतारी पुरुष थे। मैंने जिन संत चरित्रोंका गायन किया उसका निर्देश मात्र आप लोगोंके लिये किया है। मेरे सौभाग्यसे श्री संत गजानन महाराजके कथन योग आया है। सो हे श्रोतागण ! उसे मैं विस्तारपूर्वक कहूँगा, आप लोग अच्छी तरह से सुने। इस चरित्र लेखनके समय मेरी ऐसी स्थिति हो गई है कि जिन्हे मैंने आकोट के पास देखा, उनका ही चरित्र पीछे रह गया। क्योंकि जैसे माला गूँथते समय अन्य मणी गूँथने पर मेरुमणी मालाके शीर्षस्थान में गूँथा जाता है। बराड़में शेगाँव नामक एक प्रसिद्ध गाँव है। जो बुलडाना मंडल में है यहाँ बड़ा व्यापार चलता है और श्री गजानन महाराजकी वजहसे यह पुरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध हो गया। इस शेगाँवरूपी सरोवरमें श्री गजाननरूपी सुगंधित कमलसे सारे ब्रह्माण्डका लक्ष्य इस तरफ आकर्षित हो गया। इस शेगाँवरूपी खानका गजाननरूपी हीरा जिसका अप्रतिम प्रकाश-प्रभाव है वह मई अपनी अल्प मतिके अनुसार वर्णन करूँगा। उसका आप लोग श्रवण करें और उनके चरणोंमें प्रेम किजिए निश्चतया आप लोगोंका उद्धार होगा। गजानन चरित्ररूपी महामेघकी वर्षासे आप सब मयूरगण हर्षसे नाचेंगे, इसमें कोई शंका नहीं। शेगाँव के पौरगण (निवासी) अत्यंत भाग्यवान हैं जिन्हे श्री गजानन रूपी श्री संत रत्नका लाभ हुआ।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

राम से अधिक राम का दास ऐसा संत तुलसीदासने कहा है. जब अत्यंत पुण्य उद्धित होता है तब संत चरणोंकी प्राप्ति होती है। रामचंद्र पाटीलने मुझसे पंढरपुरमें कार्तिकी यात्रा के समय संत चरित्र लिखने की प्रार्थना की। मेरा मनोदय पहलेसे ही श्रीगजानन चरित्र गाना का था। किन्तु उसकी संगती नहीं जम रही थी। उससे मेरी मनोकामनाकी पूर्ती करनेके लिये श्री समर्थ गजानन महाराजने रामचंद्र पाटीलको प्रेरित किया। श्री गजानन महाराज संत चूड़ामणी थे। संतोंका मनोदय कोई नहीं जान सकता। इस महापुरुषका इतिहासकी दृष्टिसे नाँव -गाँव -जाति का कुछ पता नहीं है। जिस प्रकार ब्रह्माजीका -स्थान -इत्यादि कोई बता नहीं सकता - ब्रह्माजीको देखकर ही उनके अस्तित्वका ज्ञान किया जा सकता है। जिस प्रकार तेजस्वी हीरे को देखकरही उसके तेजस्वीता का ज्ञान होता है और द्रष्टा उस तेजसे प्रभावित होकर तल्लीन हो जाता है। और वह किस खानसे पैदा हुआ है यह जानने की जरूरत नहीं रह जाती, उसी प्रकार संतोंका प्रभाव ही उनका परिचय हैं अन्य उपाधियाँ गौण होती हैं। माघ वदय सप्तमी शके १८०० के समय श्रीगजानन महाराज ग्राम मे अपनी तरुणावस्था में आये। कोई कहते हैं वे श्री समर्थ रामदासजी के सज्जनगडसे यहाँ आये। यद्यपि कोई सबल प्रमाण नहीं फिरभी लोकोक्तीका कुछ तो अर्थ होता है। सब लोग भ्रष्ट हो गये। अनेक यातनाओंसे पीड़ित और त्रस्त थे। ऐसे समय में श्री समर्थजीने ऐसा कौतुक किया। वे जगतका उद्धार करने के लिये श्रीगजाननरूपमे पुनः अवतीर्ण हुए। योगी पुरुष किसीभी - शरीर में प्रवेश कर सकता है। क्योंकि ऐसा उदहारण जगद्गुरु शंकराचार्यजीने किया था। महायोगी -गोरखनाथ -कूड़ाकरकट से प्रकट हुये थे।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

कानिफनाथ हाथी के कानसे और चांगदेव- नारायण- भँवर से- अयोनिज प्रगट हुए थे । इसी प्रकार की लीला श्रीगजानन महाराज के विषयमे हुई होगी, क्योंकि उन्हें योग के सब अंगोंका ज्ञान था। (यमनियमासन, प्राणायाम , प्रत्याहार , धारणाध्यान , समाधिध्योऽष्टावङ्गानि ) योग की महिमा अगाध है। उसकी तुलना अन्य किसी मार्गसे नहीं की जा सकती। यह सब आपको महाराज के चरित्रसे ज्ञात होगा। पदनतोंका उद्धार करने के लिये ज्ञानराशी श्री गजानन माघ वदय सप्तमीको प्रकट हुए। वह प्रसंग मैं आप लोगोंको बताता हूँ। शेगाँव में देवीदास नामके पातूरकर कुलोत्पन्न माध्यंदिन शाखा के एक सज्जन मठाधिपती थे। उनके लड़केकी ऋतुशांतिके निमित्त उनके घर भोजन का प्रयोजन था। लोगोने भोजनके बादमे जुठी पत्तलों को बाहर फेंक दी थी। उसी जगह पर समर्थ सिद्धयोगी गजानन महाराज एक फटी पुरानी कपडेकी बनियान पहने बैठे थे। अन्य कोई सामग्री उनके पास न थी केवल - पानी पीनेके लिये एक तुंबा था। और उनके साथ मैं निज -निर्मित कच्ची चिलम। जो किसी कुम्हारके भट्टीमे पक्की नहीं थी। उनकी अंगकांति पूर्व दिशामें उदित बालसूर्यवत थी -नासाग्र दृष्टि- युत शांत मुद्रा और तपःपुञ्ज कान्तिसे वे युक्त थे जिसका मेरेसे वर्णन नहीं किया जा सकता। महाराज दिगंबर अवस्थामें थे। जिसे आप -पर का भेद नहीं होता - सर्वत्र सब प्राणीमात्र में समदृष्टि रखनेवाला ही दिगंबर अवस्थामें रहता है। महाराज पत्तलोंके पास बैठकर उनमेंसे बचे हुए अन्नकणों का ग्रहण कर रहे थे। यह उनकी लीला मात्र थी। भात का कण दिखतेही मुखमें डाल देते थे। वस्तुतः महाराज का यह कार्य अन्न परब्रह्म है। यह बतानेके हेतु ही था।

क्योंकि उपनिषद श्रुति गर्ज कर बता रही है "अन्नम्ब्रह्मेति" यह सिद्धान्त सिद्ध करनेके लिएही दयाघन यह लीला कर रहे थे। सामान्य जनोंको इस बातका कोई ज्ञान नहीं पत्ता चला। बंकटलाल अग्रवाल अपने एक मित्र दामोदरपंतके साथ उस रास्तेसे जा रहे थे। उन्होंने यह लीला देखी। दोनों महाराजकी इस क्रियाको देखकर आश्चर्य

चकीत हो गये। और आपसमें बातचीत करने लगे। इन मूर्तिका यह कार्य पागलोंकी तरह दिखता है , क्योंकि अगर वे क्षुधाक्रान्त होते तो देवीदासके पास अन्नकी याचना करते और वह भी सज्जन है। आये हुए अतिथिको विन्मुख नहीं कर सकता। इस कृतिके बारे में कोई तर्क नहीं चलती। बंकटलालने अपने मित्रसे कहाँ हम लोग यही खड़े होकर कार्यका निरीक्षण करेंगे। श्रीमत् भागवतमे व्यासजीका वचन है कि सच्चे साधु जगत में उन्मत्तवत रहते हैं। कृतीसे यह मूर्ति पागलोंकी तरह दिखती है किंतु यह प्रत्यक्ष ज्ञानयोगी हैं। जैसे हिरेको पहचाननेके लिये रत्न -परखनेवाली व्यक्तिही चाहिये। रास्तेसे हजारो लोग गये किन्तु किसीका ध्यान महाराजकी ओर आकर्षित नहीं हुआ - ये दोनोकाही लक्ष महाराजकी ओर जानेका कारण सज्जन लोगही जान सकते हैं हिरे तथा गार- पत्थर मिलाकर रख दिये जाय तो रत्न परखनेवाला हिरोको चुनकर गार -पत्थर छोड़ देगा। इस प्रसंगमे महाराजको विनयपूर्वक पूछनेके लिये बंकटलाल अग्रवाल सामने आये। उन्होंने प्रार्थना की महाराज - अन्नके लिये आप पत्तलोंको क्यों ढूँढ रहे हैं ? अगर अन्नकी इच्छा हो तो हम उसका प्रबंध कर देते हैं। ऐसा बंकटलालके पूछनेपर महाराजने उनके प्रश्नका कोई उत्तर नहीं दिया। केवल उपरकी ओर देखकर उन दोनोंकी ओर देखा। महाराज विशाल -वृक्षस्थलयुक्त तथा तेजपुंज कांतियुक्त सुदृढ़ स्नायुवाले भुजदंड -निजानंदमे लवलीन योगी थे।

उनको मौन धारण करके बंकटलालने चित्तमें संतोष धारण कर प्रणाम किया। और देवीदाससे कहा - महाराज एक पत्तल आप शिघ्र बहार परोसिये। देवीदासने उनके कथनानुसार एक पत्तल भरके महाराजके सामने रखखा। उस परोसे हुए पत्तलपर बैठकर महाराज उसे पाने लगे। जिसको किसी स्वादकी आकांक्षा नहीं उसे मिष्टान्नसे क्या रूची ? जो ब्रह्मरस पी करके तृप्त है क्या वे राबको सेवन करेगा ? जो सार्वभौम राज्यका अधिपति है क्या वह जागीरकी कामना करेगा? महाराजने सब पक्वान्न एकमे मिलाकर जठराग्नि शांत की। यह घटना सामान्यतः दूसरे प्रहरके

समय की है। बंकटलालने अपने मित्रसे कहाँ की हम लोग इन्हे उन्मत्त समझ रहे हैं वह हमारी भूल है। सुभद्राको पाने के लिये अर्जुन वेषांतर करके उन्मत्तवत वर्तन कर रहा था। ये ज्ञानसागर मोक्षरूपी सुभद्राको प्राप्त करने के लिये इस प्रकारका आचरण कर रहे हैं। हमारा यह शेगाँव धन्य है जिसे भगवान विष्णुने ऐसा निरिच्छ योगीराज दिया। सूर्य मध्यान्हमे आगसे सब भूभाग तप्त हो गया और पक्षीगण आश्रयके लिये अपने अपने नीड़ में जा छिपे। ऐसे तप्त धाममे ये योगीराज आनंदपूर्वक स्थित है सो ये साक्षात ब्रह्म है। इन्हे किसी प्रकारका भय नहीं है। इन्होंने यथेच्छ भोजन तो किया किंतु तुंबोमे पानी नहीं है , सो हम लोग इन्हे जल लाकर देंगे। उस विषयमें उन्होंने महाराजसे पूछा , "भगवन क्या हम लोग जल आपके लिये ले आये ?" तब महाराज हँसकर कहने लगे," अगर आप लोगोंको आवश्यकता है तो ले आईये "। वस्तुतः आप लोगोंमें और हममें कोई भेद नहीं है। किन्तु जगद्व्यवहार की दृष्टिसे आप लोगोंकी क्रिया सत्य है।

देहने अन्न ग्रहण किया सो उसे जलकी आवश्यकता है ही। अगर आप लोग चाहते हैं तो जलकी व्यवस्था कीजिये जिससे कार्यकी पूर्तता हो जाय। यह सुनकर बंकटलालने पंतसे कहा , पंत अपना यह सौभाग्य है। ऐसा कहकर दामोदरपंत जल लेने अंदर गये। इतने में महाराज समीपस्थ कुएँ के साथ पशुओं के पीने के लिये कुंड बना था उसी मे जल पीने लगे। तब तक पंत लोटा भर जल लेकर सामने आये और महाराज से कहने लगे , " महाराज वह पशुओंके लिये जल है। उसे आप न पिये। मैं यह लोटा लेके आया हूँ। यही पीने योग्य है। इसमे उशीर औषधि डालकर यह शितल किया गया है। यह सुनकर महाराजने कहा, यह व्यावहारिक बातें हमसे न कहिये। यह चराचर जगत वस्तुजात ब्रह्मव्याप्त है उसमे जलमें पंडक युक्त - निर्मल -सुवासित ऐसी कोई उपाधि नहीं है। जल ब्रह्मही है पंडक युक्त - निर्मल -सुवासित- दुर्गंधयुक्त भेद उपाधिजन्य है परमार्थतः नहीं। पीनेवाला उसके पृथक नहीं है।

यह ईशलीला मानवके लिए अगाध है। उसे नहीं जान। उपाधिसे यह सब प्रतीत होता है ? यह जगत किससे हुआ। ऐसे सुननेपर दोनों भावगद्गद होकर श्री चरणोमे लेटने लगे। उनका हेतु जानकर महाराज वहाँसे पलायन कर गये। उनकी वायुगतिको भला कौन रोक सकता है? अगली कथा आप लोगों की दूसरे अध्याय मे निवेदन करूँगा। एकग्रता से आप लोग सुनें। यह श्री गजानन विजयग्रंथ - भाविकों को आनंदित करनेवाला हो ऐसी प्रार्थना भगवानसे दासगणू करता है।

॥ शुभंभवतु ॥ श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥  
॥ इति श्री गजानन विजयग्रन्थस्य प्रथमोऽध्याय समाप्तः॥

## ॥ अध्याय २ ॥

श्री गणेशाय नमः । हे चन्द्रभागा तटपर विहार करनेवाले दीनबंधू -अज - अजित -सर्वेश्वर पूर्णब्रह्म- रूक्मिणीके पति आपकी जय हो। आपकी कृपाके बिना सब परिश्रम व्यर्थ है। जैसे शरीरमें प्राण न रहनेपर शरीर प्रेतमात्र है। सरोवर जलसे सुशोभित होता है। हे पद्मनाभी ! बाह्य कवचसे फल के अन्तरगत रसकी शोभा होती है। उसी प्रकार आपकी कृपा शरणागतको सामर्थ्य देती है- पाप तथा त्रिविध -ताप और (आध्यत्मिक -आधिभौतिक -आधिदैविक ) दीनता का निवारण करे यही मेरी प्रार्थना है। पिछले अध्यायकी कथामे बताया की महाराज वहाँसे चले गये। जिसकी व्यथा बंकटलालको दुःखी करने लगी। उन्हें भोजन और जल भी अच्छा नहीं लगता था। उन्हें गजानन महाराजके रूपका सतत ध्यास -मनमें - आ रहा था। वे जिधर देखते उधर महाराजकी अनुपम मूर्तिका भास होता था। हे श्रोतागण इसेही ध्यास कहते है जो योगशास्त्रानुसार धारणा कहलाता है। जैसे गायका बछड़ा अपनी अप्राप्त माताका ध्यास करते रहता है, वही अवस्था बंकटलालजीकी हो गई। यह अंतर्व्यथा बतानेके लिये उनके पास कोई स्थान नहीं था। जिसके पास वह व्यक्त करते और अपने पितासे कहनेका धैर्य उनमे नहीं था। ऐसी अवस्थामे उन्होंने समग्र शेगाँवमें महाराजको ढूँढा किन्तु कहीं पता नहीं चला। घरमें आनेपर उनके पिता भवानीरामने उनसे पूछा, बेटा,आज तुम्हारा मुखमण्डल म्लान हो गया है, तुम व्यग्रसे दिखाई पड़ रहे हो, क्या कारण है ?तुम युवा हो, घरमें किसी वस्तुकी कमी नहीं है फिर तुम्हे किस बातकी चिन्ता है, जिससे तुम्हारी यह अवस्था हो गई ?

क्या तुम किसी रोगसे पीड़ित हो तो शिघ्र बताओ क्योंकि पितासे कुछ छिपाना नहीं चाहिये। ऐसा पिताके पूछनेपर बंकटलालने इधर -उधरकी बात बताकर पिताका समाधान किया और फिरसे महाराजको शेगाँवमें ढूँढना शुरू किया। बंकटलालके पड़ोसमें एक जागीरदार रामाजीपंत देशमुख थे। वे बड़े सज्जन थे। उन्हें किसी प्रकारका अभिमान नहीं था। बंकटलालने उनसे सब कथा कही। तब उन्होंने उत्तर दिया, बंकटलाल, तुम्हारे कथनसे पता लगता है कि, वे महापुरुष कोई योगी है। ऐसे कर्म और लक्षण, पूर्वसुकृत प्राप्त योगी में ही होते हैं; अन्यथा इन लक्षणोंका अंशात्मक दर्शनभी होना दुर्लभ है। तुम्हें ऐसे पुरुषका दर्शन हुआ यह तुम्हारा महाभाग्य है। तुम धन्य हो। तुम्हें दर्शन होनेपर साथ मुझेभी दर्शनार्थ ले चलना। ऐसी अवस्थामें बंकटलाल के चार दिन और बीत गये किन्तु महाराजका वृत्तान्त तिलभरभी मनसे नहीं हटा। श्री गोविंदबुवा टाकलीकर नामके उस समय एक बड़े कीर्तनकार थे। जिनके कीर्तनमें साक्षात् श्री भगवान विष्णु प्रसन्न चित्त होते थे। बरारमें उनकी बड़ी ख्याति थी। उनका कीर्तन शिवमंदिरमें निश्चित किया गया। वे देशाटन करने शेगाँव पहुँचे थे। गाँवके सभी लोग स्त्री पुरुष कीर्तन सुननेकी इच्छासे मंदिरमें इकट्ठा हुए। बंकटलाल उनका कीर्तन सुनने मंदिरमें आ रहे थे तब उन्हें रास्तेमें पीतांबर नामका एक दर्जी मिला। यह पीतांबर बड़ा भाविक था। उसको बंकटलालने महाराजका समाचार सुनाया। दोनों जब मंदिरके पिछले फरसीपर महाराज बैठे दिखाई पड़े।

फिर कीर्तन काहेका- वह दौड़कर उनके समीप गया । जैसे कोई कृपण व्यक्ति धनके हंडेको देखकर दौड़ता है। जैसे चातक पक्षी स्वाती नक्षत्रके बादलोंको देखकर हर्षित होता है। मेघके दर्शनसे मोर-या चन्द्रमा के दर्शनसे चकोर पक्षी हर्षित होता है, ऐसेहि बंकटलाल महाराजको देखकर हर्षित हुआ। दोनों - महाराजसे कुछ अंतरपर खड़े होकर विनयपूर्वक पूँछने लगे। "महाराज, क्या हम आपके लिये भोजन सामग्री ले आवे ?" तब महाराजने उत्तर दिया " लगता है तो

बेसन रोटी मालीन के घरसे ले आवो "। झटसे बंकटलालने बेसन और आधी रोटी लाकर योगेश्वरजीके हाथपर रखी। बेसन रोटी कहते समय महाराज पीतांबरसे बोले,"यह तुंबा-नालिसे भरकर ले आवो। सुनकर पीतांबर ने उत्तर दिया, महाराज तुंबा डुबे इतना पानी नालेमे नहीं है। साथ जाने -आनेवाले लोग तथा पशुओंने यह पानी खराब कर दिया है। "वह पेय नहीं है। मैं अन्य जगहसे पानी ले आता हूँ। उसपर महाराजने कहा," हमें दूसरी जगहका पानी नहीं चाहिये। यह तुंबा डुबाकर नालेका पानी ले आओ। अंजुलीसे नहीं भरना। " तत्काल पीतांबर नालेपर गया किन्तु तुंबा भरे ऐसा जल उसे कहीं न दिखा। पीतांबरकी स्थिति बड़ी विचित्र हो गई। नालेमे पैरके तलुएभी नहीं डूबते थे। महाराजकी आज्ञानुसार उसने धैर्य धारणकर तुंबा सीधा पानीमें डुबोया। तुरंत वह जलसे भर गया। वह जहाँ जहाँ तुंबा डुबाता वही वह जलसे भर जाता। नालोका गंदा पानी तुंबे मे स्फटिकमणीके समान स्वच्छ निर्मल हो जाया करता। यह देखकर पीतांबर आश्चर्यचकित हो गया। उसने मनमें अनुमान किया की यह योगेश्वरकी शक्तिसेही ऐसा होता है। इसमे कोई संदेहकी जगह नहीं। उसने तुंबा लाकर महाराजको दिया और उन्होंने भोजनके बाद उसका पान किया।

इसके बाद महाराजने बंकटलालसे सुपारी माँगी और कहा की क्या मालीन के बेसन रोटीसे ही मेरी सेवा करता है ? खिसेमेंसे सुपारी निकालकर काट कर दो। यह सुनकर बंकटलालको बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने सुपारीके साथ दुदंडी तांबेके दो पैसे महाराजके हाथ पर रखे। उस समय बरारमे मुसलमानी सिक्के - खड़कु - दुदंडी- व्याघ्रांबरी आदि व्यवहारमें प्रचलित थे। महाराजको बंकटलालने व्याघ्रांबरी दुदंडी सिक्के दिये। उन्हें देखकर महाराज हँसे और बोले, क्या हमें व्यापारी समझते हो, जो ये सिक्के अर्पण कर रहे हो? ये सिक्के तुम्हारे व्यवहारके है, हमें इनका कोई प्रयोजन नहीं। हम तो भावभक्तिके सिक्के चाहते हैं। तुम्हारे पास भाव है इसिलीये पुनःदर्शन हुए। अब जाकर तुम लोग कीर्तन सुनो। मैं यही नीमके पेड़के नीचे बैठकर कीर्तन सुनता हूँ। महाराज के आदेशसे दोनों कीर्तनमे आये।

कीर्तनमे गोविंदबुवा ने भागवत के ग्यारहवे स्कंध की हंसगीताका एक श्लोक निरूपणके लिये लिया था। आरंभमे जैसे ही बुवाने श्लोक का पूर्वार्ध उच्चारण किया उसके बाद महाराजने झटसे उत्तरार्ध उच्चारण किया। वह सुनकर गोविंदबुवा मनमें साशङ्कित हो गये। उन्होंने लोगोसे कहाँ उत्तरार्ध का उच्चारण करनेवाला वह व्यक्ति निश्चित ही अधिकारी पुरुष है। आपलोग उन्हें मंदिरमें ले आईये। ये सुनते ही बंकटलाल -पीतांबर इत्यादि लोग समर्थको लाने के लिये गये, किन्तु प्रार्थना करनेपरभी वे अपनी जगहसे हिले नहीं। स्वयं गोविंदबुवा टाकलीकर हाथ जोड़कर महाराजसे प्रार्थना करने लगे, महाराज एक बार कीर्तनके लिये आप मंदिरमे पधारिये। आप साक्षात शिव है। आपके बिना मंदिर शून्य है। आपका बाहर बैठना ठीक नहीं।

मेरा पूर्वजन्मका सुकृत उदित हुआ, यही कारण है कि आपके चरणकमलोंका मुझे दर्शन हुआ। आज मुझे कीर्तनका फल प्राप्त हो गया। गुरुदेव, आप शिघ्र मन्दिरमे मेरे साथ चलें। तब महाराजने कहा," अरे गोविंद, अपने प्रतिपादन और आचरणमे एक वाक्यता रखो। अभी तो तुमने प्रतिपादन किया की सर्वत्र ईश्वर व्याप्त है, फिर अंदर -बाहर कहाँ रहा। फिर यह हठ किसलिये ?जिसने जैसा प्रतिपादन किया उसे वैसाही आचरण करना चाहिये। साधकको चाहिये कि वह शब्दछल कदापि न करें। भागवतके श्लोकका प्रतिपादन करते हो और उसके विरुद्ध आचरण करते हो, यह कीर्तनकारी पद्धती ठीक नहीं। उदरभरण कीर्तनकार तुम्हे भूमीपर नहीं होना था। जाओ, कीर्तन समाप्त करो। मैं यही बैठकर सुनता हूँ। तब बुवा मंदिरमे आकर उच्चस्वरसे बोले, श्रोताओं, शेगाँवमें यह अनमोल रत्न प्राप्त हुआ है। आप लोग इन्हे सम्हालो। यह शेगाँव ना रहा अपितु साक्षात भगवान विठ्ठल के निवाससे पंढरपूर हो गया। इनकी देखभाल करो, सेवा करो, और इनकी आज्ञाको वेदवाक्य समझकर शिरोधार्यकर पालन करो। इसीसे तुम्हारा निश्चित कल्याण होगा। यह निधि अनायास तुम लोगोंको मिली हैं इसे सम्हालो। कीर्तन बड़ा अच्छा हुआ। बंकटलालको बड़ा हर्ष हुआ।

घरपर आकर अपने पिताजीसे सारा वृतांत कहा और कहा पिताजी महाराजको अपने घर ले आओ। पुत्रका वृतान्त सुनकर भवानीरामने कहा," बेटा, तुही जाकर महाराजको ले आओ। "पिताजीकी अनुज्ञा मिलनेपर उन्हें बड़ी उत्कंठा हुई की कब और कहाँ गुरुमूर्ति मिलेगी, जिन्हे मैं घर ला सकूँ। चौथे दिन सद्गुरुनाथ माणिकचौकमे बंकटलाल को मिले। उस समय सूर्यास्त हो रहा था। इधर सूर्यास्त हुआ और उधर ज्ञानसूर्यका उदय हुआ माणिक चौक रूपी पश्चिममे बंकटलालके भाग्यसे। गोपाल लोग गौंअे लेकर गाँवमें आने लगे। गौंअे श्री समर्थके पास जमा होने लगी। मानो उनको ऐसा लगा कि नंदकुमार श्रीकृष्ण वहाँ आ गये हैं। उसी प्रकार वृक्षोंपर पक्षीगण मधुर किलबिल करने लगे। दुकानदार लोग दिया-बत्तीकी तैयारी कर रहे थे। ऐसे समय बंकटलालजी महाराजको लेकर घर पहुँचे। मूर्ति देखकर उनके पिताको अत्यानंद हुआ। उन्होंने महाराजको साष्टांग प्रणिपात किया और पीठेपर बिठाया और हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "महाराज ! आप साक्षात् पार्वतीपति शंकरही हैं, जो प्रदोष कालमे यहाँ पधारे। अतः आप मेरे यहाँ भोजन करिये। मैंने स्कंदपुराणमे कथा सुनी हैं कि, जिसे प्रदोष कालमे शिवजीका पूजन करनेका अवसर प्राप्त होता है वह भाग्यशाली होता है। ऐसा कहकर तत्काल एक बिल्वपत्र लाकर महाराजके सिरपर परमभक्तिसे रखा। फिर मनमें विचार करने लगे। कि महाराजको भोजनके लिये तो कह दिया किन्तु रसोईकी तो अभी कोई सिद्धता नहीं और रसोई बनने तक महाराज रुकेंगे की नहीं यह शंका भी है। प्रदोषकालमें यदि भगवान शिव भोजन किये बिना लौट जाते हैं तो बड़ा अनर्थ होगा। महाराजको आया जानकर बड़ाभारी जनसमुदाय -जमा होने लगा। महाराजको देखने एवं दर्शन के लिये। बड़े धर्म संकट की बात है। अन्तमे निर्णय लिया कि दोपहरमे पुरी बनाई हुई हैं वह बासी नहीं समझी जाती, दूसरी पुरी पक्की रसोई हैं उसमे दोष नहीं ऐसा विचार करके थालीमे पूरियाँ रखकर महाराजके सामने रखी। मेरा भाव शुद्ध है और निष्कपट भावसे भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं। पुरियोंके साथ बादाम -खारीक, केला -मोसंबी -तथा मूलक साथमे परोसे। महाराजके ललाटपर -बुक्का लगाया।

गलेमें पुष्पमाला अर्पण की। महाराज प्रसन्न होकर सब पाने लगे। बड़े आनंदसे सब पदार्थोंका सेवन किया जो जो पदार्थ थालमें परोसा जाता, शिघ्रतासे महाराज उसका ग्रहण करते। इस प्रकार साधारण तीसरे प्रहर अन्नका ग्रहण महाराजने किया और रातको वही आराम किया। दूसरे दिन बंकटलालने महाराजको प्रातः मङ्गलस्नान कराया। सौ घड़े कदोष्ण जलके सिद्ध करके महाराजको स्नान कराने लगे। जिसमे स्त्रियाँ भी थी। कोई महाराजको शिकाकाई लगाने लगे कोई साबुन शरीरपर लगाने लगे, कोई बड़े प्रेमसे महाराजके चरणकमलको पकड़कर धोने लगे। कोई दनक लगा रहा है, कोई हीना अत्तर रगड़ रहा है, कोई चमेलीका तेल लगा रहा है। इस प्रकार अनेक प्रकारके अङ्गरागोसे महाराजको मंगल स्नान करवाकर पीतांबर पहनाकर बड़े सन्मानसे आसान पर बिठाया। बंकटलालके यहाँ ईश्वरकृपासे संपन्नता थी। किसी प्रकारकी न्यूनता नहीं थी। इसके बाद योगिराजको आसनपर बिठाकर मस्तकमें केशरतिलक लगाया। अनेक पुष्पहार गलेमें डाले। कुछ लोग महाराजके मस्तकपर तुलसी मंजरी चढाने लगे। महाराजको अनेक प्रकारके नैवेद्य अर्पण किये। इसप्रकार बंकटलालका भाग्य उदित हुआ। उसदिन बंकटलालका घर मानो साक्षात् द्वारकानगरी हो गया। किन्तु वह दिन शिवजीका सोमवार था। सब लोगोंने अपने मनोरथ पुरे किये। केवल बंकटलालके बंधू इच्छारामजी शेष रह गये। ये बंकटलालके चचेरे भाई थे। ये भगवान शंकरके भक्त थे। ये बड़े भाविक थे। प्रातःकालका उत्सव देखकर इनके मनमें भाव जागृत हुआ की आज सोमवार है। साक्षात् भगवान शंकरही यहाँ घरपर उपस्थित हुए हैं सो अस्तके समय प्रदोष कालमे महाराजकी यथासाङ्ग पूजा करके पारणा करना चाहिये।

अस्तका समय हो गया। सूर्य भगवान अस्त हो गये। इधर इच्छारामने स्नान किया। प्रदोषका समय देखकर पूजनकी सामग्री लेकर बड़े प्रेमसे महाराजकी पूजा की। और हाथ जोड़कर बिनती की - महाराज। दोपहरमे आपका भोजन हो गया है। किंतु सायं आप थोड़ा तो भी ग्रहण करें। क्योंकि मेरा उपवास है। जबतक आप कुछ ग्रहण नहीं करेंगे, मैं

प्रसाद नहीं पा सकता। आपने सब भक्तोंका मनोरथ पूर्ण किया। मैंही एक भाग्यहीन बचा हूँ सो मेरी मनोकामना पूर्ण करिये। सब लोग कुतूहल पूर्वक देखने लगे की अब महाराज क्या करते है। ऐसेमैंही इच्छाराम एक थाल परोसकर ले आये। जिसमे बासमतीका भात दो ,कूर तथा नानाविध पकवान थे। जलेबी -राघवदास -मोतीचूर -गोड़ीया-अनारसे -घीवर आदि मिष्टान्न थे जिनको मैं वर्णन नहीं कर सकता। अनेक प्रकारके अवलेह -अचार तथा दही पास में रखखा था। परिपूर्ण थालको देखकर महाराज अपने आपसे बोले, भोजन -चाहिये भोजन चाहिये, ऐसा रातदिन घोकते हो, लो, अब खाओ। अरे अघोरी, अब इसका अपमान न करो। तुम्हारा अघोरी कृत देखनेके लियेही ये सब लोग यहाँ जमे हुऐ हैं। ऐसा निश्चयकर महाराजने सब थाल खाकर समाप्त कर दिया। यहाँ तक की नमक और नींबूभी नहीं छोड़ा। महाराजकी इस लीलाका दूसरा उद्देश यह था कि भोजनके लिये आवश्यकतासे अधिक आग्रह कभी नहीं करना चाहिये। उसका परिणाम महाराज लोगोंको बताना चाहते थे? भोजनोपरांत महाराजको हड्डाकर उल्टी हो गई, जिससे सारा अन्न बाहर आ गया। इस प्रकारकी घटना एकबार श्री समर्थ रामदास के जीवनमें घटी थी। एक बार समर्थ रामदास स्वामी को पायस खानेकी वासना हुई।

जो साधुके लिये ठीक नहीं। तो उन्होंने दंडित करनेके मनीषासे खीर का आकंठ पान किया। जिससे उन्हें वमन हो गई तब फिर वे उसे भी खाने लगे। ताकी पुनः उसकी वासना न हो। इसी प्रकार गजानन महाराजने लोकग्राहके निग्रहके लिये यह लीला की, ताकि भावी पीढीको शिक्षारूपयह ज्ञात हो, कि दुराग्रहका परिणाम क्या होता है। अस्तु। लोगोंने वमनका स्थल साफ किया, महाराजको स्नान करवाया और साफ सुथरे आसन पर बिठाया। हजारो लोग महाराजके दर्शनको आये। महाराजकी आनंदीवृत्ति चलित नहीं हुई अर्थात महाराज चाहते तो सब अन्न योगसामर्थ्य से पचा जाते किन्तु लोग शिक्षाके लिये यह लीला करनी पड़ी। उसी समय महाराज के पास दो भजन मंडलीयाँ आयी

और बड़े प्रेमसे वहाँ रातभर भजन करते रहे। महाराजभी अंगुली चटकाकर अपना प्रिय भजन "गणगण गणांते बोते "आनंदसे रातभर गाते रहे। महाराज सदैव गणगण गणांत बोते, ऐसा भजन करते थे। इसीलिये सब लोग उन्हें गजानन नामसे पुकारने लगे। वस्तुतः नामरूपादि उपाधियाँ प्रकृतिके आश्रयाधीन हैं। जो स्वयं ब्रह्म स्वरूप है उसको ये नामरूपकी उपाधि कैसे लग सकती है? उपनिषद् इस बातका उद्घोष करता है 'वाचारम्भणं विकारो नाम धेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम् " अर्थात् घटकी नाम -रूप -आवृत्ति आदि उपाधियाँ केवल प्राकृतिक हैं। वस्तुतः वह मृत्तिकाही है। इसी प्रकार नाम रूपादि उपाधि ब्रह्मकि नहीं होती। इस तरह महाराज अपने निजानंदमे लीन रहते थे। उन योगेश्वरका - अस्ति -भाती -प्रीय आदि प्रकृति विकारोंसे कोई सम्बन्ध नहीं था। क्योंकि ये सब प्राकृतिक उपाधियाँ हैं। जैसे आषाढी एकादशीको पंढरपूरमे भक्तोंकी भीड़ होती है। सिंहस्थपर्व कुंभमें गोदावरी तटस्थ नासिकक्षेत्र में वैसीही भीड़ होती है जो भीड़ हरिद्वारमें होती है उसी प्रकार शेगाँवमें बंकटलालके घरमे दूरदर्शी आनेवाले दर्शनार्थियोंकी भीड़ होने लगी।

यहाँ के श्रीमान स्वामी गजानन ये ही विठ्ठल थे और निश्चय रूपके इंट ऊपर खड़े होकर बंकटलालके घरमे जनसमुदायको दर्शन देने लगे। जिसने ब्रह्मपद प्राप्त कर लिया उसके लिये जाति कहाँ शेष रहती है। जैसे सूर्यके प्रकाशके लिये सब स्थल समान है। शेगाँवमें रोज नई यात्रा होने लगी। हजारो पूजायें महाराजकी होने लगी, जिसका वर्णन भगवान शेषभी नहीं कर सकते। वे भी श्रान्त हो जायेंगे। फिर दासगणूकी, जो एक क्षुद्र कीटकके समान है। क्या गिनती है। गजानन महाराजही मेरे मुखको निमित्त कारण बनाकर लीलाओंका बखान कर रहे हैं। महाराजकी गाथा गानेका मुझ पामरमे सामर्थ्य कहाँ? जो अगाध है। फिरभी यथामती दिनचर्या वर्णन करनेका प्रयत्न करता हूँ। कभी तो महाराज मंगलाभिषेक करते, कभी कीचड़में लेट जाते। कभी गंदा जल प्राशन करते। जैसे वायुकी गती

बताई नहीं जा सकती, उसी प्रकार महाराजकी दिनचर्याका कोई निश्चित नियम नहीं था। महाराजको चिलमसे बड़ा प्रेम था। वह उन्हें बार बार लगती थी। किन्तु उसपर भी आसक्ति नहीं थी, केवल लौकिक दृष्टिसे वे लीला बताते थे। अच्छा, अब अगला अध्याय श्रवणके लिये एकाग्र होईये। यह गजानन महाराजका चरित्र लोगोंके लिये आदर्शभूत हो; ऐसी भगवान से दासगणू प्रार्थना करता है।

॥ हरिहरार्पणमस्तु ॥ शुभंभवतु ॥  
॥ इति श्री गजानन विजयग्रंथस्य द्वितीयोध्याय समाप्तः॥

## ॥ अध्याय ३ ॥

श्री गणेशाय नमः। हे सच्चिदानंद श्रीहरि, आपकी जय हो। आपके चरण कमलों में आश्रित जनोंपर आप कभी कठोर नहीं होते। आप करुणाके सागर हो। आप दिनजनोंके पाईक हो। भक्तजनोंके लिये आप कल्पवृक्ष तथा चिंतामणी हो। ऐसी आपकी अगाध महिमा संतगण गाते हैं सो हे मर्यादा परुषोत्तम राघव। आप शिघ्र प्राप्त होईये विलंब न कीजिये। इसप्रकार साक्षत्कारी दिन -दुर्बलोंके -रक्षक श्री गजानन महाराज बंकटलालके घर रहने लगे। दूरदूरसे भक्तगण महाराजकी चरण वंदनाको आते। जैसे -जहाँ मधु होता है वहाँ मक्षिका जमतीही है उनको निमंत्रित करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। एक दिन की कथा है कि, महाराज आनंदपूर्वक अपने आसनपर बैठे थे। वह प्रभातका समय था। पूर्वदिशा आरक्त हो गई थी। पक्षीगण वृक्षोंपर किलबिलाहट कर रहे थे। वृद्धगण शय्यापर बैठकर नामस्मरण कर रहे थे। शीतल -मंद पवन बह रही थी। कुक्कुट उच्च स्वरसे ध्वनि कर रहे थे। उदयाचलपर भगवान नारायण को उदित होता देख अंधकारने गुफाओंकी शरण ली। वत्स -क्षीरपानके लिये गायोंकी ओर हुंकार रहे थे। सौभाग्यवती स्त्रियाँ -सम्मार्जनमें व्यस्त थी। ऐसे रम्य समयमें शेगाँवमें एक साधू गजानन महाराजके दर्शनको आया।

यह गुसाई सरपर कषाय चिंधी लपेटे था, उसीप्रकार एक झोली बायें काँखमें थी। मृग चर्मका लपेटा पीठपर बँधा था। ऐसा यह गुसाई एक किनारे बैठा था। महाराजके दर्शन के लिये अपार भीड़ लगी थी। ऐसी स्थितीमें मुझे महाराज के चरण कमलोंका दर्शन असम्भव है। ऐसा विचार इस गुसाईके मनमें आया। समर्थजीकी कीर्ति मैंने वाराणसी में सुनी और महाराजको भंग चढानेका संकल्प वहाँ किया था। लेकिन यहाँ मेरा संकल्प पूरा होना कठिन लगता है। यहाँ सब

धनवान और प्रतिष्ठित लोग हैं। उसमें मेरी याद कहाँ? यहाँ शांभवीका कोईभी प्रेमी नहीं दिखता। सो मैं अपनी मनोकामना किससे कहूँ? सामान्यतः जिसको जो वस्तु प्रिय होती है वह अपने इष्टको वही चढ़ानेका संकल्प करता है। ऐसे अनेक विचारोंसे गुसाई महाराजके दर्शनको उत्कंठित हो रहा था। उसका संकल्प महाराजने जान लिया और लोगोंसे बोले, अरे उस वाराणसीके गुसाईको ले आओ। यह सुन उसे अत्यानंद हुआ। उसने मनमें विचार किया कि ये त्रिकालज्ञ संत हैं। मेरे मनका संकल्प इन्हे ज्ञात हो गया। ज्ञानेश्वरीके छठे अध्यायमें ज्ञानेश्वर महाराजने योगीकी महिमाका वर्णन करते समय कहा है कि स्वर्ग लोककी कथायें भी योगी जान लेता है। इस बातकी प्रत्यक्षानुभूती आज मुझे हो गई। ये त्रिकालज्ञ महात्मा धन्य हैं। बताये बिना मेरा संकल्प ये जान जायेंगे। इसको स्पष्ट होनेमें अब बहुत थोड़ा समय बाकी है। लोगों द्वारा गुसाईको लाकर महाराजके सामने खड़ा करतेही महाराजने कहा, "झोलीकी पुड़ियाँ निकालो जिस पुड़ियोंका रक्षण आपने पिछले तीन महिनेसे किया, उसे आज सार्थक होने दो"। सुनतेही गुसाई बालकोंकी तरह गद्गद कंठसे महाराजके चरणोंमें लोटने लगा। महाराजने कहा, 'ठीक है। अब उठकर बैठो और झोलीकी पुड़ियाँ निकालो। जब तुमने संकल्प किया तब लज्जा नहीं लगी और अब व्यर्थ अवहेलना करनेसे क्या लाभ?' गुसाई बड़ा धूर्त था। हाथ जोड़कर डरते डरते बोला। भगवान, मैं झोलीकी पुड़ियाँ निकालता हूँ तथा संकल्पपूर्ति करता हूँ किन्तु उसके लिये आप एक वरदान मुझे दीजिये। इस अज्ञानी बालकके बुटीका सदैव आपको स्मरण रहे। जिससे इस बालकका स्मरण रहेगा। मैं जानता हूँ आपको बुटीसे कोई प्रयोजन नहीं। किन्तु इस बालकका स्मरणरूप इस बुटीको स्वीकार लीजिये। भक्त जिसप्रकारकी इच्छा करते हैं, देवता उसकी पूर्ती करते हैं। आप अंजनीका वृत्तान्त स्मरण कीजिये। अंजनी वानरी थी। उसने इच्छा की, साक्षात् भगवान शंकर मेरे गर्भसे जन्म ले। उसकी प्रार्थना स्वीकारकर भगवान शंकर -अंजनीके गर्भसे महारुद्र हनुमानके रूपमें प्रकट हुए। वहाँ वानर भी आड़े नहीं आया। आप तो साक्षात् कर्पूरगौर भगवान शंकरही हैं और यह बूटी आपको प्रिय है। अन्य जनोंको यद्यपि यह व्यसन है तथापी

आपके लिये यह ज्ञानवल्ली है। यह आपको भूषण है। आप इसकी अवहेलना न करें। महाराज किंचित असमंजस में पड़े किन्तु माता जैसे बालकके टेढ़ेमेढ़े हठको पूरा करती है वैसेही महाराजने हँसकर कहा, ठीक हैं। गुसाईने बुटी निकाल कर महाराजके हाथपर रखी। गुसाईने उसे धोकर चिलममें भरकर एवं जलाकर महाराजको पिलाई। इस प्रकार कारण सहित मैंने बुटीकी कथा कही। आप लोक उसका विचार करे (इसीलिये प्रतिज्ञा -वश महाराज चिलम पीते थे।) कुछ दिन गुसाई शेगाँवमे रहा और अपनेको कृतकृत्य मानकर रामेश्वर दर्शनके लिये चला गया। यही कारण है की समर्थको गांजाकी प्रथा पड़ी। किन्तु वह वरके कारण थी ना की व्यसनाधीनताके कारण। महाराज महान विभूती थे। कमलपत्र जैसे जलमें रहकर भी अलिप्त रहता है (पद्मपत्रमिवाम्भसा गीतां) वैसेही महाराज व्यवहारमें रहते हुये भी अलिप्त थे। कभी कभी वे शुद्ध स्वरमे उदात्त -अनुदात्त- स्वरित सहित वेद ऋचाओंका उच्चारण करते थे। कभी उसका नामभी न लेते थे। वेद ऋचाओंको सुनकर वैदिक ब्राह्मण साशंक हो जाते थे और अनुमान करते थे, कि गजानन महाराज ब्राह्मण थे। कभी कभी कसे हुये गायकके समान एकही पद अनेक रागोंमें महाराज गा कर बताते थे। "चंदन चावल बेल की पतीया " इन पदोंपर महाराजको अत्यंत प्रेम था। आनंदमे आकर वे इन पदोंका गायन करते। कभी गणगण का भजन करते, कभी मौन धारण करते और कभी निश्चेष्ट होकर शय्यापर पड़े रहते। कभी पागल जैसे व्यवहार करते। कभी जंगलोंमें भटकते रहते। कभी अचानक किसी घरमें घुस जाते। अस्तु। ।

शेगाँवमें एक जानराव नामक प्रसिद्ध देशमुख रहता था। उसका अन्तिम समय आ गया शरीरमें रोगकी प्रबलता बढ़ गई। वह अत्यंत दुर्बल हो गया। वैद्योंके अनेक प्रयत्न करनेपर भी कुछ लाभ नहीं हुआ। वैद्योने उसकी नाड़ी देखकर सम्बंधीयोंको संकेत कर दिया की इनका बचना असम्भव है। हम लोगोंने बहुत प्रयत्न किये किन्तु उनकी तीलभरभी व्यथा नहीं गई। अब इन्हे निचे कम्बलपर सुला दीजिये यही ठीक होगा। यह सुनकर सगेसंबन्धी अत्यंत दुःखमे डूब

गये। वे लोग कहने लगे हाय-हाय रे दैव! हम लोगोंने कई देव देवता मनाये लेकिन जानरावको उसका कुछ लाभ नहीं हुआ।

आखिर आप हम लोगोंको छोड़ कर जा रहे हो। सब प्रयत्न बेकार गये। वैद्योने हाथ टेक दिये किन्तु एक अंतिम उपाय सुझ रहा है। वह करके देखेंगे। बंकटलालके घर एक साक्षात्कारी साधू है। जिनकी वजहसे शेगाँव पंढरपूर क्षेत्र बन गया है। साधु के मनमें लानेपर उनके लिये कुछ असाध्य नहीं। श्री ज्ञानेश्वर महाराजने सच्चिदानंदको उठाया। जल्दीसे, समय नहीं है जल्दीसे कोई जाकर महाराजसे प्रार्थना करो यह सुनकर एक सम्बन्धी बंकटलालके घर गया और जानराव देशमुखकी अवस्था बतायी। आप कृपा करके महाराजका चरणतीर्थ दीजिये जो जानराव को अमृत सिद्ध होगा। ऐसा हमें लगता है। बंकटलालने कहाँ, यह मेरे बसकी बात नहीं, मेरे पिताजीसे प्रार्थना करिये, तदनुसार उसने भवानीरामजीसे हकीकत बताई। वे बड़े सज्जन थे भवानीरामने तत्काल एक पात्रमे पानी भरकर महाराजके चरणोंको छुवाया और प्रार्थना की, महाराज यह चरणतीर्थ जानराव को देता हूँ। महाराजने गर्दन हिलाकर संमति दिखाई। सम्बन्धीने तीर्थ लेकर जानरावको पिलाया। जिससे उनके गलेकी घुरघुराहट बंद हो गई। उन्होंने किंचित आँखे खोली और हाथ हिलाया। तीर्थके प्रभावसे जानरावकी प्रकृतीमे फरक पड़ने लगा। यह प्रमाण देखकर सारे नर -नारी आनंदित हो गये और सबको सत्पुरुषका अधिकार ज्ञात हुवा। उसके बाद सब औषधियाँ लेना बंद करके केवल तीर्थही लेते रहे, जिससे जानराव आरोग्यसंपन्न हो गये। आठ दिनमे जानराव पहले जैसा स्वस्थ हो गया और भवानीरामके घर महाराजके दर्शनको आया। देखिये, संतचरणतीर्थ साधनद्वारा साक्षात अमृत हो गया। ये केवल संत नहीं अपितु कलियुगके साक्षात देवताही थे। इस कथाको सुननेके बाद सहजतया एक शंका उद्भूत होती है कि संत गजानन महाराज जैसे संत शेगाँवमें रहनेपर कोईभी प्राणी यमलोक नहीं जाना चाहिये।

किन्तु यह कुतर्क है, क्योंकि संत मृत्यूका निवारण नहीं करते, वे प्रकृतिके नियमके अनुसारही आचार करते हैं किंतु आगंतुक संकटोंको जरूर दूर करते हैं। जैसे ज्ञानेश्वर महाराजने मृत्युसे सच्चिदानंद को उठाया किंतु उन्होंने कार्य समाप्तीके बाद आलंदी क्षेत्रमें समाधि ग्रहण की। इसका तात्पर्य इतनाही है कि संत आये हुये गंडातर दूर करते है जो उनके लिये अत्यंत सामान्य वस्तु है। योगेश्वरके लिये कुछ भी असंभव नहीं। आवश्यकता है अनन्य शरण जानेकी और दृढ़ श्रद्धाकी। जैसे गीता के 'समोऽहं सर्वभूतेषु ..... मयिते तेषु चाप्यऽहं॥ ' पर भगवान शंकराचार्यने अपने भाष्यमें कहा है यथा अग्निसमीपस्थानां शीतं निवारयति अर्थात् शीतसे जो पीड़ित होकर अग्निकेपास जाता है उसका शीत निवारण होता, अन्योंका नहीं। वैसेही जो श्रद्धासे अनन्यशरण संतचरणका आश्रय ग्रहण करता है उसे फल मिलता है। अस्तु, सामान्यतः मृत्युके तीन प्रकार है। (१) आधिभौतिक (२) आधिदैविक और (३) आध्यात्मिक। आध्यात्मिक मृत्यू वह है, जो समाधि -ध्यान -भजन भक्ति आदि सैं आत्माका अस्तित्व अपने रूपमें विलीन हो जाता है। उसे टालनेका सवाल नहीं। आधिभौतिक कारण अर्थात् कुपथ्य आचरण -निसर्ग नियम विरुद्धाचरण आदिसे अनेक व्याधियाँ उत्पन्न होकर उनकी प्रबलता होनेपर शरीर छुट जाता है। यदि आयुर्वेद शास्त्रमे तज्ज्ञ वैद्य उत्कृष्ट औषधि तथा तंत्रमे निष्णात हो तो वह इस मृत्यू को टाल सकता है। क्योंकि आयुर्वेद शास्त्रानुसार शतायुर्वैपुरुषः उससे पहले होनेवाला मृत्यू अपमृत्यू -जो टाला जा सकता है। आधिदैविक मृत्यू मानता -मंत्र -जप शान्त्यादि कर्मसे टाला जा सकता है।

ये मृत्यु भी दो प्रकार का है। अचानक गंडातर - और भौतिक। संतोंमें अघटन घटना सामर्थ्य होता है,वे इनको टाल सकते है। जैसे महाराजने जानराव का मृत्यु टाला। किन्तु इसमें श्रद्धा प्रधान है। साधूभी सच्चा होना चाहिये, वेषधारी नहीं। अगर केवल वेषधारी साधु है तो कुछ नहीं कर सकता। जैसे मृत्तिका कस्तुरी नहीं हो सकती। षड्विकार

निवृत्त हुए बिना साधुत्व नहीं प्राप्त होता (काम -क्रोध -लोभ -मोह -आशा और तृष्णा ) और साधुत्वके बिना अघटन घटना सामर्थ्य नहीं प्राप्त होता। पितलका केवल पिला वर्ण देखकर उसे सोना नहीं मानना चाहिये। वैसेही केवल बाह्य साधु वेषसे साधु मानना ठीक नहीं ऐसे बहुरूपियोंसे सावधान रहना चाहिये। श्री गजानन महाराज योगी और साक्षत्कारी थे। यही कारण है कि उनके चरण तीर्थसे जानराव स्वस्थ हो गया।

जानराव स्वस्थ होनेपर उसने बंकटलालके घर भोज का प्रयोजन किया। जानराव देशमुख तो स्वस्थ हो गया, किन्तु महाराजके सामने समस्या खड़ी हो गयी। उन्होंने सोचा, यदि इस प्रकारसे मैं करता रहा तो प्रापंचिक लोग मेरा दुरुपयोग कर सकते हैं। अतः उग्र स्वरूप धारण करना चाहिये। ऐसा सोचकर महाराज उग्र हो गये। कठोरता बरतने लगे। जिससे सर्व सामान्य तो घबरा गये किन्तु अनन्य भक्तोंको कुछ नहीं लगा। जैसे भगवान नरसिंह अवतार धारण करनेपर सब भयभीत हो गये किन्तु बालक प्रल्हादको कुछ नहीं लगा। सिंहनीके शिशु उसके शरीरपर निर्भयतासे उछलकूद करते हैं। उन्हें कोई भय नहीं लगता अन्यजन घबराते हैं।

अस्तु, अब मैं दूसरी कथा कहता हूँ। अगर मिट्टी कस्तुरीके साथ हो तो उसको भी कीमत हो जाती है। चंदन वृक्षके साथ बड़े हुए कंटकयुक्त हिवर वृक्षभी थोड़ा सुगंधित हो जाता है। जहाँ मधुर गन्ना होता है वही मोगरा, पिंगुल और सेहुँडाभी होता है। जहाँ साधुजन होते हैं वही मंदमती भी रहते हैं। हिरा और पत्थर एकसाथ खानमें होते हैं। किन्तु हिरोंके समान पत्थरोंकी किमत नहीं होती। गारगोटी पैरोंसे कुचली जाती है। हिरेकी ऐसी स्थिती कभी नहीं होती। ऐसेही एक मंदबुद्धि पुरुष श्री गजानन महाराजके साथ सेवाधारी करके रहता था। जिसे साधुसेवाका बड़ा भारी अहंकार था। वह उपरसे तो महाराजकी सेवाका भाव बताता, किन्तु अन्तरमें भाव अन्यही था। महाराजके नामपर

मिठाई -पेढ़े आदि जमा करता। सब भक्तोंसे कहता की मेरे बजाय महाराजका कोई काम नहीं होता। मैं महाराजको रामदासजीके कल्याण शिष्यवत हूँ। मेरा वाक्य महाराज कभी खाली नहीं जाने देंगे। उनकी चिलम मैं ही भरता हूँ। भोजनादि व्यवस्था मैंही करता हूँ। मैंही स्वयं उनकी सेवा करता हूँ और उनका प्रिय हूँ। ऐसा वह सब लोगोंको बताता था। और अपनी सरबराई करके प्रतिष्ठित होनेका प्रयत्न करता था। वह मालीजातिका था और उसका नाम था विठोबा घाटोळ। महाराज स्वयं शंकर थे यह उनका नन्दिकेश्वर बन गया और आने जानेवाले भक्तोंपर गुरगुराने लगा। अंतर्ज्ञानसे महाराजने इसका सबकुछ जानकर एकदिन ऐसा कौतुक किया। एक रोज दूसरे गाँवमें कुछ दर्शनार्थी महाराजके दर्शनके लिये शेगाँव आये। महाराज सो रहे थे और किसीको उन्हें जगानेका या बोलनेका साहस नहीं था। उन लोगोने विठोबासे प्रार्थना की। विठोबा, आप महाराजके प्रिय शिष्य हो और धूर्त हो। हमें दर्शन करके जल्दीही गाँव लौटना है। महाराज तो सोये हुये हैं। कृपा करके आप हमारा काम कर दीजिये।

अपनी स्तुती सुनकर विठोबा फूल गया और जाकर महाराजको जगाया। भक्त मंडलीको तो दर्शन मील गये, उनका काम हो गया किंतु विठोबापर भारी संकट आ पड़ा। जैसे कर्म होता है वैसा फल मिलता है। एक बड़ा डंडा महाराजके पास था। महाराजने उठाकर उसकी पीठपर लगा दिया। महाराज कहने लगे, यह माज गया है। अपनी जगह भूल गया। मठमें घंटियाँ बांधकर हमको यह उपाधि लगा रहा है। यह तो स्पष्टतया व्यापार है। तेरेपर कृपा करनेसे मैं भगवानका अपराधी होऊँगा। कहते हैं की सोम को सक्कर समझना ठीक नहीं। विषको कभी पास नहीं रखना चाहिये। चोरको अपने गलेका हार कभी नहीं मानना चाहिये। ऐसा कहकर महाराजने विठोबाको खूब पीटा। सो वह भाग खड़ा हुआ। और पुनः लौटकर कभी नहीं आया। जो सच्चे संत होते हैं वे ऐसाही करते हैं और जो ढोंगी होते हैं वो ऐसे लोगोंके चंगुलमे फस जाते हैं। अधिकार के बिना केवल वेष धारण करके जो बैठते हैं वो वंचक हैं। स्वार्थी लोग उनकी

बढ़ाई करते हैं और असत्य -चमत्कार रचकर लोगोंको बताते हैं। जिससे दोनोंका काम होकर विपुल संपत्ति संग्रह करते हैं। किन्तु धर्मके नामका यह व्यापार ठीक नहीं है। इससे समाज रसातल को पहुँचेगा और धर्मकी हानी होगी। सत्याचरणी संतोंको ऐसे षण्डोंका साथ बिलकुल नहीं चलता। जैसे पतिव्रताको वेश्याका पड़ोस नहीं चलता। सुवर्णको जस्ते के अलंकार कभी नहीं जचते। संत मूर्खोंका पोषण करते हैं किन्तु उसे महत्व नहीं देते। उनके दृष्टिसे पूर्व जन्मके फल कर्म भोगनेके लिये संसारमे एक व्यक्ति आया है। ऐसा सोचकर उसके बारेमें मौन धारण करते हैं। जैसे भूमि अन्य सफल वृक्षोंके साथ सेहुँडकोभी स्थान देती है। मोगरा -सेहुँडा तथा शेर ये सब भूमीपुत्र हैं।

किन्तु इनका मुल्य पृथक पृथक है। मोगरेके संरक्षण के लिये किनारे पर सेहुँड लगाये जाते हैं। ताकी पशु उसकी हानी न करें। काम होनेके बाद उसे जला देते हैं। उसी प्रकार डांस-मच्छरोको दूर करनेके लिये शेरको द्वारपर बांधते हैं। उसी प्रकार संतगण रक्षण सबका करते हैं किन्तु उनके गुणानुसार मूल्य भेद करते हैं। विठोबा घाटोळका दुर्भाग्य की उसे संत चरणोंका सान्निध्य प्राप्त होकर भी दैवशात दूर होना पड़ा अगर वह ढोंग न करता तो उसकी योग्यतानुसार उन्नति जरूर प्राप्त करता। उसने संतोंकी योग्यता नहीं जानी। कल्पवृक्षके नीचे बैठकर गार पत्थरकी कामना की कामधेनु से खपरैला माँगी। इसीलिये मनुष्यको चाहिये की सदैव जागृत रहकर संतकृपा की आकांक्षा करें। यह दासगणू विरचित ग्रंथ सब भाविकोंके भवसागर पार करनेवाला हो ऐसी भगवानचरणमें प्रार्थना है। शुभं भवतु ॥

॥श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

। । इति श्री गजानन विजयग्रन्थस्य तृतीयोऽध्यायः समाप्तः। ।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय ४ ॥

श्री गणेशाय नमः। हे सर्वसाक्षी- सर्वेश्वर नीलकंठ -गंगाधर -महाकाल (काल के भी काल) त्र्यंबकेश्वर - ॐकारेश्वर मुझको दर्शन दीजिये। आप और रुक्मिणीके पती एकही तत्व हो। जैसे जल को तोय कहिये या वारी कहिये उसमे कोई भेद नहीं होता। आपकी स्थिति उसी प्रकार हैं। जैसी जिसकी भावना होती है आप उसे वैसेही दिखते है। जो अनन्य भावसे आराधना करता है उसे आप अवश्य प्राप्त होते है। जैसे माता अपने बालकके लिये कभी कठोर नहीं होती। मैं आपका अज्ञानी बालक हूँ। आप अपनी ममता कम न कीजिये। हे हर ! आप साक्षात कल्पवृक्ष है। मेरी इच्छा पूर्ण कीजिये।

स्वामी समर्थ जब बंकटलालके घर थे तब एक अप्रत्याक्षित घटना घटी। बरार के लोग वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीयाको अक्षयतृतीया (अखातीज इसका अपभ्रष्ट रूप है) कहते है। यहाँके लोग इस दिन श्राद्धपक्ष करके पितरोंको उदक कुंभ देते है। बरारमें यह बड़ा महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है। उस दिन महाराज बालकोमें बैठकर लीला कर रहे थे। गजानन महाराजने बालकोंसे कहा, तुम लोग चिलममें तमाखु भरकर आग ऊपर रखकर मुझे दो। यह सुनकर बालक बड़े आनंदित हुये और तमाखु चिलममे भरकर आगके लिये विचार करने लगे क्योंकि पर्व का दिन था। चूल्हा जलानेको देर थी।

उनकी कठिनाई जानकर बंकटलालने बालकोंसे कहा, अरे अपनी इसी गली में जानकीराम सुनारकी दुकान है। वहाँसे आग ले आओ, क्योंकि सुनारकी दुकानमें पहले अग्नि पेटाये बिना कामही नहीं चलता। यह सुनकर सब बालक दौड़कर जानकीरामकी दुकानपर गये और महाराजकी चिलमके लिये अग्नि माँगा। सुनकर जानकीराम क्रोधित हो गया और बोला, आज अक्षयतृतीयाका दिन है। सनबार के दिन मैं आग नहीं दूँगा। तब बालकोने हाथ जोड़कर कहा, आप यह अव्यवहारिक विचार कैसे कर रहे हो? यह आग गजानन महाराजके चिलमके लिये चाहिये और साधू के कार्यमें अशुभका कहाँ अवसर है? यह तो पुण्यकार्य है। हम लोग तो बालक है। आप प्रौढ व्यक्ति हैं, क्या इतनाभी आप नहीं जानते, जो ऐसी बात कर रहे हैं। यदि आप हमें अग्नि देंगे, जिससे गजानन महाराज चिलम पीकर तृप्त होंगे और आपका कल्याण होगा। किन्तु जानकीरामने कुछ न सुनी। कहावत है कि डूबतेका पैर और खड्डेमें जाता है वह बालकोसे उल्टी सीधी बात करते हुए कहने लगा। अरे गजानन काहेका पुण्यवान और साधु? वह चिलम बहादर है - गांजा -तमाखू पिता है और पागलोंकी तरह गाँवमें नंगा घूमता है -गंदी नालियोंका पानी पीता है। न तो उसकी जातका पता है न कुलका ऐसे व्यक्तिको मैं साधु मानने को तैयार नहीं। बंकटलाल तो बुद्ध है उसके ध्यानमें लगा है। मैं आग नहीं देता, उसकी चिलमके लिये। अगर वो साक्षात्कारी है तो आग माँगनेकी क्या जरूरत है। अपने शक्तिसे आग क्यों नहीं लगा लेता। जालंधरनाथ चिलम पीते थे किन्तु आगके लिये वे घर घर नहीं घूमे। जाव, यहाँ खड़े मत रहो, मैं आग नहीं दूँगा। मेरी नजरमें उस पागलकी कोई कीमत नहीं। सब बालक म्लान मुख उदास होकर महाराजके पास आये और जो वार्तालाप हुआ था महाराजको सब सुनाया।

महाराज यह सुनकर बंकटलालसे बोले, बंकटलाल चिलमपर काडी पकड़ो। सुनकर बंकटलालने कहा। महाराज काडी घसकर मैं चिलम जला देता हु, बगैर घसे काडी पेटती नहीं। और अग्नि नहीं होता। सुनकर महाराजने कहा, बकबक

मत करो, जितना कहता हूँ वो करो, काडी बगैर घिसे चिलम पर पकड़ो। महाराजकी आज्ञा मानकर बंकटलालने वैसाही किया। चिलमपर काडी ऊपर पकड़ी तो श्रोतागण, क्या चमत्कार हुआ सुनो -काडी चिलमपर पकड़तेही अग्निनारायण चिलममे प्रगट हो गये। चिलम जल गई। और आश्चर्य यह की काडी जैसी की वैसी रही जली नहीं। यह साक्षात शक्ति है। केवल पाखंड नहीं। इसको साधुत्व कहते है। अब जानकीराम सुनारके घर क्या हुआ सो सुनो।

बरार मे अक्षयतृतीयाको और पकवानोंके साथ एक -इमली -गुड , इलायची आदि डालकर चिंचवणी नामका सार बनाया जाता है। प्रायः उसके साथ और पकवानोंके पूरणकी पुड़ियाँ बनती है। वे इसीसे खाते है। जानकीरामके वहाँ यह चिंचवणी बनाई गई थी। जैसे वर्ष प्रतिपदा को निम पन्नोंका महत्व होता है वैसेही अक्षयतृतीयाको इस चिंचवणीका महत्व है। दोपहरमे जब सुनारके यहाँ भोजनके लिये पंक्तियाँ बैठीं। सब पत्तले परोसी गई और द्रोणोंमे यह चिंचवणी भी परोसे गई। आश्चर्यकी बात ऐही कीं चिंचवणी के द्रोणोंमे अल्लीयाँ और असंख्य कीटक बुजबुजाते दिखने लगे। जिससे लोगोंको बड़ी घृणा हुई और लोग तुरंत उठकर चले गये। सारा अन्न व्यर्थ हो गया। सब देखकर जानकीराम सुनार अधोवदन होकर खिन्न मनसे सोचने लगा। ऐसा क्यों हुआ?

केवल अन्नही नहीं व्यर्थ हुआ। किन्तु पितरोंका श्राध्द -उपोषित हुआ। उसने अनुमान लगाया की महाराज की चिलम को अग्नि मैंने नकारा और बुरा भला कहा उसीका यह फल है। इसकेलिये मैंही दोषी हूँ। बंकटलालने उसका समाधान करते हुए समझाया कि आपने जो इमली ली शायद उसके बीज कीडेवाले होंगे। सुनकर जानकीरामने कहां, शेठजी, आप ऐसा कैसे कहते हैं? मैंने नई और शुद्ध इमली ली थी। बीज अभीभी कूड़े में पड़े है, देख लीजिये कहीं कीटकका नाम नहीं। अब आप ऐसा करें कि मुझे महाराजके पास ले चलिये, मैं चरण पकड़कर अपराधके लिये क्षमा माँगना

चाहता हूँ। संत दयाघन होते हैं, मुझे अवश्य क्षमा करेंगे। ऐसा कहकर जानकीराम डरते डरते महाराजके पास गया। उनके चरणोंमें साक्षात दंडवत करते बोला, दयाघन, मैंने बड़ा अपराध किया है। अनेक अपराध किये हैं। आप मुझे क्षमा कीजिये। आप साक्षात पार्वतीपति भगवान शंकर हैं। जो मेरा भ्रम था उसका आज निवारण हो गया। मेरे अपराध तृणोको आप अपनी कृपाऽग्निसे भस्म कीजिये। इसके बाद मैं कभी अवहेलना नहीं करूँगा। जितना दंड आज दिया है उतनाही बस है। आप अनाथोंके नाथ हैं मुझपर कृपा कीजिये, मेरा अंत न देखिये। यह सुनकर महाराज बोले, 'अरे तील प्रमाणभी झूठ मत बोल। तुम्हारे उस चिंचवणी सारमे कहाँ कीड़े हैं? वह तो मधुर और उत्तम स्वादिष्ट है। अकारण हमपर दोष मढ़ता है।' सुनकर लोगोंने जाकर पात्र देखा तो सार स्वच्छ और कीटक रहित था। पहला दृश्य एकदम बदल चुका था। शामका समय हो गया था। यह आश्चर्यकारक वृत्त वायू समान सब गाँव में फैल गया, जैसे कस्तुरीका सुवास फैल जाता है।

जिस उसके मुँहसे यह चमत्कारिक समाचार कथन किया जा रहा था। शेगाँव में चंदु मुकीन नामका एक समर्थका परम भक्त था। जेठका महिना था। अनेक भक्त महाराजके चारो ओर बैठे थे। कोई आम काट रहा था। कोई आमकी फाँके महाराज के हाथपर दे रहे थे। कुछ हाथ जोड़े महाराजके पदकमलोंमे दृष्टि लगाये बैठे थे। कोई मिश्रीका प्रसाद बाँट रहे थे। कोई महाराजके गलेमें पुष्पहार पहना रहे थे। कोई महाराजके अंगमे चंदनका लेप लगा रहे थे। तब महाराजने चंदूसे कहा, मुझे ये आम नहीं चाहिये। तेरे घरमें मटके में दो गुझीया हैं सो लाकर दे। तब चंदू हाथ जोड़कर बोला, महाराज! इस समय गुझीया काहे की? अगर इच्छा हो तो मैं नये तलकर ले आता हूँ। महाराज ने कहा, अरे मुझे ताजे नहीं चाहिये जो है वो लाओ। बिना कामके समय व्यर्थमें मत बिता, बहाने मत बना - गुरुसे झूठ नहीं बोलना चाहिये। अन्य लोगोने चंदू से कहाँ अरे, जाकर घरमें देखो, महाराज कह रहे हैं वह झूठ नहीं होता।

चंदू अपने घर जाकर पत्निसे पूछने लगा, अरे ! घरमे गुझियाँ है क्या? उसकी पत्नीने कहा मैंने अक्षयतृतीयाको गुझियाँ बनाई थीं वह उसी रोज समाप्त हो गई। इस बातको एक महीना बीत गया। अब घरमे गुझियाँ कहांसे रहेगी? लेकिन अपने घरमे गुझियाँका सामान सिद्ध है, मैं झटसे ताजे तैयार कर देती हूँ। तब चंदू ने कहा, महाराज को ताजी गुझियाँ नहीं चाहिये। मटकोंकी चढ़ान में जो रखी है वह चाहिये। सुनकर उसने कुछ स्मरण कर कहा। महाराजकी वाणी सत्य है, दो गुझियाँ बची थी। सो मैंने मटकेमें रख दी और इस बातका मुझे बिलकुल स्मरण नहीं रहा। ऐसा कहकर उसने मटकोंकी चढ़ान उतारकर ढूँढना शुरू किया। आश्चर्यकी बात ये कि एक बीचके मटकेमें दो गुझियाँ रखी पायी, जो किंचित सुख गई थी किन्तु विकृत नहीं हुई थी। उनमे बुरशी इत्यादि नहीं लगी थी। सत्य, है, संतोंकी बाते कभी व्यर्थ नहीं होती। गुझियाँ पाकर पति पत्नि दोनों बड़े हर्षित हुए। और कहने लगे, वस्तुतः ये सर्वज्ञ योगीराज है। चंदूने वो दोनों गुझियाँ लाई और महाराजने बड़े प्रेमसे खाई। जैसे भगवान रामने शबरी भिल्लीनीके बेर खाये थे। यह लीला देखकर सब लोग कहने लगे कि महाराज त्रिकालज्ञानी है। उन्हें भूत -भविष्य -वर्तमान सब पता लगता है। शेगाँवसे दक्षिण में चिंचोली नामक एक छोटासा देहात है। उस गाँवका रहनेवाला माधव नामक एक ब्राह्मण था। तरुणावस्थामे प्रपंचही उसका दैवत था। प्रारब्धके आगे कोई नहीं जा पाता। जैसे विधी लेख होता है वही होता है। माधवके पत्नि पुत्रादि परलोक सिधार गये, उसके पास कोई नहीं बचा। जिससे उद्विग्न हो वह संसारसे विरक्त हो गया। उसने सारी वस्तुए बेच डाली और विचार करने लगा कि युवावस्थामे मैं संसारमें व्यग्र रहा। दीनबंधो आपका स्मरण कभी नहीं किया। अब सब संसार शांत हो गया। अब आपके बिना मेरा रक्षण कौन करता है? ऐसा पश्चाताप दग्ध होकर वह शेगाँव आया और गजानन महाराजके द्वारपर हठ करके बैठ गया। मुँहसे नारायण नामका स्मरण करते हुये उसने अन्नजल छोड़कर उपवास करना प्रारंभ कर दिया। इस अवस्थामें एक दिन बीत गया। महाराजने उसे वैसा करनेसे रोकनेका प्रयत्न किया और कहाँ ऐसा करना ठीक नहीं है। यही नारायणका नाम पहले क्यों नहीं

स्मरण किया? प्राण निकल जानेपर वैद्य बुलाकर कोई लाभ नहीं। तारुण्य अवस्थामे ब्रह्मचर्यका पालन कर वृद्धावस्थामें स्त्री करनेसे कोई लाभ नहीं। जो जिस समय करना है वह उसी समय करना चाहिये। घर जलनेपर कुवाँ खोदनेसे क्या लाभ? जिस कन्या पुत्रोंके लिये आजन्म पचते रहे, अन्तमें वो सब तुम्हे छोड़कर चले गये। शाश्वतको छोड़कर अशाश्वतका परिपोष करता रहा, अब कृत कर्मका फल तो तुम्हें भुगतना ही पड़ेगा। यह सुनकर भी माधवने हठ नहीं छोड़ा। लोगोंके उसे उपवाससे पराङ्मुख करनेके सब प्रयत्न व्यर्थ हो गये। कुलकर्णी नामक एक सज्जनने भी घर ले जाकर भोजन करानेका प्रयत्न किया किन्तु माधवने किसी की न सुनी। वह नारायण स्मरण करते वही डटा रहा। इस अवस्थामें रातके दोप्रहर बीत गये। आकाश अंधकारसे आच्छादित हो गया। रात्री का डरावना ध्वनि होने लगा। पासमें कोई नहीं है ऐसा देखकर महाराज ने एक कौतुक किया। यमसदृश भयानक रूप धारण कर वे माधवकी ओर मुख पसार कर दौड़े। वह देखकर माधव जीव लेकर डरकर भागा। मुँहमे फेस आ गया, शब्द नहीं फूटता था, ऐसा देखकर महाराज सौम्य रूपमें आकर माधवसे बोले, अरे क्या यही तुम्हारा धैर्य है। तुम काल के भक्ष्य हो, ऐसे ही तुम्हे काल खायेगा। यह मैंने केवल आगामी संकेत मात्र बताया। तब माधवने कहा, ' भगवान ! अब यमलोककी वार्ता न करिये, मुझे वहाँ जानेसे बचाईये, वैकुंठ लोक में भेजिये। मेरे पातक राशीको भस्म करना आपके लिये असम्भव नहीं। जब पूर्वजन्मके पुण्य उदय होता है तभी संत समागम होता है। तब महाराजने हँसकर कहाँ, "माधव ! तुम्हारा अंतकाल समीप आया है। नारायण -नारायण भजो। असावधान मत रहो। अगर चाहते हो तो मैं तुम्हारी आयू बढ़ा देता हूँ। सुनकर माधवने कहा दयाघन आयू बढ़ाकर पुनः इसी लौकीक प्रपंचमे मुझे न ढकेलिये। महाराजने कहा, "तथास्तु, जो तुम चाहते हो वही होगा, अब तुम इस भूमीपर पुनः जन्म नहीं लोगे'।

यह गुप्त संवाद हुआ, जिसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। माधव इहलोकके पुरे कार्योसे विरक्त हो गया। सो लोग उपवासके कारण यह उन्मत्त हो गया ऐसा कहने लगे। माधवका देहावसान हो गया और वह समर्थ सन्निधि तथा उनके वरदानसे मुक्त हो गया। एक बार महाराज अपने शिष्योंसे बोले, की वैदिक ब्राह्मणोंको बुलाकर यहाँ मंत्रघोष करवाओ। जिससे देवाधिदेव प्रसन्न होते हैं। कैरीका पना -पेड़ा -बरफी -खोवा -भीजी -नमकयुक्त -चनादाल इसका उपहार देकर एक एक रूपीया दक्षिणा दो। ब्राह्मण धनपाठी होने चाहिये। सुनकर शिष्योंने कहा," महाराज, शेगाँवमें वैदिक ब्राह्मण नहीं है। आप कहेंगे सो खर्चा हम करने को तैयार है किन्तु ब्राह्मण मिलना मुश्किल है। यह सुनकर महाराज बोले," आप लोग तैयारी करिये, भगवान ब्राह्मण भेज देंगे।' यह सब बड़े प्रसन्न हुए और थोड़ी देरमें सौ रूपया जमा हो गया। उन्होंने सब सामान लाया चंदन घीसकर केशर मिलाई। कपूर मिलाया। सामान्यतः दो प्रहर के समय ब्राह्मण आये, जो पद -पाठ -जटा -घनपाठ जानते थे। बड़े वैभवपूर्वक वसंतपूजा की गई। ब्राह्मणोने वेद पाठ किया -दक्षिणा पाकर आनंदित हो कर अन्य ग्राम गये। जो भी संतके मनमे आता वह सब पूर्ण होता है। ऐसा संतोंका प्रभाव है, बंकटलाल तथा उसके वंशज आज भी यह उपक्रम शेगाँवमें कर रहे हैं। यह दासगणू विरचितग्रंथ साधकोंको शुद्ध हरिभक्ति मार्ग प्रदर्शित करे; यह प्रार्थना।

॥ शुभं भवतु ॥ श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्री गजानन विजय ग्रन्थस्य चतुर्थोऽध्याय समाप्त ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय ५ ॥

श्री गणेशाय नमः। हे अज (जो जन्मता नहीं) अजित अव्दय (सर्वत्र व्याप्त, जिसके सिवा दुसरा तत्व नहीं) सच्चिदानंद-करुणाके धाम दासगणू आपकी चरणवन्दना करता है, उसे अभय करो। हे देवाधिदेव। मैं दीन-हीन तथा पापी हूँ मुझे किसी प्रकारका अधिकार नहीं। सब तरहसे दुर्बल हूँ। किन्तू जो अत्यंत हीन होते हैं श्रेष्ठ लोग उन्हीपर कृपा करते हैं। देखिये अत्यंत हीन जो विभूति (भस्म) है उसे शंकर शरीरपर धारण करते हैं। सो हीन जनोंकी हीनता श्रेष्ठोंको न्यूनता नहीं लाती। वह उनका विभूषण बन जाती है। जैसे भगवान शंकरके शरीर की विभूति उनको भूषण स्वरूप है (उनके अंगपर होनेसे) वैसे ही आप इस दासगणूको अपने संग्रहमें रखिये। जैसे माता बालकके सब लाड़ पुरे करती है वैसेही दासगणूका सब बोझ आपके सिरपर है। आपको जैसा करना हो वैसा करिये। क्योंकि मैं तो आपपर ही निर्भर हूँ किंतु दयाघन मेरे प्रति मनमें दया रखिये। आप के भरोंसे ही मैं कूदता हूँ। महाराजके शेगाँवमें रहनेपर रोज नित नई यात्रा जमा होने लगी जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। महाराजकी महिमा अपार रूपसे बढ़ गयी। अर्थात् योगेश्वर को यह उपाधि ही थी। कोई भी सच्चा साधू-लौकिक उपाधि में नहीं फँसता। ऐसा विचार कर उसे दूर करनेके लिये महाराज जंगलोमें भटकने लगे।

महिना-महिना बाहर रहते। कही भी बैठकर एकान्तमें समय बिताते अपना परिचय किसीको न लगने देते। श्रोतागण ऐसे ही भटकते हुए एक बार महाराज पिंपलगाँव पहुँचे। वहाँका वृत्तान्त आप लोग सुने। पिंपलगाँवके बाहर जंगलमें एक हेमाडपंथी -धर्तीका पुराना शिवालय था। उस मंदिरके गर्भगृहमें महाराज पद्मासन लगाकर बैठ गये। गाँवके चरवाहे अपनी अपनी गौएँ लेकर अस्त समय गाँवको लौटने लगे। मंदिरके पास एक छोटासा झरना बहता था। जिसमें

सभी पशू जल पीते थे। गौएँ जल पी रही थीं सो कुछ चरवाहे भगवान शिव के दर्शनार्थ मंदिरमें गये। वहाँपर पद्मासनमें समाधिस्थ तेजपुंज महाराजको देखकर आश्चर्यचकित हो गये। अस्त के समय इसप्रकार कोई योगी इन गोपशिशुओंने कभी नहीं देखा था। सो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उनमेंसे कुछ बाहर आकर अपने साथियोंको बुलाने लगे। कुछ महाराजके सामने बैठ गये। यह साधू न तो आँखे खोलता है, न बोलता है, जिसका कारण गोप बालक न समझ पाये। कुछ कहने लगे यह अत्यंत श्रमीत हो गया है और दुर्बल हो गया है, यही कारण है की आँखे बंद करके क्लान्त बैठा है। कुछ कहने लगे कि, कई दिनोंसे यह क्षुधाक्रान्त है, सो हम लोगोंको इन्हे थोड़ी रोटी खिलानी चाहिये। कहकर महाराज के मुखके सामने कौर देने लगे, किन्तु महाराज किसी प्रकार की हलचल नहीं कर रहे थे। कुछ बोले भी नहीं, देखकर चरवाहे बालक बड़े असमंजसे पड़ गये। तर्क करने लगे कि अगर मृत माने तो शरीर गरम है, श्वास चल रही है, बैठे स्थिती में है। कुछ कहने लगे, हो सकता है ये कोई मायावी पिशाच हो, तब अन्य जनोंने प्रतिकार किया कि शिवमंदिरमे पिशाच कैसे आ सकता है ?

कई कहने लगे अरे यह स्वर्गलोकसे कोई देवता यहाँपर प्रकट हुआ है! हम लोगोंको इनका पूजन करना चाहिये। जाकर झरनेका जल ले आओ। सुनकर कुछ गोपबालक जल लाने को गये। और खपरैल में पानी लाकर महाराजके चरणोंपर बड़े भावसे डाला। कुछ बालकोंने वन्य पुष्प लाकर माला गूँथकर गलेमें डाली। कुछने प्याज और रोटी वटपत्र पर सामने रखी। सबने नमस्कार करके सामने बैठकर भजन किया। इसप्रकार आनंदोत्सव करते हुए एक चरवाहेने कहा, "भाई, अब सूर्यास्त हो गया है, सो घर चलना चाहिये, क्योंकि इतनी देर हो गई, फिरभी पशुओंको लेकर चरवाहे क्यों नहीं आये ऐसा तर्क ग्रामस्थ करेंगे। हम लोग यह समाचार गाँवके बड़े बुढ़ोंको बतायेंगे जिससे सत्यका पता लगेगा। ऐसा विचार कर चरवाहे गाँवमें गये और सब लोगोंसे वृतांत कहा। श्रोतागण प्रातःकाल गाँवके लोग चरवाहोंके

साथ महाराजको देखने शिवमंदिर पर आये। महाराज जैसे कल बैठे थे उसी स्थितिमें आज भी बैठे हैं। अन्नको बिलकुल स्पर्श नहीं किया है उनमेंसे कुछ बोले, ये योगी है, शिवमंदिरमें बैठे हैं, चलिये इन्हे त्रस्त करना ठीक नहीं। कुछ बोले, अरे भाई ये साक्षात् भगवान शंकर पिंडसे बाहर हमें दर्शन देनेको प्रगट हुए हैं, यह हमारा महत्भाग्य है। चलिये इन्हे गाँवमें ले चलते हैं। जब इनका समाधीसे उत्थान होगा तब ये अवश्य बोलेंगे। बंगाल देशमें जालंदारनाथ बारह वर्षतक कूपकी गर्तमें समाधिस्थ थे (नवनाथ भक्तिसार में कथा है कि जालंदरनाथको बंगाल देशके राजा गोपीचंदने कुएँ में तोप दिया था। बारह वर्ष बाद उन्हे निकाला गया)

इस प्रकार हा ना करते हुए एक पालकी लाई गई, उसमें महाराजको उठाकर बिठाया गया। बड़े उत्साहके साथ बजनीयाँ बजाते हुए अबीर-गुलाल उड़ाते हुए उसीप्रकार ग्रामस्थ नर-नारी तुलसीपत्र। पुष्प अर्पण करते हुए घंटी घड़ियाल शंख नाद करते हुए योगीराजकी जय हो, का उद्घोष करते हुए सब लोग महाराजको हनुमानजीके मंदिरमें ले आये। महाराजका शरीर गुलालसे लाल हो गया था। महाराजको बड़े थाटसे मंदिरमें एक आसनपर बिठाया गया। यह सब होने तक महाराजकी समाधि लगी ही थी। उन्होंने जाना की, महाराज योगियोंके मुकुटमणी सद्गुरु मूर्तिरूप हैं। सब लोग चरणरत होने लगे। नैवेद्य चढ़ानेकी धूम मची। अनेक पात्र परोसकर लाये गये। महाराज शरीरमें उतरे और चैतन्यमय वातावरण हो गया। महाराजने अन्न ग्रहण किया। आसपास के गाँवोंमें भी यह वार्ता फैल गई। मंगलवारको शेगाँव का बजार लगता है, सो करिबन सब देहातोंसे लोग यहाँ आते हैं। पिंपलगाँव के लोग भी यहाँ आये और अपने गाँव का महाराज विषयक समाचार यहाँ सुनाया। बताया कि साक्षात् श्रीहरी एक योगी अवलीया हमारे गाँवमें आया है। हम लोग अब उन्हें कही जाने न देंगे। सारे बजार में यह समाचार फैल गया। बंकटलालको जब यह पता चला तो वह सपत्निक पिंपलगाँव गये और हाथ जोड़कर अनेक प्रकारकी प्रार्थना करने लगे। 'अभी आता

हूँ बोलकर भगवान आप चले आये, जिसको पंद्रहदिन बीत गये। गुरुदेव आपके बिना घर सूना-सूना लगता है। शेगाँवके सब लोग चिंतित हो गये हैं।

मैं गाड़ी लाया हूँ, उसमें बैठकर आप चलिये -माता पुत्र का बिछोड न करिये। आपका नित्यदर्शन करनेवाले भाविक जन -उपवास कर रहे हैं। आप अगर शेगाँव नहीं चलेंगे तो मैं यही शरीर त्याग करूँगा। बंकटलालके ऐसा कहने पर महाराज गाड़ीपर बैठकर शेगाँव के लिये चले। जैसे भगवान कृष्ण को लेकर ब्रजसे अक्रुर चलनेपर सारे ब्रजवासी व्यथित और दुःखी हुये थें। वैसेही महाराजको बंकटलाल शेगाँव लाने लगे। तो पिंपलगाँवके लोग दुःखी हुये। तब बंकटलालने उन्हें समझाया कि महाराज शेगाँवमे ही है, आप लोग दर्शनार्थ कभी भी आ सकते हैं। इस अमूल्य मूर्ति को जहाँकी वहाँ रहने दो, हटाओ मत। बंकटलाल पिंपलगाँवके साहूकार भी थे, इसी कारण किसीको भी उनको रोकने का साहस नहीं हुआ। गाडीमें महाराज बंकटलाल से कहने लगे, 'अरे, तेरी यह अच्छी साहुकारी है। दूसरेकी धरोहर जबरदस्ती अपने घर ले जाते हो। मुझे तो तुम्हारे घर आने मे डर प्रतीत होता है। क्योंकि लोकमाता लक्ष्मी -जो भगवान विष्णुकी पत्नी है, जिसकी सत्ता अगाध-अतर्क्य है उसको भी घरमे बंद कर रखा है सो मेरी क्या गति? इस प्रकार जगदंबा का हाल देखकर मैं भाग खडा हुआ" । यह सुनकर बंकटलाल हँस पड़े और बड़ी नम्रतासे बोले,"महाराज, मेरे कुलुपसे माता डरी नहीं, आपका निवास वहाँ है इसलिये वहाँ स्थिर है। अन्यथा मेरी क्या गिनती। जहाँ बालक वहाँ माता होती ही है, दूसरे का वहाँ ठिकाना कैसे। आपके चरणोंके आगे मुझे धनकी कोई परवाह नहीं, ये चरणकमलही मेरा श्रेष्ठ धन है। इसीलिये यहाँ आया। अब यह घर मेरा नहीं सर्वस्व आपका है, आप उसके स्वामी है और स्वामीको सेवक कैसे रोक सकता है ?

मेरी इतनीही प्रार्थना है कि गौ कानन में चरने जाती है किन्तु सायं समय आने बछड़ेके लिये पुनः घर आती है। ऐसाही आप करिये कही भी जाईये किंतु शेगाँवको न बिसारिये। इसप्रकार प्रार्थना करके बंकटलाल महाराजको शेगाँव ले आया।

महाराज कुछ दिन शेगाँव में रहे और एक दिन फिर वो निकल पड़े। बरारमे अड़गाँव नाम का देहात है। महाराज वहाँ जानेके लिये चल पड़े। शेगाँव वासीयोंकी नजर बचाकर प्रातः ही चल पड़े। महाराजकी गती वायूके समान थी। उनकी गति देखकर साक्षात हनुमानजी पुनः अवतरित हुये क्या ऐसा प्रतीत होता था। वह वैशाखका महीना था। भगवान सूर्य सोलह कलाओंसे तप रहे थे। इस प्रचंड तापसे कहीं भी जल का अवशेष नहीं था। मध्यान्हके समयमें महाराज अकोली नामक एक देहात के पास पहुँचे। इन लोग योगेश्वरकी यह लीला आप लोग सुने। महाराज को तृषा लगी, सो उन्होंने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, किन्तु जल का कहीं पता नहीं था। जलके बिना महाराजके होंठ सुख गये। सब शरीर चलनेकी वजहसे स्वेद धारों से गीला हो गया। ऐसी दुपहरीं में वहाँ भास्कर नामक किसान अपने खेतमें काम कर रहा था। किसान की स्थिति देखकर ऐसा लग रहा था कि, किसानही सब जगतका अन्नदाता है। यह श्रेष्ठ होते हुए भी अपार यातना सहता है। आतप -वर्षा -शीत ऋतुओंकी यातनाएँ सहकर वह कृषि संपन्न करता है। इस अकोलीके आसपास जलका बड़ा दुर्भिक्ष था। भास्करने पीनेके लिये एक मटका भरकर घरसे लाया था, तथा एक वृक्षकी छाँवमें रखा था। वहाँ महाराज पहुँचे और भास्करसे बोले।

मुझे बड़ी तृष्णा लगी है, सो पीनेके लिये जल दे, नहीं न बोलना। पानीके बिना प्राण रक्षण होना बड़ा कठिन होता है, इसीलिये जलदान महान पुण्यकारक माना जाता है। यह सुनकर भास्करने कहा। तुम जैसे धष्टपुष्टको जल पिलाना

काहेका पुण्य है? यदि अनाथ है -पंगु है -दीन है, तो बात अलग। जो समाजहितके लिये कुछ कार्य करता है उसे सहाय करना ठिक है। तुम जैसे धष्टपुष्टको जल देना उलटा पाप है। भूतदयाके तत्वको पालनेके लिये क्या कोई साँप का पोषण करता है? अथवा चोर को क्या कोई घरमें जगह देता है। तुमने भीक माँगकर अपना शरीर पुष्ट किया है। कुछ परिश्रम न करके खानेवाले तुम इस धराको भारभूत हो। मैंने अपने पीनेके लिये सिरपर मटका ढोकर लाया है। तुम्हारे जैसे निठल्लोके लिये नहीं। पीसे पिसानपर लकीर न मारो यहाँसे चलते पड़ो। अरे चांडाल, यहाँसे अपना मूँह काला करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना से झुकने वाला नहीं। तुम्हारे जैसे निकम्मेने हमारे यहाँ जन्म लिया इसलिये सारे जगत में हम लोग दुर्भागी हो गये। भास्करका व्याख्यान श्रवण कर महाराज स्मित वदन कर यहाँसे चल दिये। थोड़ी दूरीपर एक कुआँ था, उसकी ओर महाराज जब चल पड़े तो भास्कर बोला," अरे पागल, उधर किसलिये जा रहा है, वह कुआँ सूखा पड़ा है, जलका नाम नहीं। यहाँसे एक कोसके इर्दगिर्द कहींपर भी जल नहीं है। सुनकर महाराज बोले, 'तुम जो कहते हो सो ठीक है, फिरभी मैं प्रयत्न करता हूँ। तुम्हारे जैसे बुद्धिमान यदि जलके लिये त्रस्त हैं। तो हमसे स्वस्थ कैसे बैठा जा सकता है? यदि कर्ताका हेतू शुद्ध हो तो जगन्नियंता परमेश्वर सहाय करते हैं।

और फिर समाज के लिये कुछ मुझे करना चाहिये ऐसा अभी ही तुमने कहा' । कहकर महाराज कुएँके पास आये, जिसमें जलका एक बूँद भी नहीं था। यह देखकर वृक्षके नीचे एक पत्थर पर हताश जैसे बैठ गये। आँख मूंदकर ध्यानस्थ बैठकर भगवान विष्णुका स्मरण करने लगे। जो जो सच्चिदानंद है, दयाघन है। दिनोंका उद्धार करनेवाले तथा जगद्गुरु है? ( ससर्वेषांगुरुकालेनऽवच्छेदात्) समर्थ कहने लगे, 'हे देवाधि देव वामन वासुदेव -प्रद्युम्न -राघव - विठ्ठल -नरहरी यह अकोली गाँव जलके अभावसे त्रस्त है। किसीभी कुएँमें गीलापन भी नहीं है। भगवन, मानवी प्रयत्न

सब असफल हो गये। इसीलिये आपकी प्रार्थना कर रहा हूँ। इस कुँको पानी दीजिये। आपकी करनी अघटन घटना परियसी है। जो घट नहीं सकता वह भी आपकी कृपासे घट जाता है। जलते आम्रवृक्षमें हे पांडुरंग, आपने बिल्लीके शिशुओंका रक्षण किया। भक्त प्रल्हादका रक्षण करनेके लिये आप स्तंभसे प्रगट हो गये। गोकुलके गौवोंका रक्षण करनेके लिये आपने बारां गाँवका अग्निपान किया। इन्द्रके कोपसे बचाने के लिये नखाग्रपर आपने गोवर्धन पर्वत धारण किया। थानेदार दामजीपंतको छुड़ानेके लिये आपने विठु महारका रूप धारण किया। चोखामेलाके लिये ढोर खींचे। सावता मालीके खेतोंकी रक्षा करनेके लिये आपने गध्दे हाँके। उपमन्यूको दूधका सागर प्रदान किया, उसी प्रकार नामदेवको मारवाड़मे तृषा लगी तो सूखे कुँमें जल भर दिया। महाराज इसप्रकार प्रार्थना कर रहे थे कि महान आश्चर्य हुआ। कुँमें झरना फट पड़ा और क्षणभरमें कुआ जलसे परिपूर्ण हो गया। जिसके जगन्नाथ सहाय होते हैं उसके लिये क्या नहीं होता।

सत्य है कि ईश्वरी सत्ता अगाध है। अघटन घटना घट सकती है। उछलता जल महाराज पीकर तृप्त हुए। जो भास्कर ने देखा, जिससे उसका चित्त चकित हो गया। उसका तर्क नहीं चल रहा था। जो कुआँ बारह वर्षसे सूखा पडा था उसे इन्होंने क्षणभर में जलपूर्ण कर दिया- हो न हो ये महान साक्षात्कारी पुरुष है। कृषिका काम छोड़कर भास्कर वहाँ दौड़ते आया और महाराजके चरण कमल दृढतासे पकड़कर प्रार्थना करने लगा। हे मानव शरीर धारी भगवान! मैं आपका अबोध शिशु हूँ। मुझे क्षमा करो, आपके प्रभावसे अनभिज्ञ मैंने आपको बहुत कुछ भलाबुरा कहा। सो कृपानिधान वो मेरे अपराध कृपा करके क्षमा करिये। गोपीओंके कटु वचन भगवान कृष्णने ध्यानमें न लिये। आपके बाह्य वेषसे मैं ठग गया। जिसका प्रत्यक्ष कृति द्वारा आपने भ्रम निरास किया। हे सद्गुरुनाथ अब मैं ये चरण नहीं छोड़ूंगा यह सब प्रपंच मिथ्या है। आज मुझे यह पता लगा, अब इस अज्ञानी बालकको दूर न कीजिये। सुनकर महाराज बोले, 'अरे

अब दुःखी होनेका कारण नहीं पीने के पानी के लिये सिरपर ढोकर मटका लाने की आवश्यकता नहीं। तुम्हारी आवश्यकताके लिये यह जल यहाँ निर्माण किया। अब प्रपंच किसलिये छोड़ते हो। इस कुएँसे बाग निर्माण करो, भरपूर जल है। सुनकर भास्कर बोला 'भगवान' अब यह लोभ मुझे न लगाओ। मेरा निश्चय ही कुआँ है, सो सूखा पड़ा था, आपकी कृपासे आपने उसे साक्षात्कार रूपी सुरंग लगाकर फोड़ दिया, वह फूटकर उसमेसे भाव रूपी जल बहने लगा। सो अब मैं बाग अवश्य लगाऊंगा, लेकिन भक्ति का जिसमें वृत्तिरूपी -भूमि सन्नितीरूपी फलके वृक्ष लगाऊंगा।

सत्कर्म यही उसके पुष्पवृक्ष होंगे, जो नित्य होंगे। यह क्षणिक बाग अब मुझे नहीं चाहिये। श्रोतागण, अब आप लोग संगति लाइये। भास्कर को केवल एक क्षणकी संतसंगतीसे उसका उदधार हो गया, जीवन सफल हो गया, सच्चे साधुओंकी संगति सब बंधनोंसे श्रेष्ठ है। जैसे तुकाराम महाराजने कहा है, संत चरणरज अभंग में, अपने हितके लिये उस अभंगका मनन -चिंतन करिये। पानी लगानेके बाद सब लोग महाराजके दर्शनके लिये दौड़ पड़े। जैसे मधु मक्षिका मधुके लिये दौड़ती है और शक्कर कणके लिये चिटीयाँ दौड़ती है, वैसेही साधूके लिये जन समुदाय दौड़े। बड़ा जनसमुदाय वहाँ आया और कूपजल पीकर देखा, जो निर्मल -शीतल और अमृतके समान मधुर था। सब लोग गजानन महाराजका जयजयकार करने लगे। पश्चात गजानन महाराज भास्करके साथ आगे अड़गाँव न जाकर शेगाँव में लौट आये। श्रीगजानन महाराज सिद्धयोगी थे।

स्वस्ती यह गजानन विजयग्रंथ जगतके लिये संतमहिमा जतानेका आदर्शभूत हो

॥शुभं भवतु। श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्री गजानन विजयग्रन्थस्य पंचमोऽध्यायः समाप्तः ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय ६ ॥

श्री गणेशाय नमः। हे परमंगल श्रीहरी आपकी कृपा होने पार सारे अशुभ दूर होते हैं ऐसा संतोका अनुभव है । उन संतोके वचनोंपर विश्वास धारण कर मैं मंगल कामनासे आपके द्वार पार आया हूँ। यदि आप मुझे विन्मुख लौटाते हैं तो उसमें आपको दोष तो लगेगा ही किंतु संत वचन मिथ्या होनेका दोष होगा। अतः हे माधव (मा- लक्ष्मी उनके पति) आप मेरा अभिमान धारण करके अज्ञानी बालक पर रुष्ट न हो। बालक का हीनपना माताको दोष कारक होता है। (लोग माता को दोष देते हैं कि, इसकी मा ठीक नहीं, बालकको नहीं) ऐसा विचार कर आपको जो करना हो सो करिये।

इस प्रकार महाराज बंकटलालके घर रह रहे थे। इस समय एक घटना हुई। गाँव के दक्षिण में बंकटलाल का एक बाग था। वहाँ कई लोगों के साथ महाराज मकईके भुट्टे खाने के लिये गये। एक कुएँ के पास भुट्टे भूँजने की तैयारी लोगोंने की। कुआँ बड़ा गहरा था। अपार जल भरा था। पास ही एक इमलीका बड़ा घना पेड़ था। मकई भूँजने के लिये जगह जगह अदहरे जलाये गये। जो करीब दस बारह थे। जिससे कंडो का बड़ा धुआँ होने पर झुंड के झुंड फैल गई। उनके उठनेपर सब लोग मकई छोडकर भागने लगे। क्योंकि, प्राण सबको प्रिय होते हैं। कुछ कम्बल ओढकर भागे कुछ वैसे ही भागे।

यह सब गडबड चल रही थी। तब महाराज आसन पर स्वस्थ होकर बैठे थे। वे अपने मन विचार करने लगे ये मधुमक्षिकायें मेराही रूप हैं। इनका छत्ता भी मैं ही हूँ। भुट्टे खाने मैं ही आया हूँ भुट्टे भी मैं ही हूँ (सर्व रवल्विंद ब्रह्मा), (अहं ब्रह्माऽस्मि) ऐसा विचार करते आनंद मग्न थे। इतनेमे उनके शरीर पर असंख्य मधुमक्षिकायें आकार बैठी। ऐसा लगता था की महाराजने मधुमक्षिकाओंका दुसाला ही ओढा है। अर्थात् उन ब्रह्मनिष्ठ की योग्याताका वर्णन मैं नहीं कर सकता। मधुमक्षिकायें महाराजको काटती थी, किन्तु वे उनकी परवाह न करके निश्चल बैठे रहे। असंख्य कांटे महाराज के शरीर में थे। इस तरह एक प्रहर बीत गया। बंकटलाल बडा दुःखी हुआ। सोचने लगा कहाँ से यह बुद्धि मुझे उपजी। मैंने ही महाराज को भुट्टे खानेको सब के साथ लाया। सो मैं ही इस दुर्दशा का कारण हूँ। यह कैसी दुर्दशा और कैसा शिष्यत्व! बंकटलाल वहाँ आने लगे तब महाराज ने एक कौतुक किया। मधुमक्षिकाओंको महाराज ने आदेश दिया, कि तुम सब अपने छत्ते पर चली जाओ। मेरे बंकटको मत काटना। इस सब लोगोमे बंकट ही मेरा निस्सिम भक्त हैं जो मेरी तरफ दौडकर आ राहा है। वह मधुमक्षियाँ अपने छत्ते पर चली गई। जो बंकटलाल ने अपने आखोंसे देखा। उसको देखकर महाराज हंसकर बोले, 'बंकटलाल, यह भली सरबराई की मक्षिकाओंकी। देखा, ये मेरे शरीर पर आते ही भोजन भक्त भाग खडे हुए। सो बंकटलाल यह स्मरण रखो, संकट काल में ईश्वर ही सहाय होता है, अन्य कोई नहीं। पेडा-बफीं लाडू खाने के लिये ये आगे होते हैं। सो ये सब भोजन भक्त हैं।'

बंकटलालने मधुर वाणी में पूछा, 'महाराज, ये मधुमक्षिकाओके कांटे निकालने के लिए मैं सुनारको बुला लाता हूँ। महाराज मैं महापापी हूँ। जो यहाँ ला कर आपको कष्ट दिया। आपके शरीर पर तमाम गांठे उठ आई हैं। उसका परिहार

आप मुझे बतलाइये। ये सुनकर महाराज बोले, 'अरे, इसमें क्या विशेष है। काटना तो मधुमक्षियों का स्वभाव है। उसकी मुझे कोई बाधा नहीं, ये भी सच्चिदानंदकाही स्वरूप है। मधुमक्षिकाएँ मेराही रूप हैं। सो पानी को पानी से बाधा कैसे होगी?' यह सुनकर बंकटलाल ने सुनारोंको बुलाया, जो चिमटे लेकर आये और महाराजके शरीरके कांटे ढूँढने लगे। सो महाराज बोले! 'अरे! इस बन्ध्यामैथुन से क्या लाभ? तुम्हें कांटे नहीं दिखेंगे वो निकालनेके लिए चिमटों की जरूरत नहीं, इसकी साक्षी मैं तुम्हें बताता हूँ।' ऐसा कहकर महाराजने अन्तःमुख कुम्भकसे वायुका अवरोध किया, जिससे सब कांटे-चुभे हुए स्थालोंसे बाहर निकल आये। यह योगक्रिया देखकर सब लोक बड़े आनंदित हुए। बादमें मकईके भुट्टे भूँज कर सबने खाए और सूर्यास्त के समय घर पर लौट आये।

एक बार महाराज अपने बंधु नरसिंगजीको मिलने अकोट गए। जो भक्ति बलसे भगवान विठ्ठल के कंठमणि थे। इन नरसिंग जी महाराजका समग्र चरित्र मैंने आपने भक्तलीलामृत ग्रंथमें इत्थंभूत गाया है, सो यहाँ दुहारने की आवश्यकता नहीं। यह आकोट गाँव शेगाँव के इशान्य दिशामें अठरह कोस पर है। पदनतोके कल्पतरु श्रीगजानन महाराज मनोवेगसे जानेको निकले। अकोटके पास एक जंगलमें ये नरसिंगजी महाराज एकांत की दृष्टि से रहते थे।

यह निर्जन कानन था, जहाँ अश्वत्थ तथा रातांजन के वृक्ष थे। वहाँ पर अनेक जाती की लताएँ थीं। जो वृक्षों से लिपटी हुई थी। जमीन पर घास उगी हुई थी। और जगह जगह सांप की बांबीयाँ थीं। ऐसे इस जंगल में नरसिंगजी

जाकर बैठते, उनसे मिलने अचानक गजानन महाराज आ गए ।संयोग समसमान का होता है |विजातीय द्रव्य का नहीं | पानी पानी से ही मिलता है ,अन्य द्रव्य से नहीं |

गजानन महाराज को देखकर नरसिंगजी का मन आनंदित हो गया |वह प्रेम मुझसे कहा नहीं जा सकता |उनमें से एक साक्षात् हरी (विष्णु) तो एक साक्षात् हर (महादेव) ,मानो एक भगवन दशरथनंदन राम और एक वासुदेव देवकी नंदन कृष्ण | एक वशिष्ट मुनि तो दूसरे साक्षात् पराशर |एक साक्षात् गंगा का किनारा तो दूसरा गोदावरी तट |एक कोहिनूर हीरा तो दूसरा कौस्तुभ मणि |एक विनता के पुत्र गरुड़ तो दूसरे अंजनी कुमार हनुमान |दोनों परस्पर मिले और अत्यानंदित होकर एक आसन पर बैठे |अपने अपने अनुभवों का दोनों ने कथन किया |महाराज बोले' ,नर्सिंगजी आप प्रपंच में रहे ये बड़ा अच्छा किया |मैंने योगमार्ग का अनुसरण कर उसका त्याग किया और सच्चिदानंद तत्व का विमर्श किया |इस योग की क्रिया में अनेक अघटित घटनाएं होती हैं जिसका ज्ञान सामान्य जनों को नहीं हो पाता है |उन घटनाओं को छुपाने के लिए हठात में उन्मत का रूप धारण कर मैं जगत में विचरण करता हूँ |तत्व जानने के संसार में तीन मार्ग हैं |कर्म भक्ति और योग ऐसा शास्त्रकारों ने शास्त्रों में बताया है |इनका परम लक्ष्य फल एक ही है |

किन्तु उनका बाह्य स्वरूप भिन्न भिन्न है |यदि योगी योग क्रिया का अभिमान रखे तो उसे सत्य तत्व का बोध नहीं होगा |योग परिपक्व क्रियावान उसके अभिमान से अलिप्त रहता है |जल में रहने वाला कमलपत्र जल से अलिप्त होता है ,तो ही उसे तत्व ज्ञान होगा |इसी प्रकार प्रापंचिक प्रपंच में रहे हुए भी कन्या पुत्र की आसक्ति नहीं रखनी चाहिए |जैसे गार पत्थर पानी में रहता है पर भिजता नहीं है |इस प्रकार आपको अपेक्षा रहित रहना चाहिए |उसी प्रकार सच्चिदानंद ब्रह्मा का विस्मरण

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

कभी नहीं होना चाहिए |आप और में भिन्न नहीं हैं |हमसे भगवान विष्णु भिन्न नहीं है |(तत्वमसि ) जनता जनार्दन भिन्न नहीं है "|नर्सिंगजी बोले ,बंधुराज आप हमसे मिलने आये ये अनुपम प्रसंग है |आपकी महान दया है |प्रपंच मूलतः आशाश्वत है दोपहर की छाया समान है |उसको सत्य कौन मानेगा ?आपके कथन अनुसार ही मेरा वर्तन होगा ,किन्तु आप सदेव मिलते रहिएगा |जिसका जैसा देह प्रारब्ध है वैसा ही होगा |आपको हमको जिस कार्य के लिए परम पिता परमेश्वर ने भेजा है ,उसे आलस्य रहित करना ही है |प्रार्थना इतनी ही है की सदेव मिलते रहो ,भरत नंदीग्राम में जैसे भगवान राम की राह देखते निवास करते थे वैसे ही मैं आपकी यहाँ आकोट में राह देखता रहूँगा |आपका यहाँ आना अत्यंत सुलभ है |क्योंकि सारी योगक्रियाएं आपको ज्ञात हैं |योग्सिद्धियाँ आपको प्राप्त है |जैसे जल का स्पर्श पैरों से न होते हुए योगी क्षण भर में त्रिभुवन का क्षोध ले सकता है ,वैसे आप हो |ऐसा रात भर दोनों का गूढ़ विलाप होता रहा |दोनों के संयोग से मानों आनंद में भरती आ गयी थी |जो सच्चे संत होते हैं उनका इस प्रकार संयोग होता है |

किन्तु जो दाम्भिक होते हैं उनका परस्पर कलह होता है |दाम्भिक गुरु का वैसे ही उपयोग नहीं होता जैसे नदी की बाढमें टूटी हुई नौका का |संतत्व मठ में नहीं है |विद्वत्ता में नहीं है |कवित्व में नहीं है क्योंकि संतत्व के लिए स्वानूभूती की आवश्यकता होती है |मुलामा चढ़ाया हुआ सोने का कोई उपयोग नहीं जैसे वैश्यों को घर में पत्नी करके रखने में उपयोग नहीं है |ये दोनों सच्चे संत थे |यहाँ सन्नति और सदाचार का निवास था |गजानन महाराज नर्सिंगजी को मिलने आकोट आये हैं ,ऐसा समाचार एक चरवाहे गोपाल ने गाँव में दिया |जो सुनकर गाँव के लोग बड़े आनंदित हुए और नारियल लेकर जंगल की तरह जाने लगे | परस्पर महाराज का आगमन बताने लगे |चलो ,गंगा ,गोदावरी का संगम हुआ है |सो हम लोग पर्वणी पर संत समागम रूपी

प्रयाग में स्नान करेंगे |अब इधर ऐसा हुआ की महाराज नर्सिंगजी अनुज्ञा लेकर वहां से निकल गए |जिससे ग्राम वासीयों को उनका दर्शन नहीं हुआ|

एक बार महाराज अपने शिष्यों के साथ भ्रमण करते हुए दर्यापुर के पास पहुंचे |वहां दर्यापुर के पास एक छोटा सा शिवर गाँव नाम का देहात था, जो चंद्रभागा नामक नदी के किनारे था |श्रोतागण ये चंद्रभागा पंढरपुर की चंद्रभागा नहीं, अपितु दर्यापुर के पास एक छोटी सी नदी है जो पयोष्णी नदी को मिलती है |इस शिवर गाँव में वज्रभूषण नामक पंडित रहता था |वह भगवन सहस्रशिम भास्कर का एकनिष्ट भक्त था |जिसके विद्वत्ता की गरिमा सारे बरार में फैली थी |यह प्रतिदिन चंद्रभागा पर विधिपूर्वक स्नान करके उदयमान भगवन भास्कर को अर्घ्य प्रदान करता था|

ब्राह्म्य मुहूर्त में उठकर उषःकाल में वज्रभूषण प्रातः विधि से निवृत होकर शीतल जल से स्नान करता |इस प्रकार कर्मठ होने पर भी पंचकोसी में उसकी विद्वत्ता की मान्यता विद्वानों में थी |

योगीराज भ्रमण करते हुए इस शिवर गाँव में आये |मानो वज्रभूषण को उसकी तपस्या का फल देने को हे वहां आ गए हैं | चंद्रभागा के किनारे बाकुल में ज्ञानयोगी बैठे थे |सामने नदी किनारे वज्रभूषण प्रातः काल वहां आया |उषः काल के समय दसो दिशायें प्रकाशमान हो रही थीं |बीच बीच में कुक्कुट का उच्च स्वर सुनायी पड़ रहा था |चातक तथा भारद्वाज पक्षीगण रात्री समाप्त होने से जाने लगे |वे भगवान भास्कर की ओर पूर्व दिशा में मानों उनका स्वागत करने जा रहे हो |भगवान भास्कर का उदय होते ही वैसे ही अंधकार नष्ट हो गया, जैसे सभा में पंडितगण आने पर मुख उठ कर चले जाते हैं | ऐसे इसी ब्रह्ममुहूर्त में गुरुदेव् ब्रह्मानंद में डोल रहे थे |अपार शिष्यगण मंडलाकार बैठे थे| मानो वे श्री गजानन रुपी भास्कर की किरण हो |ऐसे समय

में वज्रभुषण वस्तुतः सूर्य को अर्घ्य देने के लिए आया |सो सामने ज्ञान सूर्य का दर्शन हुआ |सूर्य के समान तेजस्वी कांती | आजानुबाहू मूर्ती और जीकी द्रष्टी नासिका के ऊपर स्थिर थी |ऐसे महापुरुष को देखते ही वज्रभुषण महान आनंदित हुआ | संध्या की सामग्री लेकर उनके सामने आया |महाराज के चरणों पर अर्घ्य दिया प्रदक्षिणा की और मित्राय नमः :भानवे नमः :: सूर्याय नमः ;, :खगाय नमः :आदि मन्त्रों के उच्चारण सहित महाराज को बारह बार नमस्कार किये |अंत में साष्टांग दंडवत करके बोला ,भगवन !आप के चरण कमलों का दर्शन कर आज मेरा जीवन कृतार्थ हो गया |

यह मेरे तपाचरण का फल आज प्रत्यक्ष प्राप्त हो गया |आकाशस्थ भास्कर को मैं रोज अर्घ्य प्रदान करता था |किन्तु आज प्रत्यक्ष ज्ञान्भास्कर को देखकर अर्घ्य प्रदान करके मैं धन्य हो गया |हे योगेश्वर पूर्ण ब्रह्मा ज्ञान राशी युगानुयुग मैं आप अवतार धारण करते हो |हे जगाच्चालक !आपके दर्शन से भवरोगरूपी चिंता का नाश हो जाता है |हैं गजानन गुरु !आप मुझपर कृपा करिए ऐसी प्रार्थना की |तब योगेश्वर महाराज ने उसे दोनों बाहू फैलाकर दृढ़ आलिंगन किया |मस्तक के ऊपर हाथ रखा और बोले ,सर्वदा तुम्हारी विजय होगी |कर्मम्राग नहीं छोड़ना |ये कर्ममार्ग की विधि निरर्थक मत मानो ,किन्तु उनमें आसक्ति नहीं रखना |कर्मों का आचरण करके जो कर्म फल की आशा नहीं रखता ,उसे त्याग देता है , उसे अवश्य घनःश्याम के दर्शन होते हैं |और कर्म का मल उसे कभी नहीं लपेटता |ब्रह्मण्याद्याय कर्माणिसङ्गत्यकत्त्वा करोतियः |लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ||गतायुक्तः कर्मफलंत्यक्त्वा शांतिमान्पोति नैष्ठिकिम ||

अब तुम अपने घर जाओ मेरा वचन सदा ध्यान में रखना |प्रतिदिन तुम्हें ध्यान में मेरे दर्शन होंगे |ऐसा कहकर प्रसादरूप में उसे श्रीफल दिया |बाद में महाराज शेगाँव आगये |

इस शेगाँव की ख्याती बहुत है |प्राचीन काल में वस्तुतः इसका नाम शिवगाँव था |जिसका अपभ्रष्ट रूप शेगाँव है |बरार में इस काल यही नाम प्रचलित था |इस गाँव में पहले १७ (सतरह) पटेल थे |महाराज शेगाँव आये थे किन्तु स्थिर नहीं रहे , सदेव मन में आये वहाँ भ्रमण करते हैं|

आकोट, आकोला मलकापूर आदि में कहाँ तक नाम बताऊँ? तारों की गिनती क्या कभी हो सकती है |ज्येष्ठ महीना तथा आषाढ़ महीना समाप्त होकर श्रावण मास शुरू था |इस समय हनुमान जी के मंदिर में उत्सव शुरू था |ये भव्य मंदिर था और पटेल लोग उन्हें इष्ट मानकर भक्ति करते थे |जैसे पुल्ली का बंधन होता है ,वैसे पटेल गाँव के लिए बंधन होता है (सबको एकत्र जोड़ता है) जो कुछ उसे प्रिय होता है वही सब लोग करते हैं |इस श्रावण मास में अभिषेक, पुराणपठन कीर्तन इत्यादि यहाँ होते थे और अन्नसंतर्पण की तो मनो बाड़ ही आ जाती थी |सब लोग तृप्त हो जाते थे |श्रोतागण पटेल की यह व्याघ्र चर्म धरने के समान है |जो धारण करता है उससे लोग डरने लगते हैं |मराठी में एक कहावत है के जो 'राजा नहीं कर पाता वह गाँव कर सकता है |'उस हनुमानजी के मंदिर में पुण्यपुंज गजानन महाराज आये |बंकटलाल से कहा, श्रावण महीने में उत्सव प्रित्यर्थ मैं मंदिर में ही रहूँगा |जिसकी चिंता न करना |गुसाई सन्यासी को सदेव प्रापंचिक के घर में रहना ठीक नहीं |मैं परमहंस सन्यासी हूँ | अब मंदिर में रहूँगा, जिस दिन तुम बुलाओगे उस दिन केवल आऊँगा |ऐसी अन्दर की गुप्त बात तुम्हें बताई |साथ ही बताया की भगवान् शंकराचार्य को भी सन्यास ग्रहण करने के बाद भ्रमण करना पड़ा था |मछिन्दरनाथ, जालंधरनाथ आदि सन्यासी भी प्रापंचिकों का गृह छोड़कर संगत में वृक्षतल निवास करते थे |छत्रपति शिवाजी महाराज जिन्होंने अपने शौर्य से ,रणपटुत्व

से हिन्दवी राज्य की स्थापना की ,हिन्दुओं का रक्षण किया ,यवनों का दमन किया ऐसे शिवाजी समर्थ रामदास महाराज के शिष्य थे।

उनपर अटूट श्रद्धा थी।वे रामदास सज्जनगढ़ जंगल में रहते थे ।ऐसा विचार करके हठ बिलकुल न करना ।मेरा कहना मानने में ही तुम्हारा कल्याण है ।यह सुनकर निरुत्तर होकर बंकटलाल ने महाराज की इच्छा को संमती दी।

मंदिर में महाराज के निवास के लिए आने पर सबको बड़ा हर्ष हुआ और भास्कर पाटिल सेवा के लिए निरंतर पास रहने लगा ।यह दासगणू विरचित श्री गजानन विजय नामक ग्रन्थ मुमुक्षु जनों को संतचरण सेवा का मार्ग बताये ।

॥शुभंभवतु ॥श्रीहरिहरार्पणमस्तु ॥

॥इति श्री गजानन विजय ग्रंथस्य षष्ठोऽध्यायः समाप्तः ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय ७ ॥

श्री गणेशाय नमः। हे सीतापति राघवेन्द्र, संत जनोंके विश्राम मेघशाम, दाशरथी राम ,आपकी जय हो भगवन ! आपकी कृपासे बंदर भी बलवान हो गये और लंकाधिपतिका लंकामे नाश किया। आपकी कृपा होनेपर मनुष्य विजयी होता है। जो जो इच्छा करता है वह कार्य पूर्ण होते है। जिसपर राजाकी कृपा होती है, वह मंत्रीकोभी प्रिय होता, भलेही वह कितनाभी छोटा हो। हे प्रभो , ऐसी अमोघ कृपाकी पात्रता क्या मुझमें है ? ऐसा विचार करनेपर मुझे लगता है कि न तो मुझको ज्ञान है न निस्सिम भक्ति। सो ऐसी अवस्थामे हे पांडुरंग ! मुझपर ऐसी कृपा कैसे होगी ? किन्तु सदैव इस प्रकारके मनोरथ करता रहता है कि जगत्पाल ! मुझपर कृपा कैसे होगी ?किन्तु आशा ऐसी है की आपका पापीजन उद्धरण का ब्रीद ही ऐसी पुराणमे साक्ष है। पुण्यवान लोगोंका उद्धार करना तो खास बात है ही नहीं। जो पातकी लोगोंका उद्धार करता है वही श्रेष्ठ है। आप पातकियोंका उद्धार करते है यही आपकी श्रेष्ठता है । मेरे जैसा कोई पातकी नहीं सो उसका (दासगणूका ) उद्धार करके आप अपने ब्रीद का रक्षण कीजिये। हे नारायण ! मैं आपकी अनन्य शरण हूँ ! पुराण कहते है,'नारायणो नाम नरो नराणां प्रसिद्धचौराः कथितः पृथ्वीव्याम। नारायण नाम प्रसिद्ध चोर आज पृथ्वीपर है, जो जनोंके निशेष पापोंकी चोरी करता है। अस्तु। यह हनुमानजीका श्रावण महीनेका उत्सव गणेश कुलोत्पन्न पाटील के नेतृत्वमें होता था।

यह पाटीलोंका घराना अति प्राचीन है। तथा कनक धनसंपन्न भी है । कृषिका भी बहुत विस्तार है। पहलेसे ही इनके घरानेमें संत सेवा थी। उसपर पाटीलकी प्राप्त हो गई, सो कुछ पूछनाही नहीं। महादजी पाटील को दो पुत्र थे, जिसमें बड़ेका नाम था कडताजी और छोटे पुत्रका नाम था कुकाजी, जो भगवान पंढरीनाथ का भक्त था। इस घरानेको

नागझरीके गोमाजी महाराज का उपदेश था। कड़ताजी पाटील को छः पुत्र थे। कुकाजी भाग्यवान जरूर था किन्तु उसे पुत्र नहीं था। कड़ताजीके मृत्यु के कुकाजीने सभी पुत्रोंका पालन, जन्मदाता पिता के समान किया। कुकाजी के कार्यकाल में अत्यंत समृद्धावस्था प्राप्त हो गई। जिससे उनके घरमे अष्टसिद्धि प्राप्त हो गई। कुकाजी पाटील के बाद खंडु पाटील जो छहोमें बड़ा था , कारभार देखने लगा। जिसके आगे किसीकी कुछ नहीं चलती थी। इसके अन्य पाँच भाइयोंके नाम इस प्रकार थे। गणपती , नारायण, मारुती, हरी और कृष्णाजी। पहलेही पाटील, फिर हाथमे सत्ता और घरमें लक्ष्मीका निवास फिर क्या कहना ? सब भाई अखाडा लोटते थे और समयानुसार दांडपट्टा इत्यादि सीखते तथा मल्लयुद्ध करते। जिसमें हरी पाटील को मल्लयुद्धका प्रेम जादा था। हनुमानके उत्सव के समय जो कुछ ये बोलते वही गाँवमें होता था। गावमे प्रायः मारपीट और अन्य कलह होते ही रहते थे, जो इनके कारण थे। पाटील सबको एकही तराजूमें तौलता, छोटा , बड़ा कुछ नहीं गिनते। मनमें आता सो बोलते। न साधु सज्जन जानते न सामान्य। ये पाटील बंधुगन मंदिर में आकर महाराजकी कुचेष्टा करने लगे। कहते , गण्या -पागल ! क्या छाछकनी खाओगे ? ऐसी हीनताकी बाते महाराजसे करते।

उनमेसे एकाद कहता, चल हमसे मल्लयुद्ध कर। लोक तुझे योग योगेश्वर कहते हैं सो हमभी देखें तु कैसा है? यातो इसकी प्रतिति सिद्ध करो या मार खाओ । हम छोड़नेवाले नहीं। महाराज मौन धारण करके रहते, कुछ नही बोलते। इस प्रकारका अहंकारी वर्तन वे महाराजके साथ सदैव करते । महाराज -सकर टाल देते । भास्कर पाटीलने महाराजसे कहा, महाराज चलिये, अकोली चले चलते हैं । यहाँ मंदिरमें न रहिये । ये गर्वके कारण उदंड हो गये हैं । धनसे मदमत्त हो गये हैं । पाटील होनेसे इनकी सत्ता है, किसीका कुछ चलता नहीं । गजानन महाराजने भास्कर पाटीलसे कहा," थोडा धैर्य धारण करो, ये सब मेरे परमभक्त हैं किन्तु इनमें नम्रता नहीं है किन्तु इनका अंतरशोध करो तो

तुम्हें पता चलेगा । इनके कुलपर संत कृपा है । ये सब मेरे पुत्र हैं । उद्वंडताही सत्ताकी पहचान हैं अन्यथा गायके घर वाघका क्या प्रभाव पड़ेगा? यही इनका भुषण है । अगर तलवार नरम होगी तो उसका क्या उपयोग? यह इनकी उद्वंडता चली जायेगी, जरा ठहरो जैसे वर्षाका जल शरद ऋतुमे निर्मल हो जाता है "। एक रोज हरि पाटील मंदिरमे आया और महाराजका हाथ पकडकर कहने लगा हमसे मल्लयुद्ध करो। केवल 'गण गणगणांत बोते' बोलते मत बैठो। मैं तुमको मल्लयुद्धमें पराजित करूंगा। तुम्हारा बडा बोलबाला हो गया है, जिसकी प्रचिती आज करेंगे। जिससे सत्या सत्यका पता लग जायेगा। यह समर्थने मानकर दोनों अखाडेमें गये। वहाँ महाराजने क्या कौतुक किया सो सुनो। महाराज भूमिपर बैठ गये और हरि पाटीलसे कहा 'अगर तुम वास्तविकमें मल्ल हो तो हमको भूमि से उठाओं । यह सुनकर हरि पाटील महाराज को भूमिपरसे उठानेका प्रयत्न करने लगा, किन्तु व्यर्थ।

कई दाँवपेच लगाये, बडी ताकतसे उठानेका प्रयत्न किया किन्तु महाराज तीलभर न हिले। यह पसिनेसे नहा गया और सोचने लगा की यह कृश जरूर है किन्तु महान शक्तिशाली है अचल पर्वतके समान अडिग है। हमारी अनेक कुचेष्टायें इन्होंने सह ली, यह इनका बडप्पन है। अन्यथा ये महान शक्तिशाली है। हम लोग सियारके समाने है और ये गजराजके समान बलवान है । यही कारण है कि , इन्होंने हमारे तरफ ध्यान नही दिया। जैसे श्वान भूँकते रहते है किन्तु सिंह उसकी परवाह नहीं करता। अब इनके चरणोंमें मस्तक रखानाही योग्य है। आजतक मैंने किसीको सिर नहीं नमाया। महाराज हरि पाटीलसे बोले 'अब हमें पुरस्कार दो नहीं तो मल्लयुद्ध में पराजित करो। बलराम और कृष्णने मल्लयुद्ध किया था। कंसके देह रक्षक मुष्टिक और चाणूरको बलराम और कृष्णने मल्लयुद्ध करके मारा था। तुम्हारे समान पूतनाका शत्रु एक पाटील यमुना तटपर था। जिसने गोकुलके सारे बालक बलवान किये थे। यातो तुम वैसा करो अन्यथा पाटील नाम छोड़

दो। यही हमारा पुरस्कार है" । यह सुनकर हरि पाटील बोले, 'महाराज! आपकी कृपा यदि होगी तो शेगाँवके सब बच्चोंको मैं बलवान बनाऊँगा। और उसदिन से हरि पाटीलने उददंडता और महाराजको उल्टासीधा बोलना त्याग दिया।

यह हरि पाटीलकी कृती देखकर उनके अन्य भाई बोले, "भैया, इस जोगडेसे आप क्यों डरते हैं । समझ नहीं पडता। हम लोग पाटीलकुमार हैं, गाँवके सत्ताधारी हैं, फिर आप उसके चरणोंमें माथा किसलिये टेकते हो? इस पागल का पाखंड बहुत बढ गया है। उसका कोई रास्ता निकालना चाहिये ।

लोगोंको इसी पाखंडसे बचाना चाहिये। अगर हमलोग ऐसा नहीं करते तो अपने कर्तव्यसे च्युत होते हैं। मंद लोग साधूका वेष लेते हैं, टेढी क्रियायें करते हैं। औरतोंको फँसाते हैं, इसका विचार करो। सोना जबतक कसौटीपर कसा नहीं जाता तब तक उसकी परख नहीं होती। तुकाराम महाराजकी शांति गुणोंसे पता चली। ज्ञानेश्वर महाराजने भैंसासे वेद पठन करवाकर परीक्षा दी,सो जबतक परीक्षा न ली जाय तब तक अस्थानमें मान देना ठीक नहीं है। आज हम लोग इनकी परीक्षा लेंगे। एक गन्नेका भारा लाते। इस तरह वे गन्नेका भारा लेकर मंदिर में पहुँचे और महाराजसे बोले ,अरे पागल ! गन्ना खाना है क्या ?अगर खाना है तो हमारी एक प्रतीज्ञा है। हम लोग गन्नोसे तुम्हारे ऊपर प्रहार करेंगे अगर तुम्हारे शरीरपर उसके चिन्ह न प्रगट हो तो हम मानेंगे कि ,तुम योगी हो। "यह सुनकर महाराज कुछ नहीं बोले ,सुजान जन बालक चेष्टा कि और लक्ष्य केन्द्रीत नहीं करते'उनमेंसे मारोतीने कहा ,'अरे ,यह डर गया है और गन्नोके प्रहार सहनेको तैय्यारनहीं। उसपर गणपतीने कहा ,'मुक्ताही सम्मति है सो अब देखते क्या हो ,लगाओ। यह सुनकर दोनो -तीनोनें गन्ने लेकर दौड़कर महाराजको मारनेके लिये समीप आये।

यह देखकर मंदिरमे आये हुए स्त्री -पुरुष भाग\खड़े हुए। महाराजके पास अकेला भास्कर रह गया। उसने बच्चोंको कहा ,अरे महाराजको गन्नेसे मारना ठीक नहीं। तुम लोग पाटील कुलोत्पन्न हो,तुम्हारे हृदयमे दया होनी चाहिये फिर ये तो महासाधू है, फिरभी इन्हे दीन -हीन जानकर तुम्हें छोड़ देना चाहिये। जो उत्तम अहेरी होते है वे वाघकी शिकार करते है ,चिड़ठेकी नहीं। हनुमानजीने रावणकी लंका जलाई, दीन दुर्बलोके झोपड़े नहीं।

यह सुनकर बच्चोंने उत्तर दिया, ठिक है, हमने आपका सब कथन सुना । गाँवमें सब लोग इनको योगयोगेश्वर कहते हैं । सो इनका योग देखने के लिये हम लोग आये हैं ।आप दूर खडे रहकर केवल गम्मत देखिये। ऐसा कहकर गन्ने हाथमें लेकर महाराजपर प्रहार करने लगे । जैसे खरीहान में किसान गेहूँकी बालीयाँ पीटते हैं । किन्तु महाराज अचल बैठे रहे । बच्चोंको देखकर हँसते रहे और उनके शरीरपर कहीं भी किसी प्रकारकी चोटका चिन्ह नहीं निकला । यह देखकर सब बालकगण डर गये और निश्चय किया कि वास्तवमें ये योगयोगेश्वर हैं ।अब इनके चरण पकडे । फिर महाराज बोले, 'अरे बालकों तुमने बहुत परिश्रम किया, मुझे मारते-मारते तुम्हारे हाथ दुख गये होंगे, बैठो, मैं तुम्हे इक्षुरस पिलाता हूँ, ऐसा कहकर महाराजने हाथ से ही दबाकर एक पात्रमें इक्षुरस निकाला ।सब भारेके गन्नोंका रस हाथ से निकालकर निचोडकर बालोंको पिलाया । जिससे उन्हे बडा आनंद हुवा ।सब लोग कहने लगे, यह योगशक्ति हैं । जो योगक्रियासे प्राप्त होती है इसको क्षीणता नहीं है यद्यपि पुष्टीकर पदार्थोंसेभी शक्ति प्राप्त होती है किन्तु वह इसीतरह सदैव नहीं रहती । यदि राष्ट्रको बलवान बनाना है तो योगका अवलम्बन करो । इस तत्वकी सूचना देनेके लिये ही महाराजने हाथसे गन्नोंका रस निचोडा ।इसके बाद सब बालक महाराजकी चरण वंदनाकर चले गये । यह सारी बातें पाटील बंधुओंने जाकर अपने ज्येष्ठ बंधु खंडू पाटील से बतायी कि,अपने गाँवमें साक्षात ईश्वर आया है ।

यह हम लोगोने प्रत्यक्ष अनुभूत किया । वह भी आश्चर्यचकित हो गया । इस के बाद वह भी महाराजके दर्शन को आने लगा ।वह बड़ी खडी बोली बोलता था उसके वाणीमें बिलकुल मार्दव (नम्रता) नहीं थी ।वह महाराज को 'गज्या-गण्या' ऐसा तु करके संबोधित करता था ।यह तुकेरी के दो कारण होते हैं ।जहाँ अत्यंत प्रेम होता है वहाँ सन्मान दर्शक भाषा दुरावसी प्रतीत होती हैं ।जैसे माता पुत्रमें वार्तालप ।अब दुसरा कारण है आदत, पाटील लोग सदैव नोकर-चाकरसे तुकेरीमें ही बात करते हैं । सो वही आदतसे जिस किसीसे भी वे बोलते है तो तुकेरी शब्दही निकल पडते हैं ।उसमे उनका हेत हीनता बतलानका नही होता बस यही कारण यहा ठीक बैठता है यद्यपि आदतके अनुसार वह महाराज को गण्या-गण्या कहता किंतु हृदयमें अत्यंत प्रेम उनके प्रति था ।जैसे नारियल का बाह्यकवच अत्यंत कठोर होता है किन्तु अन्दर रसाल मीठा जल तथा मधुर नरम गुझा होता है। यहाँ यही प्रकार था। (इसीको साहित्यमें नारीयल पाक कहते है)

कुकाजी बुढे हो गये थे । सो खंडु कार्यवहन करता था । एक रोज कुकाजीने खंडुसे कहा “अरे, तुं प्रतिदिन महाराजके पास दर्शन को जाता है,फिर वहाँ तेरी वाचा कैसे मूक हो जाती है ।तुम्हे बालबच्चे नहीं सो मैं नाती देखना चाहता हूँ । आज महाराजसे प्रार्थना करो, वे समर्थ है और करुणा मांगो कि एकाद संतती प्रदान कीजिये ।यदि वे सच्चे साधु है तो मेरे मनोरथको अवश्य पुर्ण करेंगे । साधुपुरुषके लिए, तीनो लोकोमें कोइ कार्य असम्भव नहीं ।सो संतो के होने का कुछ लाभ उठाओ । यह खंडु ने सुन लिया और एक दिन हनुमानजीके मंदिरमें महाराजसे बोला, अरे गण्या- मेरे काका बुढे हो गये, उन्हे नाती देखने की इच्छा है ।

तुम को सब लोग साधु कहते हैं और तुम्हारे दर्शनसे सब मनोरथ पूर्ण होते हैं ऐसा लोग कहते हैं । उसकी प्रचीती जल्दीसे बताओ देर मत करो । मेरा शिर तुम्हारे चरणों में है फिर भी मैं निपुत्रिक क्यों? यह सुनकर महाराजने कहा, "यह अच्छा हुआ की, आज तुमने हमसे याचना की । सत्ता-धन सबकुछ तेरे पास है और तू तो प्रयत्नवादी भी है, अर्थात् सबकुछ यत्न साध्य है, ऐसा तूझे लगता है, फिर हमसे प्रार्थमेरीना करनेका क्या कारण, धन और बलसे सबकुछ होता है फिर यह क्यों नहीं? तुम्हारी बडी खेती है, दुकानें हैं, कारखाने हैं और पेड़ियाँ हैं। तुम्हारा कहा सब लोग सुनते हैं। फिर ब्रम्हाजीको क्यों पुत्रके लिये आज्ञा नहीं देते, यही समस्या मेरे सामने है "।

तब खंडू पाटीलने कहा,"यह यत्नाधीन नहीं है। कृषिमे अनाज पानीसे पैदा होता है किंतु पानी गिराना मानवके हाथ नहीं वह दैवाधीन है। क्योंकि वर्षा न होने पर कृषी रहते भी अनाज नहीं पकता और अकाल पड जाता है। वहाँ मानव यत्न काम नहीं आता। यह सुनकर महाराज ने कहा, ठीक है, तुमने मुझसे याचना की और याचना करना भीख माँगना ही है सो तुम्हे जो बालक होगा उसका नाम भिखाजी रखना । वस्तुतः पुत्र देना मेरे हाथमे नहीं फिर भी मैं भगवानसे तुम्हारे लिये प्रार्थना करुंगा । मेरी अभ्यर्थना भगवान अवश्य सुनेंगे, उनके लिये ये कोई बडी बात नहीं । तुम घरके संपन्न हो । सो ब्राम्हणोंको आम के रसका भोजन दो । मेरा यह वचन प्रमाण है । तुम्हें पुत्र अवश्य होगा और तुम प्रतिवर्ष ब्राम्हणोंको आम्ररस का भोजन किया करना" घर आकर खंडुजीने कुकाजी को मंदिरका वार्तालाप बताया । यह सुनकर कुकाजीको बडा आनंद हुआ ।

कुछ दिन बितनेके बाद खंडू पाटीलकी पत्नि जिसका नाम गंगाबाई था, गर्भवती हुई। तथा नौ मास पूर्ण होनेपर उसको पुत्र जन्मा। जो सुनकर कुकजीको अपार हर्ष हुआ। उसने बहुत दान धर्म किया, गरीब जनोंको गुळ तथा गेहूँ

दान में दिया। गाँवके बच्चोंको पेड़ा- बर्फी बाँटी। बड़ी धूमधामसे उस पुत्र का नामकरण संस्कार हुआ। सो महाराजके आदेशानुसार उसका नाम भीकू रखा। ततपश्चात ब्राह्मणोंको आमरस की पंक्ति दी, जो परंपरा शेगाँवमें आज भी चल रही है। यह भीकू शुक्ल पक्षके चन्द्रमा के समान बढ़ने लगा। महाराजकी कृपा से सुंदर बालक पाटील के आँगन में क्रीड़ा करने लगा। यह पाटील का वैभव देशमुखोंको अच्छा न लगा। शेगाँवमें पहलेसे ही पाटील तथा देशमुख में वैमनस्य था। दोनोंके हृदय एक दुसरेके लिये कलुषित थे। हर कोई अपने अपने दाँवपेच में रहता था। संधि मिलनेपर एकमेकका घात करनेका प्रयत्न करते थे। दो शास्त्री, दो मंत्री, दो तंत्री तथा दो श्वान जब सामने आते हैं तो अवश्य एकमेक पर गुराते हैं। ऐसाही कुछ बनाव शेगाँव था। ये परस्पर विरुद्ध थे उनमें एकता कभी नहीं हुई।

बादमें कुकाजी पंढरपुरमें भीमातट के उपर नातीका मुख देखकर स्वर्गवासी हो गये। जिससे खंडू पाटील बड़ा उद्विग्न हो गया, सोचने लगा कि मेरा छत्र ही टूट गया। जिस काकाके बलपर मैं निर्भय था, उसीको भगवानने हर लिया। इस संधिमें देशमुख मंडलीको पाटील पर कीचड़ उछालनेका अवसर मिल गया। जिसका वर्णन मैं अगले अध्याय में करूँगा।

श्रोतागण सत्तास्थल सदैव विद्वेष का कारण होता है। यह दासगणू विरचित श्रीगजानन विजय नामक ग्रन्थ आप लोग कुतर्क छोड़कर सावध चित्तसे श्रवण करे। यह उपनिषद वाक्य है, "नैषाकर्तेण मतिरापनिया" क्योंकि जो अचिन्त्य विषय होते हैं उसमें तर्ककी गति नहीं होती। फिर कुतर्कका प्रश्नही नहीं। यह सदैव वर्ज्य है। "अचिन्त्याखुलयेभावा नतानकर्णेन साधयेत " ।

॥ शुभं भवतु । श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥  
॥ इति श्री गजानन विजयग्रन्थस्य सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय-८ ॥

श्री गणेशाय नमः। हे वासुदेव देवकीके नंदन। गोप-गोपियोंके मनका रंजन करनेवाले। दुष्ट दानवोंका दमन करनेवाले भगवान श्रीकृष्ण, मुझे आपकी प्राप्ति हो। आपके प्रप्तिके जो साधन, कर्मादिकोंका अनुष्ठान और पराभक्ति आदि है। वो करनेका सामर्थ्य मुझमें नहीं। आपके विषयका ज्ञान करानेवाले सब शस्त्र गीर्वाण वाणीमें है सो बतलाईये कि मैं उनका अवलोकन कैसे कर सकता हूँ। क्योंकि, मुझे गीर्वाण का गंध भी नहीं है। फिर मैं ठहरा मंदमती, मेंढकको भला कमल पराग सुवास कैसे प्राप्त हो सकता है? अन्नदान से आपकी प्राप्ति होती है, सो उसके द्वारा प्राप्त करूँ तो वह सामर्थ्य भी मुझमें नहीं है। दूसरे तीर्थयात्रा आदि करने का विचार भी नहीं कर सकता, क्योंकि, शरीरके अवयव शिथिल है तथा दृष्टी में भी अंधत्व आ गया है। इस प्रकारसे हे चक्रपाणी! मैं सब तरहसे दीनहीन हूँ। जिससे मेरे मनोरथ क्षीण हो जाते हैं। व्यवहारिक दृष्टिसे यद्यपि यह सत्य है। फिर भी आप जैसे मेघजलके लिए दाम देनेकी आवश्यकता नहीं होती, मेघ कृपा से तालाब-कुएँ भर जाते हैं। उसी प्रकार पत्थर भी पिघलने लगते हैं। झरने बहने लगते हैं। ऐसी कृपा का ही यह दासगणू भूखा है। उस अहैतुकी कृपाकी एकाद भी बूँद इस दासके मुँहमें डालिए। जिससे मैं तृप्त हो जाऊँगा सारे सुख उसमें मुझे प्राप्त होंगे। क्योंकि अमृत का एक भी बूँद समस्त रोगोंको दूर करनेमें समर्थ होता है।

अस्तु! पिछले अध्यायमें मैंने बतायाकि, देशमुख तथा पाटीलोंमे बड़ा दुरावा था। जहाँ जहाँ दुरावा होता है, वहाँ वहाँ सुख नष्ट होते हैं। उपनिषदोंमें भी कहा है, 'द्वितीयाद्वै भयं भवति', शरीर के लिए जैसे क्षयरोग होता है उसी प्रकार समाजके ली दुरावा होता है और वह अवश्य यमलोक को ले जाता है। वहाँ सब प्रयत्न असफल होते हैं।

देशमुख का एक महार तलाव के किनारे खंडू पाटीलसे बहस करने लगा। पाटील गाँव के अधिकारी थे। किसी कारणसे दोनों में विवाद हो गया। वो मय्या नामका महार था, जिसको देशमुखों का समर्थन था। इसीलिए खंडू पाटील से मुँह जोरी किया। पाटील ने उससे कहा की, “यह तुम्हारा व्यवहार ठीक नहीं है। व्यक्तिको अपनी जगह कभी नहीं छोडनी चाहिए। देशमुख मुझसे मुँहामुँही कर सकते है, तुम नहीं।” “अरे कम जादा बोलनेका आधिकार देशमुखोंको है, तुम जैसे नकटोका नहीं।” मर्या अनेक प्रकारकी चेष्टाएँ करने लगा, जिससे खंडू पाटील क्रुद्ध हो गए। इस विवाद का कारण वस्तुतः अत्यंत मामुलीसा था। कारण यह था कि एक महत्वपूर्ण कागद पत्र तहसील कार्यालय अकोला भेजने का था। सो उन्होंने उसे तुरंत ले जानेको कहा। उसके उत्तरमें उस महारने कहाकि मैं तुम्हारे अधीन नहीं हूँ, मैं देशमुखोंके अधीन हूँ, सो मैं यह काम नहीं करूंगा। तुम्हारी आज्ञाको मैं होली की हुरदंग मानता हूँ और वैसे हावभाव भी उसने किए। उसकी उस चर्चापर खंडू पाटील क्रुद्ध हो गए और हाथमें जो बेत था उससे हाथपर प्रहार किया। पाटील थे भी बलवान फिर क्रोध में आकर प्रहार करनेसे उसका हाथ टूट गया और वह मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा। पाटील ने दूसरे महार द्वारा कागदपत्र भेज दिए। अब यहाँ क्या वृत्तांत हुआ सो सुनिये।

उस महारके सगे सम्बन्धियोंने उसे उठाकर देशमुखके द्वारपर डाला। हाथ टूटा जान कर वो लोग अत्यंत संतुष्ट हुए। क्योंकि उन्होंने सोचा, पाटील को नीचा दिखानेके लिए यह अच्छा संयोग है। उन्होंने उसे तत्काल कचेरी ले जाकर अधिकारियोंको उल्टी सीधी पट्टी पढाई, जिससे अधिकारियों ने तत्काल पाटील को पकडकर लानेका आदेश दिया। उस महारकी शिकायत रजिस्टरमें लिख ली। सारे गाँव में यह बात फैल गयी। कल प्रातः पाटील को हथकड़ी पहनाई जाएगी। यह जब खंडू पाटील ने सुना तो उसके मुँहका पानी सूख गया और वह बड़ा चिंतातुर हो गया। सोचने लगा, भगवन! जिस शेगाँव में सिंहके समान विचरण करता था, वहाँ मुझे बेड़ियाँ लगनेवाला प्रसंग आया। यह तो बड़ी अपकीर्तिकी बात है। संभावित की अपकीर्ति मरणसे भी अधिक दुखदायी होती है। (सम्भावितस्यचाकीर्ति मरणादतिरिच्यते) - गीता।

खंडू हताश हो गये। उस समय उसे एक उपाय सूझा कि श्रीगजानन महाराज को शरण जाना चाहिए। दूसरा कोई इस संकटका निवारण नहीं कर सकता। लौकिक यत्न करनेके लिए भाई लोग आकोला गए थे, सो खंडू पाटील रात्रीको महाराजके पास आये। उनके चरणोंपर मस्तक रखकर कहा, “महाराज, मुझपर बड़ा कठिन प्रसंग आ पड़ा है। मैंने सरकारी कामसे एक महारको भेजना चाहा उसने नाकारा और आँयबाँय बका, सो मैंने उसे लकड़ी मारी, जिससे उसका हाथ टूथ गया। देशमुखों ने फुंसी का फोड़ा बना दिया। वो लोग मेरा अहित करनेपर तुले हुए हैं। इस बारेमें मुझे कैद करनेका प्रयत्न चल रहा है। जो मेरी बड़ी अपकीर्ति है। गुरुदेव! मेरा गला भले ही काट दीजिये किन्तु यह प्रसंग नहीं आना चाहिए।

इसमें मेरा अपराध अत्यल्प है! हे दयालु! यह बात का बतंगड़ बना दिया। राईका पहाड़ खड़ा कर दिया है। जयद्रथ को मारनेकी प्रतिज्ञा करके अर्जुन जब अग्निकाष्ठ भक्षण करने लगा तब भगवान श्रीकृष्ण ने उसकी अपकीर्ति भगवानने बचाई। सो मेरी कीर्ति रूप यह पांचाली को देशमुख लोग नग्न करना चाहते हैं। भगवान उसकी लाज बचाईये। ऐसा कहकर पाटील अश्रुधारा बहाने लगे। घर के लोग पहले ही शोकाकुल थे। यह देखकर उनकी दशा और भी बिगड़ गयी। उसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकता। समर्थ ने खंडु पाटील को दोनों हाथ से उठाकर आलिंगन दिया और कहा, 'अरे, कार्यकर्ता पुरुष को अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। तू इसकी बिलकुल चिंता मत कर। स्वार्थ दृष्टि बढ़ जाने पर ऐसा ही होता है। पाटील और देशमुख तुम लोग एक जातिके होते हुए भी एक दूसरेकी हानि करना चाहते हैं। यह स्वार्थ परायणता के कारण है। कौरव, पांडवों का महाभारत युद्ध स्वार्थ के कारण ही हुआ। जिसमें न्याय की दृष्टिसे पांडवों का पक्ष सत्य था इसीलिए भगवान ने उनकी सहायता की और कौरवों को उन्हें मरना पड़ा। देशमुख कितना भी जोर लगाये फिर भी तुम्हें हथकड़ी नहीं पहननी पड़ेगी। इसमें तिलमात्र शंका न करो।' आगे जाकर महाराज का कथन सत्य हुआ। इस प्रकरण में खंडु पाटील बिलकुल निर्दोष छुट गए। संतोंके मुखसे निकली वाणी कभी असत्य नहीं होती।

आगे चलकर पाटील लोग महाराजके भक्ति में लीन हो गए। भला अमृतका सेवन किसे अच्छा नहीं लगता।

इसके बाद खंडु पाटील ने बिनति करके महाराज को अपने घर रहने के लिए ले गया। उस समय अचानक पाटील के यहाँ दस-पाँच तेलंगे ब्राह्मण आ पहुँचे। तेलंगे ब्राह्मण विद्वान् होते हैं। कर्मठ होते हैं। वेदोंपर उनका प्रेम होता है। किन्तु ये लोग धन के लोभी होते हैं। सो कुछ धन प्राप्त होगा इस आशा से समर्थ के पास आये। उस समय महाराज ओढ़कर सोये हुए थे। उनको जगानेके दृष्टिसे वो लोग ऊँचे स्वरसे वेदमंत्रों का जटा पाठ करने लगे। (वेद पठन की छः विकृतियाँ हैं जैसे क्रमपाठ, पदपाठ जटा-रथ-माला और घनपाठ) उस जटापाठ में वो लोग कुछ अशुद्ध बोले और उसको शुद्ध नहीं किया। आगे पढ़ने लगे सो महाराज तुरंत आसनपर उठकर बैठ गए और उससे बोले, “अरे! तुम लोग काहेको वैदिक हुए? इसी प्रकारसे वेदविद्या को हीनता मत लाओ, यह पेट भरनेकी विद्या नहीं, अपितु मोक्षदात्री है। पहने हुए शाल की कुछ तो कीमत रखो, केवल शाल धारण करने से वैदिक नहीं हो जाता। मैं उच्चारण करता हूँ, वैसा स्वरों का उच्चारण करो, वैदिकोंका ढोंग लाकर कुछ भी उच्चारण करके सामान्य जनों को ठगों मत। इतना कहकर ब्राह्मणों में जो ऋचायें पढ़ीं थीं उनका अस्खलित सस्वर उच्चारण समग्र अध्यायको पढो। पाठ में न तो कहीं अशुद्धता थी और न स्वरहीनता। स्पष्ट उच्चार पढ़ा, मानो, साक्षात् वशिष्ठ ही वेदोच्चारण कर रहे हों। (शायद वशिष्ठ का सूक्त महाराज ने पढ़ा हो, क्योंकि वशिष्ठ ऋग्वेदों के कई सूक्तों के दृष्टा हैं। यह देखकर तेलंगे ब्राह्मण अधोवदन होकर बैठे थे, उन्हें सामने देखने का सामर्थ्य नहीं था) ये साक्षात् ब्रह्माजी ही हैं, जिनके चारों मुखसे चार वेदोंका उच्चारण हुआ है। इसमें कोई शंका नहीं रही। ये परमहंस दीक्षावाले बंधनमुक्त, जीवनमुक्त सिद्ध योगी हैं।

हम लोगोंको कुछ पूर्वसुकृत था जिससे हमको महाराज का दर्शन हुआ। ये वामदेव ही हैं। इनको दूसरी उपमा नहीं दी जा सकती। बादमें पाटील के हाथ से महाराज ने उन ब्राह्मणों को एक एक रूपया दक्षिणा रूप में दिया। उसके बाद ब्राह्मण अन्य गाँव चले गए। महाराज उपाधि से ऊब गए। श्रोतागण सच्चे संत को उपाधि ठीक नहीं लगती। दाम्भिक उपधिको भूषण समान धारण किए रहते हैं। गाँव के उत्तर दिशा में एक बगीचा था। वहा साग, भाजी बहुत पैदा होती थी। एक शिव मंदिर भी था। नीम की शीतल छाया थी। यह कृष्णा जी पाटील का मल्ला था। यह कृष्णाजी खंडू पाटील का सबसे छोटा भाई था। महाराज इस मल्ले में नीम के झाड की छाया में एक ओटेपर आकर बैठ गए। महाराज कृष्णाजी से बोले, “मैं इसी मल्लेमें शिव सान्निध्य कुछ दिन रहना चाहता हूँ। ये कर्पूरगौर, नील कंठ, पार्वती के पति, राजराजेश्वर भोलेनाथ हैं। ये तुम्हारे मल्ले में रहे हैं सो मेरा भी यहाँ रहने का विचार हो आया। सो यहाँ छाया का प्रबंध करो। सो सुनते ही कृष्णाजी पाटील ने तत्काल छः पत्रे मँगवाकर उस ओटे के ऊपर छप्पर बना दिया। समर्थने वहाँ निवास किया, इसीलिए यह मल्ला आज तीर्थ क्षेत्र बन गया (नारद भक्ति सूत्र में कहा है, ‘तिर्थि कुर्वन्ति तिर्थानि’) जहाँ राजा जाता है वही राजधानी हो जाती है। महाराजके साथ में सेवाके लिए भास्कर पाटील थे और तुकाराम कोकाट्या नामक सेवक था। खाने-पीने की सब व्यवस्था कृष्णाजी पाटील करता था और महाराज के भोजन के बाद वे प्रसाद पाते थे। अस्तु॥

एक बार बड़ी अद्भुत घटना हुई। महाराज जब मल्लेमे थे तब फिरते फिरते दस बीस गोसाईं लोग वहाँ आए। सर्वत्र महाराजकी कीर्ति थी। उन लोगोंने भी सुन रखा था। सो वो लोग भी मल्ले में रुक गए।

गोसाईंयोंने पाटील से कहा, “हम लोग तीर्थ करनेके उद्देश से निकले हैं। गंगाजल लेकर हमलोग रामेश्वर जा रहे हैं। गंगोत्री-जमनोत्री, केदारनाथ, हिंगलाज, गीरनार, डाकोर ऐसे अपार क्षेत्र हम लोगों ने यात्रा की है। हम लोग ब्रह्मगिरी महाराजके शिष्य हैं वो भी हमारे साथ हैं। ये ब्रह्मगिरी महाराज साधू हैं, साक्षात् श्री हरि जिनकी सेवामें हैं। तुम्हारे पूर्व पुण्य से यहाँ आये हैं। हम लोगों को पूरी-हलवा चाहिए। और शांभवी भी लगती है, उसकी व्यवस्था कीजिये। हम लोग केवल तीन दिन यहाँ रहेंगे। चौथे दिन चले जाएँगे सो आप कष्टी न हो। बड़े भाग्य से आपको यह अवसर प्राप्त हुआ है। पाटील, अपने मल्लेमें तुमने एक नंगा पागल रखा है और हम लोगों को अयाचित दान देनेमें आनाकानी कर रहे हो, यह ठीक नहीं। गधे को जो पालते हैं और गौ को लाथ से मारते हैं। क्या उन्हें सन्मतीवाले कहा जा सकता है? हम लोग वैराग्य वान गोसाईं हैं। सब वेदांत का ज्ञान हमको है। इच्छा है तो मल्लेमें सुनने को आईये तब कृष्णाजी पाटील ने कहा, मैं आप लोगोंको हलवा पुरी कल दूँगा, आज केवल रोटियाँ है वो ले जाईये। गांजा जितना चाहिए उतना वहाँ मिल जाएगा। साक्षात् नीलकंठ भगवान शिव वहाँ विराज रहे हैं। दूसरे प्रहर के समय गोसाईं लोग मल्लेमें पहुँचे और कूँ के ऊपर बैठकर बेसन, रोटी खाने लगे। छपरीके एक तरफ महाराज के सामने गोसाईंओंने अपने कडासन लगाए।

इन गोसाईंयों का जो महंत था ब्रह्मगिरी, वह अस्त, समय भगवद्गीता पढने लगा। गोसाईं लोग तथा गाँव के अन्य लोग भी सुनने को वहाँ आये थे। भगवद्गीता का ‘नैनं छिदंति’ यह श्लोक उसने निरूपणके लिए लिया। यह ब्रह्मगिरी बड़ा दाम्भिक था। उसे अनुभव लेश मात्र भी नहीं था।

उसका निरूपण गाँव के लोगोंने सुना और कहा, यह केवल शब्दच्छल है, ठीक नहीं। सब लोग केवल पोथी समाप्त होने पर महाराज के दर्शनार्थ पत्रोंके भीतर आकर बैठे हैं। लोग कहने लगे ये केवल निरूपण था स्वानुभवी पुरुष महाराज यहाँ बैठे हैं। यह सुनकर गोसाईं को क्रोध आ गया। सब गोसाईं गांजा पीनेके लिए वहाँ बैठे थे। पत्रे के नीचे पलंग के ऊपर महाराज बैठे थे। जिन्हें भास्कर चिलम बनाकर देता था। उस चिलीम से अग्नि का एक स्फुल्लिंग पलंगपर गिरा। जिसपर किसीकी निगाह नहीं गई। थोड़े समयके बाद धुआँ निकालने लगा। और वह पलंग जलने लगा। आग चारों तरफ लगी थी। भास्कर महाराजसे बोला महाराज, “जल्दी से पलंग से नीचे आइये, यह लकड़ी का पलंग है, पानीके बिना नहीं बुझेगा।” यह सुनकर महाराजने कहा, “अरे भास्कर, आग बुझाने का कोई प्रयोजन नहीं, पानी लाने का कारण नहीं। ब्रह्मगिरी महाराज! आप तो भगवद्गीता यथावत् जानते हैं, आकर इस पलंग पर बैठिये। अभी तो आपने ‘नैनंछिन्दन्ति’ श्लोक का निरूपण किया, उसकी परीक्षा का समय भगवानने प्रत्यक्ष ला दिया। ब्रह्मको अग्नि जलाता नहीं इसका प्रत्यय बताइये। आप पलंग पर बैठने से क्यों डरते हैं। अरे भास्कर, जल्दी से जाकर ब्रह्मगिरी को आदर से लाकर इस जलते पलंग पर बिठाओ।” भास्कर उत्तम बलदंड शरीरी था। गोसाईं उसके सामने मच्छर सा था। महाराज की आज्ञा पाकर भास्कर दौडकर गया और ब्रह्मगिरी का दाहिना हाथ पकडकर उधर ले गया। वह पलंग चारों ओरसे जल रहा था, किन्तु महाराज जरा भी विचलित नहीं हुए ज्वालाओं के बीचमें बैठे रहे। श्रीमद्भागवत पुराण में कथाधुसुट प्रह्लाद की कथा है, की उसको जब अग्नि में खड़ा किया तो अग्नि उसके लिए चंदनसा शीतल था। ऐसा भगवान व्यासजीने लिखा है।

महाराज ने इस पुराण कथा से सत्य प्रस्थापित करने के लिए ही मानो यह लीला की। ब्रह्मगिरी भास्कर से प्रार्थना करने लगा, कि मुझे पलंग के पास मत ले जाओ। मैंने महाराजका अधिकार नहीं जाना था। किन्तु भास्कर ने उसे घसीटकर सदगुरु की आज्ञानुसार सामने लेकर खड़ा किया। महाराज बोले, 'नैनंदहति' वाक्यों को अब सत्य करके बताओ"। सो सुनकर ब्रह्मगिरी बड़ा घबरा गया और डरते बोला, "महाराज हमलोग पेटु गोसाई हैं। पुरी हलवा खाने के लिए हम लोगोंने गोसाईका भेष लिया है। कृपालू, हमारे अपराधोंको क्षमा करिए। बिना कारण केवल शाब्दिक गीताका प्रपंच हम लोग करते हैं। मैंने आपको पागल कहा। अब उसका मुझे बड़ा पश्चाताप हो रहा है। मैं दातोतले तिनका दबाकर गौके समान आपकी शरण में आया हूँ। यह सुनकर शेगाँव के लोगोंने महाराजसे प्रार्थना की, भगवन, आपको अग्निसे कोई भय नहीं यह हम लोगों ने प्रत्यक्ष देख लिया। कृपाकर हम लोगोंके लिए आप पलंग से नीचे आ जाईये। ऐसी अवस्था में आपको देखकर हमारे हृदय की धड़कने बढ़ गयी हैं। यह देखकर गोसाई बड़ा लज्जित हुआ और कुछ बोला नहीं। लोगोंकी बिनातीको मान देकर महाराज जैसेही नीचे उतारे, वह पलंग भहराकर ढेर हो गया, जिसको एक क्षण भी नहीं लगा। पलंग सब जल गया था। जो थोड़ा कुछ बचा उसे लोगोंने साक्षी के लिए बुझाकर रखा। ब्रह्मगिरी महाराज के चरणों पर गिर पड़ा, गंगा जल का स्पर्श होनेपर भला क्या पाप शेष रह जाते हैं। इसके बाद महाराज ने मध्य रात्रीको ब्रह्मगिरी को उपदेश दिया, कि आजसे इस प्रकारकी चेष्टा कभी ना करना। जिन्होंने शरीर पर भस्म धारण किया उनको चाहिए कि उपाधि को दूर रखे, उसमे लिप्त न हो। बिना अनुभव के निर्थक कोई कथा नहीं कहनी चाहिए।

इसी वजह से हमारी संस्कृति का हास हुआ है। मछिन्द्रनाथ, जालन्धरनाथ, गोरखनाथ, गहनीनाथ, गोसाईं हो गए जिन्होंने सन्यास मार्ग का प्रत्यक्ष आचरण करके उसे दृढ़ किया। गहनीनाथ ने ज्ञानेश्वर महाराज जैसे शिष्य तैयार किए, जिनका ज्ञान प्रकाश सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं। श्री शंकराचार्य जैसे अनुभूतिवाले सन्यासी हो गए। उसी प्रकार प्रपंच में रहकर ब्रह्मानुभूति एकनाथ महाराजने प्राप्त की। स्वामी समर्थ रामदास- जो आजन्म ब्रह्मचर्य का पालन करके ब्रह्म साक्षात्कारी इस भूमि पर हो गए। उनके चरित्रोंका स्मरण करो। बेकामके पृथ्वीपर मत भटको और केवल हलवा पुरी पर निगाह मत रखो, नहीं तो केवल उतनाही मिलेगा, अर्थात् केवल पेट भरेगा। इसप्रकार का बोध रात को महाराजने ब्रह्मगिरी को किया। सो प्रातःकाल होते ही बिना किसीसे मिले वह चला गया, अपने शिष्योंके साथ। यह बात गाँव में दूसरे दिन पता चली सो उस जले हुए पलंग को देखने के लिए- लोग आये। अस्तु।

यह दासगणू विरचित श्री गजानन विजयनामक ग्रन्थ भाविक जनोंको भवसागर से पार करे यही इच्छा है।

॥ शुभं भवतु ॥ श्रीहरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्री गजानन विजय ग्रंथस्थ अष्टमोऽध्याय समाप्त ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय 9 ॥

श्रीगणेशाय नमः । हे सगुणरूपधारी रुक्मिणीके पति । चन्द्रभागा के तटपर विहार करनेवाले, संत को वरदान देने वाले, पतित पावन दयानिधि । शंकर धनुष धारण करने वाले भगवान । जबतक छोटे लोग नहीं रहेंगे तब तक बड़ों का बड़प्पन कैसे सिद्ध होगा? पतित नहीं होंगे तो आपको पतितपावन बिरुद कहाँ से प्राप्त होगा? ये आप मत भूलिये कि हम पतित हैं इसीलिए आपको पतितपावन बिरुदावली है । पारस लोहे को सोना बनाता है इसीलिए भूमिपर उसका महत्व है। छोटे झरनोंको अपने प्रवाहमें सम्मिलित कर लेती है इसीलिए गोदावरी को तीर्थ कहाँ जाता है। अपने मनमें यह सब विचार करके हे भगवान ! हे माधव ! डूबते हुए दासगणूको सहारा दीजिए, उसे कही डूबने न दो । अस्तु ।

गोविंदबूवा टाकळीकर नाम के बड़े कीर्तनकार उस समय शेगाँव आये । शेगाँवमें वर्तमान मंदिर के पूर्व - दक्षिण कोने में एक प्राचीन शिव मंदिर था, जिसका जीर्णोद्धार मोटे नामके साहुकारने किया था । आधुनिक लोग मोटर - क्लब - सायकल आदिके लिए धन खर्च करते हैं । मंदिर जीर्णोद्धार आदिका उन्हें कोई लगन नहीं रह गया है । ये मोटे साहुकार इस पंक्ति के नहीं थे। बड़े भाविक थे। और उन्होंने शिवमंदिरका जीर्णोद्धार किया था। इसीलिए इस शिव मंदिर को मोटे मंदिर ही लोग कहते थे । अब आगे क्या हुआ सुनिए । इस मोटे मंदिर में टाकळीकर उतरे और उनका घोडा मंदिर के सामने की जगह में बँधा था ।

घोडा बड़ा उपद्रवी था | किसीको भी दुलत्तिया झाड़ता था| अगर कोई सामने से आता तो श्वानके समान मुँहसे काटता था | बार बार रस्सियाँ तोड़ डालता था, एक क्षणभर भी शांत नहीं रहता था | कभी कभी रस्सी तुड़ाकर जंगल में भाग जाता था| रात दिन हिनहिनाता रहता था | ऐसी अनेक उपाधिया उसमे थी| इसीलिए उसे बाँधने को लोखंडी संकले थी| ये संकले टाकली में ही कीर्तनकार भूल आये थे | कैसे तो भी रस्सीयो को बांधकर कीर्तनकार रात को सोने गए| दो प्रहार रात हो गई, सारा आकाश अंधकारमय हो गया| दिनको डरनेवाले उल्लू पक्षी धुत्कार करने लगे| टिटहरी पक्षी टीटी शब्द करने लगी | चमगादड़ भक्ष की खोज में निकल पड़े | और पिंगल पक्षी झाड़पर बैठकर किलकिला शब्द करने लगे| सभी तरफ शांत वातावरण हो गया| घरों के दरवाजे बांध हो गये | एक भी व्यक्ति रास्तेपर नहीं दिख पड़ रहा था| ऐसे समय में श्रीगजानन महाराज जहाँ घोडा बंधा था वहाँ आ पहुंचे | जो जो दुष्ट स्वभाववाले - दुराचारी होते हैं उन्हें सुधारने के लिये ही साधु पुरुष ईश्वर की प्रेरणा से जन्म लेते हैं | जैसे रोग निवारण करने के लिये औषध का प्रयोजन किया जाता है | वैसे ही दुष्टोंका दोष निवारणही संतो का प्रयोजन है | गजानन महाराज घोड़े के पास आकर उस रात्री के समय बड़े आनंद के साथ उस घोड़ेके चारों पैरों के बीच सो गए | मुँह से वे 'गण गण गणात् बोते' मात्र का जप करते जा रहे थे| यह सूत्र सांकेतिक मंत्र है | जिसका अर्थ भला समर्थके बजाय कौन जान सकता है ? मेरे दृष्टिसे इस भजन का अर्थ ऐसा लगता है, 'गणी' इस शब्द का अर्थ मोजना-गिनना ऐसा है | दूसरा शब्द 'गण' है | जिसका अर्थ है जीवात्मा अर्थात् जीवात्माही गण है, जैसे विष्णुगण, शिवगण आदि |

अर्थ हुआ गण-गण गणात अर्थात् ये सब जीवात्मा ब्रह्मका ही स्वरूप हैं, उससे भिन्न नहीं हैं । 'बा' यह सर्वनाम है । जिसका अर्थ है मन। बोते यह शब्द 'बाटे' शब्दका अपब्रष्ट रूप प्रतीत होता है । सब मिलकर अर्थ हुआ । अरे, मन यह जीव ब्रह्म ही है । उसे पृथक् मत समझ । शेगाँवमें इस भजनके बारे में दो प्रवाह हैं । कुछ लोगोका कहना है कि महाराज 'गिण गिण गिणात बोते ' भजते थे और कुछ कहते हैं गणी गण गणात बोते' उससे हमारा कोई प्रयोजन नहीं । अपना केवल कथा से प्रयोजन है । महाराज घोड़े के चारों पैरो के बीच आकर सो गये । उपरोक्त भजन अखंड रूप से चालू था। मनो उस भजनरूप श्रृंखला से घोड़ेके पैर बंधे थे । कीर्तनकार गोविंदबूवा के मन में घोड़े की उदंडता शंका थी ही इसीलिये वो बीच बीचमें उठकर घोड़े को देखते रहते थे । जब उन्होंने खुटेपर घोडा शांत खड़ा देखा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ । उसके मनमें फिर दूसरी शंका उठी कि कहीं घोडा व्याधिग्रस्त तो नहीं हो गया। जो इतना चुपचाप खड़ा है । क्योंकि वह कभी स्थिर नहीं रहता था। वह देखने जब वे घोड़े के समीप गये तो कोई मनुष्य घोड़ेके पैरोके बीच सोता नजर आया। जब वे अति समीप गये तो कैवल्य देनेवाले ( मोक्ष देनेवाले) महाराज सोये दिखाई पड़े। अपने दिलमें उन्होंने घोड़े कि शांति का कारण जान लिया । समर्थ श्रीगजानन महाराज के सान्निध्य से घोडा शांत हो गया था । जैसे कस्तूरी के सुवास के आगे दुर्गन्धका ठिकाना नहीं रहता । यह देखकर गोविंदबूवा ने महाराज के चरणकमलपर अपना शीर रख दिया और वे रोमांचित अष्टभावसे गद्गद हो गये । मुखसे महाराज कि स्तुति करने लगे । भगवन ! आप साक्षात् गजानन हैं, यह प्रत्यय आज मुझे मालुम हो गया । गजानन विघ्नहर्ता हैं । भगवन इस घोड़ी सब डरते हैं, इसकी उदंडता शमन करनेके लिये ही आप आये ।

यह बड़ा उदंड है | चलते चलते उछल पड़ता है | हर क्षण पिछली दुलत्ती झड़ता रहता है | उसकी इस उदंडता से त्रस्त होकर मैं इसे बेचने गया लेकिन कोई लेनेको तैयार नहीं हुआ | इतनाही नहीं, मैं इसे बिनामुल्य देने को तैयार था तो भी कोई इसे लेनेको तैयार नहीं हुआ | इस दुष्ट जीवपर आपने दया कि यह बड़ा अच्छा हुआ | हम जैसे कीर्तनकारो का घोडा गरीब होना चाहिए, जैसे गडरियाँ के यहाँ वाघका उपयोग नहीं | इस प्रकार वह घोडा एकदम शांत गरीब हो गया क्योंकि जड़ जीवोंका उद्धार करनेको ही स्वामी का अवतार था | महाराज घोड़े से बोले, 'अरे भाई, अब तुम बिलकुल उदंडता न करना, तुम भगवन शंकरके सामने हो, सो उनके वहां नंदीके समान सरल हो जाओ |' ऐसा बोलकर महाराज वहाँ से चले गये | श्रोतागण दूसरे दिन महाराज मल्लेमे थे तो गोविंदबुवा उस घोड़े पर बैठकर महाराज के दर्शन को ए | ये देखकर सब लोग भयभीत हो गये | क्योंकि घोड़े का स्वाभाव सारे शेगाँव को पता था | सब लोग कहने लगे इस दुष्ट घोड़े को यहाँ किसलिए लाये? यहाँ बच्चे, बूढ़े, स्त्रियाँ फिरती है, सो किसीको भी हानि पहुंचा सकता है, सुनकर गोविंदबुवाने कहा, महाराजने इसको शांत कर दिया | अब इससे कोई भय नहीं | अब यह गरीब गाय के सदृश्य हो गया है | उसके बाद उन्होंने उसे इमली के पेड़ के नीचे खड़ा कर दिया | जो एक घंटा तक बिना बाँधे खड़ा रहा | मल्लेमे भाजीपाला तथा घास भी था जो हरा था - किन्तु उसको घोड़ेने मुह तक नहीं लगाया | देखिये संतो का प्रभाव कितना अमित है, कि पशु भी उनकी आज्ञा कस पालन करते है | (अहिंसा प्रतिष्ठायांतत्सन्निधौ वैर त्यागः) ऐसा कहकर टपरीमे महाराज का स्तवन प्रारंभ किया |

अति अगाध प्रभु कृपा तुम्हारी । सुधरहि खलहु होही सतचारी ॥  
पारस परसि कृपा करे लेशा । धरहुवरद दयाल मम सीसा ॥

ऐसी स्तुति करके गोविंदबूवा धोड़े को लेकर चले गये । वे टाकळी के रहने वाले थे । सो वहाँ चले गये । तुलसीदासने अपने मानसमे कहा है, ' खलसुधारही सत्संगति पाई ' ॥ यह महाराज कि इस लीला से प्रत्यक्षतया सिद्ध होता है । हे श्रोतागण, महाराज के दर्शन को रोज शेगाँव में भीड़ होने लगी । सब लोग अपने मन में कोई न कोई सकाम हेतु से महाराज के दर्शन को आते । ऐसे ही यात्रा में बलपुर जो अकोला मंडलीकि एक तहसील है, वहाँ के दो व्यक्ति विशिष्ट संकल्पके साथ श्रीसमर्थ के दर्शन को आये । वापस लौटते समय दोनों आपसमे बातचीत करते जा रहे थे कि, अगली बार हम लोग सुखा गांजा महाराजके लिये लाएंगे । क्योंकि, महाराज को गांजा बड़ा प्रिय है । सो पाकर महाराज प्रसन्न होकर हम पर कृपा करेंगे । लोग मावा - बर्फी इत्यादि लाते हैं हम लोग गांजा ले आएंगे, धोती गठियालो नहीं तो विस्मरण हो सकता है । दूसरी बार वो लोग दर्शन को तो आये, किन्तु गांजा लाना भूल गये । महाराज के चरणो पर सर रखने के बाद उसे गांजा न लेना का स्मरण हुआ । मनमें सोचा ठीक है, अगली बार ले आएंगे । अबकी बार दुगना गांजा ले आएंगे, ऐसा कहकर दर्शन लेकर चले गये । जब तीसरी बार आये तो वही अवस्था हुई । वो लोग फिर गांजा भूल गये । हाथ जोड़कर महाराज के सामने बैठे किन्तु गाँजेका उन्हें स्मरण भी नहीं हुआ । यह देखकर महाराज भास्कर से बोले," भास्कर कैसे लोग है इस जगत में जो धोती गठियाने के बाद भी वस्तु लाना भूल जाते हैं । जातिसे ये लोग ब्राह्मण है किन्तु स्वयं ही असत्य भाषण करते हैं ।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

ब्राह्मणो ने ब्राह्मणत्व छोड़ दिया, आचार - विचार भी छोड़ दिए यही कारण है उनके पतन का। मन ही मन संकल्प करते हैं और हाथ हिलाते वैसे ही आते हैं। क्या इसी से इनका मनोरथ पूर्ण हो सकता है? बोलने में तालतंत्र होना चाहिए। चित्त निर्मल होना चाहिए। तभी घनश्याम कि कृपा हो सकती है। "यह सुनकर दोनो व्यक्ति समझ गये कि महाराज सर्वज्ञ है, अगाध ज्ञानी है। जैसे सूर्य से कुछ छिपा नहीं है, वैसे ही इनसे कुछ छिपा नहीं क्योंकि, हम लोगोने ही ऐसा संकल्प किया था। यहाँ गाँवमें जाकर गाँजा ले आएंगे। ऐसा बिचार कर जैसे वे दोनों उठकर जाने लगे तब महाराज बोले, 'अरे ! अब बसी कढ़ी गरम करने से क्या लाभ? मुझे गाँजेकि बिलकुल आकांक्षा नहीं है। अब गाँजा लेने बाजार में जाने कि आवश्यकता नहीं। तुम लोगो कि मनोकामना पूर्ण होने पर ले आना। किन्तु एक बात का स्मरण रखो कि लबाड़ कि मनोकामना पूर्ण नहीं होती हमेश कृतिमे और वाणी में सामज्जस्य होने चाहिए। अगले सप्ताहमे तुम्हारा काम पूर्ण हो जायेगा। यह उत्तमतासे होगा, किन्तु नेम न चूकना यहाँ पाँच बार आना, क्योंकि यहाँ मृडाणीपति कर्पूरगौर शंकर यहाँ स्थित है, जिनकी कृपा से देवताओ के कोषाध्यक्ष कुबेर स्वयं धनवान हुए हैं। जाओ, उन्हें नमस्कार करो। और अगली बार गाँजा लेन को न भूलना। परमार्थी को असत्याचरण कभी नहीं करना चाहिए"। ऐसा उपदेश सुनकर वो दोनों महाराज कि चरण वंदन कर भगवान शंकर के दर्शन करके अपने गाँव बालापुर गये। अगले सप्ताह में उनका कार्य सफल हो गया, सो संकल्पानुसार वो लोग गाँजा लेकर महाराज के पास आये, अस्तु। श्रोतागण इस बालापुर कि दूसरी कथा आप लोगो को सुनाता हूँ। बालापुर में बालकृष्ण नामक एक रामदासी था।

उसकी पत्नी का नाम था पुतलाबाई जो बड़ी धार्मिक थी और प्रतिवर्ष ये दोनों पति-पत्नि पैदल सज्जनगडकी पौष महीनेमें वारी करते थे | दोनों पति - पत्नि एक विचार के थे | भारवाहन के लिए एक घोडा लेते थे | रामदासी संप्रदायक साहित्य कुबड़ी कंथा और दासबोध ग्रन्थ लेकर जाते थे | इनको अपने साधुत्व का कोई अहंकार न था | मार्गमे प्रतिदिन झोली फांदकर गाँव में भिक्षा माँगकर भगवन रामचन्द्रजी को भोग लगाकर भोजन करते | पौषवैद्य नवमी को बालापुर छोड़ते बालकृष्ण के हाथ में चन्दन के करताल और पुतलाबाई के हाथ में झाँज होती थी सम्पूर्ण मार्ग में निरंतर रघुनाथजी का नाम संकीर्तन करते मार्ग क्रमण करते थे | शेगाँव से खामगाँव मेहेकर - देवलगाँवराजा, जालना में आनंदस्वामी को वंदन करके जांबनगरी जो की, समर्थ रामदास स्वामी का जन्मस्थल है, तीन दिन निवास करते थे | उसके बाद बीड आंबेजोगाई का दर्शन और मोहोरीमें बेलेश्वर का दर्शन करते | डोमगाँव में समर्थके पट्टशिष्य कल्याणस्वामी का दर्शन करते, उसके बाद नरसिंगपुर - पंढरपूर - नातेपुते - शिंगणापुर - वाई और सातारा होते हुए सज्जनगडकी तलहटी में पहुँचते | माघ वैद्य प्रतिपदा को वे दोनों सज्जनगड पहुँच जाते क्योकि माघ वैद्य प्रतिपदा से नवमी तक दासनवमी का उत्सव वहाँ मनाया जाता है यथाशक्ति वहाँ ब्रह्मभोज की व्यवस्था भी वो करते | इस तरह के एकनिष्ठ श्रद्धावान रामदासी होना कठिन है | दासनवमीका उत्सव हो जानेपर उसी मार्ग से वो बालापुर वापस लौटते थे | माघ वैद्य द्वादशी को सज्जनगड से पैदल जाने को निकलते| एक बार वद्य एकादशी को वह रामदासजी की समाधिके पास बैठे तब दुःख के कारण उसके नेत्र भर आये | कंठ रुंध गया | वाणीसे शब्दोच्चार भी कठिन हो गया वह प्रार्थना लकरने लगा, हे पुण्यपुंज गुरुदेव रामदास स्वामी समर्थ !

अब मेरा शरीर शिथिल हो गया है | इस कारण अब मुझमें पैदल वारी नहीं जा सकती | इतना ही नहीं वाहनपर बैठकर आने की भी क्षमता अब मेरे शरीर में नहीं है | आजतक यश नियम नैने पला, अब आगे यह असम्भव जान पड़ता है | क्योंकि परमार्थके लिए शरीर सुदृढ़ होना चाहिये 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ' हे रामदास ! आप ही मेरी माता है | आप सब कुछ जानते हैं | इस प्रकार की प्रार्थना करके वह शय्या पर लेट गया | उसको ब्राह्म मुहूर्तमें स्वामी समर्थ रामदासजी ने स्वप्ने में आकर कहा, अरे ! ऐसा हताश होने का कोई कारण नहीं, तुम्हें यहाँ सज्जनगढ़ आनेकी आवश्यकता नहीं | वहाँ बालापुर में सपने घर में यह दसनवमी का उत्सव इतःपर मनाओ मेरी तुमपर पूर्ण कृपा है | मैं दासनवमी को आऊंगा, तुम्हें दर्शन देने के लिये| परमार्थ का आचरण शरीर सामर्थ्यानुसार ही करना चाहिये| स्वप्न में इस प्रकार का आदेश सुनकर बालकृष्णको अत्यंत आनंद हुआ | वह सपालिक बालापुर अपने घर आ गया | हे श्रोतागण, इसके बाद दूसरे वर्ष क्या हुआ वह मैं बताता हु | सावधान होकर सुनो | माघ वैद्य प्रतिपदा को बालकृष्ण बुवाने अपने घरमें दसनवमीका उत्सव प्रारम्भ किया | रोज दासबोध का पठन तथा रात्रि को हरि किर्तन होता था |उसके मन में यह विचार आता की देखे रामदास स्वामी नवमी को कैसे आते हैं? दोपहरमें ब्रह्मभोज के उत्सक के लिये चंदा इकठ्ठा किया | इस प्रकार बड़ी धूमधाम से नवमी का उत्सव संपन्न हुवा | नवमीकी दूसरे प्रहार अघटित घटना हुई | साक्षात्कारी श्रीगजानन महाराज दोपहरमें नवमी को बालकृष्ण के द्वार पर खड़े हो गए |

अंदर भगवान रामचन्द्रजी का अभिषेक किया जा रहा था | सब लोक विस्मित होकर बालकृष्णजी को कहने लगे, आपके यहाँ दासनवमी को गजानन द्वारपर उपस्थित है। सुनकर बाककृष्ण कहने लगा संत गजानन महाराज के चरणकमल मेरे घर में आये, यह अच्छा ही हुआ | किन्तु मैं वस्तुतः समर्थ रामदासजी की बाट जोह रहा हु | उन्होंने स्वप्न में वचन दिया था कि मैं दासनवमी को जरूर आऊंगा, वह असत्य कैसे हो सकता है ? इधर स्वामी गजानन दरवाजेपर खड़े होकर 'जय जय रघुवीर समर्थ ' का घोष करने लगे और गौतम ऋषिकी पत्नि अहल्योद्धार का प्रसंग श्लोक में उच्चारण करने लगे |

**जिन चरण के स्पर्श से शीला नारी भई दिव्य | श्री राघव महिमा अमित जानीन सक रवि कव्य ॥**

यह समर्थ वाक्य सुनकर बालकृष्ण द्वारपर आये, तो वहाँ दिगंबर श्री गजानन महाराज खड़े थे | वह उसको नमस्कार करने गया, सो हाथमे कुबड़ी, मस्तक पर त्रिपुण्ड रेखा तथा गोपीचंद की मस्तकपर जटा संभार, जो पीठ पर लटके रहा था, कषाय वस्त्रोंका लंगोट पहने हुए रामदास स्वामी दिखाई पड़े जो दर्शन देखकर बालकृष्ण के नेत्रोंसे आनन्दाश्रु बहने लगे | फिर ऊपर निगाह करके देखा, तो श्री गजानन महाराज खड़े हैं, जिसके मस्तकपर न तो जटा थी न तो त्रिपुण्ड, न कुबड़ी, सो देखकर वह पुनः निराश हो गया | दूसरे क्षण पुनः समर्थ रामदास दिखाई पड़े | फिर सूक्ष्मता से निरिक्षण करनेपर श्री गजानन ऐसा चलचित्रवत दृश्य देखकर वह भ्रान्त सा हो गया | समस्या का हल नहीं लग रहा था | यह देखकर श्री गजानन महाराज बोले, 'अरे! इस तरह क्यों चौधियाँ रहे हो | मैं ही तुम्हारा समर्थ हु | पीछे मैं सज्जनगढ़ पे था | अब यहाँ शेगाँव में मल्ले में आ गया हु | तुमको सज्जनगढ़ पर मैंने वचन दिया था दासनवमी को उसे पूरा करने के हेतु आया हु |

---

**॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥**

सब शंका छोड़ दो मैं ही रामदास हूँ | तुम केवल बाह्य शरीर को महत्व देते हो और उसके अन्तरगत आत्मा का विस्मरण करते हो | क्या यह ठीक है ? गीता में श्रीकृष्ण ने श्लोक पढ़ा है | 'वासांसि जीर्णानि' उसका बिचार करो | चलो, मुझे पीढेपर बिठाओ | ऐसा कहकर बालकृष्ण का हाथ पकड़कर घरमे आये श्रीसमर्थ गजानन महाराज के आने की वार्ता फैल गई | सो सब लोक दर्शन के लिये दौड़ने लगे | रामदासी सब दिनभर बिचार करते रहे | रातमे तीसरे प्रहरमे स्वप्न पड़ा की, समर्थ रामदास कह रहे है अरे ! "गजानन मेराही रूप है जो आजकल बरार में है | शंका मत करो क्योकि " संशयात्मात विनश्यति " | गजानन का पूजन करो | यह स्वप्न देखकर बालकृष्ण बड़ा संतुष्ट हुए | उसने गजानन महाराज के चरणकमलों पर अपना सिर रखा, हे भगवन! आपकी लीला में नहीं समझ सकता आपने स्वप्न में मेरी शंका का निवारण किया जिससे मेरी नवमी -सार्थक हो गई | और मैं कृतार्थ हो गया | अब कृपालु कुछ दिन बालापुर में रहिये | जिसपर महाराज ने उत्तर दिया की , कुछ दिनों के बाद में बालापुर आऊंगा तब रहूँगा | इसके बाद भोजन करके वे निकल गए, किन्तु, रस्ते में किसीको जाते हुए नजर नहीं आये | क्षणभरमे वे शेगाँव में पहुँच गए | ( यह कथाही उनके समर्थावतार होनेका प्रमाण है )' यह श्री गजानन विजय ग्रन्थ श्रोतागणोंको सुख देने वाला हो ऐसी दासगणूकी इच्छा है |

॥शुभं भवतु। श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इतिश्री गजानन विजय ग्रन्थस्य नवमोऽध्यायः समाप्त ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय-१० ॥

श्री गणेशाय नमः। हे पंढरीराय! आप अरूप (निर्गुण) पूर्णब्रह्म और अव्यय (अनंत) हो। आप सज्जनों के विश्रामधाम हो। मुझे दूर ना ढकेलिए। हे भगवान! मेरे पातकों का विचार मत कीजिये, मुझे पराया मत समझिए। और तो क्या मैं आपको मुँह दिखाने लायक भी नहीं हूँ। मेरे हाथ से कोई पूण्यकर्म नहीं हुआ है। यद्यपि ऐसी स्थिति है फिर भी आप कृपा करके मुझे अपना लीजिये। गोदावरी नदी छोटे- गंदे नालों को भी अपने उदर में समा लेती है। वहन उसकी अशुद्धता का कोई सिहर नहीं करती। आपकी दया दृष्टि होने पर निर्धन, राजा बन जाता है।

एक बार पुण्यराशि गजानन अमरावती गए। वहाँ आत्माराम भीका जी के घर ठहरे। यह आत्माराम भिकाजी अमरावती प्रांतका अधिकारी था। उसकी बड़ी सत्ता थी। यह कायस्थ प्रभु जाति का था। संतो का अमित प्रेमी था। सदाचार सम्पन्न ग्रहस्थ था। इनके यहाँ महाराज ठहरे। सो उसने उष्णोदक से महाराज को मंगलस्नान करवाया। अनेक प्रकार के उबटन लगाए। संत सहवास, के कारण उसकी चित्त व्रत्तियाँ आल्हादित हो गयी। महाराज को उमरेड काबड़ी किनार की धोती पहनायी। गले में पुष्पहार डाले। अनेक प्रकार का नेवेद्य भोग लगाया और दक्षिणा स्वरूप में सौ रुपए चढ़ाये। धूप-दीप आरती यथासांग पूजन के बाद पुष्पांजलि समर्पित की। महाराजके दर्शनके लिए अपार जनो की भीड़ हो गयी।

सबकी मनोकामना महाराज को अपने घर ले जाकर यथासांग पूजन की हुई, किन्तु बहुत थोड़े लोगों को यह भाग्य प्राप्त हुआ। क्योंकि ऐसे पूण्यपुरुष के चरण घर में पड़ने के लिए भी पूर्वजन्म के सुकृत चाहिए। ऐसा पूर्वपूण्य जिनका था उनके यहाँ महाराज गए क्योंकि वे तो अंतरज्ञानी थे, उन्हें सबके हृदय का पता था। अमरावती में गणेश श्रीकृष्ण खापर्डे नामक बड़े प्रख्यात वकील थे। जिनकी ख्याति कायदा तज़्जो में थे और उनके यहाँ मानो धन की वर्षा होती थी। इनको सब लोग दादासाहेब कहा करते थे। ये बड़े भाविक सज्जन थे। ये शुक्लयजुर्वेदी ब्राह्मण थे। उन्होंने महाराज से उनके घर पधारने की प्रार्थना की, तदनुसार महाराज वहाँ गए सो खापर्डेने यथासांग पूजन किया।

गणेश अप्पा नामक एक लिंगायत बनिया था। उसकी पत्नी का नाम चंद्राबाई था। वह भी बड़ी भावुक थे। उसने अपने पति से कहा कि ऐसे साधु अपने घर ले जा कर ऐसे ही पूजन करना चाहिए आप प्रार्थना करके देखिये। यह सुनकर गणेश अप्पा ने अपनी पत्नी से कहा, “अरे, क्यों तुम पागल हो गयी हो, इनको घर ले जाने के लिए बड़ा वजन चाहिए। खापर्डे जैसे व्यक्ति को भी बड़ा परिश्रम करना पड़ा, सो हम किस झाड की पत्ती है। इस पर चंद्राबाई ने पति से कहा, “नाथ! आपका कहना मुझे ठीक नहीं लगता मेरी मनोदेवता कहती है, कि अवश्य हमारे यहाँ पधारेंगे। साधुजन- निर्धनों पर दीनों पर अधिक प्रेम करते हैं। इनके चरण से हमारा घर न केवल पवित्र होगा अपितु हम लोग कृतार्थ हो जाएंगे, आप प्रार्थना करके तो देखिये। किन्तु अप्पा का धैर्य नहीं होता था कि वह महाराज से घर पधारने की प्रार्थना करे अंततः श्री गजानन महाराज ने स्वयं उनका हाथ पकड़कर उससे पूछा ‘अरे, तुम्हारा घर कितनी दूर है?’

तुम्हारे घर चलकर थोड़ी देर बैठने की इच्छा है। अरे, अकारण भय क्यों करते हो? मन में जो संकल्प होता है उसे निसंकोच, किसी का भय न रख कर, स्पष्ट करना चाहिए। यह सुनकर गणेश अप्पा को जो हर्ष हुआ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उन दोनों ने महाराज को अपने घर ले जा कर विधिवत पूजा की और अपना पूरा संसार महाराज को समर्पित कर दिया। इस प्रकार अमरावती में अनेकों पादय पूजाये महाराज की हुई।

अमरावती की इन पूजा में एक व्यक्ति हर पूजा में उपस्थित था, जो आत्माराम भीकाजी का भांजा था। उसका नाम था बालाभाऊ। यह बंबई में तार मास्टर था और अवकाश लेकर अपने मामाजी से मिलने अमरावती आया था। उसी समय महाराज वहाँ थे। वह महाराज की ओर इतना आकर्षित हुआ कि अब इन साधू चरणों को छोड़ कहीं नहीं जाना, ऐसा उसे लगने लगा। यह प्रपंच अशाश्वत है। इतने दिन इसमें रहा यही बहुत है। आज से अब मैं ये चरण नहीं छोड़ूँगा। क्या कोई अमृत छोड़कर विष का सेवन कर सकता है? यही कारण था कि वह हर पूजा में उपस्थित रहा। कुछ दिनों के बाद शेरगाँव आ गए और मल्ले में न जाकर मोटे शिवमंदिर में ठहरे। उस मंदिर में पूरब की ओर एक जगह थी। महाराज वही बैठे। कृष्ण जी पाटील को महाराज के आने का समाचार मिला और यह भी पता चला कि महाराज मंदिर में ठहरे हैं। मल्ले में नहीं गए। सो वह दौड़कर महाराज के पास आया और दंडप्रणाम करके मुँह लटकाकर महाराज के सामने बैठ गया। उसकी आँखों से सतत अश्रुधाराए बह रही थी जिससे उसके वक्षस्थल का कपड़ा भीग गया। महाराज ने उससे पूछा, 'अरे! क्या कर रहे हो, तुम्हें किसका शोक है?'

तब उसने उत्तर दिया, महाराज! मुझसे ऐसा कौन सा अक्षम्य अपराध हो गया, जिससे आपने मल्ले को छोड़ा। भगवान यह देशमुख लोगो के पास की जगह है और एक माली के ताबे में है। यहाँ आप मत रहिए। यदि मल्ले में रहने की आपकी इच्छा नहीं तो अपना निवास में आपके लिए खाली कर देता हूँ। वहाँ रहिए। हे दयाधान, आपसे ज्यादा मुझे प्रियवस्तु नहीं है। यह वर्तमान सुनकर हरी पाटिल और नारायण पाटील भी वहाँ आये और महाराज को अपने घर आने की प्रार्थना करने लगे। इस पर महाराज ने उत्तर दिया, अरे! मैं जो यहाँ आकर बैठा हूँ वह तुम लोगो के हित के लिए है। यह बाद में पता लगेगा अभी कोई विवाद मत करो, तुम लोगो का जो वाद है उसका निर्मूलन मैं करूंगा यह मत भूलो। जगत में जितने धनी तथा जमींदार होते हैं वो कभी आगे पीछे का विचार नहीं करते, यही उनकी न्यूनता है। जाओ, जाकर बंकटलाल को ढूँढ ले आओ और उससे पूछो कि जब मैंने उसका घर छोड़ा तो वह क्रोधित नहीं हुआ। मेरी तुम सब पर कृपा है, वह कभी विचलित नहीं होगी। इतने में बंकटलाल भी वहाँ आ पहुंचे और उसने उन पाटीलों को समझाया की महाराज कि इच्छा के विरुद्ध उन्हें मल्ले में मत ले जाओ। ये सबके लिए समदर्शी है। हम लोग सब इनके बालक है। यह जगह सखाराम आसोलकर की है। वह बड़ा उदार मन का है सो यह जगह देने से ना करेगा नहीं। इस प्रकार सबकी सम्मति हो गयी और सान लोगो ने मिलकर उस जगह मठ का निर्माण किया। जिससे परशराम सावजी नामक व्यक्ति ने विशेष परिश्रम किए। समर्थ के साथ चार एकनिष्ठ भक्त थे। वे थे भास्कर, बालाभाऊ, पीताम्बर और अमरावती के गणेश अप्पा । साथ में वहाँ का रामचन्द्र गुरव भी रहता था। इस प्रकार इन पाँच पांडवो के मध्य श्री गजानन भगवान श्री कृष्ण के समान सुशोभित हो रहे थे।

बालाभाऊ की वृत्ति अत्यंत विरक्त हो गयी थी, उसने नौकरी की कोई परवाह नहीं की। उसी प्रकार उसे घर आने के लिए बार बार पत्र आते थे। किन्तु वह अपने निर्णय पर अटल था। मन से उसका परिणाम नहीं होता था। एक बार भास्कर ने महाराज को कहा, गुरुदेव वह बालभौ पेढ़े खाने को चटक गया है इसलिए आपका साथ नहीं छोड़ता। इसको आप ताड़न करिए तो ये घर चला जाएगा। बंदर लकड़ी के बगैर सीधा नहीं होता। बड़े बड़े पहाड़ वज्र से डरते हैं। एक बार बालाभाऊ को हठात भेज दिया तो उसने सेवा का त्याग करके फिर महाराज के पास पहुँच गया। जैसे हरे चारे को, बैल मारने पर भी दौड़ता है। ऐसे ही तू चटक गया है जिसको पूर्ण विरक्ति हो गयी है उसने ही यहाँ रहना है। ऐसा सुनकर महाराज ने एक कार्य किया, जो भास्कर का अज्ञान नष्ट करने के लिए उन्होंने किया। एक व्यक्ति के हाथ में बड़ी छड़ी थी, वह लेकर गजानन महाराज बालाभाऊ को उससे तोड़ने लगे। यह देखकर बाकी लोग मठ छोड़कर भाग खड़े हुए। किन्तु बालाभाऊ महाराज के सामने पड़ा रहा। लोगो ने सोचा इस प्रकार मार से शायद वह मर गया होगा। भास्कर भी बड़ा चिंतित हो गया। लेकिन बालाभाऊ की मार देख कर उसका साहस महाराज के सामने आने का नहीं हुआ वह लकड़ी भी टूट गयी। तब थककर महाराज पैरों से उसे रौंदने लगे। मठ में यह प्रसंग चल रहा था। तब शिष्यगण दौड़कर महाराज के प्रिय लोगो को बुलाने के लिए गए। सुनकर बंकटलाल कृष्णाजी दौड़कर मठ में आए, किन्तु महाराज को रोकने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ी।

डरते डरते बंकटलाल ने कहा, “भगवान! यह आपका भक्त है! अब बहुत हो गया। इस पर कृपा करिए” यह सुनकर महाराज हंस कर बोले, “अरे! मैंने इसको नहीं मारा है! जरा ठीक से देखो तो तुम लोग समझोगे” फिर बालाभाऊ से बोले, “वत्स उठो और इन्हे अपना शरीर दिखाओ” ऐसी आज्ञा सुनकर बालाभाऊ उठकर खड़ा हुआ और सब लोग उसका शरीर देखने लगे, किन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि कहीं भी उसके शरीर पर चोट नहीं लगी थी, पूर्ववत् उसका शरीर था। वह पहले जैसा ही प्रसन्न था विशेषतः भास्कर बड़ा लज्जित हुआ और उसे बालाभाऊ की योग्यता का ज्ञान हो गया तत्पश्चात् उसने बालाभाऊ को कभी कुछ नहीं कहा। सोने को जब कसौटी पर कसा जाता है तभी उसका मूल्य पता चलता है।

बालापुर में सुकलाल अग्रवाल नामक व्यक्ति रहते थे। उनके यहाँ एक बड़ी उदंड गाय थी। वह गाँव में घूमती, आदमी और बच्चों को रौंद देती। सशक्त पुरुषों को सींग से उछलती। किसी भी दुकान में घुसकर अनाज में मुँह डालती, भरपेट खाकर बचा हुआ बिखेर देती, तेल तथा घी के डब्बे धक्के देकर गिरा देती। रस्सियों से बांधकर रखने पर तोड़कर चल पड़ती। इतना ही नहीं सांकले भी उसके सामने टिक नहीं पाती। यह गाय नहीं बाधिन थी। जिससे बालापुर के लोग त्रस्त हो गए थे। न तो गाभिन रहती न बियाती। लोक सुकलाल को कहते कि या तो उसको कसाई को बेच दो, या खुद गोली से मार डालो। तब अग्रवाल उनसे कहता, “भाई, मुझसे तो यह नहीं होगा। आप लोग ही

मार डालो। एक पठान उसको मारने के लिए बंदूक लेकर बैठा था, लेकिन उस गाय को कैसे पता लगा पता नहीं, तो उसने सींग से उछलकर चित्त कर दिया।

मैंने इसको दूसरे गाँव में भी ले जाकर छोड़ा, लेकिन फिर वह यहाँ चली आई। अब आप लोग बताइये मैं क्या करूँ? ऐसा सुनकर लोगो ने उससे कहा भाई आपको एक उपाय बताते हैं आप इसे लेकर शेरगाँव में गजानन महाराज को अर्पण कर दो। महाराज ने ऐसा हे गोविंदबुवा का उदंड घोडा ठीक किया था। जिसमे दुगना लाभ है। एक तो साधु को गौ दान का पुण्य, दूसरा हम लोगो को पीड़ासे से छुटकारा। यह मत सबको भाया और गाय को शेरगाँव गजानन के पास ले जाने का निश्चय किया गया। किन्तु उसको पकड़कर बांधने के सारे प्रयास असफल हो गए। अंत में एक मैदान में हरियाली तथा सरकी रखी गयी जो खाने के लिए वह गाय दौड़कर वहाँ आई। गाय वहाँ आते ही फाँसा डालकर उसे बांध दिया, दस बीस लोगो ने पकड़कर सांकल गले में दाल दी। फिर एक गाड़ी पर चढ़ा उसे गजानन महाराज को देने को शेरगाँव लाया गया। जैसे जैसे शेरगओन नजदीक आता वैसे वैसे गाय के स्वभाव में फरक पड़ता गया। समर्थ के सामने आते ही गाय दीन हो गयी। महाराज को देखते ही उसकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। यह देख कर महाराज उन सबसे बोले। अरे यह क्या मूर्खता है? गो माता को इस तरह पीड़ा देना मुनासिब नहीं। इसके चारो पैर बांध दिये है। नारियल की रस्सी से सींग बांधे है, इस प्रकार का बंदोबस्त तो बाघिन के लिए ठीक है गाय के लिए नहीं। अरे पागलो, यह गौ सब जगत की माता है। उसकी ऐसी दुर्दशा की आप लोगो ने। इसको तुरंत छोड़ दो, यह किसी को नहीं मारेगी लेकिन किसी का साहस उसको छोड़ने का नहीं होता था। जो भी सामने आता वह

देखकर पिछड़ जाता था। महाराज ने स्वयं आगे बढ़कर गौ के बंधन- तोड़ दिये बंधन छूटते ही गाय गाड़ी से नीचे आई और अगले दोनों पैर जोड़कर वंदन किया।

नीचे मुँह डाल कर महाराज को तीन प्रदक्षिणाएँ की और जीभ से महाराज की चरण कमल चाटने लगी, यह देखकर सब लोग आश्चर्यचकित हो गए। महाराज के प्रभाव का शेषनाग भी वर्णन नहीं कर सकते। जिनहे सौ जीव्हा है फिर मेरे जैसे को क्या। महाराज ने उस गाय से कहा, 'हे गौ माता! अब किसी को पीड़ा न देना और मठ छोड़कर कहीं न जाना' यह सब देखकर अपस्थित लोगो ने महाराज का जय जयकार किया और बालपुर के लोग लौटकर चले गए। और गाय मठ में रहने लगी। उस दिन से उसको कभी दावा नहीं पड़ा, एक अच्छी गौ के सब लक्षण उसमे आ गए।

कारंजा में रहने वाला लक्ष्मण घुड़े नामक वाजसनेयी माध्यन्दिन यजुर्वेद शाखा का धनकनक सम्पन्न ब्राह्मण था। उसके उदर में कोई व्याधि उत्पन्न हुई। जो अनेक उपाय करने पर भी ठीक नहीं हुई। श्रीसमर्थ गजानन महाराज की कीर्ति कानोकान उसने सुनी थी, सो जल्दी से वह शेरगाँव महाराज के पास आया। रोगव्यवस्था के कारण वह चल नहीं सकता था सो दो- तीन लोगो ने उठाकर उसे मठ में लाये। वह महाराज को उठकर नमस्कार भी नहीं कर सकता था सो उसकी पत्नी ने महाराज के सामने आँचल पसारकर प्रार्थना की हे दयाधन! मैं आपकी धरम कन्या हूँ, मेरे पति की यातना का हरण करके मेरे सौभाग्य का रक्षण करिए। अमृत का दर्शन होने के बाद भला मृत्यु कैसे हो सकती है? यह मेरी प्रार्थना है। उस समय महाराज आम खा रहे थे। वही लक्ष्मण की पत्नी के अंग पर फेंक कर बोले, 'जाओ, यह तुम्हारे पति को खिलाओ, उसकी व्याधि का नाश करने के लिए। इतना कहकर महाराज चुप हो

गए और चिलम पीने लगे। जब वह पास में खड़ी हो गयी तो भास्कर ने कहा, "बहन जी अपने पति को कारंजा ले जाओ और महाराज ने जो आम का प्रसाद दिया है वह खिलाओ।

इससे तुम्हारा पति ठीक हो जाएगा। वह बाई आम लेकर पति के साथ कारंजा पहुंची, और प्रसाद के रूप में पाया हुआ आम पति को खिला दिया। उनको घर पर आया देखकर सब लोग पूछने लगे " अरे! शेगाँव में क्या हुआ, तब लक्ष्मण की पत्नी ने विस्तारपूर्वक घटना लोगो को सुनाई। जब वहाँ के वैद्यों ने यह बात सुनी तो कहने लगे, "अरे बहन जी, ये आपने क्या किया? आम तो उदार रोगो में कुपथ्य होते हैं ऐसे वैद्यक सुश्रुत शारंगधर और निघंटुमे कहा है। महाराज ने जो प्रसाद दिया था सो अर्धांगी होने के नाते आपको वह खाना चाहिए था जिसमे फलस्वरूप पति की व्याधि ठीक होती। यह तो विपरीत हो गया। यह सुनकर लक्ष्मण के सारे सगे संबंधी घबरा गए और लक्ष्मण की पत्नी को उलाहना देने लगे। आश्चर्यकारक घटना ऐसी हुए, कि लक्ष्मण को विरेचन होने लगा जिससे उसका पेट जो पहले कठिन था, नरम हो गया । सारा दोष विरेचन द्वारा साफ हो गया। धीरे धीरे उसमे पूर्ववत शक्तिसंचार भी हो गया। वैद्यक शास्त्र निसर्ग नियमो पर आधारित होने निसर्ग से बाहर कुछ नहीं कर सकता। संतकृपा के एक ऐसी शक्ति है, जो सबका उल्लंघन करती कर सकती है। स्वस्थ होने पर लक्ष्मण जल्दी से से शेर गाँव आया और महाराज से प्रार्थना करने लगा। महाराज, मुझे निराश न करिए। कारंजा चलकर मेरा घर आपके चरणराज से पवित्र करिए। बहुत आग्रह करने पर महाराज उसके साथ कारंजा गए। उनके स्सथ शंकरभाऊ, पीतांबर भी थे। महाराज को घर ले जाकर लक्ष्मण ने यथाविधि पूजा की और दक्षिणास्वरूप में अपना सर्वस्व महाराज को अर्पण किया। फिर भी

थाली में थोड़े रुपए रख कर महाराज के सामने रखे जो देखकर महाराज बोले, ' अरे तूने सर्वस्व अर्पण करने का संकल्प किया फिर ये रुपए कहाँ से लाये?

इस प्रकार का आडंबर मत करो, सारे ताले खोलकर सब संपत्ति मुक्तव्दार करके बाँट दो। तुम्हारी कथनी और करनी में ऐसा फरक क्यों? लक्ष्मण मौन होकर बैठ गया, कुछ नहीं बोला, किन्तु महाराज ने तिजोरी खोलने का आग्रह किया। आखिर डरते डरते लक्ष्मण ने तिजोरी खोल दे और दरवाजे पर बैठकर बोला, "महाराज जो भी लगता है ले लीजिये। महाराज तो सर्वज्ञ ठहरे उसके अंतर का भाव जान गए। भला बहुरूपी का सोंग राजा होने कब टिक सकता है। करेला ऊपर से कितना भी अच्छा दिखे खाने में कड़वाहट हे देता है। यह देखकर महाराज बिना भोजन किए हे उसके घर से निकाल पड़े क्योंकि, दाभिकों के अन्न से भला संत कैसे त्रप्ति पा सकते हैं। उसके घर से अथवा धन से भला वैराग्य के सागर महाराज को क्या प्रयोजन? किन्तु उसने जो कहा था उसकी सत्यता की परीक्षा लेने कि दृष्टि से महाराज ने यह लीला की। जाते समय महाराज बोले ' अरे! मैं तो तेरे पर कृपा करने और उससे दुगुना देने की इच्छा से यहाँ आया था, किन्तु तुम अपनी करनी का फल भोगो" आगे चलकर महाराज का कथन सत्या हुआ। लक्ष्मण की सब संपत्ति नष्ट हो गयी और उसे "भवति भिक्षा देही" की शरण लेनी पड़ी। श्रोतागण, परमार्थ में असत्य तथा, आडंबर का स्थान नहीं होता। इस दृष्टि से महाराज ने यह लीला की। श्री गजन तो चिंतामणि है, भला गारगोटी क्या मणि को शोभा ला सकती है यह दासगणू विचरित श्री गजानन विजय नामक ग्रंथ भाविकगण सदैव अपने कल्याण के लिए श्रवण करें।

॥ शुभं भवतु । श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्री गजानन विजय ग्रंथस्य दशमोऽध्यायः समाप्त ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय – ११ ॥

श्रीगणेशाय नमः हे ॐकारस्वरूप पशुपति! हे भवानी के वर दक्षिणामूर्ति! इस ब्रह्माण्ड में जितनी विभूतियाँ हैं, वह सब आपके ही रूप हैं। आपका अव्यक्त निराकार रूप है, जो सर्वव्यापी है। चराचर में आप ही व्याप्त हो! जो आपका यह स्वरूप है वही माया-अविद्या-प्रकृति - का अधिष्ठान है। ऐसा आपका अव्यक्त निराकार रूप जानना असम्भव है। इसीलिये आप दया करके सगुणरूप धारण करते हो। जैसा जिसका भाव होता है वह उस भाव से आपकी भक्ति करता है, फिर भी नाम उपाधियों की भिन्नता आपकी अभिन्नता को बाधित नहीं कर सकती। शैव पंथी आपको शिवरूप में देखते हैं। वेदान्तीयों के आप ब्रह्मा हो। विशिष्टवैदिति रामानुजीयों के आप सीतापति रामचन्द्र हो। वैष्णवजन आपको भगवान विष्णु के रूप में भजते हैं। उपासना भेद के अनुसार आपको अनेक नाम दिये गये हैं किंतु आप अभिन्नातया सबको प्राप्त होते हो। आप विश्वेश्वर हो। हिमालय के केदारनाथ - ॐकारेश्वर - क्षीप्रातटवर्ति महाकालेश्वर - व्दारका के सोमनाथ नागनाथ-वैजनाथ, वेरूलके घृष्णेश्वर - गोरावरीतट के न्च्यंबकेश्वर - आप ही कहलाते हैं। आप ही भीमाशंकर और सेतुबंध के रामेश्वर, श्रीशैल के मल्लीकार्जुन, गोकर्ण के महाबळेश्वर तथा शिखरशिगणापूर के महादेव आप ही हो। इन सब आपके स्वरूपों को मेरा साष्टांग दंडवत। आप मेरे तापत्रय (आध्यात्मिक - आधिदैविक और आधिभौतिक) का हरण कीजिये। हे दीनबंधो! आपने एक क्षण में कुबेर को देवों का धनाधिपति बना दिया, फिर मेरे विषय में आपको सामने कौन सा प्रश्न उपस्थित हुआ।

दूसरे वर्ष दासनवमी के अवसर पर श्रीसमर्थ बालापूर में बालकृष्ण के घर आये। बालापूर में बालकृष्ण और सुकलाल समर्थ के दो निस्सिम भक्त थे। इनकी समता दूसरे किसी से नहीं हो सकती। इस समय महाराज के साथ बालाभाऊ - पितांबर - गणू - जगदेव

तथा दिंडोरकार थे। दासनवमी उत्सव यथासांग पार हो गया। किंतु वही भास्कर का दैवयोग उदित हुआ। एक पागल कुत्ते ने भास्कर को काट लिया। जिससे सब लोग घबरा गये कि अब यह भी पागल होकर लोगों को काटेगा। सारे लौकिक उपाय कर चुके, कुछ बोले, डॉक्टर को बुला लाओ।’ यह सुनकर भास्कर ने कहा, ‘कहा किसी वैद्य या डॉक्टर को बुलाने की आवश्यकता नहीं। मेरा डॉक्टर यहां आसन पर बैठा है। मुझे महाराज के पास ले चलो, वो जैसा कहेंगे, करो। अकारण अपना हट मत चलाओ।’ यह सुनकर भास्कर पाटील को श्रीसमर्थ गजानन महाराज के सामने लाया गया और बाला भाऊ ने महाराज को सब वृत्तांत बताया। सब सुनकर महाराज हंसकर बोले, ‘अरे भाई! हत्या-शत्रुता और ऋण चुकता नहीं उसे फेडना ही पड़ता है। के भास्कर ने सुकलाल की गांय की उद्दण्डता का हरण करने की प्रार्थना की। भास्कर स्वार्थी है। इसे गाय का दूध पीने को मिले इस कारण इसने ऐसी प्रार्थना की। दूध पीने में मीठा लगा। अब क्यों आनाकानी करते हो? यह उसका फल है। अस्तु, अब स्पष्टतया बताओ, कोई संदेह नहीं रखना। क्या और जीना चाहते हो? इससे तुम्हारी रक्षा करूं क्या? अगर इससे मैं तुम्हारी रक्षा करता हूँ, तो यह उधार ली हुई आयु होगी, क्योंकि तुम्हारा मृत्युलोक से प्रयाण करने का समय आ गया है। जन्म-मृत्यु की उधारी इस आशाश्वत संसार में चलती रहती है। अगर कुछ दिन और जीना चाहते हो, तो मैं यह समय टाल सकता हूँ, किंतु ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा, जल्दी से निर्णय लेकर मुझे बताओ। यह सुनकर भास्कर पाटील ने उत्तर दिया, ‘भगवन, मैं तो अज्ञानी बालक हूँ। आप मेरी माता हो। माता बालक का हित अनहित सब जानती है।

ऐसे ही आपको जो भाता हो सो करिये। आप ज्ञानसागर हो, आपको सबकुछ पताहै, सो मैं क्यों प्रार्थना करूं? भास्कर के विधान सुनकर महाराज को बड़ी प्रसन्नता हुई। उनमें से कुछ बोले, गुरुदेव, भास्कर आपका प्रिय भक्त है, उसे श्वान विष से बचा लीजिये।

’ सुनकर महाराज बोले, पागल! ‘जन्म-मरण यही भ्रान्ति है। न कोई जन्म लेता है, न कोई मरता है। यह ज्ञान प्राप्त करने के लिए ही परमार्थ पंथ है। शास्त्रकारों ने जो कहा है उसका उपयोग करना चाहिए। मोह का समूल निर्मूलन करना चाहिए। प्रारब्ध भोग शांत चित से भोगना चाहिए। प्रारब्ध, संचित और क्रियमाण कर्म बद्ध जीवों को भोगना ही पड़ता है, किसी को चुकता नहीं। हम इस जन्म में जो करते हैं, उसका फल अगले जन्म में भुगतना पड़ता ही है। फलभोग भोगने के लिए ही पुनर्जन्म लेना पड़ता है। भास्कर के पूर्व जन्म के कर्म कुछ भी शेष नहीं है। सो यह मोक्ष का अधिकारी है। इसलिए इसका रास्ता मत रोको। क्या भास्कर जैसा मेरा भक्त पुनर्जन्म लेगा? कुत्ते का पूर्वजन्म का बैर था सो उसने ले लिया। अगर भास्कर के मन में यह द्वेष शेष रहा तो वह उसके पुनर्जन्म का कारण होगा। पिछले जन्म का बैर फिट गया। अब भास्कर की सारी उपाधियां नष्ट हो गईं। अब मैं इतना करता हूं कि यह श्वान विष से पागल नहीं होगा और दो महिने जीयेगा। अगर मैं यह नहीं करता, तो इसे पुनर्जन्म लेना होगा।’ यह सुनकर कुछ लोग तो आनन्दित हुए और कुछ लोगों को यही नहीं जचां। इसके बाद सब लोग शेगाँव आ गये। भास्कर ने बड़ी मधुर भाषा में शेगाँव के भक्तों को बालपूर का वृत्तांत बताया। और भास्कर ने उनसे कहा कि, ‘महाराज, आप लोगों के लिए एक अनमोल निधि हैं, इन्हें सम्हालकर रखीये। इन्हें स्मारक की आवश्यकता नहीं किंतु अगली पीढ़ी के ज्ञान के लिए वह जरूरी है। जैसे ज्ञानेश्वर ने आलंदी, सज्जनगढ रामदासजी ने और देहूगांव तुकाराम महाराज ने तीर्थस्मारक कर दिया। उस दृष्टि से आप लोग अभी से ही प्रयत्नशील रहिये।’ भास्कर सबको यह कहता रहा।

किंतु एक बार उसके मन में आया, ये लोग मेरे सामने तो हांमी भरते हैं। क्या वस्तुतः ये ऐसा प्रयत्न करेंगे? ऐसा विचार करते उसने सबको एक बार मठ में बुलाया। जिसमें बंकटलाल-हरी पाटील-मारोती पाटील-चन्द्रभान कारभारी - जो खंडु पाटील की दुकान

पर था, श्रीपतवार बावीकर - ताराचंद साहुकार ऐसे अनेक लोग जमा हुए। ऐसा उसने महाराज के अपरोक्ष में किया। उन सबको इकट्ठा कर भास्कर ने कहा अब आप लोगों से मेरा सम्बन्ध केवल दो महीने है। मेरी ऐसा मनोकामना है कि यहां शेगाँव में महाराज का विशाल मंदिर हो। आप लोग यदि ऐसा वचन मुझे देते हैं तो मैं सुखपूर्वक बैकुण्ड को जाऊंगा। यह स्मरण रखा कि संतों की सेवा कभी विशाल नहीं होती। जिसकी जो मनोकामना होती है वह पूर्ण होती है। मंदिर ऐसा हो की जो सारे बराड प्रांत में विशाल और प्रशंसनीय हो। यह मेरी अंतिम प्रार्थना है। सब लोगों ने महाराज की शपथ ग्रहण कर वचन दिया, कि यह कार्य हम लोग पूर्ण करेंगे। जिससे भास्कर का मन स्थिर हो गया। मन की आशंका नष्ट हो गई और वह प्रतिदिन आनंदित होता जाता था। जैसे बालकगण आनेवाले उत्सव के प्रित्यर्थ आनंदित होते हैं।

माघ वद्य त्रयोदशी को महाराज भास्कर से बोले, 'भास्कर! हम लोग शिवरात्रि के अवसर पर त्र्यंबकेश्वर दर्शन को जायेंगे। गोदावरी के किनारे कर्पूरगौर भव और भवानी के पति त्र्यंबक स्थिर हैं। यह सुंदर ज्योतिर्लिंग है। जो सब पातकपुंज को नाश करते हैं इसलिए विलंब मत करो, शीघ्र तैयारी करके चलो। पास ही ब्रह्मागिरी पर्वत है। जहां पर विपुलप्रमाण में वनौषधियां उपलब्ध है। यहां गंगा स्नान भी होगा। इस ब्रह्मागिरी पर गहनीनाथ महाराज है, उनको औषधियों के गुणधर्म ज्ञात हैं। उनमें पालग कुत्ते के जहर पर औषधि है, इसका उपयोग हम लोग जल्दी से करेंगे।' उस पर भास्कर ने उत्तर दिया, 'गुरुदेव, आपकी सत्ता अगाध है, जो औषधि से भिन्न है। आपकी कृपा से विष का प्रभाव तो बालापूर में ही नष्ट हो गया।

अब मेरी आयु के केवल दो महीने शेष हैं, सो मुझे ऐसा लगता है कि हम लोग शेगाँव में ही रहे। हम सबके लिए आप साक्षात् त्र्यंबकेश्वर हो। आपका चरण तीर्थ गोदावरी है। उसी से हम स्नान करते हैं अन्य तीर्थ का अब कोई प्रयोजन मुझे नहीं। ऐसी भास्कर की वाणी सुनकर महाराज हंसकर बोले, 'यह सत्य है किंतु फिर भी तीर्थ महिमा तो मानना ही चाहिए। चलो, अब देर मत करो, त्र्यंबकेश्वर का दर्शन करेंगे ही। साथ में बालाभाऊ, पितांबर को भी ले लो।' ऐसा निश्चर करके शेगाँव से ये सब लोग निकलकर त्र्यंबकेश्वर पहुंचे। वहां कुशावर्त क्षेत्र में स्नान करके त्र्यंबकेश्वर के दर्शन किये। गंगाद्वार पर जाकर गौतमी का पूजन किया। निलांबिका माता का दर्शन किया, गहनीनाथ का दर्शन करके फिर ये सब नासिक गोपालकदास को मिलने आये। महंत गोपालदास काले राम मंदिर के द्वारपर धुनि लगाकर बैठा था। राममंदिर के सामने एक पीपल का ओटा था। वहीं पर अपने शिष्यों सहित महाराज बैठे। यह देखकर गोपालदास को अत्यंत आनन्द हुआ। वह सब लोगों से बोले, 'आज मेरे बंधु शेगाँव यहां आये हैं, जाकर अनन्यभाव से उनका दर्शन करो और मेरी ओर से नारियल - शक्कर उन्हें भेंट करो। यह हार उनके गले में डालो, हम दोनों एक हैं। अर्थात् अद्वैत है, शरीर भिन्न है, इसलिए उन्हें आप भिन्न न समझे, सुनकर उनके शिष्य जहां महाराज बैठे थे वहां आये, दर्शन करके गले में पुष्पमाला पहनाई, नारियल और मिश्री स्वामी समर्थ के सामने रखी यह देखकर गुरुदेव भास्कर से बोले, 'भास्कर, इसी पंचवटी में हमारे बंधु कि भेंट हो गई, ये प्रसाद सबको दो, लेकिन स्मरण रहे, कि भीड़ न होने पाये। मेरा यहां का काम हो गया लेकिन धुमाल वकील के यहां जाना है। वह काम बाकी है। महाराज नासिक में रहे और उनके छोटी मोटी घटनाएं वहां हुईं जिनका विस्तार भय से सम्पूर्ण वर्णन न करके केवल संक्षेप में कहता हूं। महाराज के दर्शन को बड़ी गर्दी होने लगी थोड़े दिन महाराज नासिक रहकर शेगाँव वापस आ गए ।

आने के बाद इयामसिंग महाराज को अडगांव ले जाने को आया। उसने चलने का बहुत आग्रह किया, तो महाराज ने उसको उत्तर दिया, कि हम रामनवमी होने के बाद अडगांव आयेंगे। इयामसिंग महाराज का निस्सिम भक्त था। वह जैसे आया था वैसे ही खाली हाथ लौटकर अडगांव गया। बाद में वह फिर रामनवमी को शेगाँव आया। शेगाँव में रामनवमी का उत्सव सम्पन्न करके वह शिष्य परिवार सहित महाराज को अडगांव ले गया। उसका मानस हनुमान जयंती के लिए था। अडगांव में अनेक चमत्कार हुए। एक दिन महाराज ने भास्कर को धूल में लिटा दिया और उसकी छाती पर बैठकर उसे मारने लगे। सब लोग देख रहे थे किंतु किसी की छुड़ाने की हिम्मत नहीं होती थी। बालाभाऊ पास में था वह बोला सद्गुरुनाथ! यह धूप और पिटाई के कारण कलांत हो गया है, बस कीजिये इसको छोड़ दीजिये। यह सुनकर भास्कर बोले, भैया बालाभाऊ ये मेरे परमेश्वर हैं, जो करते हैं, करने दो, रोकिये मत। ये थप्पड़ मुझे गुदगुदी कर रहे हैं। ये अनुभूति की बातें हैं, अनुभव से ही जानी जा सकती हैं। बाद में भास्कर को लेकर अडगांव में जहां महाराज ठहरे थे वहां आये। बालाभाऊ से महाराज ने कहा, 'बालाभाऊ आज जो मैंने यह काम किया उसका मथितार्थ तुम्हें पता होगा। इस भास्कर ने शगांव में तुम्हें मेरे द्वारा छत्री से पिटवाया था, उस क्रियमाण संचय को नष्ट करने के लिए मुझे यह कृत्य करना पड़ा।' भास्कर के जाने में अब दो दिन बाकी है। हनुमान जयंती का उत्सव समाप्त होने पर अडगांव में क्या हुआ सो आप लोग सुनिये। उत्सव का पारणा हुआ। वद्य पंचमी को एक प्रहर बीतने पर महाराज बोले, 'भास्कर! आज तुम्हें प्रयाण करना है सो पद्मासन लगाकर पूरब की ओर मुंह करके बैठो। चित स्थिर करके भगवान का ध्यान करें। अंतिम समय आ गया है। सावधान हो जाओ। इतर जनों को महाराज बोले, तुम्हारा यह बंधू आज वैकुंठको जानेवाला है।

इसका यथावश पूजन करें।' और उच्च स्वर से 'विठ्ठल विठ्ठल नारायण की ध्वनि करो' । भास्कर ने पद्मासन लगाया, नासाग्रभागपे दृष्टि स्थिर है, सारी वृत्तियों को अंतर्मुख लीन किया और भगवान के ध्यान में मग्न हो गया। सब लोगों ने उन्हें मालायें पहनाईं, गुलाल, बुका लगाया। समर्थ दूर बैठकर सब देख रहे थे। एक प्रहर तक भजन होता रहा, भगवान भास्कर मध्य में आये। महाराज ने उच्च स्वर से 'हरहर' शब्दों का उच्चारण किया। उसी समय भक्तभास्कर के प्राण अनंत में विलीन हो गये। भास्कर बैकुण्ठ चला गया। जिसका हाथ संत पकड़ लेते हैं वह भगवान विष्णु का अतिथि हो जाता है। लोग महाराज से पूछने लगे, 'महाराज, भास्कर का यह शरीर कहां रखा जाये? समाधि कहां पर बांधी जाये। तब सबको समर्थ ने कहा, 'द्वारकेश्वर में जहां पशुपति और सती का स्थान है वही इसका कलेवर रखा जाये।' यह सुनकर लोगों ने विमान तैयार किया, उसमें केले के खंबे बांधे उसके अंदर भास्कर का शरीर रखा और भजन कीर्तन के साथ घुमते हुए द्वारकेश्वर में जहां महाराज ने कहा था वहीं यथाविधि समाधि सम्पन्न की। सब लोग बड़े शोकाकुल हुए कहने लगे, 'महाराज का परमभक्त गया। समाधि के दूसरे दिन से वहां दीन-दुखियों को अन्नदान किया गया। द्वारकेश्वर यह स्थान अडगांव से करीबन एक मील दूर है। यहां पर परिसर बड़ा ही रमणीय है। यह उत्तर की ओर है यहांपर इमली के पेड़ बहुत हैं। उसी प्रकार नीम-पीपल-मंदार-आम-बड़-गुलर इत्यादि पेड़ बहुतायत हैं। अनेक प्रकार के पुष्प वृक्ष भी हैं। अडगांव और अकोली के बीच में यह स्थान है, वही महाराज ने भास्कर को समाधि दी। यहां संतों को भोज दस दिन तक होता रहा। इमली के पेड़ के नीचे जब भोजन के लिए लोग पंक्ति में बैठते तो कौए बड़ा उपद्रव करते। केवल काव! काव! का कोलाहल ही नहीं, अपितु पत्तल में से दाने उठा ले जाते और भोज के लिए बैठे लोगों के शरीर पर विष्ठा कर देते। लोग उनसे त्रस्त होकर उन्हें उड़ाने लगे। इतना ही नहीं भल तीर कमठा लेकर उनको मारने के लिए उद्यत हुए।

यह देखकर महाराज बोले, 'अरे! इन्हें मारो मत इनका कोई अपराध नहीं है, यहां आने का इनका हेतु यह है कि सब लोगों के समान इन्हें भी भास्कर का प्रसाद मिले। क्योंकि भास्कर सीधा बैकुंठ लोक चला गया। पितृलोक में नहीं रहा। मनुष्य के मरणोपरांत उसकी आत्मा दस दिन तक अंतरिक्ष भटकती रहत है और पिंडदान के बाद वह आगे जाती है। इसलिए ग्यारहवें दिन काकबली देते हैं। जब पिंड को कौवे स्पर्श करते हैं, तब आत्मा आगे जाती है यानि पितृलोक चली जाती है। इसलिए मृतक-कर्म का महत्व शास्त्रों में बताया है भास्कर का दसपिंड कार्य नहीं हुआ इसलिए कौवे शायद भाग न पाकर क्रुद्ध हो गये हैं, मैं उन्हें समझा देता हूं। भास्कर बैकुण्ठ लोक चले जाने से सोमलोक (पितृलोक) तथा सूर्यलोक (देवलोक) का कोई कारण न रहा, तथा पिंडदान का भी प्रयोजन न रहा। जिनका ऐसी गति नहीं प्राप्त होती वे पिंड रखकर कौओं की राह देखते हैं। फिर महाराज कौओं से बोले, 'पक्षिगण आज तुम प्रसाद ग्रहण करो, लेकिन कल से यहां बिल्कुल मत आना! नहीं तो मेरे भास्कर का नाम बदनाम होगा' । अब पंगत में जो कुचाल बैठे थे, वो आपस में बात करने लगे कि महाराज भी खूब हैं, भला कहीं पंछी मनुष्य की आज्ञा में रहते हैं। ये पागल लोक कुछ भी बोलते हैं। जो शोभा दे ऐसा ही आचरण करना चाहिए, व्यर्थ के आडम्बर से क्या लाभ? अस्तु! कल सच और झूठ का पता चल जाएगा। दूसरे दिन ये कुचाली वहां देखने के लिये आये, सो आश्चर्य की बात ये कि दूसरे दिन से एक भी कौआ वहां नजर नहीं आया। ये देखकर वो लोग महाराज की शरण आये। श्रोतागण इसी जगह पर बारह वर्ष तक कौए नहीं आये। चौदह दिन होने पर महाराज अपने उर्वरित शिष्यों के साथ शेगाँव वापस लौआ आये। इसी प्रकार शेगाँव में एक अद्भुत लीला हुई, आप लोगों को सुनाता हूँ। आप लोग सावधान चित्त से श्रवण कीजिये। वह अकाल का वर्ष था। काम कहीं नहीं था, उस समय शेगाँव में एक कुआँ खोदा जा रहा था।

कुआँ खोदते समय सुरंग लगाये जाते हैं। खोदते समय काला पत्थर लग गया जिसमें सब्बल या कुदाल से काम नहीं चला उसमें सुरंग लगानी पड़ती है। पत्थरों में छोटे छोटे छिद्र बनाकर उसे गंधक भरा जाता है। जिसमें बत्ती के लिए एक धागा लगाया जाता है। इस प्रकार इस कुएँ में भी चारों ओर छिद्र बनाकर बारुद भरी गई ऊपर से एरंड के पुंगलियों के जलाकर धागे द्वारा नीचे छोड़ा किंतु वह बीच में अटक गई। बीच में गांठ थी वहां अटक गई, पानी भरता जा रहा था तो सुरंग तक पहुंचने वाला था। अगर सुरंग को पानी लगा तो बारुद व्यर्थ चली जाती है। मिस्त्री ने जब यह हालत देखी तो गणू जवण्या नामक एक मजदूर को नीचे उतरकर पुंगली सरकाने को कहा। किसी को साहस नहीं हो रहा था सो गणू को मिस्त्री ने दटाया। बेचारा गरीब था क्या करता, क्योंकि हमेशा यज्ञ में आजपुत्र को ही बली चढाया जाता है, क्योंकि वह गरीब होता है। तात्पर्य यह है कि गरीब व्यक्ति ही आगे ढकेला जाता है। यह गणू जवरे महाराज का निष्ठावान भक्त था। उसकी उन पर नितांत श्रद्धा थी। वह मिस्त्री के आदेशानुसार नीचे उतरा और एक पुंगली सरकाई वह तत्काल बारुद के पास पहुंच गई और गणू जवरे अंदर ही था, निकल नहीं पाया। दूसरी को सरकाने के लिए हाथ लगाया, सो पहली सुरंग फूट पड़ी। फिर क्या पूछना, यह प्रसंग देखकर गणु ने महाराज से प्रार्थना की, भगवान! अब आप ही मेरी रक्षा कर सकते हैं, जल्दी से दौड़कर आईये। कुएँ में प्रचंड धुंआ भर गया। दूसरा सुरंग फूटने को थोड़ा समय था। इतने में गणू जवण्या के हाथ में एक कपार लगी वह उसमें बैठ गया। एक के पीछे तक ऐसी चारों सुरंग उडे और पत्थरों से कुआँ भर गया। बाहर भी बड़ी दूर तक पत्थर उडे सब लोगों ने सोचा कि बड़ा बुरा हुआ आज गणू जवरे को इस कुएँ में मुक्ति मिल गई होगी। उसका शरीर छिन्न हो गया होगा। सब स्त्री पुरुष कुएँ में झाँक कर गणू को देखने लगे किंतु वह कहीं दिखाई नहीं पड रहा था।

लोग अनेक प्रकार की कल्पना करने लगे। कईओं ने कहाँ अरे पत्थरों के साथ वह भी बाहर फेंका गया होगा। पास में कहीं तो भी उसका शव होगा, ढूंढो। मिस्त्री की आवाज सुनकर अंदर से गणू बोला मिस्त्री जी गणू मरा नहीं अंदर है, गजानन महाराज कि कृपा से बाल बाल बच गया। यहां कपार में छुपा बैठा हूँ । कपार के मुंह पर एक पत्थर पड़ा है हटवाईये इस कारण मैं निकल नहीं पा रहा हूँ । गणू की आवाज सुनकर लोगों के आनन्द का ठिकाना न रहा। कई लोग पत्थर निकालने के लिए नीचे उतरे। दस पांच आदमियों ने वह पत्थर कपार के मुंह से हटाया और गणू को ऊपर ले आये। ऊपर आते ही गणू दौड़ते हुए महाराज के दर्शन के लिए मठ में गया। गणू को देखते ही महाराज बोले, 'अरे गण्या, कपार के अंदर बैठकर तूने कितने पत्थर उड़ाये, उनमें से बड़ा पत्थर तेरी रक्षा करने के लिए कपार के मुंह पर बैठा, जिससे तू बच गया। पुनः ऐसा साहस कभी न करना। पुंगली एक बार छुटने पर उसे अंदर जाकर हाथ से कभी न ढकेलना। जा! तुम्हारा संकट टल गया। गणू को देखने गांव के लोग आये। गणू महाराज से बोले, 'सद्गुरुनाथ! चारों सुरंग चल जाने पर आपही ने मुझे कपार में बैठाया। इसलिए आपके चरण पकड़ने में आया हूँ नहीं तो मैं कुएँ में ही मर जाता। ऐसी श्रीगजानन महाराज की महिमा अपार है उसका वर्णन करने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है। श्री दासगणू विरचित ग्रंथ श्रीगजानन विजय नामक श्रोतागण को ग्रंथ आल्हाद देनेवाला हो। यह दासगणूकी इच्छा है।

॥ शुभंभवतु । श्रीहरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्रीगजानन विजय ग्रन्थस्य एकादशोऽध्यायः समाप्तः॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय १२ ॥

श्रीगणेशाय नमः । हे गणाधिपति - गणपती मयुरेश्वर विशुद्ध किर्तीवाले प्रभो ! मेरे हृदयमें निवास करके यह ग्रंथ पूर्ण करो । हे गणो के राजा आप बुद्धि और ज्ञान के दाता हो । भक्तजनो के मनोरथ पूर्ण करनेवाले, विघ्नो के पर्वतो का विध्वंस करनेवाले, आपही हो । पुराण ऐसा केहता है की आप भक्तजनो कि चिंता हरानेवाले अर्थात् अभीष्टपूर्ण करनेवाले चिंतामणी हो । भक्तहृदय कि बात आप जानते हो । हे सिंदूर राक्षस का नाश करनेवाले, चंद्र मा जिसके भालपर है , ऐसे भालचंद्र सारे ब्रह्मांडोंका उदर मे समावेश करनेवाले लम्बोदर, पार्वतीपुत्र, एकदंत मेरी चिंता का नाश करो । अस्तु ।

बच्चुलाल अग्रवाल नामक एक धन-कनक संपन्न व्यक्ति अकोला मे रहती थी । यह मन का भी बड़ा उदार था । उसने कानोकान करंजवाले लक्ष्मणपंत घुड़े की सच्ची घटना सुनी । जिससे वह शंकायुक्त हो गया । उस घटना की सत्यता असत्यता की नापतौल की द्रष्टि से वह विचार करने लगा । ऐसे समयमें एक बार अपना भक्तजन साक्षात्कारी गजानान यहाँ अकोला आये और बच्चुलाल के घर के ओटेपर बैठ गये । बच्चुलाल को बड़ा आनंद हुआ । उसने महाराज से कहा , 'गुरुदेव! आज आपकी पूजा करने की मनीषा है । सुनकर महाराज ने सम्मतीदर्शक गर्दन हिलाई । बच्चुलाल ने सब तैयारी करके षोडशोपचार से पूजा आरम्भ की । पहले मंगल स्नान करवाया, अनेक प्रकार के उबटन लगाये और स्नान के बाद फिर जरी का पीतांबर महाराज को पहनाया ।

दो काशिपुरी शालें कंधोपर दाली जरी का एक कपडा शिरोभूषण करके बाँधा । गलेमे सोनेकी गोफे डाली । उसी तरह हाथमे सोनेकी संकल और दस अंगुलियाँमे दस सुवर्ण मुद्रिकायें पहनायी । हिरा जडीहुई सुवर्णकी बाजूबंद पहनायी।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

रत्नजडित कंठा गलेमें डाला जो अत्यंत सुभोषित हो रहा था । जलेबी, राघवदास का नैवेद्य थालीमें रखा । त्रयोदशगुणी पान का बीडा सामने पात्र में रखा । अष्टगंध, अर्गज और अत्तर लगाया । सब शरीरपर गुलाबजल छिडका । एक सोनेके थालीमें बहूतसे रुपये और सोनेके होन दक्षिणाके रुपमें सामने रखे । गिनती करनेपर वह दसहजार के करिब होगी । जिसको मैं कैसे वर्णन करूँ? श्रीफल सामने रखकर, विनयपूर्वक हाथ जोडकर महाराज से कहा, "महाराज मेरी इच्छा राममंदिर बांधनेकी है । गुरुदेव । मंडप दालनेपर भी उत्सव के लिये इस ओटेपर तखलिप होती है । हैं ज्ञान निधान । मेरा यह मनोरथ पूर्ण करिये । ऐसा कहकर महाराज के चरणोंपर माथा रखा । उसकी ऐसी अन्नय भावकी प्रार्थना करनेपर महाराज बोले, 'ज्ञानकीजीवन भगवान श्रीराम तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेंगे । ऐसा मेरा आशीर्वाद है । यह तो ठिक है लेकिन आज तुमने मुझे पोलेके बैल के जैसे क्यों सजाया है ? न तो मैं पोलेका बैल हूँ, न दसरेका घोडा, जिसको इसप्रकार सजाया जाता है । इन सब अलंकारों का मुझे क्या उपयोग है ? हमारे लिये यह सब विष है । ये सब उपाधि मेरे पीछे मत लगाओ । कहीं तुम बडे धनवान हो, यह सब बतानेके लिये तो यह सब नहीं किया? जो जिसको अच्छा लगता है वह वही करता है । मैं उन्मत्त संन्यासी-नंगा-अवधुत हूँ । मुझे इससे कोई प्रयोजन नहीं । तुम प्रापंचिक लोगोंको इस सबकी जरूरत है।

मेरा यजमान भीमाके तीरपर ईटके ऊपर खडा है, जो विश्वकर्ता, नियंता है। क्या वह मुझे यह सब नहीं दे सकता?' ऐसे बोलकर सब अलंकार महाराज ने निकाल कर चारो ओर फेंक दिये। दो पेडे खाकर महाराज वहाँ से चल दिये । यह देखकर आकोला निवासी बडे दुःखी हुए । उसमें कुछ कारंजा के लोग थे । वे लोग कहने लगे , हमारा लक्ष्मण अभागी था । उसने बच्युलाल जैसी पूजा तो की परंतु मनमे धनका मोह रखकर आशंकित हुआ । ऊपरसे बडा त्याग बतानेका प्रयत्न किया तो क्या महाराज को यह पता नही लग सकता था , वे तो सर्वज्ञ है । जैसे दांभिक लोगोंकी पूजा अक्षतासे होती है । नैवेद्य समर्पण मंत्र तो पढते है 'शर्कराखंडखादया नि' और सामने रखते सडी हुई मुँगफली ।

ऐसे दांभिक पूजन का फल भी फिर वैसाही किया तिलमात्र भी अंतर नही रखा । अब इसको कभी भी न्युनता नहीं होगी । वैभव सदैव वृद्धिगत ही होगा, क्योंकि जिसपर संत की कृपा होती है वह सदा सुखी रहता है । बच्चुलालने आकोलामें तलाश किया, लेकिन महाराज का कहीं पता न चला ।

शेगाँव में एक पितांबर नामका दर्जी महाराज का भक्त मठमें रहता था । वह एक फटी पुरानी धोती पहने रहता था । वह बड़े अनन्य भाव से महाराज की सेवा करता था । जो एक दिन फलद्रूप हो गयी । उसकी फटी पुरानी धोती देखकर महाराज मुस्कराकर बोले, 'अरे तेरा नाम तो पितांबर है, लेकिन तू फटी-धोती पहनकर रहता है, जिससे तेरे गुप्तांग दिखाई पडतें है, जो सब स्त्री-पुरुष देखते है । नाम तो 'सोनीया' और हाथ में कथीलके भी कंगन नहीं । जैसे नाम तो गंगाबाई और प्यास के मारे मरती है । तेरी ऐसीही हालत है । फटी धोती पहनकर लोगोंको दुंगन बताते बैठता हो । यह दुपट्टा लो और पहन लो । पितांबर ने भी कोई प्रकार का विचार करके दुपट्टा पहन लिया । जो औरों को अच्छा नहीं लगा । स्वार्थ की और दृष्टि रखकर भाई ही भाई का शत्रु होता है । यह तेढा-मेढा कथन में नहीं करता क्योंकि गन्दी-नाली का मुँह खोलनेपर दुगन्धही फैलाती है । श्री गजानन महाराज के वैसे तो असंख्य शिष्य थे, किन्तु उनमें अधिकारी दोनो हाथ की अंगुलियाँ जितनेही थे । श्रोतागण जंगलमे असंख्यात वृक्ष होते है । किन्तु चन्दन एकाद ही होता है । इस प्रकार के शिष्य पितांबर को ताने कसने लगे । "अरे । समर्थ के पहनने योग्य वस्त्र तू पहनता है ? इससेही तुम्हारी भक्ति दिखाई पडती है । तुम विलासी हो । तुम यहाँ अपमान करने मत रहो । " इसपर पितांबर ने उत्तर दिया की , " इसमे मेने गुरु का कोई अपमान नहीं किया , उनकी आज्ञा मानकर दिया हुआ वस्त्र मैंने पहना । क्या यह उनकी अवज्ञा है ? ऐसा विवाद शिष्यो में जब बढा तो महाराज ने उसका निवारण करनेके लिये उससे कहा ! " पितांबर, बालक सज्ञान होनेपर माता उसे दूर कर देती है । मेरी तुमपर पूर्ण कृपा है, तुम पृथ्वीपर घूमकर शरणागतो का कल्याण करो । " ऐसी आज्ञा सुनकर पितांबर अश्रुयुक्त नयनों से महाराज को

साष्टांग दण्डवत करके जानेके लिये उधत हुआ । वह बार बार मुड़कर मठकी ओर देखता । शेगाँवसे निकलकर पितांबर कौंडोली में पहुँचा और जंगलमें एक आम्रवृक्षके नीचे अपने गुरु का स्मरण करते बैठ गया । रातभर झाड के नीचे बैठा और चिंटीओकी तकलिफसे प्रातः सुर्योदय के समय जाडपर चढकर बैठा ।

पूरे आम्रवृक्षपर चिंटे और चिंटे थे । छोटी बडी सब शाखाओंपर पितांबर जा आया लेकिन कही पर भी उसे शांति नहीं मिली । सब झाड पर चिंटी और चिंटे थी। गोपाल लोगोंने जब उसका यह कृत्य देखा तो, आश्चर्य करने लगे । आपसमें वो बोलने लगे, 'यह बन्दरके समान उछलकूद क्यों कर रहा है ? यह निर्भयता से छोटी-बडी शाखाओपर फिरकर आया किंतु नीचे नहीं गिरा । यह बडे आश्चर्यकी बात है । दूसरेने कहा, 'इसमें आश्चर्य करनेकी कोई बात नहीं । गजानन महाराज के शिष्यमें यह सामर्थ्य होता है । निश्चितही यह गजानन महाराज का शिष्य है । इसके यहाँ आनेका वृत्तान्त हम लोग गाँवमें बतायेंगे । गोपालके मुँहसे वृत्तान्त जानकर गाँवके लोग आम्रवृक्षके पास आये और पितांबर को देखकर कहने लगे, अरे, यह ढोंगी जान पडता है । जो गजानन महाराज के शिष्यके समान पागलपन बतानेका प्रयत्न कर रहा है । गजानन महाराज का सच्चा शिष्य भास्कर पाटील था, जो आडगाँव मे मेहालमेंही समाधिस्त हो गया । भला समर्थका शिष्य पेडा, बर्फी छोडकर यहाँ उपवास करने क्यों आयेगा ? एक मनुष्य आगे आकर पितांबरसे पूछने लगा । 'अरे भाई, तूम कौन हो ? यहाँ किसलिए आये हो ? तुम्हारा गुरु कौन है ? इसपर पितांबरने उत्तर दिया, " मैं शेगाँव का रहने वाला हूँ । मैं दर्जी हूँ और गजानन महाराज का शिष्य हूँ । महाराज ने मुझे पर्यटन करने की आज्ञा दी है । इसीलिये मैं यहाँ आम्रवृक्षके नीचे आकर बैठा । आम्रवृक्षके जड में बहुत चिंटे हैं सो मैं ऊपर चढकर बैठा । यह सुनकर लोग बडे क्रोधित हो गये और कहने लगे, 'अरे बडोंको नाम लेकर छल करनेका प्रयत्न मत करो ।

जैसे कोई स्त्री कहे कि मैं रानी हूँ और पेट भरने के लिये यहाँ मज़दूरी करने आई हूँ। ऐसा तुम्हारा यह कथन है । शामराव नामक उसगाँव के देशमुखने कहा, "अरे बहुरूपीये! गजानन महाराज प्रत्यक्ष भगवान हैं, उनका नाम लेकर उनकी महिमा मत घटाओ । एक बार उन्होंने बिना ऋतुके आम्रवृक्षको फल लगाये थे, अगर तुममें सामर्थ्य हे तो तुम केवल पत्ते लगाकर दिखाओ अन्यथा तुम्हारी दुर्गति कर डालेंगे । यह बलीराम पाटील का सुखा झाड है । इसको हम सबके सामने पत्ते लगाकर बताओ नहीं तो मार खाओगे । अगर तुमने यह करके दिखाया तो हम सबके लिये पूजनीय होंगे । क्योंकि सदगुरुके शिष्य संसार में उन्हीके समान होते हे । ऐसा संसारमें नियम है । अब विलंब मत करो, यह आम्रवृक्ष हरा करो । यह सुनकर पितांबर घबरा गया और कहने लगा । एसा कहकर मुझे त्रस्त न करो । पहले मेरी कथा तो सुन लो जैसे एक ही खदान में हीरा और गार पत्थर निकलते हैं । वैसेही मैं गजानन महाराज के शिष्यों में गार पत्थर हूँ, इसमें किंचितभी असत्य नहीं है । गार पत्थरसे खदानको दोष नहीं लगता । फिर मैं अपने गुरुका नाम क्यों छुपाऊँ ? इसपर शमरावने कहा, "व्यर्थकी बात मत बढाओ । शिष्यपर संकट पडनेपर वह अपने सदगुरु का आवाहन करते हैं । इसपर यदि शिष्य अधिकारी न भी हो तो भी सदगुरु उसे सहाय करते हैं । यह सुनकर पितांबर कि स्थिति एक तरफ गडही और दूसरी ओर कृआ, जैसी हो गयी । पितांबर बडा चिंतातुर हुआ । उसको कुछ नहीं सूझा । उस सुखे हुए आम्रवृक्षके पास सब पुरवासी जमा हो गये । उनमें स्त्रियाँ और बालक भी थे । सबको उत्सुकता थी कीं, अब क्या होगा?

अन्तमें निरुपाय होकर पितांबर हाथ जोडकर अपने सदगुरु कि अपार स्तुति करने लगा," हे समर्थ स्वामी गजानन । ज्ञानकोश के सूर्य । पदनर्तों के रक्षक । अब इस समय दौडिये । हे भक्तजनो के पालन करनेवाले । मेरी वजह से आपपर दोष आना चाहता है । अपना ब्रीड रक्षण करनेके लिये इस आम्रवृक्ष को पल्लव लाईये । मेरा तुमपर ही

भरोसा है । शीघ्र मुझे प्राप्त हो । नहीं तो यहाँ मेरा मरण आ गया है । प्रह्लाद को सत्य करनेके लिये खंबेसे नरसिंह प्रगत हुए । जनाबाई को सुलीपर चढ़ाने कारण उसका पानी हो गया । जनाबाई का बोज भगवानपर था । किन्तु मेरा तुमपर है । संतोमें और देवता में कोई अन्तर नहीं । देवता संत होते हैं और संत देवता होते हैं । है गजानन प्रभो । लोग मुझे आपका शिष्य कहते हैं । मेरा तो कोई माहात्म्य नहीं-माहात्म्य सब आपके सन्निध है । जैसे माला के फूलों से धागे कि किमत होती है । आप पुष्प है और मैं धागा हूँ । आप कस्तूरी हो मैं मृत्तिका हूँ । आपके महिमाके कारण यह संकट मुझपर आया है । अब आप मेरा अंत न देखिये । हे गुरुदेव ! इस सुखे वृक्षपर पल्लव लाइये । इस प्रकार प्रार्थना करके पितांबरने लोगों से कहा, 'भाईयों ! आप लोग सदगुरु गजानन के नाम का जयघोष करिये । सब लोग महाराज के नाम का जयघोष करने लगे । इतनेमें अगाध कौतुक हुआ । सूखे झाड पर नई नई कोपलों- पल्लव फूट आये, जो सब लोगों ने अपनी आँखोंसे प्रत्यक्ष देखा ! उनमेसे कुछ कहने लगे, की चूटकी लेकर देखो, शायद हम लोग स्वप्न देख रहे हो । चिहंटी लेकर तो स्वप्न कि भ्रांति नष्ट हो गयी । कुछ लोग कहने लगे की, 'गरोडिके खेल सदृश कही नजरबंदी तो नहीं है ? क्योंकि उसमें चमडे की बादी साप हो जाती है और खपरैल के टुकडे रुपये दिखाई देने लगते हैं ।

लोगोंका वह भ्रम भी नष्ट हो गया क्योंकि लोगोंने पत्ते तोडकर देखे तो उसमें दूध आने लगा । तब सब कहने लगे की गजानन वास्तवमें महान संत है। अब पितांबर के बारे में हम लोगोंको शंका करनेका कोई कारण नहीं हैं । यह उनका शिष्य है । इनमे कोई संदेह नहीं है । अब इसको गाँवमें लेकर चलो - सो गजानन महाराज कभी तो इसके लिये कौंडोली आयेंगे । जैसे गौ अपने वत्सके लिये आती है । यह सबको भा गया और वे सब पितांबरको लेकर कौंडोली गाँवमें गये । जब ऐसा दिव्य कार्य हुआ तो स्वाभाविक भाव का उदय हो गया । जैसे समर्थ रामदास स्वामी

का कल्याण नामक शिष्य रामदास ने डोमगाँव भेजा था वैसेही समर्थ गजानन महाराज ने यह पितांबर हमारे यहाँ भेजा हैं अब कोंडोली का भाग्य उदित हुआ है । है श्रोतागण कोंडोली गाँव में वह आम्रवृक्ष अभी तक है और अन्य सब वृक्षोंसे अधिक उसमें असंख्य फल आते है । सब गाँव पितांबर के भजन में लग गया । क्योंकि हिरकणी जहाँ भी होती है उसका मूल्य तो होता ही है । आज भी पितांबर का मठ कोंडोली गाँव में है । उसका अंत भी वहाँ हुआ । अस्तु ॥

यहाँ शेगाँव में गजानन महाराज मठ में एक दिन बड़े उदास मन से खिन्न बैठे थे । सब शिष्य हाथ जोड़कर महाराज को पूछने लगे, "महाराज आपका मन क्यों अस्थिर है ? "तब महाराजने उत्तर दिया , 'भाई! क्या बताऊँ ? हमारा कृष्णा पाटील चला गया, वह हमको रोज चिकनी सुपारी लाकर देता था । आज उसका स्मरण हो आया । उसका लडका राम अभी छोटा है सो चिकनी सुपारी यहाँ कौन लायेगा ? राम बड़ा होनेपर मेरी सेवा करेगा, सो अब मैं इस मठ में रहनेको तैयार नहीं ।

महाराज के ऐसा बोलनेपर सबको चिंता हो गई कि महाराज का यहाँ से जानेका विचार दिखता है । कुछ भी हो, हम लोग चरण पकड़कर बिनती करेंगे कि, 'महाराज ! यहाँसे न जाय ! सब लोग महाराज के चरण पकड़कर प्रार्थना करने लगे, 'भगवन ! आप हम लोगोंको छोड़कर अन्यत्र कहीं न जाइये । इनमे श्रीपती बंकटलाल, मारोती और ताराचंद थे । महाराजसे बोले, 'आपकी जहाँ इच्छा हो वहाँ रहिये किन्तु शेगाँव न छोड़िये ।' तब महाराज ने कहा, 'तुम्हारे गाँव में पाटील और देशमुख दो दल है । फूट है । मुझे किसी कि जगह नहीं चाहिये । मैं शेगाँव में जो जगह किसीकी भी न हो, वहाँ रहूँगा ।' महाराज का वक्तव्य सुनकर सब लोग चिंता में पड गये । बड़ी कठिन समस्या है । यह विदेशियों

का राज्य है, भला-एेसी सरकार महाराजके लिये जगह कैसे देगी ? धार्मिक कारण के लिये सरकार से जगह मिलना कठिन है । सबने महाराजसे कहा ! 'महाराज हममें से किसकी जगहमें आप रहे, हम देनेको तैयार है ।" सुनकर महाराज ने कहा "अरे यह सब तुम लोगोंका अज्ञान है । जमीन तो सब सच्चिदानंद कि है आजतक कितनेही राजा हो गये फिर भी भूमि तो पांडुरंग के स्वामित्व में है । जब सब भूमि गोपाल की याने अटक कहाँ । व्यवहार की दृष्टि से सरकार को स्वामित्व प्राप्त होता है । जाओ आप लोग प्रयत्न करो, जगह जरूर मिलेगी, अब आगे बात मत करो । हरी पाटील के हाथों यश आयेगा ।" सुनकर सब हरी पाटील के पास आये और उनकी सलाहसे अर्जी करके जगह माँगी । उस समय 'करी' नामक सर्वाधिकारी बुलढाणे में था । जिसने अर्ज के अनुसार एक एकर भूमि दी ।

उसने यह भी कहा कि आप लोगों ने दो एकर भूमि के लिये अर्ज किया था । मैंने एक एकर दी है अगर एक बरस में आप लोग विकसित करते है तो मैं एक एकर और भी दूँगा । इस प्रकार का प्रस्ताव सरकारी रेकोर्डमे है । ऐसा महाराज कि वाणी का प्रभाव था । फिर बंकटलाल और हरी पाटील वर्गणीके लिये गये । अल्प समय में द्रव्य इकट्ठा हो गया और काम शुरू हो गया । वह सारा वृत्तान्त अगले अध्याय में आयेगा । सत्पुरुषों कि मनोकामना पूरी करनेके लिये जगदीश सदैव तैयार रहते हैं । डोंगर गाँव का विठठल पाटील वाडेगाँव का लक्ष्मण पाटील और शेगाँव का जगू आबा ये वर्गणी के पुढारी थे । यह दासगणु विरचित श्री गजानन विजय ग्रन्थ अपने कल्याणके लिये सावधान चित्तसे सुने ।

॥ शुभं भवतू श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥  
॥ इति श्री गजानन विजय ग्रन्थस्य व्दादशोडध्याय समाप्त : ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय - १३ ॥

श्रीगणेशाय नमः | हे संतोंको वर देनेवाले | दया के सागर-गोप और गोपिजनों के प्रिय, तमालनील वर्णहरी, आप मुझे प्राप्त हो | जब आप के ईश्वरत्वाकि परिक्षाके लिये विधाताने गौयों और बछड़ों को हरके ब्रम्हालोकमें ले जाकर रखा था | जमुना के किनारे गोकुलसे तब आप ने गोप बालके - गौयों-तथा बछड़ों का रूप धारण करके अपना ईश्वरत्व सिद्ध कर दिखाया था | गोपों को निर्भय करनेके लिये कालींदी डोह के कालीया नागको कुचलकर रमणक द्विप भेज दिया | उसी प्रकार दासगणु के दुर्दैवको कुचलकर निर्भय करियें | भगवान! मैं यद्यपि अनधिकारी-अज्ञानी - और आप की कृपा के योग्य नहीं हूँ, यह सत्य है | किन्तु भगवान मेरा अन्त न देखिये, आपकी कृपा कटाक्ष से मेरी चिंता दूर करिये |

अब श्रोतागण सावधान हो कर अगली कथा सुनिये | बंकटलाल, हरी पाटील, लक्ष्मण विठू-जगदेव आदी सब लोग मिलकर चंदा इकठ्ठा करने लगे | भाविक लोगोंने वर्गनी दी किन्तु कुटिल जनोंने निंदा की | कहने लगे; तुम्हारे साधू को चंदेकि आवश्यकता क्यों पड़ी ? आप लोग गजानन को महासंत बतलाते हो और अघटन-घटना-करनेवाले मानते हो, तो फिर उनके मठ के लिये चंदे कि क्या जरूरी ? उनका कोषाध्यक्ष तो कुबेर है | फिर प्रतिद्वार भिक्षा माँगने कि क्या आवश्यकता ?

कुबेर को एक पत्र लिख दीजिये, बस काम हो जायेगा | यह सुनकर जगदेव ने कहा, इस भिक्षा का प्रयोजन आप लोगों के कल्याण के लिये है | श्री गजानन महाराज के लिये मठ मठियाकी आवश्यकता नहीं है | यह आप लोगों के कल्याण के लिये किया जा रहा है | स्वामी गजानन महाराज का पर्याडक यह पृथ्वी है | सब बन बगीचा है और तीनों लोक ही मठ है | अष्ट सिद्धियाँ उनकी दासी हैं, जो उनकी सेवा में लगी हुई हैं | इसीलिए वो आप कि परवाह नहीं करते | उनका वैभव भिन्ही है | भगवानसूर्यनारायण को भला अंधकार दूर करने के लिये दीपक के प्रकाश की आवश्यकता होती है ? वह स्वतः मुलमेंही प्रकाशमय है | उनके लिये दीपक जरूरी नहीं | कही हलकारा सार्वभौम रजा बन सकता है ? इस लोकके ऐहिक ऐश्वर्याकिइच्छा मानव को होती है | गजानन जैसे संतों को नहीं | प्रपंचिकोंकी ऐहिक कामनायें इस सत्कृत्यसे पूर्ण होंगी | जैसे शारीरिक व्याधि दूर करनेके लिये औषधियों कि योजना कि जाती है | आत्मा के लिये नहीं | रोगभय शरिर को होता है न कि प्राणोंको | जन्म-मरणादि विकार शरीरके हैं आत्मा के नहीं | वैसे ही आप लोगों की सुसंपन्नताकी रक्षण करने के लिये यह पुण्यरूप औषधि है | आप लोगोंकी सुसंपन्नता यहाँ शरिर सदुद्श है और अनाचार रोग रूप है उस रोग का इस पुण्य कृत्यसे नाश होगा | इसीलिए कुतर्क त्यागकर इस कर्म द्वारा पुण्य संचय कीजिये | इस भूमिमें पुण्य रूप यहाँ बीज बोइये | यदि बीज पत्थरपर बोया जाय तो उसका कोई उपयोग नहीं होता | सफेद कीड़े उसे खा जाते हैं | संत सेवा के जैसा कोई पुण्य नहीं है और संत गजानन महाराज संतोंके मुकुटमणी है | संतकार्यको दिया हुआ धन गुणोत्तरों से बढ़ता है, जैसे एक दाना बोनेपर हजारो दानेवाला भुट्टा आता है |

इसी प्रकार पुण्य की स्थिति है | ऐसा बतानेपर कुटील कुचाली निरुत्तर हो गए | क्योंकि सत्यत्व रहनेपर तर्क की गति कुंठित हो जाती है | यदि प्रतिष्ठित व्यक्ति हो तो चंदेका कार्य समीचिन होता है| क्षुद्र व्यक्तियोंसे यह सम्भव नहीं | इसके बाद मिली हुई जगहमें जल्दीसे परकोटा बांधा गया| सब गाँव के लोग काम में लग गए | फिर न्यूनता कहाँकी| परकोटे का निर्माण हो रहा था | उस समय पत्थर चुना, रेतिके लिये बैलगाड़ियाँ लगीं थी | उस समय समर्थ जून मठ में थे | उन्होंने मनमें ऐसा विचार किया , कि हमारे उस जगह बैठेबिना ठीक तरहसे काम नहीं चलेगा | ऐसा निश्चय कर एक रेती की बैल गाडीपर समर्थ बैठ गये| गाड़ी हाँकनेवाला महार था | सो झटसे दूर हो गया | तब महाराजने उसे कहा ! 'अरे नीचे क्यों उतर गया? हम परमंहस है, हमको छुआछुत की कोई बाधा नहीं होती | तब उसने उत्तर दिया, 'महाराज! आपके साथ बैठने की मेरी योग्यता नहीं है | मेरा आपकी बगल मे बैठना उचित नहीं | हनुमानजी यद्यपि राममय हो गए थे, फिरभी वे भगवान रामचंद्र के बगलमें नहीं बैठे | हाथ जोड़कर सामनेही खड़े रहे| तब महाराज बोले, ठीकहै जैसी तुम्हारी मर्जी मुझे कोई आपत्ति नहीं| तब महाराज बैलोसे बोले, 'आप लोग गाडीके पीछे चलो| बैल आदेशनुसार चलते रहे बगैर किसी उद्दंडताके और संकेतार्थ स्थलपर आकर खड़े हो गए | महाराज गाड़ी' से उतरकर बीचमें आकर बैठ गए| जहाँ अभी गोपुर खड़ा है | यही महाराज की समाधि है | यह जमी दो सर्वे नंबरमें थी, तैतालिस और पैतालीस | सर्वे ने था सातसौ| महाराज जहाँ बैठे थे, वही जमीन लेनी चाहिये | इसीलिए यह करना पड़ा | उन दो नंबरोंसे थोड़ी थोड़ी जगह चतुराईसे कार्यकर्ता लोगोंने ली |

आदेश एक एकर का था । किन्तु समाधिमध्य साधन के लिए थोड़ी जगह कम पड़ी । उसके लिए ग्यारह गुंठा जगह लेकर निर्माण कार्य शुरू किया । क्योंकि अधिकारी वर्गने आश्वासन दिया था, की काम देखकर आगे एक एकर भूमि और देंगे, कच दुष्ट लोगोंकी चुगली से ग्यारह गुंठोका मामला बड़ा विकृत हो गया । जिससे नेतागण मनमें थोड़े घबराये । हरी पाटील समर्थसे बोले की जोशी नामक एक अधिकारी जगह के प्रकरण के तलासिके लिए आया है । जिसपर महाराजने हँसकर उत्तर दिया की जगहके लिए किया हुआ दंड माफ़ हो जायेगा ।' यह सुनकर हरी पाटील फुला न समाया । क्योंकि अनुभव हो चूका था । महाराजकी प्रेरणासे जोशीने इसप्रकार निर्देश दिया की मैंने स्वयं जाकर पूछताछ की है और गजानन संस्थान को जो दंड किया गया है वहा अनुचित है । उसे लौटा दिया जाय । दंड माफ़ होनेपर हरी पाटील को बड़ा आनंद हुआ । समर्थवाक्य कभी व्यर्थ नहीं होता अब इस नई जगहमें महाराज की जो लीलायें हुई उसका वर्णन करता हूँ । मेहेकर के पास सवडद नामक एक देहात है । वहाँ रहनेवाला गंगाभारती नामक एक गोसाँई शेगाँव आया । इसको गलितकुष्ट था । साराशरीर लाल चकत्तों से भरा था । सारा शरीर कन्दडूयुक्त हो गया था । गंगाभारती इस गलितकुष्ट से त्रस्त हो गया था समर्थ की कीर्ति सुनकर वह महाराज के दर्शनके लिए शेगाँव आया । सब लोगों ने उसे रोका और कहा की तुम्हारा सर्वांग गलितकुष्ट से पीड़ित है । तुम महाराज के दर्शन को मत जाओ । जहाँ पर महाराज दिखें ऐसे स्थलपर बैठो । उनके सान्निध जाकर चरण स्पर्श करने का प्रयत्न न करना ।

यह संसर्गजन्य रोग है | ऐसे वैद्यालोग तथा डॉक्टरलोग कहते हैं | किन्तु एक रोज गंगाभारती लोगोंकी नजर बचाकर प्रत्यक्ष दर्शन के लिए महाराज के पास पहुँच गया | मस्तक महाराज के चरणोंपर रखा तो महाराजने एक थप्पड़ उसके सिरपर बड़ी जोरसे लगाया | इस कारन वह महाराज के सामने पासमें खड़ा हो कर महाराज की ओर देखने लगा | तब महाराज ने उसके गलोंपर दोनों हाथों से कई थप्पड़ उसके सिरपर बड़ी जोरसे मारे | इस प्रकार खाकर कर उसने कफ उसके अंगपर थूक दिया | उसने वहा कफलेकर सर्वांग पर मर्दन किया, जैसे कोई लेप लगाया जाता है | यह देखकर एक कुचली ने उससे कहा, 'अरे पहलेसेही तुम्हारा शरीर साड गया है | उसपर यह गंदा कफ महाराज ने दल दिया | तूने उसे प्रसाद मानकर सरे शरीरपर मल दिया सो ठीक नहीं | जावो, साबून लगाकर सारा शरीर धो डालो | ऐसे पागल भूमिपर विचरण करने लगे हैं एयर अंधश्रद्धा के कारन सरे लोग उन्हें साधू मानते हैं | उसका परिणाम ऐसा होता है की अविधिकार्य बढ़ जाता है | जिसमे समाज रसातल में डूब जाता है | तुम अपनीही बात लो | अपने रोग का नाश करने के लिए औषधि सेवन छोड़कर तुम ऐसे पागल के पास दौड़कर आये हो |' यह सुनकर गुसाईं हसने लगा और उसने कहा, 'यहिपर आप गलती कर रहे हैं |अरे! साधुके पास आनेसे कुछ भी नहीं होता, भला कस्तूरी के पेटमें कभी दुर्गंध रहती है | तुम्हे वह खकार कफ दिखाई दिया किंतु वह प्रत्यक्ष कस्तूरी के समान सुगंधित है | यदि संशय है तो मेरे शरीरको सूँघकर देखो | हाथ लगाकर देखो, मैं कफ को मलम मानु इतना पागल नहीं हूँ, यह साक्षात् औषधि है |

तुम्हारा उससे कोई सम्बन्ध नहीं था इसीलिए तुम्हे खकार कफ दिखाई दिया । वस्तुतः तुम्हे समर्थ की महिमा का ज्ञान नहीं है । इसकी प्रचिती लेने के लिए चलो, मैं बताता हूँ, की जहाँपर महाराज रोज स्नान करते हैं वहाँकी गीली मिट्टी में रोज शरीरपर लगाता हूँ । ऐसा बतानेपर दोनों स्नान के जगह गए । तो कुचली था उसको गुसाईं के जैसा ही अनुभव आया । दोनोंने हाथ में मृत्तिका ली, तो हाथ की मृत्तिका औषधि रूप हो गई और कुचाली के हाथ की मृत्तिका गीली की गीली रही और किंचित दुर्गंध भी आ रही थी । यह देखकर वहा घबरा गया और कुत्सित कल्पना छोड़कर महाराज के शरण गया । इस गुसाईं को कोई पास नहीं बैठने देता था । यह दूर बैठकर स्वामी के सामने भजन करता था । इसकी आवाज बड़ी मधुर और पहाड़ी थी । इसको गायन का भी अभ्यास था । इस प्रकार पंद्रह दिन बीत गए । तब उसके शरीर के लाली चली गई और उसका रूप बदल गया । जैसे चंपा का रंग होता है ऐसा उसका वर्ना हो गया । पैरकी दरारें नष्ट हो गई, दुर्गंध भी चली गई और वह पूर्ववत हो गया । गोसाईं का भजन सुनकर समर्थ के मनको बड़ा संतोष होता था । सामान्यतः गायन सब जीवों को प्रियलगता है। अब तो विज्ञानं सिद्ध हो गया है, की गायनसे वनस्पति, वृक्ष भी प्रफुल्लित होकर अधिक पुष्पके फल देते हैं । गोसाईं का पत्निका नाम अनुसूया था और संतोष भारती नामाक एक पुत्र भी था । वे दोनों गंगाभारती को लेने शेगाँव आये । दोनोंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, अब आपकी व्याधि नष्ट हो गई है । सो अपने गाँव चलिये । पुत्रने भी ऐसेही कहा की गजानन महाराज से पूछकर आपने गाँव चलिये । यहाँ रहना बस हो गया ।' यह सुनकर गंगाभारती बोला की, ' आप लोग हाथ मत जोडीये । आजसे मेरा आप लोगोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है ।

ये अनाथों की माता समर्थ गजानन यहाँ बैठी है, उन्होंने थप्पड़ मारकर मेरा गर्व नष्ट कर दिया | शरीर पर राख लगाकर और चित्त संसार में रखकर इन कषाय वस्त्रोंकी तुमने बहुत विडंबना की जिसका संकेत थप्पड़ मारकर महाराज ने दिया और मेरे नेत्र खुल गए | अब संसार का सम्बन्ध नहीं चाहिये | और संतोष भारतीसे वहा बोला, यह तुम्हारी माता है | इसको सवडल ले जावो और इनकी सेवा करो, किसी प्रकार का दुराव न करना | मातृसेवा करनेवाला भगवान को प्रिय होता है | पुंडलिक का उदाहरण सामने है | मैं अगर सवडल आया तो रोग पूर्ववत् हो जायेगा | इसीलिए वहाँ चलनेका आग्रह मत करो | आजतक मैं तुम लोगों का था, अबभगवान का हो गया | आब मैं नरजन्म की सार्थकता का प्रयत्न करूँगा यदि नरजन्म के आकर प्रयत्न किया जय तो चौरासी योनियों का चक्कर छुट जाता है ऐसा शास्त्रवचन है| संत की कृपा से आब मुचे संसार से विरक्ति हो गई है | इसीलिए पुनः परमार्थ रूप पायस में संसाररूपी मृत्तिका मत डालो, ऐसा समझाकर उन दोनोंको उसने सवडद भेज दिया और वह शेगाँव में रह गया | वह महाराज का स्तवन अनेक राग रागिनियों में गता था | क्योंकि उसे गायन कला के स्वरोंका अच्छा ज्ञान था | प्रतिदिन वहा अस्त समय महाराज के पास एकतारी लेकर बैठ जाता और बड़े प्रेमसे भजन करता | जो सुनकर अन्यजन भी बड़े प्रसन्ना होते | क्योंकि गायन कला ही ऐसी वस्तु है, जो सबको प्रिय है | इस तरह यह गंगाभारती महाराज की कृपासे व्याधिमुक्त हो गया और बादमे वह महाराज की अज्ञासे मलकपुर चला गया | अस्तु| एक बार पौष महीने में झ्यामसिंग शेगाँव आया |

और महाराज से कहने लगा कि, 'महाराज! आप अडगाँव चलिये | मैं जब अपने भांजे के घर ले जाने आपके पास आया था, तब आपने वचन दिया था | यह सुनकर समर्थ बोले, वृथा आग्रह न करो | इस समय नहीं आता | पीछे बादमें कभी आऊंगा | तब उसने कहा कि मैं आपका भक्त हूँ | मेरीइच्छा पूर्ण करिये, आप मुंडगाँव चलिये | मुंडगाँव चलकर कुछ दिन मेरे घरमें निवास करिये | मैं सब तैयारी करके आया हूँ | यह सुनकर साधुश्रेष्ठ समर्थ इयाम्सिंग के साथ मुंडगाँव गए | सो वहांके सब स्त्री-पुरुष महाराज के दर्शन को आये| उनके आनंद की सीमा न रही | इयामसिंग ने वहा भोजन का प्रबंध किया | मुँडगाव मानो गोदावरी तट का पैठण ही हो गया | पैठण में संत एकनाथ और मुंडगाँव में संत गजानन| सो वहाँपर अनेक भजन मंडलिया वहाँ मुंडगाँव आयीं | अचारी लोग भोजन सिद्ध करने लगे | आधी सिद्धता होनेपर महाराज इयामसिंगसे बोले, 'इयामसिंग आज तो रिक्त तिथि चतुर्दशी है | भोजन का प्रयोजन पूर्णिमा को रखो' | तब इयामसिंग ने कहा, महाराज, भोजनसिद्ध हो गया है | आपके दर्शन को अपार लोग जमा हो गए हैं, आपका प्रसाद ग्रहण करने को | तब महाराजने कहा! " इयामसिंग व्यावहारिक दृष्टी से तेरा कहना ठीक है, किन्तु जगदीश्वर को यह मान्य नहीं है | तुम प्रापंचिक लोगोंको ऐसा लगता है की सब तुम्हारे मन जैसा हो | किन्तु यह अन्न उपयोग में नहीं आयेगा | इसके बाद भोजंके लिए पंगते बैठ गई, तब अचानक आकाश मेघाच्छादित हो गया | माथेपर बिजलियाँ चमकने लगी | बड़ी जोरसे पवन बहने लगा, जिससे जंगल के, अनेक वृक्ष उखड़कर गिरने लगे | वर्षा होने लगी | घड़ीभर सर्वत्र पानी ही पानी हो गया | यह देखकर विमनस्क-इयामसिंग महाराज से बोले |

भगवान! कल तो इस तरह न हो | इस पर्जन्य का निवारण कीजिये ये बरसात का समय तो नहीं है| यह अपना नाश करने अचानक ही आ गया| अगर इस समय वर्षा होगी तो खेती का बड़ा नुकसान होगा | तब सब लोग कहेंगे कि, “इयामसिंग के भोजन का प्रयोजन हमें पीड़ाकारक हो गया | यह अच्छा पुण्य संचय है |” इसपर महाराज बोले, “ इयामसिंग चिन्ता न करो, यह पर्जन्य कल तुम्हे धोखा न देगा | अभीमैं उसे रोकता हूँ |” ऐसा कहकर पुन्यराशी आकाश की ओर देखने लगे तो आकाश निरभ्र हो गया | सर्वत्र धुप दिखने लगी | यह सब क्षणभर में हो गया | संतोकी महिमा अगाध होती है | दुसरे दिन पूर्णिमा को भोजन हुआ | यह नियम आज भी मुंडगाँव में चल रहा है | इयामसिंगने अपनी संपत्ति महाराजके चरणों में समर्पित कर दी | मुंडगाँव के सब लोग समर्थ भक्त हो गए |उनमें पुंडलिक भोकरे नामक तरुण युवक महाराज का भक्त था | यह उकीरड्या नामक कुनबी का पुत्र था, जो युवावस्थामेही महाराज का भक्त हो गया | बराड़ में उकीर्डा नाम प्रसिद्ध है | इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है की, जब संतति जीवित नहीं रहती तो ‘उकीर्डानाम’ रखा जाता है | तेलंगन में इसी प्रकार पेंटय्या नाम रखा जाता है | यह पुंडलिक वाद्यपक्ष में नियमित रूपसे महाराज के दर्शन को शेगाँव आया करता था | जैसे वारकरी संप्रदाय के लोग वाद्यपक्ष में देहु आलंदी दर्शन को जाते हैं, जो इंद्रायणी के किनारे है | वैसेही यह भक्तिभाव से वाद्य पक्ष शेगाँव की वारी करता था | एक बार बराड़ में ग्रंथिक सन्निपात (प्लेग) बड़ी जोरसे फैल गया, जिससे लोग गाँवसे बाहर रहने लगे |

इस रोग में पहले बाधा होनेके बाद में शरीर ज्वरसे संतप्त हो जाता है । नेत्र रक्तवर्ण हो जाते हैं । संधिस्थान में ग्रंथि उठ आती है और उसपर वात का प्राबल्य होता है । रोग बढ़ जाता है । चेतना लुप्त होने लगती है । प्राचीन समय से यह व्याधि भारत वर्षमें न थी । पश्चात्य देशोंमें यह विपुल प्रमाण में थी । पाश्चात्यों के संपर्क संसर्ग से यह यहांपर फैल गयी। उसके प्रतिकार के लिए लोग घर द्वार छोड़कर कुटी बनाकर जंगल में रहते । ऐसे विकट रोगका संक्रमण मुंडगांवमें भी आया । इस समय पुंडलिक की वारिका समय था । सो वह शेगाँव के लिए चल पड़ा । चलते समय ही उसे किंचित ज्वर था । किन्तु उसने किसीसे कहा नहीं । छुपकर शेगाँव की ओर अपने पिता के साथ चल पड़ा । पांच कोस चलनेपर उसे तेजीसे ज्वर चढ़ आया और एक पैर भी आगे रखना असम्भव हो गया । उसकी कांखमें एक गाँठ उभर आई और वह त्रस्त हो गया । उसके लक्षण देखकर पिताने उससे पूछा, “अरे पुंडलिक ऐसा क्यों कर रहा है ?” तब पुंडलिकने उत्तर दिया, “पिताजी, मुझे ज्वर आ गया है और कांख में एक गाँठ भी उठ आई है । सब शक्ति क्षीण हो गई है, मुझसे अब बिलकुल चला नहीं जाता । मेरा दुर्भाग्य है की यह वारी नहीं जा पाऊँगा ।” उसनेप्रार्थना शुरू की, ‘हे दयाधन’ स्वामी गजानन ! इस वारी का खंड मत पड़ने दीजिये । अपने दिव्या चरणों का दर्शन दीजिये । हेभक्तवत्सल कृपानिधान ! वारी पूर्ण होनेपर भलेही ज्वर आये या शरीर छुटे तो मुझे परवाह नहीं किन्तु वारी अवश्य पूर्ण कीजिये । यह वरिही मेरा पुण्य संचय है । जिसका नाश करनेके लिये यह व्याधि-शत्रुरूप हो गयी है । शास्त्रोंका कहना है तथा वैसे भी जबतक शरीर सुदृढ़ होता है तबतक परमार्थ कर सकते हैं, अन्यथा नहीं ।

जैसे की आचार्य शंकरने कहा है,

यावात्सवस्थामीदं कलेवरगृहं । यावच्च दुरे जरा ।

यावदिन्द्रियां शक्ति रप्रूतिहता यावतगतंन युषं ॥

आत्म श्रेयसि तावदेव पुरुषा कार्यः प्रयत्नों महान ।

प्रोदिप्ते भवने तू कुपखननं प्रत्युधूमः किद्शः ॥

अर्थात् जब तक शरीर स्वस्थ है जब तक बुढ़ापा शरीर को क्षीण नहीं करता । जब तक इन्द्रियों में अथक शक्ति है, जब तक आयु शेष है, तबतक आत्म कल्याणके लिये पुरुषको महान प्रयत्न करना चाहिये अन्यथा जैसे घर जलने लगने पर कुआँ खोदना व्यर्थ हो जाता है वैसेही परमार्थ की गति होती है । अर्थात् जो लोग कहते है बुढ़ापेमें ईश्वर भजन करेंगे, वहा बड़ी भूल है, अस्तु। पुंडलिक की अवस्था देखकर उसका पिता बड़ा चिंताचुर हो गया। दूःखसे कारन वहा रोने लगा और कहने लगा, 'हे भगवन ! मेरे यह एकमात्र पुत्र है । यही कुलदीपक है, सो मेरे वंश का दिया न बुझने पाये ।' उकिर्झने अपने पुत्रसे पूछा, 'बेटे, तुम्हारे बैठनेके लिए गाड़ी या घोडा ले आऊं क्या? इसपरपुंडलिकने उत्तर दिया, 'बाबा! वारी पैदलही होनी चाहिये उठते बैठते चले चलते है । अब आपसे इतनीही प्रार्थना है की, अगर मेरी रास्ते में मृत्रू हो जाय तो मेरा शव जरूर शेगाँव ले जाना । किसी प्रकारका शोक मत करना । इस प्रकार उठते बैठते पुंडलिक शेगाँव पहुंचा और समर्थको देखतेही दंडवत प्रणाम किया ।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

उसे देखकर महाराज ने एक लीला की, उन्होंने एक हाथसे उसकी काँख जोरसे दबाई और पुंडलिकसे बोले, 'पुंडलिक, तुम्हारा विघ्न दूर हो गया । आब तुम्हे तिलभर भी शंका करनेकी जरूरत नहीं । ऐसे महाराज पुंडलिक को बोलतेही पुंडलिक के काँख की गाँठ जगहपर बैठ गई और ज्वर भी उतर गया । अशक्ति के कारन शरीर में कंप हो रहा था । तबतक पुंडलिक की माताने पुंडलिक के हाथों में नैवेद्य लाकर दिया जो उसने महाराज के सामने रखा । उसमेंसे तो कौर उठाकर महाराज के मुखमें डाले । जिसमे पुंडलिक का कंप भी बंद हो गया और पूर्ववत हो गया । थोड़ी अशक्तता बाकि थी । अरे अन्धो! यह गुरु भक्ति का साक्षात् फल देखा । आंखे खोलो । योग्य गुरु रहनेपर की हुई सेवा कभी व्यर्थ नहीं होती । कामधेनु यदि घरपर हो तो क्या इच्छाये अपूर्ण रह सकती है ? विधिवत वारी करके पुंडलिक मुंडगाँव गया। जो इस चरित्र का पठान करेगा उसके विघ्न नष्ट हो जाएँगे । संत चरित्र केवल कथा-कहानी नहीं है अपितु अनुभूति की खदान होती है । किन्तु मनमे संत कथाका अविश्वास नहीं आना चाहिये । यह दासगणु विरचित गजानन विजय ग्रन्थ भाविकोको सुखदायी हो, यही भगवानसे प्रर्थना है ।

॥ शुभंभवतु ॥ श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

। । इति श्री गजानन विजयग्रन्थस्य त्रयोदशोऽध्यायः समाप्तः। ।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय -१४ ॥

श्रीगणेशाय नमः। हे कौशल्या के पुत्र रामचंद्र! हे रघुकुल भूषण। करुणा के आलय! सीतापती! इस बालकपर दया करो। आपने ताड का उद्धार किया। शिलारूप अहिल्या को सजीव किया है। दाशरथी! आपने भिल्लनी शबरी की मनोकामना को पूरा किया। भक्तों की रक्षा करने के लिए प्रभो, आपने राजसिंहासन का त्याग किया। केवल अपनी कृपा से बंदरों को बलवान बनाया। हे रावणारी, आपके नाम से शिलायें भी समुद्र तैरें। आपने भक्त विभिषूण को लंका का राजसिंहासन दिया। हे आनंदकंद, जो जो आपके शरण आया, उसकी दीनता-दुख तथा आपत्ति का निवारण आपने किया। यह मन में लाइये और दासगणु का पालन कीजिये। क्योंकि बालक, माता को छोड़कर कहां दौड़ेगा? आप माता-पिता तथा सद्गुरु हो। भक्तों के कल्पवृक्ष हो। संसार सागर की नौका हो। अस्तु: हे विद्वज्जन! मेहेकर तहसिल में एक देहात का रहनेवाला बंडुतात्या नामक ब्राह्मण था। यह ब्राह्मण सदाचार सम्पन्न - उदार मन का तथा उत्तम प्रापंचिक था। इस बंडुतात्या के यहां सदैव अतिथि आते रहते और गृहस्थ होने के कारण वह उनकी सरबराई सदैव दत्तचित होकर करता। यह क्रम के कारण उसका संचित धन समाप्त हो गया और उसे ऋण लेने की नौबत आ गई। साहूकार के यहां उसका घर-द्वार सभी गहने रखना पड़ा और अपार ऋण हो गया। घर के बरतन चिजवस्तु सब बिक गए तथा बेचने के लिए कुछ भी न बचा।

ऐसी विपत्ति आ पड़ी। साहूकार लोग नौकरों को भेजकर वसुली मांगते थे। कठिनाई यहां तक पहुंची कि मध्यान्ह का भोजन भी जुटाना कठिन हो गया। उसे कोई उधार नहीं देता था। ऐसी अवस्था आने पर वह आत्महत्या

के लिए तैयार हो गया, क्योंकि धन समाप्त होने पर प्रपंच का कोई मूल्य नहीं रह जाता। जो प्रपंच सुख का स्थान प्रतीत होता है, वही धन समाप्त होने पर दुख रूप हो जाता है। यह सामान्य न्याय है। बंडुतात्या सोचने लगा जीवन कैसे और कहां दिया जाए? अफिम खाकर मरने को भी पैसा नहीं। कुएं में गिरता हूं, तो कोई न कोई आकर निकाल लेगा। सो न तो जी जायेगा और न लाभ होगा। सब लोगों में अपकीर्ति होगी और आत्महत्या के अपराध में सरकार दंडित करेगी सो अलग। ऐसा विचार करके प्रपंच को अंतिम नमस्कार करके वह घर से चल पड़ा। हिमालय में जाकर आत्महत्या करने पर न तो अपकीर्ति होगी न आत्महत्या का दोष लगेगा। अपनी पहचान छुपाने के लिए उसने एक लंगोट पहनकर शरीर पर भभूति लगा ली। श्रोतागण संभावित को जननिंदा का भय सदैव रहता है। 'सम्भावितस्य चाकीर्ति मरणदतिविक्षयते' ऐसा गीता वचन है। अपने मन में वह सोचने लगा, हे चक्र धारण करने वाले भगवान विष्णु! मुझे पर ऐसी अवकृपा क्यों की? हे अधोक्षज। मेरा आप पर पूर्ण विश्वास है। आप भिक्षुक को राजा कर सकते हैं, ऐसा मैंने पुराणों में सुना है। हे नारायण! मुझे लगता है कि यह व्यर्थ ही आपका चरित्र रंगाया है, क्योंकि मुझे तो यह असत्य प्रतीति प्राप्त हुई। हे श्रीहरि! अब मैं जीवन देता हूं। किंतु इस हत्या का पाप अपने मत लेना। ऐसा मन में विचार कर टिकट लेने रेलवे स्टेशन पर गया। वहां उसे एक ब्राह्मण मिला उसने कहा, अभी हरद्वार का टिकट मत लो, पहले संत दर्शन कर लो फिर हरद्वार जाना।

बरार प्रांत में श्रीगजानन महासंत हैं, उनके दर्शन के लिए तुम जाओ। आज तक भूमि पर संतदर्शन कभी व्यर्थ नहीं हुआ। त्रस्त होकर जल्दबाजी मत करो। जब ब्राह्मण ने ऐसा कहा तो वह बंडुतात्या चौंधीया गया। सोचने लगा

कि अचानक यह कौन मनुष्य मिला है? क्या इसने मुझे बंडुतात्या करके पहचान लिया? इससे पूछा भी कैसे जाए? कुछ भी हो। शेगाँव जाकर महाराज की चरण वंदना करूंगा, ऐसा निश्चय कर वह शेगाँव पहुंचा। जब ब्राह्मण महाराज के दर्शन को गया तो हंसकर महाराज ने उसे पूछा, 'अरे बंडुतात्या! हिमालय में जाकर क्यों प्राण देते हो? अरे आत्महत्या कभी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि श्रुति कहती है 'अन्धन्तमः प्रविशांतियेके चात्महनोजनाः' अर्थात् आत्महत्या करनेवाले घोर नरक में पड़ते हैं। अरे, कभी हताश नहीं होना चाहिए। और इष्टसिद्ध के लिए कभी भी प्रयत्न नहीं छोड़ना चाहिए। अभी अगर प्रपंच से त्रस्त होकर आत्महत्या करेगा, तो फिर ये संचित भोगने के लिए तुझे पुनर्जन्म लेना ही पड़ेगा। भोग भोगने से ही नष्ट होते हैं। गंगाजी में प्राण देने के लिए हिमालय में मत जा। शीघ्र अपने घर को लौट जा। टिकट लेते समय तुझे मिलनेवाला ब्राह्मण कौन था? क्या उसे पहचाना? अब एक क्षण भर भी यहां मत ठहरो, शीघ्र घर लौट जा। तुम्हारे मल्ले में एक महिषासुर है। उसके पूर्व दिशा में बबूल के झाड़ के पास रात को दूसरे पहर भूमि खोदो। तुम अकेले यह सब करना। तीन फूट नीचे तुम्हें द्रव्य मिलेगा। उसे देकर ऋण मुक्त हो जाओ। स्त्री पुत्रादि का त्याग न करो। झूठा वैराग्य न धारण करो।' ऐसा सुनकर वह ब्राह्मण बड़ा आनंदित हुआ और शरीर की भभूति पोंछकर अपने देहात आया।

रात्री के समय महाराज के कथनानुसार मल्ले में महिषासुर के पूर्व में बबूल के नीचे खोदने लगा। हे श्रोतागण! तीन फूट खोदने पर उसे एक तांबे का हंडा जिसका मुंह बंद था, प्राप्त हुआ। उस ताम्रपात्र में चार सौ स्वर्ण मुहरें

थीं। जो लेकर 'जय जय सद्गुरु गजानन'करके वह नृत्य करने लगा। उस द्रव्य से उसने सारा ऋण चुकता कर दिया। मल्ला गिरवे पड़ा था वह छुड़ा लिया। गजानन महाराज की कृपा से प्रपंच की अवस्था फिर से ठीक हो गई।

दुख के दिन बीत गये। बाद में वह शेगाँव आयाऔर यहां बड़े प्रमाण में दानधर्म किया। गजानन महाराज के चरणों में अनन्य भाव से लीन हो गया। तब महाराज ने उसे कहा, 'अरे, मुझे क्यों वंदन करता है। जिसने धन दिया उसको वंदन करो। अब आगे से सम्हालकर रहो। सदैव खर्च करना चाहिए। सब लोग सुख की संगती होते हैं। दुख में केवल श्रीपति ही सहारा देते हैं अन्य कोई नहीं। अतः उनका विस्मरण कभी नहीं होना चाहिए। यह उपदेश सुनकर तात्या बड़ा प्रसन्न हुआ, महाराज को वंदन करके आनंदित होता हुआ अपने गांव लौट आया।

एक बार सोमवती अमावस्या का पर्व आया। सोमवार को अमावस्या आने पर उसे सोमवती कहते हैं और वह बड़ा पर्व माना जाता है। इस सोमवती अमावस के दिन नर्मदा स्नान करने का बड़ा महात्म है पुराणों में कहा गया है। इस दिन नर्मदास्नान अवश्य करना चाहिए। इसलिए शेगाँव के बहुत से भक्तगण नर्मदा स्नान के लिए उद्युत हुए। तदनुसार उन्होंने सब साधन सामग्री जुटाई। जिसमें बंकटलाल, मार्तंड पाटील, मारुती पाटील, चन्द्रभान पाटील, बजरंगलाल, इत्यादि इकट्ठे होकर ॐकारेश्वर जाने का निश्चय किया।

बंकटलाल ने कहा, 'हम लोग नर्मदा स्नान के लिए जा रहे हैं, सो महाराज को भी ले चलते हैं।' चारों मठ में आकर महाराज से प्रार्थना करने लगे, महाराज! हम लोगों के साथ नर्मदा स्नान को चलिये। आपके साथ रहने पर हम लोगों को कालका भी भय नहीं लगता। आप चलकर हमें ॐकारेश्वर के चरणों पर डालिये। यह अधिकार माता

को छोड़कर अन्य को नहीं। हमारी यही प्रार्थना कि आप हमें नर्मदा ले चलिये, आपके बिना हम यहां से नहीं हिलेंगे। माता ही बालकों का हठ पूर्ण करती है। तब महाराज ने कहा, 'अरे नर्मदा मेरे पास मठ में है। मठ में बैठकर नर्मदा स्नान करूंगा। तुम सब लोग जाओ।' वहीं पर प्राचीन काल में बलशाली मान्धाता राजा हो गया है। जिसकी कीर्ति दिगंत है। यहीं पर जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी ने जगउद्धार करने के लिए अपने गुरु पूज्यपाद गोविंदजी से संयास दीक्षा प्राप्त थी। तुम लोग जाकर मेरी नर्मदा से मिलो, किंतु हठ करके मुझे मत ले चलो। अब मेरे लिए पर्व का कोई प्रयोजन नहीं रहा।' यह सुनकर चारों ने महाराज के चरण पकड़ लिए, 'महाराज! कुछ भी हो वहां तक आप चलो, झट से स्नान करके हम लौट आर्येंगे।' महाराज ने कहा, 'ठीक है, तुम लोग बड़े दांभिक लगते हो। इस कुएं में नर्मदा है। यदि इसको छोड़कर हम नर्मदा स्नान को जाते हैं, तो स्वाभाविक यह क्रुद्ध होगी। इसलिए कहता हूं कि तुम लोग जाओ, मेरे लिए आग्रह न करो, इसी में तुम्हारा कल्याण है।' तब मारुती और चन्द्रभान कहने लगे, 'आपके बगैर हम लोग नहीं जायेंगे।' तब महाराज ने कहा, 'मेरे वहां जाने पर यदि कुछ विपरीत हुआ तो मुझे दोष न देना।' फिर भी उन्होंने आग्रह करके महाराज को साथ लेकर अँकारेश्वर पहुंचे। वहां पर पर्व के लिए स्त्री-पुरुषों की अपार भीड़ थी, कि चींटी को जाने की जगह नहीं थी।

नर्मदा के सब घाट खचाखच भरे थे। हर मंदिर जाने को अपार भीड़ थी। कुछ लोग स्नान को उतरे, कुछ संकल्प सुनने लगे। कुछ बिल्व पत्र लेकर दर्शनार्थ मंदिर जाने लगे। कुछ बर्फी-पेड़ा-मावा खाने लगे। जत्थे के जत्थे भजन में लगे थे। पर्व समाप्ति तक मंदिर में बड़ी भीड़ थी। किसी का शब्द किसी को न सुनाई देता था। अत्यंत

रमणीय ऐसे उस उँकारेश्वर में नर्मदा किनारे पद्मासन लगाकर महाराज बैठ गए। अभिषेक करनेवालों की बड़ी भीड़ थी। चारों दर्शन करके आए और महाराज से बोले, 'महाराज! अब हम लोग सड़क से जाने के विचार छोड़कर जलमार्ग से ही भेडाघाट चलेंगे, क्योंकि बड़ी भीड़ है। बैलगाड़ीयां भी रास्ते में बहुत हैं। आप थे इसलिए हम लोग पहले पहुंचे, अन्य गाडी के बैल बड़े उद्वण्ड थे। अतः गाडी में जाना निर्भय नहीं, इसलिए हम लोग नौका से ही शांतिपूर्वक स्थान जायेंगे। वह देखिये नौकायें चल रही हैं।' इस पर महाराज ने कहा, 'मुझे कुछ मत पूछो। मैं वचनबद्ध हूं। तुम जैसे जाओगे, मुझे जहां बिठाओगे, वहां बैठूंगा।' उनके ऐसा कहने पर सब लोग महाराज के साथ नाव पर बैठकर भेडाघाट स्थान की ओर नदी में जाने लगे। नदी में बीच में नौका एक चट्टान से टकरा गई, जिससे एक पटरी में छेद हो गया। उस छिद्र से नौका में पानी आने लगा। यह देखकर मल्लाह लोग नदी में छलांग लगा गये। किंतु महाराज निर्भयता से बैठे हुए 'गण गण गणांत बोले', ऐसा भजन अखंडतया करते रहे। मार्तंड पाटील, बजरंगलाल, मारुती पाटील बहुत घबरा गए, उनकी छाती उड़ने लगी। चारों समर्थ से बोले, 'हे दयालू! हम लोग अपराधी हैं। आपका कहना नहीं माना, इसलिए नर्मदा ही हमको डुबाने के लिए कालरूप हो गई। गुरुदेव, इससे आगे हम लोग आपकी वाणी वेदवत प्रमाण मानकर चलेंगे।

इस संकट से बचाकर हमें शेगाँव दिखाईये, इतनी बात करते हुए नौका एक फर्लांग चली गई और आधी डूब गई। किनारे के लोग नौका की अवस्था देखकर कहने लगे कि ये पांच व्यक्ति अवश्य डूबकर मर जायेंगे, क्योंकि

नर्मदा में अथांग पानी है। तब गजानन महाराज ने कहा, घबराओ मत, नर्मदा तुम्हारे जीवन को धक्का नहीं लगायेंगी। ऐसा कहकर महाराज ने नर्मदा का स्तवन किया और चारों जने हाथ जोड़कर बैठे रहे।’

श्लोक अनुष्टुप छंदः

‘नर्मदे मंगले देवी। रेवे अशुभनाशिनी।

क्षमस्वाअपराधं चैषां। दयां करु मनस्विनि॥’

ऐसी स्तुति कर रहे थे, इतने में नौका के अंदर का जल निकल गया और नौका जल के ऊपर आ गई। कारण उस नौका के साथ भिलनी के रूप में प्रत्यक्ष नर्मदा थी जिसके कटिप्रदेशतक के वस्त्र गीले हो गये थे। नौका किनारे लगने पर सबने आश्चर्य युक्त मुद्रा से उस स्त्री को तथा नौका के छिद्र को देखा। वह स्त्री थी इसलिए हम लोगों की प्राण रक्षा हुई, फिर उससे वो लोग पूछने लगे, ‘हे बाला! आप कौन हो? कहां की हो? यह बताइये। ये गीले वस्त्र उतारकर हम लोग नये वस्त्र देते हैं, उन्हें पहनिये।’ सुनकर नर्मदा ने कहा, मैं अँकार नामक मल्लाह की कन्या हूँ। मेरा नाम नर्मदा है। गीला वस्त्र पहनने की हमें आदत ही है। मैं सदैव गीली ही रहती हूँ। नीर ही मेरा स्वरूप है।’ ऐसा कहकर गजानन महाराज को नमस्कार करके वह क्षणभर में अदृश्य हो गई। जैसे घर की विद्युत क्षण में उसी में लीन हो जाती है। यह देखकर चारों जने बड़े आनंदित हुए और प्रत्यक्ष नर्मदा, महाराज के दर्शन को आई, जिससे

महाराज के अधिकार का पता चला। बंकटलाल खोंच कर पूछने लगा, महाराज! यह स्त्री कौन थी? हमें बताइये कुछ छुपाइये नहीं। तब महाराज ने कहा, 'तुम लोग जो पूछ रहे हो, वह सब स्वयं नर्मदा ने ही स्पष्ट किया है। ओमकार जो मल्लाह है वही ॐकारेश्वर है और यह जल मेरा ही रूप है यह नर्मदा ने स्वयं स्पष्ट किया है। इसमें शंका का कोई स्थान नहीं। यह अपने भक्तों को सदैव संकट काल में सहायता देती है। इसलिए एक बार इसके नाम का उच्च स्वर से जयजयकार करो। जय जय नर्मदे अंबे! हमारी सदैव इसी तरह रक्षा करो।' यह सुनकर बंकटलाल सहित चारोंजन बारबार महाराज की चरण वंदना करने लगे और शेगाँव में लौटकर आने पर सभी लोगों को यह कथा बताने लगे।

एक बार सदाशिव रंगनाथ वानवळे नाम के गृहस्थ एक व्यक्ति के साथ शेगाँव में महाराज के दर्शन को आये। इन सदाशिव का उपनाम 'तात्या' था। ये चित्रकूट निवासी माधवनाथ के छात्रगणों में से थे। माधवनाथ को सब योगाङ्ग अवगत थे। ये सिद्ध योगी थे। जिनका बड़ा शिष्यवर्ग मालवा प्रांत में है। जिस समय सदाशिव दर्शन को आये उस समय महाराज भोजन करने बैठे थे। सदाशिव को देखकर उन्हें माधवनाथ का संस्मरण हो आया, क्योंकि संतों को संत का परिचय होता है। वानवळे आये बराबर महाराज ने उच्च स्वर से कहा, 'अरे, नाथ के शिष्य को लाकर मेरे समुख बिठाओ इनके गुरु माधवनाथ हाल ही में भोजन करके गए। यदि ये थोडा पहले आते तो इनका सम्मिलन गुरु से मठ में हो जाता।

अब ये बाद में आये हैं इनके गुरु चले गए, किंतु वे पान का बीड़ा लेना भुल गए, अच्छा हुआ वह इनके शिष्य के साथ भेज देंगे।' ऐसा कहकर वानवळे का यथोचित सत्कार करके उसका बंधुका पुत्र जानकर बड़े प्रेम से आलिंगन दिया और जाते समय पान का बीड़ा देकर उनसे कहा, 'मेरा संदेश शब्दशः सीधे गुरु के पास जाकर कहना। माधवनाथ से कहना कि साथ भोजन हुआ बिडा तुम्हारा यहीं रहा। सो हमने आपको देने के लिए लाया है' यह सुनकर वानवळे दो पान के बीड़े लेकर वापस आया। माधवनाथ से जाकर सारा इत्थंभूत वृत्तांत कहां और पूछा महाराज, आप उस दिन क्यों शेगाँव आये थे? सो सुनकर उन्होंने उत्तर दिया कि भोजन समय में संस्मरण किया वही हमारी भेंट है। हम दोनों के शरीर भिन्न होने पर भी आत्मा दोनों का एक हैं। इस प्रकार की भेंट हम दोनों की सदैव होती रहती है। यह अत्यंत गूढ और गहन ज्ञान है। इसे अधिकार के बिना तुम लोग नहीं जान सकते। ठीक हुआ की जो बीड़ा शेगाँव रह गया था, उसे तुम लोग ले आये। वानवळे ने दोनों बीड़े दिये जो महाराज खलबत्ते में कूटकर चबाये और उसको थोड़ा प्रसाद दिया। श्री ज्ञानेश्वर महाराज ने अपने ग्रंथ चांगदेव पासष्टि में संतों का मिलाप कैसे होता है, इसका अच्छा वर्णन किया है। यहां तर्क का अवलंबन न करके पासष्टि का अध्ययन करो, जिससे स्वानुभूति के लक्षण पता चलेंगे। योगीगण बैठे स्थान में एकमेक से मिलते हैं, यह उनका कौतुक है। शेखमंहमद श्रीगोंदा में और तुकाराम देहू में, बैठकर बुझाई। ऐसा महीपति ने अपने भक्तिविजय ग्रंथ में लिख रखा है।

उसी प्रकार माणिक प्रभु ने हळी नामक देहात में कुएं में डूबा हुआ एक पाटील का पुत्र हाथ देकर डूबने से बचाया। सच्चा योगी हुए बिना ये सब असंभव है। यह दाम्भिक को नहीं सधता उन्होंने केवल गप्पा ही मारना। अगर राष्ट्र का उद्धार करना है तो योग का अवलम्बन करना चाहिए। क्योंकि सब मार्गों में वही वलवत्तर है, जैसे भगवद्गीता में भगवान ने छठे अध्याय में कहा है।

‘तपस्विभ्योऽपि मतोऽधिकः।

कर्मिभ्याश्वधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन॥ (६-४६)

अर्थात् तपस्वी, ज्ञानी और कर्मयोगी से भी श्रेष्ठ है अतः हे अर्जुन! तुम योगी बनो। यह दासगणू विरचित श्री गजाननविजय नामक ग्रंथ निष्ठा रखकर प्रेमी भक्त श्रवण करें॥

॥शुभं भवतु श्री हरिहरार्पणमस्तु॥

॥ इति श्री गजानन विजय ग्रंथस्य चतुर्दशोऽध्यायः समाप्तः॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय-१५ ॥

श्री गणेशाय नमः हे बटुरूपधारी-नारायण! आप बहुरूपीये हो - आपने काश्यप पुत्र-वामन होकर बलीसे दान लेकर उसको कृतार्थ किया। यद्यपि आपने मृत्युलोक का राज्य दान रूप में उससे लिया। किंतु इससे श्रेष्ठ सम्पन्न पाताल लोक का राज्य उसे दिया। उस पुण्यशाली बली से आंवला लेकर उसे नारियल दिया, इतना ही नहीं उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर आपने उसका द्वारपाल होना स्वीकार किया। आपका वरदान है कि इस मन्वन्तर के बाद बली ही देवराज इन्द्र बनेगा। हे अनंत! एक घटी में चारों वेद संहिताओं का पाठ आपने किया, जिससे आपकी अगाध बुद्धिमता स्पष्ट होती है। हे श्री हरी! आपके सब अवतारों में यही एक शुचिर्भूत अवतार है, जिसमें आपने किसी का वध नहीं किया। इतना ही नहीं देवता तथा दानव दोनों के घर में दीप जलाकर अपने शत्रुमित्रत्व समभाव की रक्षा की। इतने पर भी आपका आधिपत्य स्थापित किया। दोनों का अर्थात् देवता और दानवों को आप समान भाव से वंदनीय हो गया। हे वामन भगवान, आपको मैं बार-बार प्रणाम करता हूं। इस दासगणू के सिर पर अपना वरदहस्त रखिये।

महाराष्ट्र के लिए जो कोहिनूर रत्न के समान दैदिप्यमान, दीर्घदृष्टी के मानो समुद्र, राजकारण धुरंधर, बाल गंगाधर तिलक सबके जाने, पहचाने और विख्यात हैं। वे भीष्मपितामह के समान सत्यप्रतिज्ञ जिनका बड़ा धैर्य और स्वातंत्र्य प्राप्ति के लिए किए हुए अथक प्रयत्नों का मुझसे वर्णन नहीं किया जाता।

वे सति के जैसे दृढ निश्चय और किसी की परवाह न करनेवाले बृहस्पति के समान वाक्चतुर थे। उनकी लेखनी से आंग्ल शासक घबरा गए थे। लोकमान्य यह उपाधि उनकी कर्मजन्य थी, किसी ने उनको दी नहीं थी। ऐसे लोकमान्य तिलक एक बार अकोला में शिवजयंति के उत्सव के समय लोकाग्राह के कारण व्याख्यान देने को पधारे। उस समय उत्सव की तैयारी अकोला में बड़ी जोर-शोर से की गई और बड़े बड़े विद्वान चैंधिया गये। उनमें दाम ले, कोल्हटकर, दादा साहेब खापर्डे तिलक भूषित करनेवाले थे। जिससे सब बराड आनंदित होकर उमड़ पड़ा था। वस्तुतः शिवजयंती इसे पहले ही यहां होनी चाहिए थे। क्योंकि शिवजी की जन्मदात्री माता जिजाबाई इस बराड प्रांत के सिंदखेडकी थी। इस सती ने शिवाजी जैसे वीर पुरुष को जन्म देकर बराड और महाराष्ट्र को एकसंघ करने का महंतकार्य किया। माता बराडकी और पिता शहाजी महाराष्ट्र के सब दम्पतियों में ये पति-पत्नी अनुपम थे। पहले ही वो महाराष्ट्र का हृदय, फिर उस पर सभा का अध्यक्ष, ऐसे बाल गंगाधर तिलक आनेवाले थे, इसलिए एक माह से तैयारियां की जा रही थी। अध्यक्ष, अपाध्यक्ष का चयन हो गया। स्वयंसेवक सभा के लिए चुन लिए गए। तब कई लोगों ने ऐसा कहा कि सभा में संत गजानन महाराज को लाया जाए। शेगाँव के संत श्री गजानन महाराज को इस उत्सव के लिए लाना घी में शक्कर डालने जैसा योग होगा।

क्योंकि शिवाजी को स्वामी समर्थ का आशीर्वाद था। इसलिए वे स्वराज्य की स्थापना कर सके। सो विद्वाज्जनों तिलक शिवाजी सदृश ही प्रयत्न में हैं। अतः गजानन महाराज का आशीर्वाद कार्य सफलता के लिए आवश्यक है। यह सूचना कईयों को जंची और कईयों को नहीं जंची। जिनको पसंद नहीं पडी वे इस प्रकार बोले, 'अरे! वह शेगाँव का अवलिया (नंगा अवधूत) यहां किस लिए लाते हो? वह कुछ विचित्र परिस्थिति पैदा कर सकते हैं। वे नग्न 'गिणगिण गणात बोते' गाते हुए सभा में घुसेंगे और हो सकता है कि वे तिलकजी को भी मारे।' किंतु कुछ लोगों का कहना था

कि नहीं गजानन महाराज के चरण इस सभा में पड़ने ही चाहिए/उनका जो पागलपन है वह केवल पागलों को ही दिखता है। विद्वज्जन उन्हें पागल नहीं मानते। तिलक यदि वास्तव में राष्ट्रोद्धारक है तो महाराज अवश्य सभा में आयेंगे। सत्यसासत्य की परीक्षा केवल साधू ही कर सकते हैं। ऐसा विवाद होने पर कुछ लोग महाराज को निमंत्रण देने शेगाँव आये। उनमें दादा खापर्डे भी थे। उनको देखते ही महाराज बोले, 'हम तुम्हारी सभा में अवश्य आयेंगे। इस शिवजयंत्युत्सव की सभा में हम कोई अशिष्टाचार नहीं करेंगे, क्योंकि उसमें सुधारकों का मनोभंग होगा। हम शांत चित्तसे सभामें बैठेंगे।' दूसरा कारण यह है कि राष्ट्रोद्धार कार्य के लिए बाल गंगाधर तिलक योग्य पुरुष हैं। उसके जैसा पुरुष भविष्य में होना असंभव है। तिलक का स्नेही अण्णा पटवर्धन है, जो आलंदी के नरसिंह सरस्वती के शिष्य हैं। सो इन दोनों पुरुषों को देखने हम अवश्य अकोला आयेंगे।' यह सुनकर दादा खापर्डे को महान आनंद हुआ। उन्होंने अपने साथ आये कोल्हटकर से कहा देखो।

वस्तुतः ये बराड प्रांत का ज्ञान हीरा है। अकोला में जो वृत्तांत हुआ व इन्होंने जानकर हमारे बताने के पूर्व ही सबकुछ कह दिया। इससे संतों का ज्ञान कितना अगाध होता है यह सिद्ध होता है। हमारे निमंत्रण के पहले ही स्वयं हम आयेंगे ऐसा कह दिया। इस उत्सव को बड़ा अच्छा मुहूर्त मिला है। चलिये संत चरणों की वंदना करके हम लोग अकोला चले। ऐसा कहकर महाराज की चरण वंदना करके खापर्डे तथा कोल्हटकर अकोला चले गए। उत्सव आठ दिन पर आ गया। सब लोग तिलक के दर्शन को उत्सुक थे। यह सभा वैशाख महीने में शके अठराहसो तीस को आयोजित की गई थी। सभा के लिए अकोला में सभा मंडप बनाया गया था। वस्तुतः उस रोज अक्षयतृतीया थी। जो बराड में बड़ा पर्व माना जाता है। फिर भी वह अंतिम समापन दिन होने के कारण प्रचंड जन समुदाय सभा में लोकमान्य तिलक को देखने के लिए उपस्थित था। साथ उसी दिन गजानन महाराज सभा में आनेवाले थे। मंडप मनुष्यों में

खचाखच भर गया। सब लोग बार-बार देख रहे थे और कह रहे थे, 'अरे अभी तक महाराज नहीं आये।' किंतु सभा भरने के पहले ही महाराज मंडप में आकर बैठ गए, क्योंकि साधु कभी अपनी वाणी असत्य नहीं होने देते। जीवनमुक्त कैवल्यदानी साधु ऊपर गद्दी पर तकीया लगाकर बैठे थे। सिंहासन में अग्र भाग में तिलक जी की जगह थी। उसके पास में अण्णासाहब पटवर्धन बैठे थे। तिलकजी के एक तरफ श्रीकृष्ण के पुत्र - खापर्डे कुलभूषण, गणेश जिनका नाम था - वो बैठे थे। दामले, कोल्हटकर, भावे, व्यंकटराव देसाई आदि सभा के नेतागण प्रकाश बिखेर रहे थे और भी कई विद्वान व्याख्याता सभा में बैठे थे, जिनका वर्णन मैं अपने एक मुंह से कैसे कर सकता हूं?

सभा का प्रारंभ हुआ। प्रथम सभा का प्रयोजन बताया गया। बाद में व्याख्यान सिंह तिलक जी बोलने के लिए खड़े हुए। श्रोतागण! आज का दिन बड़ा धन्य है, क्योंकि जिन्होंने स्वातंत्र्य प्राप्ति के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया ऐसे महान् योद्धा श्री शिवाजी का आज जन्मदिन है। शिवाजी को स्वामी रामदास ने आशीर्वाद दिया, जिससे उनकी सम्पूर्ण भरतखंड में कीर्ति पता का फराई। वैसा ही प्रसंग आज भी प्राप्त हुआ है, क्योंकि श्रेष्ठ साधु श्री गजानन महाराज इस सभा को आशीर्वाद देने उपस्थित हैं। इसलिए शिवाजी के उद्यम के समान ही हमारी सभा का उद्यम निश्चित सफल होगा। इस समय इस प्रकार की सभा की राष्ट्र को आवश्यकता है। भारत का स्वातंत्र्य नहीं, वहां का समाज प्रेतवत होता है। अतः इस सभा का प्रयोजन राष्ट्रप्रेम बढ़ाने का ही है। राष्ट्र प्रेम की शिक्षा की आवश्यकता है। क्या विदेशी शासन आनेवाली पीढ़ी को राष्ट्रप्रेम की शिक्षा दे सकती है? तिलक जी के ऐसा कहने पर महाराज आसन पर उठ बैठ और गरजकर बोले, 'नहीं-नहीं कदापि नहीं।' अपने व्याख्यान अभिनिवेश में तिलक जी ने शासन को चुभनेवाली बातें बोली। उस भाषण का संकेत महाराज समझ गये और हंसते हंसते बोले, 'अरे! ऐसे वक्तव्य से ही दंडनिग्रह होता है।' ऐसा कहकर 'गण गणांत' भजन करने लगे। सभा निर्विघ्न समाप्त हुई। तिलक

जी की बड़ी प्रशंसा हुई। और उसी वर्ष महाराज की भविष्यवाणी सत्य हुई। तिलक जी को शासन ने एक सौ चैंविस कलम लगाकर दंड में रस्सियां लगाई और उन्हें सजा दी गई।

राजसत्ता के आगे किसी का कुछ नहीं चलता। बड़े बड़े वकील तिलक जी के लिए प्रयत्न करने लगे। कुछ लोग दैविक उपायों का भी आश्रय लेने लगे, क्योंकि तिलक जी सभी के प्रिय स्नेही थे। दादासाहब खापर्डे जो उस समय धुरंधर विधिज्ञ माने जाते थे, वे तिलक जी का अभियान लड़ने के लिए अमरावती से बम्बई जा रहे थे। उन्होंने अकोला रेलवे स्थान पर भी कोल्हटकर जी से कहा, कि आप सीधे शेगाँव जाकर महाराज से तिलक जी के लिए प्रार्थना कीजिये, कि उनका संकट दूर करें। मैं स्वयं महाराज के पास जाता किंतु मेरा बम्बई जाना अनिवार्य है। अतः मेरी ओर से आप चले जाइये। यह सुनकर कोल्हटकर तुरंत गाडी में बैठकर महाराज के पास आए, क्योंकि उनकी तिलक जी पर बड़ी श्रद्धा थी। शेगाँव आने पर वो महाराज के पास सीधे मठ पहुंचे। उस समय गजानन महाराज अपने आसन पर सो रहे थे, तीन दिन तक थोड़ा भी उठे नहीं। तब तक कोल्हटकर भी मठ से हिले नहीं, क्योंकि तिलक जी की विवेचना के प्रति उनका बड़ा निश्चय था। मराठी में एक कहावत है कि 'अग्नि के बिना आंच नहीं, ममता बीना आंस नहीं'। चौथे दिन महाराज उठे और कोल्हटकर जी से कहा, 'आप लोग चाहे जितना यत्न कीजिये उसका फल नहीं प्राप्त होगा। छत्रपति शिवाजी के समय रामदास जी का छत्र होते हुए भी शिवाजी को औरंगजेब ने कैद किया था। सज्जन त्रस्त हुये बिना राजक्रांति नहीं होती। कंस का इतिहास स्मरण करो तो पता चलेगा। यह रोटी मैं देता हूं, वह तिलक को खाने के लिए दीजिये, इसे अंतर न करना। इस रोटी के बल से वह यह कार्य करेगा।

यद्यपि उनको बहुत दूर जाना है, किंतु इलाज नहीं।' ऐसा उत्तर सुनकर कोल्हटकर शंकित हो गए। महाराज को नमस्कार करके रोटी हाथ में लेकर बम्बई ले जाकर तिलक जी को खिलाई और अथसे इतितक सब वृत्तांत भी सुनाया। यह सुनकर तिलक जी ने लोगों से घबराते हुए कहा कि स्वामीजी का ज्ञान अगाध है। आप लोगों के प्रयत्न को यश मिलना कठिन है। क्योंकि अपनी बाजू सम्हालने के लिए क्या शासन न्याय देगा? जहां स्वार्थ का सम्बन्ध होता है, वहां न्याय नहीं होता। जहां स्वार्थ का सम्बन्ध नहीं होता, वहां न्याय का स्मरण होता है। यह संसार का नियम है। मेरे हाथ से एक महान् कार्य होनेवाला है। ऐसा समर्थ वचन गूढ़ ही है। किंतु भूत-भविष्य, वर्तमान साधुजनों को ज्ञात होता है। अतः आगे क्या होता है, सो देखेंगे। तिलक जी को जो रोटी महाराज ने दी थी, यद्यपि उनके दांत नहीं थे, फिर भी उसका चुरा करके तिलक जी ने खाई। क्योंकि वह महाराज का प्रसाद था। बाद में तिलक जी को सजा दी गई और मंडाला भेजा गया। वहां सजाकाल में उन्होंने 'गीतारहस्य' जैसा महान् ग्रंथ लिखा। यह उनकी महान् कृत्ती थी। इस गीता ग्रंथ पर अपार टिकाएं हैं, जिनका मैं वर्णन नहीं कर सकता। इतनी बुद्धि मुझमें नहीं है। विद्वजनों, जगउद्धार करने के लिए आचार्यों ने अपने समय कालानुसार गीतार्थ का मंथन किया है। किसी ने अद्वैत पर, किसी ने द्वैत पर और किसी ने कर्म पर अर्थ लगाया है। तिलक जी ने उसका अर्थ कर्म पर ही लगाया है, जिसकी तुलना और किसी से नहीं हो सकती।

यह 'कर्मयोग' गीता रहस्य ही बालगंगाधर तिलक जी का यश सारे विश्व में फैलायेगा। अगर स्वातंत्र्य भी मिलता तो भी इतनी कीर्ति नहीं होती। स्वातंत्र्य यह लौकिक व्यवहार है। गीताशास्त्र समाज की अवस्था स्थिर कर मोक्ष की ओर ले जाती है। इसलिए तिलक जी यावच्चंद्रदिवाकरः कीर्तिरूप से रहेंगे।

कोल्हापूर में चित्तपावन ब्राह्मण जाति का श्रीधर गोविंद काळे नाम का एक गरीब ब्राह्मण रहता था। उसने अंग्रेजी शाला में आंग्ल विद्या प्राप्त करते हुए मैट्रिक पास किया। बाद में महाविद्यालय में पढ़ने लगा, लेकिन परीक्षा में वह अनुतिर्ण हो गया। वह समाचार पत्र आदि पढ़ता था। एक बार 'केसरी' समाचार पत्र में 'ओयामा टोगो' का चरित्र पढ़ा। जिससे उसके मन में विचार आया कि इंग्लैण्ड जाकर मैं यंत्र विद्या क्यों न सीख लूं? मेरा जीवन अकारण भूमि पर भार स्वरूप है। टोगो और यामा दोनों ने यंत्रविद्या का ज्ञान संपादन करके अपने मातृभूमि जापान का नाम उज्ज्वल किया। वैसे ही मैं भी तंत्रज्ञान साधन कर मातृभूमि का उद्धार कर सकता हूं। ऐसा विचार तो आया, किंतु द्रव्य अभाव के कारण उसका कोई इलाज नहीं था। यह घर का अत्यंत गरीब था। द्रव्य साहाय्य कोई करता नहीं था। सो भंडारा में अपने एक मित्र से मिलने के लिए गया। उसका यह मित्र भंडारा में मंत्रों विद्यालय में शिक्षक था। उसको अपना मनोगत बताया तो उसने भी यही कहा कि, 'मित्र! द्रव्य की व्यवस्था के बिना दरिद्र कि मनोकामना मन में ही विलीन हो जाती है। 'उत्पद्यन्ते विलीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः'। चलो हम करवीर कोल्हापूर जायें, क्योंकि यहां ग्रीष्म ताप अत्याधिक है।'

दोनों गाड़ी में बैठ और समर्थ गजानन महाराज की कीर्ति सुनकर उनके दर्शन के लिए शेगाँव उतर पड़े। पोष्ट मास्तर के यहां सामान रखकर जल्दी से महाराज के दर्शन को गये, क्योंकि उनको दर्शन की अत्यधिक उत्सुकता थी। दोनों मठ में आये समर्थ को साष्टांडंग प्रणाम किया और स्वामी के सामने हाथ जोड़कर बैठ गए। श्रीधर का मनोभाव स्वामी ने समझ लिया और बोले 'अरे पागल! परदेस गमन का विचार छोड़ दे। यहां सबकुछ है भौतिक

शास्त्रों में कोई अर्थ नहीं। अध्यात्म विद्या में रस ले, जिससे तू कृतार्थ हो जायेगा।' इससे श्रीधर के मन से विचार क्रांति हुई और उस समय उसको कोल्हापूर के एक व्यक्ति का स्मरण हो आया। कोहार गल्ली के एक व्यक्ति का कहना इसी प्रकार का था। वैसे ही गुरुमूर्ति बोलते हैं, इस बात का स्पष्टीकरण मेरे मन में नहीं होता। ऐसा विचार करते ही महाराज फिर जोर से बोले, 'भारत छोड़कर कहीं मत जा। अगणित पुण्य के फलस्वरूप भारत में जन्म होता है। ये भौतिक शास्त्रों से योगशास्त्र अधिक समर्थ है। जिसका योगशास्त्र का अभ्यास है, वह भी भौतिक शास्त्र को कभी नहीं मानता और योगशास्त्र से अध्यात्मक विचार श्रेष्ठ है। अगर वह समझ में आता है, तो करके देख।' समर्थ के ऐसा बोलने पर श्रीधर के मन में बड़ा आनंद हुआ। पश्चिम का विचार सूर्य अस्त होकर वह श्रीधर को सुखी करने पूर्व में उदित हुआ। संत ही सत्य जानते हैं और पश्चिम का विचार सूर्य अस्त होकर वह श्रीधर को सुखी करने पूर्व में उदित हुआ। संत ही सत्य जानते हैं और विचार का परिवर्तन संतों के बिना दूसरा कोई नहीं करस कता और इस समय महाराज ने कहा, 'तेरा अभ्युदय हो गया। जा तेरी पत्नी कोल्हापूर में बांट देख रही है। अब मित्र के साथ कोल्हापूर जा।'

महाराज की यह वाणी सत्य हुई, श्रीधर आगे बड़े सम्पन्न हो गए, उन्नत हो गए। वो बी.ए., एम.ए. होकर शिवपुरी में पदपर महाविद्यालय प्राचार्य के नियुक्त किए गए। यहां शिंदे का राज्य था। संत चलते फिरते ईश्वर का स्वरूप ही होते हैं। उनकी कृपा का आश्रय जिसको मिलता है वह श्रेष्ठ होता है। श्रीधर को दर्शन का योग आया। जिससे उसकी वृत्ती में फरक पड गया और वह सत्यशोध कर सका। यह संतों की उपज केवल इस भारत भूमि में

ही है, क्योंकि नन्दनवन के वृक्ष अन्यत्र नहीं लगते। यह दासगुण द्वारा विरचित ग्रंथ भावुकों को सदा सन्मार्ग दिखाये यही प्रार्थना है।

॥शुभं भवतु!! श्री हरिहरार्पणमस्तु॥

॥इति श्री गजानन विजयग्रंथस्य पंचदशोऽध्यायः समाप्त॥

## ॥ अध्याय - १६ ॥

श्री गणेशाय नमः! हे परशुधर जमदग्नि कुमार परशुराम! आपकी जय हो! अब उपेक्षा न कीजिये। ब्राह्मण का अपमान आपसे सहन न हुआ और तदर्थ आपने सहस्रार्जुन को दंडित किया। ब्राह्मणों का संरक्षण किया। अब इस समय ब्राह्मणों के विषय में आपको कैसे नींद लग गई? उनकी तरफ से क्यों आंख मूंद रहे हैं। आप आंखें न मूंदिये। ऐसे निश्चिंत न बैठिये। वर्तमान समय बड़ा कठिन है। सारे प्रयत्न आपकी कृपा के बिना असफल है। आर्य संस्कृति की रक्ष आपकी कृपा के बिना असंभव है। गजानन महाराज की माया बड़ी अलौकिक है। मुंडगाँवमें पुंडलीक नाम एक गजानन महाराज का भक्त रहता था। उसकी महाराज पर अटूट श्रद्धा थी। वह शेगाँवनियमित रूप से आया करता तथा सदैव महाराज का चिंतन करता रहता था। उसी गाँवकी एक भागाबाई नाम की ठकुराईन थी। उसकी निष्ठा कहीं पर न टिकती थी। बड़ी दांभिक थी। दंभका आडंबर भराकर स्त्री-पुरुष को ठगना ही उसका धंधा था। वह एक बार पुंडलीक से बोली, 'अरे तेरा जन्म व्यर्थ चला गया, क्योंकि तूने सद्गुरु की शरण नहीं ली। गजानन के दर्शन को तू नियमित जाता है। उन्हें सद्गुरु मानता है। क्या उन्होंने कभी तुम्हारे कान में मंत्र दीक्षा दी? अरे विधि के बिना कभी गुरु नहीं होता है? शेगाँवका गजानन तो पागल है। तेरा ज्वर ठीक हो गया, इसलिए तू उसे मानता है। यह तू काकतालीय ' न्याय की बली मत चढ (झाड की शाखा पर बैठना और उसी शाखा का टूटना इसी को काकतालीय न्याय कहते हैं। वस्तुतः शाखा के टूटने का तथा काक के बैठने का कोई कार्य कारण सम्बन्ध नहीं होता) 'गिण गिण गणात बोते' यह जो भजन वो करते हैं वह पिशाचवत आचरण है। वह किसी का भी भोजन कर लेता है, ऐसा भ्रष्ट है। इसलिए तुम्हें कहती हूँ कि अंजनगाँव चलो, वहाँ के जाजी के शिष्य को हम दोनों गुरु करेंगे। कल प्रातः अंजनगाँव हम लोग जायेंगे, क्योंकि कल वहाँ उनका कीर्तन है, वह सुनेंगे। गुरु महाज्ञानी होना चाहिए। चतुर और शास्त्र पारङ्गत होना चाहिए। परम गुण सम्पन्न तथा भक्तिमार्ग का दर्शन करानेवाला चाहिए।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

इनमें से एक भी लक्षण तुम्हारे गजानन में नहीं है, इसलिए देर मत कर अंजनगाँव चला।’ यह पुंडलीक भोकरे बड़ा भाविक मन का था। भागाबाई के वक्तव्य से उसका मन किंचित विचलित हो गया। उसने विचार किया कि कल प्रातः अंजनगाँव कीर्तन सुनने जायेंगे, अगला विचार आगे देखेंगे। ऐसा विचार करके उसने भागी से कहा, ‘चलो मैं अंजनगाँव तुम्हारे संग आता हूँ। इस प्रकार दोनों का विचार हो गया। पुंडलीक रात को घोर निद्रा में सोया था। तीन पहर रात के समय समर्थ के समान एक दिगंबर पुरुष खड़ा हुआ और बोला, ‘अरे पुंडलीक, तू उस भागी के साथ गुरु करने अंजनगाँव जानेवाला है क्या? कोई बात नहीं, जाना है तो शीघ्र जाओ। उसका नाम काशीनाथ है। पागल! वहाँ पहुंचने पर तुम्हारा भ्रम दूर हो जाएगा। अरे बहुत लोग परस्पर कान में लगकर बात करते हैं तो क्या वो एकमेक के गुरु हो जाते हैं? दंभाचार में नहीं पडना चाहिए। तू इधर कान कर, तुझे मैं मंत्र देता हूँ।

‘गण गण’ ऐसा बोलकर महाराज स्तब्ध हो गये। तेरी और कुछ इच्छा है तो वह भी मैं पूर्ण करूँगा।’ यह सुनकर पुंडलीक बड़ा आनन्दित हुआ। स्वप्न में सूक्ष्म निरीक्षण करने लगा तो जाना कि वे साक्षात् शेगाँवके गजानन स्वामी हैं। तब उसने कहा, ‘गुरुदेव! ये आपकी पादुकायें मुझे नित्य पूजन के लिए दीजिये, उसके अतिरिक्त मेरी और कोई मनोकामना नहीं है।’ यह सुनकर महाराज ने कहा, ‘तथास्तु, वह तुम्हें दीया। तुम उन्हें लेलो और कल दोपहर के समय उनका पूजन करना।’ सो पादुका लेने के लिए पुंडलीक जैसे ही उठा तो श्रोतागण! उनकी नींद झट खुल गई। उठकर चारों ओर देखा तो कोई नहीं दिखाई पडा और पादुकाओं भी पता नहीं। वह बड़ा असमंजस में पडा। अपनी शंका का समाधान उससे नहीं हो रहा था। मन में विचार किया कि महाराज की वाणी कभी व्यर्थ नहीं होती।

मुझे साक्षात् दर्शन देकर भागी ठकुराईन कैसी है वह भी बताया। दूसरे प्रहर पादुकाओं की पूजा कर ऐसा भी कहा। इसका अर्थ क्या? क्या नई पादुकाएं बनाकर उनके पूजन का संकेत दिया। यह कुछ समझ नहीं पड़ता? मैंने चरणों की पादुकाएं मांगी वह उन्होंने दी फिर मैं नई क्यों बनवाऊं? इस प्रकार के अनेक तर्क पुंडलीक कर रहा था। उसी समय उसके घर ठकुराईन भागाबाई उसे बुलाने आई और कहने लगी, 'पुंडलिक अब अरुणोदय हो गया है। रास्ता दिखाई पडने लगा है सो मोक्षगुरु करने अंजनगाँव चलो।' इस पर पुंडलीक ने कहा, 'भागाबाई! मैं अंजनगाँव नहीं आता, तुम्हारी मर्जी हो तो तुम जाओ। मैंने जो एक बार गुरु कर लिया, श्री गजानन महाराज, वह मैं नहीं छोड़ूंगा ऐसा मेरा निश्चय है।' यह सुनकर भागाबाई अंजनगाँव गई। अब मुंडगाँवमें क्या हुआ वो आप लोग सुने।

इयामसिंग राजपूज स्वामी का दर्शन करने शेगाँव आया था। वह दो दिन पहले आया था। जब वो मुंडगाँवजाने को उदत हुआ तब महाराज ने बालाभाऊ से कहा, 'ये पादुकायें इसके पास पुंडलीक को देने को दे दो।' समर्थ की आज्ञानुसार बालाभाऊ ने वैसाही किया। बालाभाऊ ने इयामसिंग से कहा, 'तुम्हारे गाँवमें जो पुंडलीक भोंकरे हैं, उसे ये पूजन करने के लिए दो।' यह सुनकर इयामसिंग पादुका लेकर मुंडगाँवआया तो पुंडलीक उसे गाँवकी सरहद पर मिल गया और पुंडलीक ने महाराज को कुशल वृत्तांत उससे पूछा और कहा कि 'महाराज ने क्या मेरे लिए कुछ प्रसाद भेजा है?' यह सुनकर इयामसिंग को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह बार बार खोद खोदकर पुंडलीक से पूछने लगा। तब पुंडलीक ने उसे स्वप्न का सारा वृत्तांत बताया। यह सुनकर इयामसिंग की भ्रांति दूर हो गई और उसने तुरंत पादुकायें निकालकर पुंडलीक के हाथ में दी। आज भी वे पादुकाएं मुंडगाँवमें पुंडलीक के घर में हैं। पुंडलीक

ने उन प्रसादी पादुकाओं को दूसरे प्रहर पूजन किया। श्रोतागण! इस प्रकार संतजन अपने भक्तों का प्रतिपालन करते हैं। उन्हें वाममार्ग में जाने से बचाते हैं। इस कथा से समर्थ अपने भक्तों के मनोरथ कैसे पूर्ण करते हैं, यह सिद्ध होता है।

अकोला में वाजसनेयी शाखा का राजाराम कंवर नामक ब्राह्मण था। वह सोना-चांदी तथा किराना माल का धंधा करता था। मध्यम श्रेणी का साहूकार था। यह राजाराम, महाराज का भक्त था। इसलिए इसके पुत्र भी महाराज के भक्त थे। इसके दो पुत्र थे। गोपाल और त्र्यंबक, जो लव-कुश के समान थे। छोटा पुत्र जो था उसे व्यावहारिक भाऊ नाम से पुकारते थे, वह डाक्टरी पढने के लिए हैदराबाद गया।

बाल्यकाल से ही त्र्यंबक को देवध्यान था और कोई भी संकट पडने पर वह समर्थ का स्मरण करता था। वह भागानगरी में मुसा नदी के किनारे बैठकर महाराज का ध्यान करता। इस प्रकार भाऊ बचपन से ही समर्थ गजानन का भक्त था। एक बार विद्यालय के अवकाश में वह घर आया तो उसे महाराज को भोजन कराने की इच्छा हुई। उनको प्रिय पदार्थ बनाकर ले जाने का विचार आया किंतु यह सब कैसे होगा? मन में वह बोला, 'गुरुदेव अब मैं क्या करूं? मेरी माता मर गई है। बचपन से ही मेरे घर पर और कोई नहीं है। नानी नामक मेरी भौजाई है, किंतु वह बड़ी क्रोधी है। मेरी ऐसी मनोकामना है कि आपके सब प्रिय पदार्थ बनाकर आपको भोजन कराऊं। जवार की रोटी, अंबाडी की भाजी, प्याज तथा गरम बेसन, हरी मिर्च इत्यादि। किंतु मेरे भौजाई का स्वभाव जानकर भला ये सब पदार्थ बनाने में कैसे कहूं? क्योंकि बालक का हठस्थान केवल माता ही होती है अन्य नहीं। ऐसा सोचते हुए

भाऊ शांतिचित्त एकांत में बैठा था, सो किसी काम के लिए उसकी भौजाई, नानी वहां आई। उसको देखकर वह अपने देवर से बोली, 'देवरजी! आपका मुंह क्यों उतर गया है? काहे की चिंता कर रहे हो?' यह सुनकर भाऊ दीनता से बोला, 'भौजी, तुम्हें क्या बताऊं जो मेरे मन में विचार है? पूर्ण अधिकार रहे बिना मनोरथ पूर्ण नहीं होते। फिर तुम पर तो मेरी पूर्ण सत्ता नहीं अतः तुम्हें बताकर क्या फायदा? सुनकर नानी ने कहा, 'अरे तुम मेरे छोटे देवर हो।' बड़ी भौजाई माता के समान होती है, सो कोई परदा न रखकर तुम्हें चिंता है सो बताओ।' यह सुनकर भाऊ हंसा और अपनी भौजाई नानी से बोला, 'नानी! आज मुझे ऐसा लगता है कि गजानन महाराज के प्रिय पदार्थ बनाकर शेगाँव ले जाऊं और उन्हें भोजन कराऊं। अगर आप करोगी तो आपको भी इसका पुण्य लगेगा और मेरा काम भी होगा।' यह सुनकर नानी हंसकर बोली, 'बस, इतनी सी बात के लिए तुम कुम्हलाकर चिंतित थे? बताओ, क्या क्या बनाना है? गजानन महाराज की कृपा से अपने घर में किसी भी चीज की कमी नहीं हैं।' सुनकर भाऊ ने सब बताया और वह नानी भी बड़े प्रसन्न मन से जल्दी से रसोई बनाने में लग गई। भाजी-रोटी-बेसन तथा एक अंजलुभर हरी मिर्च अपने देवर के सामने लाकर रखी। तीन रोटी तीन प्याज-चनादाल का बेसन (महाराष्ट्र में इसको झुणका कहते हैं।) तथा उसके ऊपर-मक्खन हर रोटी को लगाया और देवर को देकर बोली, 'अब आप शेगाँवजाओ। क्योंकि समय थोड़ा है, गाडी जानेवाली है। ये गाडी अगर नहीं मिली तो सब भोजन सामग्री व्यर्थ हो जाएगी। भोजन के समय ही पहुंचना चाहिए।' नानी ने जब ऐसा कहा तो भाऊ अपने पिता को पूछकर जब रेल्वे स्टेशन पर पहुंचा तो बारह बजे की गाडी जा चुकी थी। जो जानकर भाऊ बड़ा विकल चित्त हो गया। वह विमनस्क हो गया। नेत्रों में जल भरा आया और कहा, 'महाराज! इस समय आपने मेरा त्याग क्यों किया? मैं मूलतः दीन हीन हूं, फिर महाराज को भोजन

कराने का पुण्य मुझे कैसे मिल सकता है? जैसे काग को मानस सरोवर का लाभ नहीं हो सकता। मुझसे कौन सी अक्षम्य गलती हो गई, जिससे यह गाडी छूट गई। हाय रे दुर्दैव! तुमने अच्छा दांव साधा। यह स्वल्प सेवा भी गुरुदेव कि मेरे हाथ से न होने दी। यह मेरा पाथेय यदि ऐसी ही रही तो मैं भी भोजन न करूंगा। यह वचन त्रिवार सत्य है। फिर महाराज की प्रार्थना करने लगा!

हे कृपा के सागर गुरुदेव! इस बालक की उपेक्षा मत करिये। इस पाथेय का सेवन करने शीघ्र पधारिये। आप का अधिकार बहुत बड़ा है। एक क्षण में आप केदारनाथ के दर्शन को पहुंच जाते हैं। फिर इतनी सी दूर आने को क्यों आनाकानी कर रहे हो। मैं आज्ञा नहीं कर रहा हूं। प्रेम से आहवाहन कर रहा हूं। इसमें आपका किंचित भी अपमान नहीं है। दूसरी गाडी को अभी तीन घंटे देर है, तब तक आपका भोजन हो जाएगा। ऐसा विचार करते हुए वह वही भूखा बैठा रहा। चौथे पहर तीन की गाडी से शेगाँव आया। जब कंवर दर्शन करने मठ में गया तो योगीराज अपने आसन पर बिना भोजन किए बैठे थे। पास में अनेक पक्वानों से भरे नैवेद्य के थाल रखे थे, जिनका मुझसे वर्णन नहीं किया जाता। किसी में जलेबी, घेवर, तो किसी में मोतीचूर, किसी में पायस तो किसी में श्रीखंड पूरीयां थी, किंतु इनमें से किसी को भी स्पर्श महाराज ने नहीं किया था। बालाभाऊ थालीयां लाकर रखता और कहता, 'महाराज, एक बज चुका है, जब आप भोजन नहीं करेंगे, तब तक भक्तों को प्रसाद नहीं ग्रहण होता। उसकी वे बाट देख रहे हैं। आपसे प्रार्थना करने की किसी में हिम्मत नहीं, इसलिए मैं यह कह रहा हूं।' तो महाराज ने कहा, 'इस समय आग्रह न करो, थोडा रुको। आज हमारा भोजन चौथे पहर में होगा। यदि इच्छा है तो रुको अन्यथा तुम खाओ

ना नैवेद्य पीछे घर ले जाने दो, उसकी परवाह मुझे नहीं है।’ इस प्रकार यह घटना चल रही थी। इतने में भाऊ आ पहुंचा। समर्थ को देखकर उसे अत्यानंद हुआ। जैसे दूर गई हुई माता बालक की दृष्टि में पडने पर उसे बालक की जो अवस्था होता है वही कंवर की हुई। उस भाऊ को देखकर महाराज हंसकर बोले, ‘अरे! अच्छा न्योता दिया? क्या यह भोजन की वेला है? तुम्हारे वचन में बद्ध हो गया और मैं भूखा रह गया। ला जल्दी से वह पाथेया।’ यह सुनकर कंवर बोला, ‘गुरुदेव, बारा बजे की गाडी चूक गई। सो कंवर को बालाभाऊ ने कहा, ‘चलो दुखी मत होओ। क्या लाए हो सो जल्दी से निकालो, समर्थ के भोजन के लिए।’ यह सुनकर कंवर ने रोटी-भाजी और प्यार सामने रख दिया, स्वामी गजानन के सामने। उनमें से दो रोटियां समर्थ ने खाईं और एक प्रसाद रूप में सब भक्तों को दी। यह घटना देखकर सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और महाराज के अधिकार का पता चला। महाराज वास्तव में भक्त वत्सल हैं। यह घटनादेखकर सब लोगों को भक्त विदुर की हस्तीनापूर की घटना याद हो आई, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने दुर्योधन के पकवानों को छोड़कर विदुर घर कुलत्थ का सेवन किया था। वैसे ही महाराज ने पकवानों का स्पर्श नहीं किया। कंवर की रोटियां पर स्वामीजी का चित्त रिझा था। भाऊ ने शेगाँवमें समर्थ का प्रसाद ग्रहण किया। क्योंकि सद्भाव उदित होने पर ऐसा ही होता था। इसके बाद समर्थ ने कंवर से कहा, ‘अब तुम अकोला जाओ! अगले वर्ष डाक्टरी पास हो जाओगे।’ तब कंवर ने कहा, ‘गुरुदेव! आपकी दया मुझ पर हो, बस इसके सिवा मुझे और कुछ नहीं चाहिए। ये आपके दिव्य चरण ही मेरी निधि हैं। आपकी दिव्य मूर्ति का चिंतन सदैव हो यही मेरी प्रार्थना है।’ ऐसा बोलकर कंवर अकोला चला गया। समर्थ अपने भक्त की उपेक्षा कभी नहीं करते।

शेगाँवमें रहनेवाला तुकाराम शेगोकार नामक एक किसान महाराज का भक्त था। वह खेती का काम करता था। घर में बड़ी गरीबी थी। खेती का काम सूर्यास्त तक करके बाद में वह महाराज के दर्शन को आता।

कुछ देर बैठ कर फिर खेत में चला जाता। वह महाराज की चिलम भरकर देता और चरणों का दर्शन लेकर चला जाता। इस प्रकार का क्रम कई दिनों तक चलता रहा। भाग्यचक्र बड़ा विचित्र होता है, वह किसी को नहीं छोड़ता। जो ललाट में लिखा होता है वह होकर ही रहता है। एक रोज एक आखेटक बंदुक कांधे पर रखकर मृगया के खोज में उसके खेत में आया। तुकाराम अपने खेत में काम से निमग्न था। वह प्रातः की वेला थी। सद्यः सूर्योदय हुआ था। तुकाराम अपने खेत में अंगीठी सेकते बैठा था।

उसके पीछे धूप के झुरमुह में एक ससा बैठा था। वह आखेटक ने देखा और उसको मारने के लिए लक्ष संधानकर बंदूक चलाई। जिससे ससा तो मर गया किंतु छरों में से एक छर्ता तुकाराम के कान के पीछे लगा। छर्ता बड़ी गती से लगने से अंदर मस्तिष्क में प्रविष्ट हो गया। तुकाराम को दवाखाने लाया गया। डाक्टरों के अथक प्रयत्न करने पर भी वह छर्ता निकल नहीं पाया। तुकाराम को भयानक सिरों वेदना होने लगी। रात को यत्नचिंत निद्रा नहीं लगती थी। सब प्रकार के दैवी-संकल्प इत्यादि करने पर भी उसको कोई लाभ नहीं हुआ। इस अवस्था में भी वह मठ में जाता और नित्य परिचर्या करता। ऐसे में एक भक्त ने उसे कहा, 'अरे तुकाराम! डाक्टर बैद्य छोड़ दे, इस संसार में साधुसेवा जैसा दुख नाश का और उपाय नहीं है। उनकी कृपा होने पर तुम्हारी यह पीडा अवश्य नष्ट हो जाएगी। तुम नित्य मठ के आसपास सफाई किया करो, जिससे महाराज की सेवा भी होगी और तुम्हें पुण्यलाभ भी होगा।

किंतु अपने पिता के समान दांभिकता से यह काम न करना। सदैव शुद्ध भाव धारण करना। यह सुनकर तुकाराम ने मठ का परिसर झाडकर आयने के समान स्वच्छ निर्मल रखना शुरू किया। इस अवस्था में वह चौदह वर्ष तक सेवा करता रहा। एक रोज बड़ी आश्चर्यकारक घटना घटी। झाडते झाडते उसके कान में से छर्छरी झटककर जमीन पर गिर पडा। जैसे लसोडे को दुबाने पर उसका बीज बाहर गिर पड़ता है। कान में से छर्छरी गिरने के बाद उसकी सिर दर्द की विकृत बंद हो गई। ऐसा सेवा का प्रभाव होता है। यह बुहारने का काम वह अपने अंतिम समय तक करता रहा। प्रचिति के बिना परमार्थ मार्ग में कभी निष्ठा नहीं होती। वह एक बार होने पर स्थिर हो जाती है। इस तरह भावुक जानते हैं कि संतसेवा अत्यंत श्रेष्ठ है, महान है। यह अंधश्रद्धा के साक्षात् उत्तर है जो कहते हैं। अंधश्रद्धा है वह अत्यंत भ्रांति है 'अंधश्रद्धा' शब्द ही गलत है, क्योंकि यह दासगणू महाराज ने स्पष्ट शब्दों में कहा है, प्रचीति के बगैर परमार्थ मार्ग में कभी श्रद्धा नहीं होती और प्रचिति होने पर वह श्रद्धा दृढ होती है। श्री दासगणू विरचित श्री गजानन विजय नामक ग्रंथ भाविकों का भवसागर तारनेवाला है।

॥शुभं भवतु श्री हरिहरार्पणमस्तु॥

॥इति श्री गजानन विजय ग्रंथस्य षोडशोऽध्यायः समाप्तः॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय १७ ॥

श्रीगणेशाय नमः । हे महामंगल, भक्तोंका पालन करनेवाले - तमालानीलवर्ण-पतित पवन नरहरी । आपकी जय हो । हिरण्यकश्यप बड़ा क्रूर था - सज्जनोका शत्रु था - उसका उदर चिर कर के आपने उसे मारा । भक्त प्रह्लाद की रक्षा करने लिए अपने स्तंभ फाड़कर जन्म लिया । यह आपका अनुपम रूप था। भयानक दाढ़े, गर्दनपर केश संभार खदिरांगार के समान नेत्र जो मानो ब्रह्माण्ड का दाह कर देंगे। ऐसे आपके भयंकर रूप के दर्शन का डर भक्तोंको नहीं होता क्योंकि बाघिनके बच्चे बाघिनके के शरीर पर खेल कूद करते हैं । ऐसा भयानक रूप देख कर माता लक्ष्मी भी आपके सन्निध सामने आने से डरी, किन्तु भक्त प्रह्लाद ने आपकी चरण वंदना निर्भय हो कर की । लक्ष्मीकांत ! आपका भक्त वत्सल हो-ऐसा संतगण कहते आये हैं । आप भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते हो, उन्हें कभी नकारते नहीं । उस आपके ब्रिद को आप रखी ये । हे हृषीकेश ! यह दासगणू आपकी चरण वंदना करता है । उसे अभयदान दीजिये ।

अकोला में गजानन महाराज के कुछ परम भक्त थे । महाराज उनके घर सदैव जाते रहते थे । चापड़ गाँव के बापु कृष्णा खटाऊ सेठका परिवार गोंडुलाला का पुत्र, जिसका नाम बच्चुलाल था, जीजीबाई पंडित और ऐसे अनेक भक्त थे, जिनके नाम मैं कहाँतक बताऊँ ? एक बार गजानन महाराज ने खटाऊ के कारखाने में अपना निवास स्थान निश्चित किया । मलकापूर का विष्णुसा नामक भक्त था । उसके मनमें इच्छा हुई, कि महाराज को मलकापूर ले जाया जाय ।

उसने भास्कार द्वारा अपनी इच्छा प्रगट की । आगे यही भास्कर आड़गाँव में समाधिस्थ हुआ । इस समय वह महाराज के साथ अकोला में था । वह सब महाराज के कार्य करते थे और भास्कर का बल विष्णु को था । भास्करने महाराज से कहा," महाराज, विष्णुसा बुलाने आया है, सो उसके घर मलकापूर चलिये । वहाँके भक्तोंके मनोरथ पूर्ण करिये । मलकापूर के लोग आपकी राह देख रहे हैं । तब महाराजने उत्तर दिया," भास्कर इस समय हम मलकापूर नहीं जाना चाहते,तुम आग्रह मत करो । अगर ज्यादा आग्रह करोगे तो दुर्दशा होगी। मैं अकारण नहीं बोलता इसका सुक्ष्म विचार करो । रज्जु को अधिक तानने पर वह टूट जाती है । मैं यहाँ से हिलूंगा नहीं । तुम इस झंझटमें मत पड़ो । " इसपर भास्कार ने कहा," गुरुदेव ! कुछ भी हो, मलकापूर विष्णुसा के घर अवश्य चलिए । मैंने उसे वचन दिया है और मैं आपका प्रिय शिष्य हूँ, मेरा अनादर मत करिये । यह मेरी प्रतिज्ञा पूरी करिये । आज रेल्वे स्टेशनपर चलिये, हम गाडीसे जायंगे । इस प्रकार आग्रह करके भास्कर ने महाराज को स्टेशनपर लाया और स्टेशन अधीक्षकको प्रार्थना करके बारह लोगोंको लिए एक डि खाली करवाया,महाराज को बैठनेके लिए । महाराज वैसे ही बैठे रहे,कुछ बोले नहीं, गाड़ी छुटने तक कुछ नहीं बोले। जौसे ही गाड़ी छुटने की घंटी बजी तो भास्कर की निगह बचाकर महाराज ने एक लीला की, जो डिब्बा खाली किया था वह उन्होंने छोड़ दिया और ये योगीराज स्त्रियों के डब्बेमें घुस पडे । पहले ही विशाल काय मूर्ति उस पर दिगंबर । जो देखकर स्त्रियाँ घबरा गईं और उन्होंने पुलिस में सूचना दी । पुलिस अधिकारी जल्दीसे वहाँ पहुँचे और वह महाराज का हाथ पकड़कर उन्हे नीचे खीचने लगे ।

अरे पागल नंगे- तुम्हारी बुद्धि कहाँ गई,जो इस अवस्थामें स्त्रियोंके डिब्बे मे आ कर बैठ गये हो । उसने हाथको झटका दिया । किन्तु महाराज टससे मस न हुए और निर्भयतासे वही बैठे रहे । बादमें वह अधिकारी स्टेशन अधीक्षक के पास गया और उसने कहा की," आप मेरे साथ स्त्रियोंके डिब्बेके पास चलिये ।" तदनुसार दोनो वहाँ पहुँचे तो

स्टेशन अधीक्षकने योगीराज को स्त्रियों के डिब्बेमें बैठा देखा । उसने पुलिस अधिकारी से कहा, " आप इन्हे इसी डिब्बेमें बैठकर जाने दीजिये, यह महान श्रेष्ठ संत है । साक्षात् ईश्वर है, इनके द्वारा किसी प्रकार का अवैध कार्य कभी नहीं हो सकता । यह सुनकर उस पुलिस अधिकारी ने उत्तर दिया कि, " मैंने अपने वरिष्ठ अधिकारी को तारयंत्रद्वारा इस घटना की सूचना दे दी है सो आप जो चाहिये सो करिये ।" तब स्टेशन अधीक्षकने अपनी टोपी उतारकर बड़ी नम्रतापूर्वक महाराज से प्रार्थना की, " महाराज ! आप मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर इस डिब्बेमें उतरकर अपने डिब्बेमें बैठायें । विधिनियम तथा मेरा कहना मानिये ।" यह सुनकर महाराज उतरे । बादमें इस प्रकार के लिए महाराज के ऊपर आयोग चलाया गया । जिस कर्म के लिये जठार नामक अधिकारी शोगाँवमें नियुक्त किया गया, उस समय व्यंकटराव देसाई, जो अकोला के थे, किसी काम से यहाँ आये थे । महाराजपर न्यायालय में खटला चलनेवाला है इसके अभियान की गाँव में दंडी दी गई थी । उसके कारण गाँवके भी बहुत लोग - विश्राम गृहपर इकट्ठे हुए थे । तब देसाईने जठार को पुछा , " आज कौन सा विशेष अभियान है, जो इतने लोग जमा है । तब जठार ने कहा, " बड़े आश्चर्य की बात है, की तुम्हें इस सुनवाई की सूचना नहीं है । तुम्हारे स्वामी गजानन नग्न फिरते हैं इसीलिए पुलिस यह केस चलाया है । उसकी आज सुनवाई है । शायद इसीलिए ये सब लोग जमा है ।" तब व्यंकटराव ने हाथ जोड़ कर उसने कहा की, " यह केस न चलाइये । गजानन महाराज की योग्यता बहुत बड़ी है । ये योगियों के योगाधिपती है, सबसे वन्दनीय हैं ।" तब जठारने कहा कि, " आप विधिज्ञ है, विधि का ज्ञान आपको है । इसका विचार पुलिस लोगोंने करना चाहिये था । "बादमें अपने लिपिकसे उन्होंने कहा की, " गजानन महाराज को बुलवाओ ।" यह सुनकर उसने एक युवा पुलिस महाराज को बुलाने भेजा । वह समर्थ से बोला कि , " आप सीधे से कचहरी चलिये क्योंकि अधिकारीने मुझे आपकी लानेके लिए भेजा है, अन्यथा दुर्गती से जाना पड़ेगा । आपका हाथ पकड़ कर मुझे आपको खीचकर ले जाना पड़ेगा ।" तब गजानन महाराज बोले, " हम यहा से नहीं उठेंगे । तुम्हारा

सिपाही पना देखना है, आओ, हमारा हाथ पकड़ो ।' ऐसा कहकर उन्होंने पुलिस का हाथ पकड़ लिया, वह इतनी जोरोसे की उसका रक्तप्रवाह बंद हो गया । उस दबाव के कारण उसके हाथमें वेदना होने लगी । वह घबराकर तड़पने लगा । पुलिस को ज्यादा समय बीत गया । इसीलिए वहाँ व्यंकटराव देसाई वकील को भेजा और जठार ने कहा," आप जाकर महाराज को लाईये और लोगोंको व्यर्थ भीड करने से रोकिये । इतनेमें समाचार मिला की महाराज पुलिस को हाथ पकड़कर उसे वही बिठा दिया । तब देसाई वहाँ आये और भक्तोंसे बोले की, इस समय महाराज को धोती पहनानी चाहिये । सो भक्तोंने उन्हें धोती पहनायी किन्तु महाराजने वह उतारकर फेंक दी । नंगे ही कचहरी गए । साथमें भास्कर भी था । महाराज को देखकर जठारने उन्हें बैठने के लिए कुर्सी दी और कहा," महाराज आप नंगे क्यों घूमते हैं ? यह ठीक नहीं है । क्योंकि वर्तमान विधि के अनुसार गाँव में नंगा घूमना निषिद्ध है और गुनाह है । इसीलिए आपसे प्रार्थना है, की आप नंगे रहना छोड़ दीजिये । जठार का व्यक्तव्य सुनकर महाराज हँसे और बोले,"तुम्हे इससे क्या करना है? व्यर्थ बाते मत करो और चिलम भरकर दो।" यह सुनकर जठार द्रवित हो गये । जनरीतिका उन्हें भान न रहा । सोचने लगे, की हो न हो, ये भागवतमे वर्णित ऋषभदेव अथवा परमहंस भागवत के वक्ता शुकाचार्य या जीवन्मुक्त वामदेव का ही अवतार जान पड़ते है । ये जीवन्मुक्त है और आत्मानंद में लीन रहते है अतः लौकिक आचार विचार इनके लिये व्यर्थ है । इसीलिए इनपर यह लौकिक आचार के आश्रय से किया हुआ आक्षेप लगाया नहीं जा सकता । जैसे अग्नि अपनी उष्णता कभी नहीं त्यागती, क्योंकि वह उसका स्वभाव है । इसीलिए अग्निहोत्री लोग उसे यज्ञकुंडमे रखते हैं अन्यथा घरका ही दाह कर देगा । यह उसका दोष नहीं। वैसे ही इनकी जीवन्मुक्त नग्नता अग्नि के समान ही है, इसीलिए इनके शिष्य इसके लिए दोषी है, जिन्होंने इन्हें वस्त्र पहनाकर नहीं रखा, यदि वस्त्र रूपी अग्निकुंड से इनका शरीर आच्छादित करते, तो सबको सुखद होता, ऐसा विचार करके जठारजी ने इस प्रकार आज्ञा दी । मुलतः महाराज जीवन मुक्त है इनको व्यवस्थित रखना भास्कर का काम

था, उसने वह नहीं किया इसीलिये मैं भास्कर को पाँच रुपिया दंड करता हूँ । इस प्रकार जठार की उपस्थिति में केस का निर्णय शेगाँव में हुआ । इस पर समर्थ ने भास्कर कहाँ !" देखा फिरसे ऐसा आग्रह अपनी दुर्दशा कराने मुझे कभी न करना ।

भास्करने कोई उत्तर न दिया । तब शेगाँव के लोगोंने निश्चय किया की, महाराज को अग्निरथ में कभी न बिठाया जाय, क्योंकि उसमे ऐसी विपत्तियाँ होती हैं ।' तबसे भक्तगण महाराज को अपनी बैलगाड़ी में ही बिठाकर ले जाते,ऐसा क्रम कई दिन तक चला ।

एक बार पुण्यराशी अकोला के बापु राव के घर इस समय महेताबशा नाम का एक मुसलमान साधु मुर्तिजापुरके पासवाले कुरुम नामक गाँव में रहता था। उसने बपुरावसे कह रखा था की, "महाराज अकोला आये तो हमको सूचना देना। " तदनुसार महाराजके अकोला आनेपर बापूने एक आदमी जल्दीसे कुरुम संदेशा लेकर भेजा। इधर महेताबशा महाराजसे मिलने कुरुमसे निकल पड़े थे। आधे रस्तेमे उन्हें वह व्यक्ति मिला जो उन्हें लेने कुरुम जा रहा था। मधुरभाषी महेताबशाहने उससे कहाँ,"अरे कुरुम जानेकी जरूरत नहीं, मैं ही महेताबशा हूँ। चलो, हमारी बैलगाड़ीमे बैठो और स्टेशन चलो, श्रोतागण संत त्रिकालज्ञ होते है उनकी महिमा अपरंपार होती है। संत के आनेकी वार्ता संत को ज्ञान हो गयी थी। महेताबशा के साथ दो-चार मुसलमान थे। सब आकर बापूराव के घर उतरे। दूसरे दिन प्रातःकाल महाराज जहाँ महेताबशाह बैठा था वहाँ आये और उसके बाल पकड़कर उसे ताड़ने लगे। विद्वजनों महाराजके ताड़न करनेका रहस्य यह था, की यवन जातीमे जन्म लेकर उनका कुछ भी कल्याण तुमने नहीं किया। उलटे दिनपर दिन उनकी उद्वंडता बढ़ती जा रही है। तुम उद्दाम हो गये हो। इससे धर्मतत्वोंका विनाश होगा और

मृत्युलोकके सब प्राणी चिन्तित होंगे। तुम्हारा नाम मेहताब (चंद्रमा ) है, जिसका काम है अंधकार का नाश करना, उनकी तो मर्यादा का स्मरण रखो।

ऐसा संकेत मिलनेपर मेहताबशाह को बड़ा संतोष हुआ, क्योंकि साधु ही साधु को पहचान सकते हैं। जब मेहताबशाहको ताडन किया तब साथके यवन लोग वह देखकर घबरा गये। तब उनको मेहताबशाहने कहाँ , " तुम लोग हमारे साथ न रहकर कुरुम चले जाओ, यही ठीक होगा।शेख कडू को छोड़कर बाकी सब यवन कुरुम वापस चले गये। इस समय बच्चूलाल महाराजको निमंत्रित करने वहाँ आया। उसने कहाँ," दयानिधान, कल मेरे यहाँ भोजन करने पधारिये। दूसरे दिन तांगेमे बिठाकर महाराजको बड़े जुलूसके साथ घुमाते हुए उसने उन्हें अपने घर लाया। किंतु समर्थ तांगेसे निचे नहीं उतरे जिससे लोग बड़े चिन्तित हुए। तांगा वैसेही पीछे ले गये। सब लोग बिचार करने लगे की महाराजने कल निमंत्रण स्वीकार किया और आज तांगेसे नहीं उतरे, क्या कारण है ? तब उनमेसे एक बुद्धिमान व्यक्ति था, उसने उसका कारण इस प्रकार बताया की, मेहताबशाहको महाराजके साथ नहीं बुलाया यही कारण है। सबको यह जँच गया तब दोनोंको एक तांगेमे बिठाकर घुमाते हुए लाया गया और मेहताबशाहको मंदिरके पास एक नाटकगृह में उतारा और महाराज श्रीरामके मंदिर में उतरे। बादमे वो भी उठकर नाट्यगृह में चले गये। सबने भोजन किया तब मेहताबशाहने लोगोंसे कहाँ कि," पंजाब का टिकट कटा दो। " तब कडुने कहाँ," आप भला कुरुमकी मस्जिदको छोड़कर क्यों जाते हो ? तब मेहताबशाह शेख कडूसे कहने लगे," मुझे गजानन महाराजकी आज्ञा पंजाब जानेकी हो गई है सो मैं एक क्षण भी अब यहाँ नहीं रहूँगा, व्यर्थ का आग्रह न करो।

संतोंके पास धर्मविषयक द्वैत कभी नहीं होता। वे सब धर्मोंको समान मानते हैं। मंदिर और मस्जिदका व्यर्थका विवाद तुम लोग मत बढ़ाओ, उसके बढ़नेसेही दोनोंको हानी होगी। मंदिर और मस्जिद बनानेकी सामग्री एकही होती है, केवल आकर भिन्नतासे, भिन्नता मानकर झगड़ा करना व्यर्थ है। यवन मात्र खुदाका है तो क्या हिंदू भूतका है ? मानवता स्थिर करनेके लिये स्वस्थ विचार आवश्यक है। हिंदू और मुसलमान एकही ईश्वर की संतान है । जिसका धर्म प्राणोंसेभी प्रिय मानकर तदनुसार चलना चाहिये किंतु विधर्म पर भी प्रेम करना चाहिये। ऐसा सोचेंगे तो ही दोनोंका कल्याण है। जाओ, गजानन महाराज की कृपासे मसजिद का काम पूर्ण होगा। " ऐसा कहकर महेताबशाह पंजाब चले गये और फिर लौटकर इधर कभी नहीं आये। इस कथा का तात्पर्य यही है की महाराजने महेताबशाहकी ताड़ना की किंतु उनपर अतूट प्रेम भी था। अतः महाराजका परधर्मपरभी प्रेम था। वे अकेले मेहताबशाहको छोड़कर भोजन करने नहीं गये। ये सब प्रमाणोंका विचार आवश्यक है। अस्तु।

इधर बापूराव की पत्नीको भानामतीकी बाधा थी। घड़ीमे उसके सिरपर मल पड़ता कभी गला तप्त होता। घड़ीमे कपडे जल उठते थे। कभी भल्लातक तैल की लकीर पीठ तक उठ आती। कभी अटारीपर रखा चीर जल जाता। ऐसी अनेक भयानक यातनाएँ होती थी। इस भानामतीके तकलीफसे वह बापूराव की पत्नि बड़ी त्रस्त थी, व्यथित थी। उसे अन्नपान, भोजनादि में रूची नहीं रह गयी थी। बापूरावने एक ओझा और जानकार लोगोंको बताया, किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अन्तमे उसने गजानन महाराज की शरण ली। कहने लगा, "महाराज मेरी पत्नी भानामतीके तकलीफसे त्रस्त है। उपाय करके मैं थक गया हूँ। आपके चरण मेरे घर पर आनेके बाद भला भानामती यहाँ कैसे रह सकती है ? जहाँ कस्तूरिका परिमल परिवसित हो, वहाँ दुर्गंध कैसी ?"यह प्रार्थना सुनकर महाराजने कृपा करके बापूरावकी पत्नीको भानामतीसे मुक्त कर दिया। भला केसरीके सामने मर्कट रह सकता है?

एक बार महाराज घूमते हुए नरसिंगजी से मिलने आकोट पहुँचे। उनके मठ के पास एक कुआँ था। महाराज उसपर जाकर बैठ गए। पैर अंदर डाल दिये और झुककर अंदर झाँकने लगे। वे अंदरके जलको बारबार देखते। उनकी इस प्रकारकी कृती देखकर सब लोग आशंकित हो गये और नरसिंग महाराजने पूछा,"अरे, ये क्या कर रहे हो?"उसपर महाराजने उत्तर दिया की गोदावरी और जमुना आपके लिये यहाँ है और इसमे कितने तीर्थ है वह देख रहा हूँ। आपको इनका नित्य स्नान मिलता है। फिर मैं क्यों वंचित रहूँ?इन तीर्थोंने मुझेभी आज स्नान कराना चाहिये। उसमे स्नान किये बिना मैं यहाँसे नहीं हिलूँगा। यह सुनकर कई लोग बोले," अरे यह वास्तवमे पगला लगता है शेगाँव कैसे इनके पीछे पड़ा है ? ठहरो, देखते है, आगे क्या करता है।" थोड़ी देरमें चमत्कार ऐसा हुआ की कुँए का पानी बढ़कर उपरकी ओर बढ़ने लगा। क्षणभरमें कुआँ पानीसे मुँहतक भर गया। हजारो फुहारे गजानन महाराजपर पड़ने लगे। तब गजानन महाराज सब लोगोंसे बोले," अरे स्नानके लिये आये हो अब स्नानके लिये कुँए में उतरनेकी जरूरत नहीं। गंगा, जमुना, गोदावरी ये ऊपर आई है, सो स्नान करके पुण्य लाभ लो। इन पुण्य सरिताओंका लाभ लो। भाविकोने स्नान किया और निंदकोंकी गर्दन शर्मसे झुक गई। संतजन जो मनमें सोचते है, वह उनकी मनोकामना चक्रपाणी भगवान पूर्ण करते है। उनकी वाणी कभी असत्य नहीं होती। स्नान होनेपर समर्थ वहाँसे उठे और कुँएका पानी फिरसे पूर्ववत हो गया। उबाल फुहारे बंद हो गई। नरसिंगजी को मिलकर दयाघन वायुवेगसे मनरूपी अश्वपर बैठकर शेगाँव चले आये। यह दासगणू विरचित श्री गजानन विजय ग्रन्थ संसाररूपी समुद्रसे भविकोंको तारनेवाला हो।

॥शुभं भवतु। श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इतिश्री गजानन विजय ग्रन्थस्य सप्तदशोऽध्याय समाप्त ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥ अध्याय - १८ ॥

श्री गणेशाय नमः! हे गोविंद, श्रीनिवास, परेश, आनंदकंद, चिद्विलास, दीनबंधु! आपकी जय हो। हे केशव केशरी असुर को मारनेवाले माधव (मा-नाम लक्ष्मी के धव-नाम पति) मधुसूदन (मधु दैत्य का नाश करनेवाले) पूतना के प्राण का शोषण करनेवाले, रुक्मिणीपती पांडुरंग, मेरे मन में क्या है वह आप जानते हो। क्या वह मुझे बोलकर बताना होगा? हे पद्मनाभ! (पद्म-नाम कमल जिसकी नाभि से निकला है।) भक्त जो इच्छा करता वह आप पूर्ण करते हैं, ऐसा बहुतायत वर्णन पुराणों में है। इसलिए मन की कठोरता छोड़कर इस दासगणू के मनोरथ पूर्ण करिये। वह तुम्हारा ही है। आकोट के पास में मुंडगाँव एक देहात है। वहां पर बायजा नामक एक तरुणी महाराज की भक्ताणी थी। हलदी माली के वंश में इसका जन्म हुआ था। इसके पिता का नाम शिवराम और माता का नाम भुलाबाई था। बायजा का विवाह तत्कालीन प्रथा के अनुसार बाल्यकाल में ही हो गया था। जब वह तरुण हुई तब उसके पिताने उसे जामात के घर ले जाकर पहुंचा दिया। किंतु जामात नपुंसक था, जो जानकर बायजा के माता पिता को महान् शोक हुआ। बायजा कि ओर देखकर भुलाबाई रुदन करती थी कि मेरी पुत्री की तरुणाई व्यर्थ है, यह बाझ ही रहेगी। ऐसा देखकर भुलाबाई ने शिवराम से कहा, 'बायजा को ऐसे ही मत रखो, इसको दूसरा पति देखकर विवाह कर दो। शिराम ने कहा, धैर्य मत छोड़ो, पुरुषत्व का मामला जल्दी नहीं समझ सकता। कुछ दिन रास्ता देखेंगे, ऐसी अधीर मत बनो। कुछ दिन बायजा को ससुराल में रखकर देखेंगे। इसका नपुंसकत्व यदि व्याधिजन्य है तो औषधियों से ठीक हो सकता है।

दोनों ने ऐसा निश्चय करके बायजा को उसके ससुराल रखकर वो दोनों मुंडगाँव लौट गये। बायजा सोलह वर्ष की थी। वर्ण तो उसका श्यामल था, किंतु बड़ी आकर्षक और तारुण्य-लावण्युक्त थी। नेत्र और नासिका बड़े पानीदार, सभी अवयव बड़े सुंदर और परिपुष्ट थे उसको देखते ही कामुक व्यक्ति में उसके प्रति वासना प्रबल हो जाती। बायजा को देखकर उसके जेठ का मन उससे संभोग के लिए विचलित हो उठा। उसने नाना प्रकार के प्रयत्न किये। उसका मन बहकाने के लिए बार-बार उससे कहने लगे, 'अरे ऐसी हताश मत हो, मैं तुम्हें पति के रूप में हूँ और आमरण तुम्हारा पालन, पोषण करूँगा। व्यर्थ की चिंता छोड़ दो, प्रसन्न होकर मुझे ही अपना पति समझो। इस प्रकार अनेक युक्ति प्रयुक्ति से लोभ बताकर उसका मन पलटाने का प्रयत्न किया। किंतु उसका कुछ उपयोग नहीं होता था। बायजा अपने मन में कहती है भगवान! मैंने बचपन से ही आपका आश्रय लिया है, फिर यह दैन्य कैसा? क्या मेरे भक्ति का यही फल है? मैंने जिससे पाणिग्रहण किया वह पुरुष नहीं है अर्थात् मेरे भाग्य में संसार नहीं है। यह ठीक ही हुआ, अब आपके चरणों में चित्त सदाके लिए रमण करेगा। किंतु शेषशायी ऐसी कृपा करिये कि अब मेरे शरीर को पुरुष का स्पर्श न हो। एक दिन उसका जेठ रात्री के समय अपना हेतु बताने बायजा के पास गया, तो बायजा ने उसे नकार दिया और कहा, क्या तुम्हें तिलभर भी लज्जा नहीं आती? मैं तुम्हारी बहुत के समान हूँ, तुम मेरे पिता के समान हो। ऐसा अविचार छोड़ दो। इस प्रकार बायजा के कहने पर भी वह अपने कुकर्म से परावृत्त न हुआ। उसके मन में प्रबल काम वासना थी, सो जब वह उस पर हाथ डालने का प्रयत्न करने लगा, उसी समय उसका बड़ा पुत्र हवेली से गिर पड़ा।

उसके मस्तक में बड़ा घाव हो गया, तब बायजा ने उसे अपनी गोद में उठाकर उसे औषधि लगाने लगी। तथा अपने जेठ से बोली, इस घटना पर विचार करो, परस्त्री की अभिलाषा का परिणाम बुरा होता है। लडका गिरने के कारण वह डर गया और अपने कम का उसे पश्चाताप होने लगा। उसने उसका पीछा छोड़ दिया। कुछ दिनों के बाद शिवराम अपनी कन्या बायजा को मुंडगाँव ले आया, तब भुलाबाई अपने पति से बोली, चलिये, हम लोग शेगाँव जायेंगे और वहाँ गजानन महाराज से अपनी इस पुत्री का भविष्य पूछेंगे। यह शिवराम के मन भा गया और वह अपनी पुत्री और पत्नी के साथ शेगाँव आया। बायजा को महाराज के चरणों पर डालकर, प्रार्थना की, 'महाराज! इस कन्या को पुत्र-पौत्रादि होने का आशीर्वाद दीजिये।' यह सुनकर समर्थ हंसे और बोले, 'अरे! विधाता ने इसके भाग्य में पुत्र नहीं लिखा है। संसार में जितने पुरुष हैं वह सब इसके पिता है, अतः इसकी शादी करने के झंझट में मत पडो। यह सुनकर शिवराम को बड़ा दुख हुआ और वह बायजा को लेकर वापस मुंडगाँव आ गया, किंतु महाराज के वचनों से बायजा को बड़ा आनंद हुआ और उन वचनों के कारण उसके मन में महाराज के तब से दृढ निष्ठा हो गई। समर्थ का एक भक्त पुंडलीक नामक मुंडगाँव में रहता था और वह प्रतिपक्ष शेगाँव आया करता था, महाराज के दर्शनाथ। उसी के साथ बायजा शेगाँव आने लगी। पहली बार बायजा के माता पिता ने पुंडलीक के साथ शेगाँव जाने का कोई विरोध नहीं किया। उनके मन में भावना हुई की साधु के चरणों को इसने आश्रय लिया है, सो वही इनका कल्याण करेंगे। हो सकता है कि वे अपने जामाता को पुरुषत्व प्रदान करें, क्योंकि संतों के लिए कोई असम्भव कार्य नहीं।

यह विचार कर वे स्वस्थ रहे। अब बार बार पुंडलीक के साथ बायजा शेगाँव आने लगी, तो सर्वत्र ऐसा प्रवाद फैला। अरे, शेगाँव का निमित्त है। युवावस्था में मनुष्य का मन परमार्थ मार्गी नहीं होता। बायजा भी तरुण है। पुंडलीक पूर्ण युवा है। इनकी बारी केवल विषयभोग के लिए है और कुछ नहीं। परस्पर प्रेम हो गया। विषयसुख का चस्का लग

गया, सो वह सुख भोगने के लिए दोनों ने वारी का निमित्त किया है। पुंडलीक यद्यपि कुणबी जाति का है, सो बायजा का हाथ पकडने का अर्थात् विवाह सम्बन्ध के योग्य था, किंतु यह माली जाति की है, सो जाति सम्बन्ध की दृष्टि से इनको अलग करना ही चाहिए। वास्तव में दोनों का अंतःकरण शुद्ध था। उसमें काम वासना जागृत नहीं हुई थी। भुलाबाई बायजा से बोली, 'अरे तू रात दिन उस पुंडलीक के घर क्यों जाती है? इस तरुण अवस्था में भला तुम लोगों का परमार्थ के साथ क्या काम? ईख के खेत के पास रहकर सियार भूखा रह सकता है? हरा कडबा देखकर भला बैल कभी खायें बिना रह सकता है? अरे, हमारे मुंह में कालीख मत लगा। भुलाई ने अपने पति से कहा, इसको इस अवस्था में मत रखो। कोई माली का छोकरा देखकर इसका पुनर्विवाह कर दो। यह इस पुंडलीक के घर जाती है। सदा उससे बात करती है, परस्पर देखने पर इन दोनों का प्रेम उमड चलता है। वो लोग सदाचार और सन्निति के प्रेमी होते हैं | भला कभी चंदन से दुर्गंध निकल सकती है? इस प्रकार कहकर भुलाबाई, शिवराम बायजा और पुंडलीक भोकरे चारों जनों शेगाँव महाराज के पास आये और उसकी चरण वंदना की।

पुंडलिक को देखकर दयानिधान कहने लगे, 'अरे, बायजा पूर्व जन्म की तुम्हारी बहन है। यद्यपि लोक निंदा करते हैं फिर भी उसकी परवाह न करके तुम दोनों सच्चिदानंद की भक्ति करो, उस बायजा का दुराव न करना, फिर भुलाबाई से बोला, 'भुले, इन पर व्यर्थ का दोषारोपण मत करो, ये पूर्वजन्म के भाई-बहन है तथा इस बायजा को कोई पति नहीं है, यह इस संसार में प्रपंच के लिए नहीं आई है। यह इसी तरह ब्रह्मचारी रहेगी, जन्मभर, जैसे जनाबाई पंढरपूर में थी। इसको त्रस्त मत करो।' जनाबाई ने नामदेव को गुरु किया था। यह हमारे शरण आई है। हमारी जनाबाई को कोई भी कपट छल मत करो। इस प्रकार की महाराज की बाणी सुनकर शिवराज का कंठ रुंध गया। उससे शब्द नहीं फूटा। बाद में वो बायजाबाई को लेकर मुंडगाँव आया और कभी भी बारी के लिए प्रतिरोध नहीं किया।

महाराज अपने भक्तों की सदैव रक्षा करते हैं। इसकी कथा बताता हूँ। खामगाँव में राजाराम कंवर नाम का एक डाक्टर दवाखाने में अधिकारी था। उसको एक बड़ा व्रण हो गया। उसकी चिकित्सा के लिए बुलढाणा, अकोला, अमरावती बड़े बड़े ख्यातिवाले चिकित्सक उस पर शस्त्र क्रिया करने के लिए लाये गए। अनेक प्रकार की औषधियाँ और लेप लगाये गये, किंतु वह व्रण शस्त्र क्रिया के बाद भी बढ़ता ही गया। उनके ज्येष्ठ बंधु बड़े चिंतित हो गए। उनका बंधु शय्या पर व्याधि व्रण से तडप रहा था। व्रण-पीडा असह्य हो गई, अंत में उसने विचार किया कि अब सद्गुरु शरण के बिना दूसरा कोई उपाय नहीं दिखता। वह शय्या पड़े पड़े हाथ जोडकर प्रार्थना करता। हे सद्गुरुनाथ! शीघ्र दौडकर आइये, अब इस बात का अंत न देखिये। श्रोतागण। वह इस प्रकार से अनन्य भाव से प्रतिक्षण प्रार्थना करता।

रात के एक बजने के समय अंधकारमय रात्री के जब रात्रजंतु किर्र रहे थे। सियार जंगल में भूँक रहे थे। ऐसे समय में एक आच्छादित दमनी-जिसको बड़े उत्तम बैल जुड़े थे। जिनके कंठ में घुंघरू और घंटी थे, जिनका ध्वनि हो रहा था। दमनी के आगे पीछे पडदे पडे थे। जिनके कंठ में घुंघरू और घंटी थे, जिनका ध्वनि हो रहा था। दमनी के आगे पीछे पडदे पडे थे। दवाखाने के दरवाजे पर जब वह दमनी आकर खडी हुई तो डाक्टर शय्या में पडे पडे देख रहा था। उस दमनी से एक ब्राह्मण उतरा और डाक्टर के घर का दरवाजा खटखटाने लगा। डाक्टर के भाई ने दरवाजा खोला और आगन्तुक से प्रश्न किया, 'आप कहां से आ रहे हो?' तब ब्राह्मण ने उत्तर दिया, मेरा नाम गजा है और मैं शेगाँव से भभूती और तीर्थ लेकर आया हूँ। भाऊ कवर को जो व्रण हो गया है, वह विभूति लगाकर तीर्थ पिलाइये। अब बडी देर हो गई है, मैं वापस जाता हूँ, ठहरने को मुझे समय नहीं है। इस प्रकार तीर्थ और भभूती देकर ब्राह्मण चला गया। बाद में भाऊ ने उसे ढूंढने के लिए आदमी भेजा, किंतु गाडी तथा ब्राह्मण का कोई पता न चला। भाऊ

मन में गडबडा गया, क्योंकि घटना में कोई तर्क नहीं काम देता था। व्रण को भभूती लगा ते ही वह तत्काल फूटकर उसमें से पीब बहने लगा। एक घडी बीतने पर उस व्रण से सब पीब पूरा बह गया। देखिये समर्थ की विभूति का प्रभाव कितना है? भाऊ को नींद आ गई। आगे चलकर व्याधिव्रण ठीक हो गया और धीरे-धीरे अशक्ति नष्ट हो कर वह पूर्ववत् हो गया। अब वह महाराज के दर्शन को शेगाँव गया तब महाराज उसे बोले, 'अरे! तूने मेरे गाडी के बैलों को घास नहीं खिलाई?' यह सांकेतिक भाषण सुनकर भाऊ गद्गदित हो गया। वह जान गया कि रात को आनेवाला ब्राह्मण मेरे गुरुदेव गजानन ही थे, जो मेरे लिए खामगाँव आये। उस व्याधि के शमन प्रित्यर्थ कंवर ने अन्नदान किया। ऐसे संत अंतर्जानी होते हैं। गजानन महाराज इस तरह अपने भक्तों का कल्याण करते थे।

एक बार समर्थ स्वामी श्री गजानन चंद्रभागा तीर के भगवान विठ्ठल को मिलने पंढरपूर गए। साथ में कई भक्तगण थे। वारी का समय था, सो विशेष गाडियां छूट रही थीं। महाराज के साथ जगु आबा, हरी पाटील, बापुना काळे और कई लोग थे। ये सब लोग शेगाँव से निकलकर नागझरी पहुंचे। यह नागझरी शेगाँव के पास है। वहां एक भू विवर में गोमाजी नामक साधु ने समाधि ग्रहण की है। यहां पर सदैव बहनेवाले स्त्रोत (झरने) हैं। इसलिए इस गाँव का नागझरी पडा। ये गोमाजी महाराज महाद जी पाटील के गुरु थे और इन्होंने शेगाँव के पाटील वंश को आशीर्वाद दिया। इसलिए शेगाँव के पाटीलगोमाजी की वंदना करके पंढरपूर जाते हैं। इस प्रकार परिपाटी के अनुसार सब लोग नागझरी जाकर गोमाजी महाराज को वंदन करके ट्रेन में बैठकर पंढरपूर के लिए चले। हरि पाटील के साथ स्वामी समर्थ थे और दूसरे पांच पचास आदमी थे। आषाढ शुद्ध नवमी का वह दिन था। बहुत से वारकरी लोग पंढरपूर

में जमा होने लगे। श्रोतागण, आकाश में मेघ छाकर कहीं कहीं वर्षा हो रही थी। भू-बैकूठ पंढरपुर में जन समुदाय उमड पडा था। जैसे समुद्र में ज्वारभाटा उमड पडता है। प्रदक्षिणा मार्ग में बडी भीड थी। ताल की नाद में भक्तगण 'जय जय रामकृष्णहरी' की धुन बडे उच्च स्वर में गा रहे थे। किसी का शब्द किसी को सुनाई नहीं पडता था। ऐसे अत्यानंद व्याप्त था जिसका मैं कहां तक वर्णन करूं? निवृत्तीनाथ, ज्ञाननाथ, सांवता, तुकाराम - गोरा कुंभार - तथा सोपान देव और मुक्ताबाई आदि की पालकीयां पंढरपूर में प्रविष्ट हुईं और भक्तों के उडाये हुए अबीर - गुलाल से अंबर में लाली छा गई थी। सुवास सर्वत्र फैल रहा था।

तुलसी और फूलों की बहुतायत थी। ऐसे समय में महाराज पंढरपूर पहुंचे और कुकाजी पाटील के बाडे में ठहरे। यह बाडा प्रदक्षिणा मार्ग के रास्ते पर है। मंदिर में बडी भीड थी। एक एक हाथ पर पुलिस लोग बंदोबस्त के लिये खडे थे। भक्तगण भगवानका भजन करते दर्शनको जा रहे थे। एकादशीके दिन बापुना को छोड अन्य सब लोग दर्शन करने चले गए। बाद में बापुना भी जल्दी से दर्शन के लिए दौडा। मंदिर में इतनी भीड थी कि चिंटी का भी प्रवेश कठिन था। बापुना कैसे दर्शन को जाए फिर गरीब भी था। मन में वह कहने लगा, 'हे ऋषिकेश (हृषिका नाम-इंद्रियां उनका ईश अर्थात् स्वामी) विठ्ठल, आप क्यों कठोर हो गए? मुझे दर्शन दो। तुम सांवता माली के लिए जंगल में दौडकर गए उसी प्रकार इस गरीब को मंदिर से मुझे दर्शन दीजिए। हे पांडुरंग 'अरण' तो आठ कोस था। यह मंदिर तो अत्यंत समीप है और मैं रास्ते में खडा हूं। लोग कहते हैं, तुम अनाथों के नाथ हो। फिर मुझ अनाथ से क्यों मुंह मोड लिया। ऐसी बडी प्रार्थनास की और अंत में बापुना हताश होकर अस्त समय डेरे पर लौट आया। मुख कांती मलिन हो गई थी। मन मंदिर के चक्कर लगा रहा था। ध्यान विठ्ठल के दर्शन में लगा था। शरीर यह बाडे में था। बापुना को देखकर लोग हंसने लगे और कहने लगे, 'यह पंढरपूर दर्शन को आया और गाँव से फिरकर ही लौट गया।

कैसा दुर्देव है! यहां आकर भी श्रीपति के दर्शन नहीं कर पाया, यह दांभिक है।' कुछ बोले, 'बापुना को सब वेदांत ज्ञान है सो वह किस लिए मंदिर में दर्शन को जायेगा? उनका भगवान सदैव हृदयस्थित है। मंदिर के पत्थर के देव में देव कहां? ऐसा वेदांत का मत है। हम सब लोग पागल हैं, जो कष्ट उठाकर दर्शन को जाते हैं। बापुना का देव रास्ते में खडा है।'

तब एक ने कहा! "फिर यहां ये किसलिए आया ? क्या शेगाँव में उसका ईश्वर नहीं मिलता। अरे, ये वेदांती लोग अन्य लोगों को ज्ञान का उपदेश देते हैं, किंतु इनको स्वयं को कोई अनुभूति नहीं होती। सगुणोपासना पूर्ण होने पर फिर ज्ञान होता है, क्योंकि बाल्यावस्था के बिना क्या तरुणावस्था आ सकती है?' इस प्रकार से लोग उसका उपहास करने लगे। सब लोगों के सामने बेचारा अकेला क्या करता? बापुना मुंह बंद करके भूखा ही बैठा था। महाराज लेटे हुए सब देख रहे थे। सुनकर महाराज बोले, 'बापुना आओ, मैं तुम्हें रुक्मिणि रमण से मिलाता हूँ।' क्योंकि गरीब जनों कि दया साधु को ही होती है। जिनको सत्यसंगति प्राप्त होती है वो ही वास्तव में भाग्यवान हैं। ऐसा बोलकर महाराज कमर पर हाथ रखकर, पैर जोड कर खडे हुए! तुलसी और फूल की मालायें गले में सुंदर कृष्णवर्ण मूर्ति बापुना को दिखाई पडी। उसने चरणों पर मस्तक रखा। फिर ऊपर दृष्टि उठाकर देखता है तो समर्थ दिखाई पडे, जिससे बापुना को बडा आनंद हुआ। पितांबर जो बापूना को दिखा मंदिर से जाने पर उसे वही वेष दिखाई पडा। बाकी और लोग महाराज से बोले, 'महाराज! बापुना के समान हम लोगों को भी दर्शन करवाइये।' सुनकर महाराज ने कहा, 'अरे, पहली बापुना के समान मन बनाओ तो दर्शन करवाऊंगा। क्या दर्शन बाजार में बिकता है? मन निष्पाप करो

तो अवश्व दर्शन होगा।' देखिये, बापुना को महाराज ने कुकाजी के बाड़े में साक्षात् विठ्ठल के दर्शन करवाये, संतत्व खेल नहीं है। संत तथा भगवंत अलग नहीं है, जैसे मधुरता और गुड पृथक नहीं किये जा सकते। काला लेकर सब लोग पीछे आये, बापुना के अंतर में श्यामल मूर्ति बस गई। बाद में उन्हें पंढरी के कृपा प्रसाद से चतुर-रसिक और विद्वान पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम बापुना ने नामदेव रखा।

मन नदी के किनारे शेगाँव से उत्तर की ओर कवठा बहादूर नामक एक देहात है। वहां का रहनेवाला एक मालाधारी-वारकरी बरार का होने से कुकाजी के बाड़े में पंढरपूर में उतरा। उस समय आषाढी द्वादशी को वहां (कॉलरा) प्रकोप था। तब पूछो मत प्रेम के पीछे प्रेम जाने लगे। हर घर में जाकर डाक्टरों के हुकुम से पुलिस लोग यात्रियों को गाँव से निकालने लगे। यात्रियों को खोजकर जबरदस्ती गाड़ियों में बैठाते और चंद्रभागा नदी के पार करते कुडुवाडी के तरफ जाने को! यह कवठे बहादुर का वारकरी विषूचिक से आक्रांत हो गया, क्योंकि यह संसर्गजन्य रोग हैं उसको रेचे और उलटी होने लगी जो रुकती नहीं थी। उसके हाथ-पैरों से वात आने लगा। शेगाँव के लोग जाने के लिए उद्यत हो गए। पुलिस के डर के मारे किसी ने यह वृत्तांत उन्हें नहीं बताया। एक घड़ी में सारा बाडा खाली हो गया। संकट समय में कोई काम नहीं आता। सारे जन सुख के संगी होते हैं। दुख में बिल्कुल त्याग देते हैं। ऐसे समय केवल ईश्वर या संत ही सहायता करते हैं। यह देखकर गजानन महाराज बोले, 'यह ओटे पर सोया है इसे ले चलो।' तब लोगों ने कहा, 'गुरुदेव! यह प्रायः मर गया है। इसको साथ लेने पर संकट आ सकता है। अपने साथ पचास आदमी हैं, पंढरपूर में कॉलरा बडी जोर से फैली है, अतः ठहरना खतरे से खाली नहीं। जल्दी से चलिये,

चंद्रभागा के आसपास चले जायें।’ तब महाराज बोले, ‘अरे, तुम लोग बौरा गये हो, क्या अपने देशबंधु को ऐसी अवस्था में छोड़कर जाते हो?’ ऐसा कहकर महाराज उसके पास गये, उसको उठाकर बिठाया और मधुर वाणी से बोले, ‘भैया, चलो, उठो अब हमें अपने गाँव बराड जाना है।’ तब वारकरी ने उत्तर दिया, ‘गुरुदेव! अब काहे का बराड जाना?’

अब तो हमारा अंतकाल समीप आ गया लगता है।’ तब महाराज बोले, ‘अरे पागल! डरते क्यों हो? तुम्हारा विघ्न टल गया।’ ऐसा कहकर उसके सिर पर हाथ रखा। महाराज का वरदहस्त सिर पर लगते ही उसकी रेच और उल्टी बंद हो गई। किंचित शक्ति मालुम पडी, सो वह उठकर खडा हुआ। तब महाराज ने उसका हाथ पकडा, फिर भला यमराज अपने मन से उसे कैसे ले जाता? घडी भर में वह स्वस्थ हो गया और सबके साथ चंद्रभागा के पास समर्थ आ गया। उसको अपार आनंद हुआ। यह महाराज की चरण वंदना करके कहने लगा, ‘दयालु! आपने मुझे यमराज की दाढ से निकाल लिया।’ ऐसा चमत्कार होने पर सब भक्तगण महाराज की जयजयकार करते हुए निर्भयता से कुडुबाडी पहुंच गए। इस प्रकार श्री गजानन महाराज के साथ सब लोग पंढरपूर की वारी करके शेगाँव पहुंचे। एक बार एक कर्मठ ब्राह्मण गजानन महाराज के दर्शन को शेगाँव आया। वह बडी दूर से महाराज की कीर्ति सुनकर दर्शनार्थ आया था। वह मध्वसंप्रदायी था और उस सम्प्रदाय से छुआ छूत और सुचिता अशुचिता का बडा कडा निर्बंध है। वह महाराज को देखकर सोचने लगा, ‘मैं अकारण यहां आया, इस पागल की वंदना करने। ये तो भ्रष्टाचारियों के शिरोमणी मालुम पड़ते हैं। किसी प्रकार की शुचिता, अशुचिता नहीं। अनाचार का साम्राज्य है ऐसे पागल को लोग

साधु कहते हैं, बड़े आश्चर्य की बात है। उस समय मठ में एक काले श्वान का शव आने-जाने के मार्ग में पड़ा था। उसको देखकर ब्राह्मण और खिन्न हो गया। सोचा, अब मैं पानी कैसे लाऊँ? रास्ते में यह श्वान मरा पड़ा है। इसको कोई उठाता नहीं है। सदा गांजा फूंकते हैं इस पागल की वंदना करते हैं और महाराज महाराज कहते हैं।

ऐसे साधुत्व का नाश हो। मुझे कहां से बुद्धि हुई, इसके दर्शन करने की? उसका संशय नष्ट करने को महाराज उठकर ब्राह्मण जहां खड़ा था, वहां आये और कहने लगे, 'अरे! आप यथावत पूजा करिये। यह श्वान मरा नहीं है, बिना वजह शंका न करो।' तब वह क्रोधित होकर कहने लगा, 'अरे! मुझे तुम जैसा पागलपन नहीं हुआ है। इस श्वान को मरे एक पहर हो गया है, उसका शव रास्ते पर पड़ा है। इसका कोई विचार तुम में नहीं है। यह सुन महाराज ने उत्तर दिया, 'भई! हम लोग तो भ्रष्ट हैं, हमको आपके जैसा ज्ञान नहीं है, किंतु तिलमात्र शंका न करो, मेरे साथ पानी लाने के लिए गगरी लेकर चलो।' ऐसा कहकर पुण्यराशी उस श्वान के पास गए और उसको चरणस्पर्श किया, तो वह श्वान तुरंत उठकर बैठ गया। यह चमत्कार देखकर ब्राह्मण निरुत्तर हो गया और महाराज का अधिकार अत्यंत श्रेष्ठ है, सो जान गया। ये देवता ही है। योग्यता न जानकर मैंने व्यर्थ में निंदा की, ऐसा कहकर महाराज के चरणों को पकड़ लिया, 'गुरुवर्य! मेरे सारे अपराधों को क्षमा करो! मेरे शीश पर वरदहस्त रखिये, मैंने अनंत अपराध किए हैं। आप आचरण सहित शुचिर्भूत हो। जगत का उद्धार करने के लिए आपने अवतार धारण किया है। श्रोतागण उसने यथावत महाराज की अर्चना की! उसके मन की शंकाएं नष्ट हो गईं। वह अत्यंत लीनता से आराधना करके

प्रसाद लेकर अपने देश को लौट गया। समर्थ साक्षात् भगवान हैं, ऐसी प्रचिन्ती उसे हो गई। यह दासगणू विरचित श्री गजासनन विजय नामक ग्रंथ भाविकों को सन्मार्ग में लगाए यही दासगणू की इच्छा है।

॥ शुभं भवतु भी हरिहरार्पणमस्तु॥

॥ इति श्री गजानन विजय ग्रंथस्य अष्टदशोऽध्यायः समाप्तः॥

## ॥ अध्याय - १९ ॥

श्री गणेशायनमः हे आनंदकंद समभावदर्शी, मैं आपके चरणकमलोंमें अनन्य भावसे नमस्कार करता हूँ। हे रघुपती राघव! आखिर आप मेरी कितनी परीक्षा देखना चाहते हैं कुछ समझ नहीं आता। जो महान होते हैं उनको कठोरता शोभा नहीं देती। इसपर कुछ विचार कीजिये। मैं दीनता से आपको पुकार रहा हूँ। हे जगत्पति ! मुझे धोखा मत दीजिये । एवं मुझपर कृपा कीजिये।

एक बार महाराज शेगाँव में थे। उस समय काशिनाथ गर्दे, जो खंडेराव का पुत्र था महाराज के दर्शनको शेगाँव आया। मूर्ति देखकर उसको बड़ा आनंद हुआ । उसने समर्थ चरणों को वंदन किया। उसने मन में विचार किया कि मेरे पिताजीने जिवन्मुक्त के जो लक्षण अनुभव से लिखे हैं उनकी साक्षात् मूर्ति महाराज हैं । मेरा भाग्य धन्य है, जो खामगाँव से मैं महाराज के दर्शन को आया। वह सार्थक हो गया । तब समर्थ ने लीला की। उसपर कृपा करने हेतु कुहनीसे उसकी पीठपर धक्का दिया और बोले, ' जा तेरा मनोरथ पूर्ण होगा । तारवाला तेरी बांट देख रहा है।' इसका अर्थ क्या ? यह रहस्य उसे सुलझा नहीं और महाराज को पूछने का साहस उसे हुआ नहीं सो चरणवंदना करके खामगाँव चला गया । उसे वहाँ पहुंचतेही तारवाले ने तार उसके हाथ में दी। काहेकी तार है ? वह खोलकर देखा तो पता चला कि उसकी नियुक्ति मोर्शी तालुके में मुनसिफ़ रूप में की गयी है। यह देखकर उसे अत्यंत आनंद हुआ और कुहनी के धक्केका और महाराज के कथन की मंशा समझ में आई, देखिये, संतोंका ज्ञान कितना अगाध होता है !

एक बार समर्थ गोपाल बुटी के आग्रह से नागपूर से गये । नागपूर पूर्वकाल में भोसले राज्य की राजधानी थी । किन्तु आज उस नगर की दैन्यावस्था हो गई है । स्वातंत्र्यरूपी प्राण निकल गया, जो वास्तव में स्वामी थे वे याचक हो गये और विदेशियों की सत्ता इस नगर हो गई । ठिक है 'कालायतस्मै नमः' यह काल की महिमा है । गोपाल बुटी का बाडा सिताबर्डी विभाग में था । उस विशाल भवन में महाराज को ले जाकर बिठाया जैसे किसी भाघ को पिंजडे में बंद किया जाता है । बुटी का ऐसा विचार था, कि महाराज को यहाँ सीताबर्डीही रखा जाय । शेगाँव न जाने दिया जाय । जैसा अक्रूर ने भगवान कृष्ण को व्रजसे मथुरा ले जाकर रखा, ऐसाही प्रसंग यहाँ हुआ । शेगाँव सूना पड गया । सब लोग हरी पाटील से प्रार्थना करने लगे कि, महाराज को यहाँ लाओ । जैसे शरीर में से प्राण चले जानेपर शरीर प्रेत हो जाता है, वही अवस्था शेगाँव की होई गई । आप गाँव के अधिकारी हो । बुटी बडा साहुकार है, हमारी दाल उसके सामने नहीं गल सकती । क्योंकि हाथीही हाथी से टक्कर ले सकता है । वहाँ सियार की गति नहीं चलती । जैसे लन्का में जम्बुमालीसे लडनेके लिए हनुमानजी ही योग्य थे और कर्णको जितने के लिये अर्जुन ही योग्य था, सो आप नागपूर जाकर महाराज को लाकर सबको आनंदित करिये । इधर महाराज भी बुटी के घर मे विमनस्क ही थे । जैसे हस्तिनापूर में श्री कृष्ण प्रसन्न नहीं था । महाराज बुटीसे बोले, " हमे शेगाँव जाने दो । इस विशाल भवन में मत रोको" । किन्तु बुटी उस बातकी ओर कोइ ध्यान न देकर टालता जाता था। वह भक्त जरूर था किन्तु उसका घमंड गया नहीं था । वह वहाँ पर प्रतिदिन ब्राह्मण को भोजन करवाता ।

शेगाँव के लोग वहाँ दर्शन को जाते तो उन्हें जाने न देता । क्योंकि धनिकों के घर अनुज्ञा बिना कोई जा नहीं पाता । शेगाँव के कई लोग महाराज को लाने गये किन्तु उनका कोई उपाये न चला । इधर हरी पाटील कुछ लोगों को साथ लेकर महाराज को लाने शेगाँव से निकले । उसी समय नागपूर में महाराज बुटीसे बोले, " अरे गोपाल !

हरि पाटील शेगाँव से हमे लेने निकल पडा है, उसके यहाँ आनेसे पहले हमें जाने दो, यहाँ आनेपर शांती नही रहेगी, क्योंकि वह ठहरा अधिकारी वह बाहुबल से ले जायगा" । हरि पाटील वहाँ पहुंचे तब पहरीवाले सिपाही ने उन्हे रोका किन्तु उसकी परवाह न करके वह महल में प्रविष्ट हो गया । उस समय ब्राह्मण भोजनके लिये ब्राह्मण लोग वहा महल मे आये थे । सबको चांदी की थालीयां और द्रव्यपदार्थोंके लिये चांदी की कटोरीयां रखी गई थीं । बैठनेके लिये सिसम लकडेके पीढे डाले गये थे । नाना प्रकार के पदार्थ भोजनमें थे । मध्यस्थान में महाराज को पीढेपर बिठाया था । इस प्रकार बुटिकी धनाढ्यता का वर्णन मैं कहांतक करूं ? उस समय उसे नागपूर का कुबेर कहाँ जाता था । जब हरि पाटील भवनमें महाराज को लेने पहुंचे तो महाराज दौडते हुये उससे मिलने दरवाजेपर आये । जैसे गाय बछडेके लिये दौडती है । और बोले," हरी ! चलो शेगाँव चलते हैं । यहाँ मुझे बिल्कुल नहीं रहना है । तुम मुझे ले जाने आये , ये बडा अच्छा हुआ" ऐसा कहकर समर्थ जाने लगे, जो देखकर बुटीने चरण पकडकर प्रार्थना की, "गुरुदेव ! इस प्रकार कार्य का विक्षेप न करें । दो कौर भोजन करके फिर इच्छित स्थल को जाय ।" और हरि पाटील से विनय पूर्वक प्रार्थना की " आप भी प्रसाद ग्रहण करके फिर जांय । आप ही मेरी लज्जा की रक्षा कर सकते हैं । यदि समर्थ अभी ही चले गये तो सब लोग बिना भोजनके चले जायेंगे और पूरे नागपूर में मेरी निंदा होगी ।" उस प्राथना को स्वीकारकर महाराज भोजन होने तक वहाँ रुके । महाराज के साथ शेगाँव के सब लोग पंगत में बैठे । भोजनोत्तर जाने की तैयारी की गई । उस समय दर्शनार्थियों की बडी भीड हुई । बुटिकी पत्नि, जिसका नाम जानकीबाई था, वह परमभाविक थी उस ने महाराज के चरण पकडकर प्रार्थना की, "महाराज! मेरा मनोरथ मन के मनमे ही रह जाना चाहता है ।" सुनकर महाराज ने उसके मस्तक पर कुंकूम तिलक किया और कहाँ , " मैंने तेरा मनोरथ जान लिया । तुम्हे एक परम सदगुणी पुत्र होगा और अन्त मे तुम सौभाग्यवती ही वैकुंठ को जाओगी । इस प्रकार का आशीर्वाद देकर दयाधन सिताबर्डी से निकल कर रघुजी भोसले के यहाँ जानेको निकले ।

यह रघुजी भोसले बड़ा उदार मन का राजा था, जिसने अपने शुद्ध आचरण से भगवान राम को प्रसन्न रखा था । उसका लौकिक राज्य जो की अशाश्वत होता है, चला गया था किन्तु अलौकिक सदगुरु भक्तिरूप राज्य शाश्वत उसके घर था । उसके महाराजका उत्तम प्रकार का सत्कार यथावत किया । पहुँचाई की । तदनन्तर महाराज रामटेक को गये । वहाँ श्रीरामचन्द्र का दर्शन करके हरी पाटील के साथ शेगाँव के मठ आ गये ।"

धार कल्याण के रंगनाथ स्वामी जो मोगलाई के प्रसिद्ध संत थे, शेगाँव में महाराज को मिलने आये । उन दोनों सांकेतिक रूपसे अध्यात्म चर्चा की , जो जानना लौकिक लोगोंको असम्भव था। श्री वासुदेवानंद सरस्वती, जिनकी किनारेपर बड़ी प्रसिद्धी है । जिनका जन्म के माणगाँव नामक स्थान में हुआ था, उनके आनेके पहले महाराज बालाभाऊसे कहाँ ! " अरे बाला ! कल प्रातः काल मेरे एक बंधू मुझसे मिलने आ रहे हैं । उनका आदर करना । वो बड़ेही कर्मठ है, सो मार्ग में चिंधी न रखना सब परिसर स्वच्छ रखो । यदि कहीं चिंधी दिख गई तो वे क्रोधित होंगे । वो साक्षात् जमदग्नि की दूसरी प्रतिमा है । वह बड़ा शुचिर्भूत, ज्ञानसंपन्न कन्हाडा ब्राह्मण है । कर्मठता ही उसका कवच है । " इस प्रकार का निर्देश बालाभाऊ को पहले दिन ही महाराज ने रखा था । साधारण एक प्रहर के समय वासुदेवानंद सरस्वती मठ में पहुंचे । एक दूसरे को देखकर दोनों हंसे और दोनों को बड़ा आनंद हुआ । एक कर्मकाण्ड का सागर तो दूसरा योगयोगेश्वर । एक सुंदर मोगरा तो दूसरा गुलाब वृक्ष । एक भागीरथी गंगा तो दूसरा गोदावरी । एक साक्षात् पशुपति शंकर तो दूसरा शेषशायी नारायण ।

जब स्वामी मठमें पहुंचे तो गजानन महाराज पलंगपर चुटकी बजाते हुए बैठे थे । उनके आते ही चुटकी रूक गई । दोनों की दृष्टादृष्ट हुई तो स्वामीने जाने की अनुमती मांगी । गजानन महाराज ने संमही सूचक गर्दन हिलाई और

संकेत पाकर स्वामी चले गये । स्वामीके चले जानेपर बाल भाऊ को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, " गुरुदेव ! यह देखकर मेरे मनमें शंका निर्माण हुई है, जिसका निराकरण करिये । इन वासुदेवानंद का मार्ग अत्यंत भिन्न है, फिर आप इन्हें बन्धु कैसे कहते हैं ?" यह प्रश्न सुन कर महाराज बोले," तुने बड़ा अच्छा प्रश्न किया है । ईश्वर के तरफ जाने के तीन मार्ग हैं । ये तीनों मार्ग ज्ञानरूपी गाँव में जाकर मिलते हैं । हे राजस ! देखनेवाले को ये तीनों भिन्न दिखाई पड़ते हैं । वहीपर गडबड होती है । शुचिता शुचिता संध्या, स्नान-व्रत-अनुष्ठान तथा उपवासादि कृत्य कर्ममार्ग है । इन अंगोंका पालन करनेवाला पृथ्वीपर कर्मठ ब्रम्हावेत्ता कहलाता हैं । इनमें यदि न्यूनधिक होता है तो यह मार्ग नहीं साधता अतः बड़ी सावधानी से आचरण करना चाहिये ।

इसमें और सावधानी यहाँ बर्तनी है, कि कभी दूसरे को दुरुत्तर नहीं करना चाहिये । अब भक्तिमार्ग के लक्षण बताता हूँ, सो सुनो । भक्तिमार्ग का आचरण करनेवाले का चित शुद्ध होना चाहिये । थोड़ा भी मन मालीन्य भक्तिमार्ग में नहीं चलता । क्योंकि यदि मन मलीन हो ति भक्ति रहस्य क पतन हो जाता है । इसमें सब प्राणीओंपर दया-भगवदचरण में लीनता, श्रवण, पूजनमें श्रद्धा, मुखसे भगवाननाम का जप, यह सब भक्ति मार्ग के अंग हैं । इनका जो सांग आचरण करते हैं उन्हें ही भगवत दर्शन होता हैं । यह अत्यंत सरल मार्ग है । दूसरे किसी मार्ग से इसकी तुलना नहीं की जा सकती किंतु आचरण करना अत्यंत कठिन हे क्योंकि ये कर्ममार्ग से भी कठिन है । जैसे आकाश का सानिध्य नेत्रो को दिखता है । पर वह सन्निध नहीं । अब तीसरा योगमार्ग बताता हूँ, सुनो ! योगमार्ग का विस्तार इन दोनों से अधिक है । परंतु ये विस्तार जहांके वहाँ रहता है । योग साधना के लिये बाहर से कुछ नहीं लेना पड़ता । जो ब्रम्हाण्ड में है वही पिण्ड में है । सो पिण्ड के साहित्यसे ही योगसाधन करना चाहिये । आसन-प्राणायाम के अंग पूरक-कुंभक-रेचक । इडा पिण्डला के भेद, धौती तथा मुद्रादि, त्राट्कादि जानना आवश्यक है ।

कुंडलीनी तथा सुषुम्णा मार्ग रथ चक्रों का ज्ञान योग के साधक को हो तो ही योग साधन हो सकता है । इन तीनों मार्गों का अन्तिम फल ज्ञान ही है । किन्तु वह ज्ञान केवल शुष्क ज्ञान नहीं, बल्की प्रेमयुक्त अर्थात् रसयुक्त होना चाहिये भगवान व्यास भागवत में कहते हैं" ।

"नैष्कर्म्य मप्यच्युतभाव वर्जितम् ।"

न शोभते ज्ञान मलनिरंजनम् ।

जो जो कृत्य प्रेमरहित है वह केवल श्रम मात्र हैं अतः तीनों मार्ग मे प्रेम आवश्यक है । कृष्ण-गौर-ऊंचा-बौना-सुन्दर, कुरूप आदि उपाधियां शरीर कि हे । आत्मा को इनकी बाधा नहीं । इसी प्रकार इन तीनों की स्थिती है । यद्यपि इनके बाह्य स्वरूप भिन्न है परंतु इनका मूलस्त्रोत एकही है । जैसे गन्तव्य स्थानपर पहुंचनेपर मार्ग का विचार नहीं रहता । मनुष्य जिस मार्ग पर चलता है उसे वही महत्वपूर्ण लगता है । पंथ चलने लगा, किन्तु लक्ष्यपर नही पहुंचा ऐसे लोगोंका ही संप्रदायभीमान से-पंथभिमानसे होता है । इन तीनों मार्गपर चल कर लक्ष्य पर पहुँचने वाले संत होते है । उनमें फिर द्वैत नहीं रह जाता । जैसे पुष्पदन्ताचार्य अपने महिमन में कहते है ।

"त्रयिसांख्ययोगः पशुपतिमतंवैष्णवमिति ।

प्रभिन्ने प्रस्थाने परिमिद मदः पथ्यमिति च ॥

रूचीनां वैचित्र्याद्जुकुटिल नाना पथजुषां ।

नृणामेको गम्य त्वमसि पयसांमर्णव इव ॥"

अर्थात् वेदन्नयसांख्य पाशुपतमत-वैष्णवमत-इस प्रकार के भिन्न भिन्न प्रस्थान केवल भिन्न भिन्न मार्ग मात्र है । भिन्न भिन्न रूचिवाले लोगों के सीधे और टेढ़े मार्ग रूची के कारण है । किन्तु सबका गन्तव्य स्थान एक ही होता है । जैसे सरल और वक्र मार्ग से बहनेवाली नदियाँ अन्त में समुद्रमेंही जाकर मिलती है ।

वसिष्ठ, वामदेव, जमदग्नि, अत्रि, पाराशर, शांडिल्य ये महर्षि कर्ममार्ग से गन्तव्य स्थानपर पहुंचे । व्यास-नारद-प्रह्लाद-हनुमान-शबरी, अक्रूर, उद्धव, सुदामा-अर्जुन और विदुर ये भक्ति मार्ग से भगवान को प्राप्त हुए । गुरुवर्य शंकराचार्य-मछिंद्रनाथ - गोरखनाथ-जालंदरनाथ- ये योगमार्ग से चढे । जो लाभ वशिष्ठ को हुआ वही विदुर को हुआ । मछिंद्रने भी वही भोगा । अतः फलमें फरक नहीं । इस प्रकार की प्रथा आगे चली वही कर्ममार्ग की प्रथा का रक्षण श्रीपादवल्लभने किया । यतिवर नरसिंह सरस्वती ऐसे ही आचारयुक्त हो गये जिनका स्थान गाणगापूर में है । बाडी-औंदुबर जगद्विख्यात है । नामदेव-सावता-ज्ञानेश्वर सेना कान्हू चोखा महार- थानेदार दामाजीपंत भक्तिमार्ग से गये । श्रीगोंदा में शेख महंमद, जालना में आनंद स्वामी, सुर्जी अंजनगाँव में देवनाथ योगमार्गी है । ऐसे ही वासुदेवानंद सरस्वती कर्म मार्ग में रत हैं । मैंने और कई अन्य लोगोंने भक्ति मार्ग का आश्रय लिया है । पळुसके धोंडिबाबा सोनगीर का नाना-जालनाके यशवंतराव इनको भक्ति मार्ग साध्य हुआ । देखो, चांदुर तालुकेका वरखेड गाँव का आडकुजी नामक संत इसी मार्ग से गया । मुन्हा गाँव के संत शिरोमणी झिंगाजी, उसी प्रकार नागपूर के ताजुद्दीनबाबा भक्तिमार्गसे गये । इन सब संतोंको आचरण भिन्न प्रकारका है । किन्तु ये सब कैवल्य के अधिकारी हुए । मार्ग चाहे कोई भी हो, उसको महत्व नहीं है । जो लक्ष्यको प्राप्त कर लेता है वह कौतुकास्पद है । हम सब बंधु पृथ्वीपर भाविकों को कैवल्यमार्ग दर्शनके लिये ही आये हैं । जिसको जो अच्छा लगेगा वह उधर से जाएगा और मोक्षरूप फल प्राप्त करेगा, उस पंथ का आचरण करके अब कुछ मत पूछना । यह किसीको मत बताना । हमें शांती से यहाँ बैठने

दे । पागलपनी आडमे जिनकी निष्ठा मुझपर होगी वह मेरा होगा । उसीका कार्य होगा औरोकी हमे आवश्यकता नही है । जिसको वैराग्य हुआ है उसीको ब्रम्हज्ञान\_बताना चाहिये । चावट और तर्कट को बतानेमें कोई लाभ नहीं । किसी को कुछभी बोलने दो स्वयं शांत बैठना चाहिये तभी जगदगुरु, जगदात्मा, जगन्नाथ मिलते हैं।" यह उपदेश सुनकर बालाभाऊ के नेत्रोंमे अश्रुधारा बहने लगी । सारा शरीर रोमांचित हो गया । प्रेमाश्रुओं की बाढ बहनेसे रोक न सका । अष्टभाव उत्पन्न हो गये और मनही मन उसने महाराज को प्रणाम किया और वैखरी वाणी का कार्य समाप्त हो गया । वह जान गया कि, सदगुरु गजानन बराड का उद्धार करनेके लिये प्रगट हुए हैं ।

काण्वशाखा की सालुबाई नामक एक ब्राह्मणी महाराज की भक्तानी थी । एक दिन महाराजने उसे कहां, 'सालु, आटा और बेसन लेकर तूं रातदिन रसोई करके आनेवालों को भोजन कराओ । इसीसे तुम्हें भगवान नारायण प्राप्त होंगे ।' यह सालुबाई मठ में अभी तक है । इसका मायका बैजा पूरका है। वहाँ पर उसके वाडे-घोडे हैं । प्रल्हाद जोशी को कृपाका योग आया था किन्तु उसके दुर्भाग्य से वह उसे नहीं फला ।

खामगाँव के पास जलम नाम का गाँव है । तुलसीराम नामक एक व्यक्ति वहाँ का रहनेवाला था । आत्माराम नाम का उसका पुत्र बडा कुशाग्र बुद्धिका था । उसे वेदाध्ययन में बडी श्रद्धा थी । वह वेद वेदाङ्गके अध्ययन के लिये भागीरथी किनारे स्थित धर्मपीठ काशी गया । प्रतिदिन भागीरथी का स्नान करता, माधुकरी भिक्षान्न का सेवन कर गुरुगृह श्रुतियों के अध्ययन को जाता था । श्रोतागण ! विधार्थी प्रायः देखा जाता है, कि विद्यार्जन लिये विदेश जाते हैं ओर वहाँ विद्या के बजाय विलास करते हैं और विद्या के बारेमे कहाँ है

सुखार्थी वात्यजेद्विद्यां ।  
विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम् ॥

सुख भोगना है तो विद्या छोड़ दो और विद्या लेना है तो सुख छोड़ दो । क्योंकि विलास से भला विद्या कैसे प्राप्त होती है ? जैसे सड़े आम से रस नहीं होता । किन्तु आत्माराम उन विद्यार्थियोंमेंसे नहीं था । वह बड़ा विवेक संपन्न था । उसने विद्याध्ययन पूर्ण कर वह अपने देश आया । यहाँ आते ही वह शेगाँव के महाराज के पास अपनी उपस्थिति जताने आया । उसे बड़ा हर्ष हुआ, वह वेदविद था, तो महाराज गजानन ज्ञान सविता थे । वह महाराज के सन्निध वेदसंहिता का पारायण करता , वह कहीं कहीं त्रुटी करता तो सदगुरुमूर्ति तत्काल उसकी त्रुटी सुधारते और आत्मारामके साथ वेद पारायण करते । महाराज का वेदोच्चारण सुनकर विद्वान तन्मय हो जाते क्योंकि जौहरी के बजाय हीरेकी परख नहीं होती । विद्वान ही विद्वानकी महत्ता जानता है । अन्तमें आत्माराम महाराज के पास ही आदरपूर्वक रह गया । भला मधुकोष छोड़कर मधु मक्षिका कहीं अन्यत्र जा सकती है ? प्रतिदिन सेवाके लिये वह आता और एक दिन भी त्रुटी नहीं कि ऐसा वह एकनिष्ठ भक्त था । समर्थ के समाधिस्थ होने के बाद समाधिकी पूजा अर्चाका कार्य मठमे बिना किसी अपेक्षा से बिन वेतन करता रहा। अन्तमें उसने अपनी संपत्ती महाराज को समर्पित की, अर्थात् संपत्ति कुछ विशेष नहीं थी, थोड़ीसी जमीन और घर । यहाँ मूल्य का सवाल नहीं है, मनकी उदारता और विवेक का महत्व है । जैसे शबरी भिलनीने भगवान रामको जुंठे बेर देकर वश किया, वही भाव यहाँ है ।

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

महाराज को सर्वस्व समर्पण करने वाले भक्तोंमें दत्तात्रेय केदार स्वामी, दूसरा नारायण जामकर जिनका केवल दुधही आहार था, ये स्वामीके एकनिष्ठ भक्त थे ।

इन्होंने अपना तन मन धन स्वामीको समर्पित किया । बालापूर तालुके में मोरगाँव भाकरे नामक गाँव है । वहाँ का रहनेवाला मारुती नामक पट्टवारी था उसका थोडा वृत्तान्त बताता हूँ । इस मोरोपंत के खेत में पीकका संरक्षण करनेके लिये तिमाजी नामक रखवाली था । वह एक बार खलीहान में गहरी नींद में सो गया । दोपहर बीतनेपर कोहारके गधे दस बीस खलीहान में आकर अनाज की राशी में मुह डालकर खाने लगे । वह जवारकी रास थी । यह मारोती पंत , महाराज का बडा भक्त था । अतः सदगुरु को लिला करना आवश्यक थी । क्षणभरमें मोरगाँव जाकर उन्होंने तिमाजी को पुकारा । ' अरे रास में, गधे जवार खा रहे हैं, जल्दीमें उठो' । ऐसा जोरसे बोलकर तिमाजी को उठाकर महाराज अंतर्धान हो गये । तिमाजीने उठकर देखो तो गधे रासमें लगे अनाज खा रहे थे । सो बडा घबराया की अब मालिक क्रोध करेगा । मुझे रक्षाके लिये रखा है और आज तो उसका विश्वासघात हो गया । मैं सो गया और आधी रास गधे खा गये । अब मैं मालिक को कैसे समझाऊंगा । उस जमाने में सेवक नीतिवान हाते थे । उन्हें नितीका बंधन था । आजके सेवक केवल वेतनधारी है । नीतिमान लवलेश नहीं । मालिकके लाभ हानीकी उन्हे कोई परवाह नहीं होती । तिमाजीने सोचा मालिक को सत्य निवेदन करूंगा और गलती के लिये क्षमा याचना करूंगा । ऐसा सोचकर वह प्रातः गाँव में आया और मोरोपंत के पैर पकड कर कहने लगा । महाराज , मुझे नींद लग गई उसमें बडा अनर्थ हो गया । दस बीस गधोंने रासमेंसे अनाज खा लिया । कितना नुकसान हुआ यह चलकर देखिये तो मुझे सन्तोष होगा । यह सुनकर मारोतीने कहाँ ! इस समय खलिहान आनेके लिये मेरे पास तिलभर भी समय

नहीं है । मैं शेगाँव महाराज के दर्शनार्थ जा रहा हूँ । सदगुरुके दर्शन करूंगा और कल सुबह खलिहानमें आऊंगा तब देखूंगा ।

ऐसा कहकर मारोतीपंत शेगाँव आया और दर्शनको मठ में गया । प्रातः दस ग्यारह का समय था । महाराज अपने आसन पर बैठे थे, सामने जगू पाटील और उनके पासमें भगत बालाभाऊ हाथ जाडे बैठा था । मारूतीने जब दर्शन लिया तो महाराज ने हसकर कहाँ ! 'अरे तुम्हारे लिये मुझे रातको त्रस्त होना पडा । तुम लोग मेरे भक्त बनते हो और मुझे काम मे जोतते हो । सोनेवाला नोकर रखते हो और स्वयं आराम से घर सोते हो । कल रात को तिमाजी रात को खलिहान मे सो गया । गधे रास खाने लगे तब मैंने तिमाजी को जगाया और रास रक्षा करने को कहकर शेगाँव आया ।" यह सुनकर मारोती ने महाराज के चरणोंपर सीर रखकर कहाँ," भगवन, हम लोगों को तो आपका ही आश्रय है । बालपन में सब बोझ मातापर होता है । आपके बजाय दूसरे किसीको सत्ता नहीं है । प्रभो ! जो कुछ भी हमारा है वह सब आपका ही है । खलिहान और ज्वार -तथा तिमाजी रखवाला केवल व्यवहार दृष्टि से है । आपतो सारे ब्रहाण्ड का संरक्षण करनेवाले हो । माता बालकों का संरक्षण करती है । मैं आपका बालक हूँ इसी कारण मोरगाँव जाकर आपने खलिहान में रास का संरक्षण किया । हे स्वामी ऐसीही कृपा मुझपर सदैव रखिये । मैं उस तिमाजी को सेवा से निकाल देता हूँ । मारोती के इस प्रकार कहने पर महाराज जी बोले, " अरे पागल ! तिमाजी को नौकरी से बिलकुल नहीं निकालना । उसका रहस्य यह है कि वह बडा नितीवान है । वह खलिहान में गधों को देखकर बडा दुःखी हुआ, यह मुझे तभी पता चला था । प्रातः काल वह डरते डरते तुम्हें वृतांत बताने आया तो तुमने कहाँ शेगाँव से आनेपर खलिहान आऊंगा" । यह सुनकर मारोतीको बडा सन्तोष हुआ । श्रोतागण देखिये संत अंतरज्ञान से सब कुछ जान लेते है ।

शके अठारसौ साल में एक वृतांत बालापुर में हुआ सो बताता हूँ । बालापुर में बन्सिलाल सुखलाल की एक बैठक थी । उसके सामने महाराज आनंदपूर्वक बैठे थे । शरीर पर वस्त्र नहीं था , सम्पूर्ण दिगम्बर थे । भाविक जन नमस्कार कर के जा रहे थे । वह प्रमुख मार्ग था - बज़ार का । उस मार्ग से एक पुलिस हवलदार जा रहा था । उसका नाम था नारायण आसराजी । समर्थ को देख कर उसका सिर् चकरा गया, वह कहने लगा ,'नंगा धूत बैठा है , यह साधू नहीं भोंदू है, जानबूज कर रास्ते के बिच बैठा है । ऐसा कहकर वह महाराज के समिप गया और आँयबाँय बकने लगा । नंगे बैठे हो , तुम्हें लज्जा नहीं आती ? इसका मजा मैं चखाता हूँ , कहकर महाराज को छडीसे पीटने लगा । छडीमार के चिन्ह पीठ और पेट पर उठ आये किन्तु वह हवालदार मारने से न रुका। यह देखकर एक गृहस्थ दौड़कर वहाँ आया, जिसका नाम हुंडीराम था। उसकी दुकान वही थी। वह कहने लगा, " हवलदार, बिना काम के सत्पुरुषपर हाथ उठाना ठीक नहीं है । इसका विचार करो । संतों का संरक्षण स्वयं भगवान विष्णु करते है । क्या तुम्हें मार के चिन्ह दिखाई नहीं पडते ? इस कृत्यसे ऐसा लगता है कि तुम्हारा अंत समय आ गया है, क्योंकि रोगी मरण समय पथ्य का उल्लंघन करता है । आज जो भी तुने किया है वह ठिक नही किया, अब तो भी क्षमा प्रार्थना कर । तब हवलदार ने उत्तर दिया की क्षमा याचना की कोई आवश्यकता नहीं, कौएके शापसे कही जानवर मरता है ? यह नंगाधूत बिच बजारमे बैठकर मुहसे वाचाल बात करता है । ऐसे ढोंगीयों का यदि ईश्वर अपराध माने तो फिर न्याय के लिये जगह नही रहेगी । आगे यही सत्य हुआ, हवलदार बालापुर मे पंचत्वको प्राप्त हुआ । इतनाही नहीं उसके जितने आप्त थे वो भी एक पक्षमे भस्म हो गये ।

इसीलिये साधु की पहचान हुए बिना बडा सम्हलकर व्यवहार करना चाहिये ।

नगर जिले में प्रवरा नदीके किनारे संगमनेर नामक एक नगर है । यह बड़ा सुंदर नगर है । जिसका वर्णन मैं नहीं कर सकता । यहाँ पर अनंत फंदी नामक कवि हुए । यहाँ पर जाखडी नाम का माध्यंदिन यजुर्वेद शाखा का एक ब्राह्मण रहता था । वह गाँव गाँव में फिरकर अपना पेट पालता था । वह घूमते हुए शेगाँव आया और समर्थ के दर्शन के लिये मठ में गया । दर्शन करके वह उनके चरणोंके पास बैठा । हजारों लोग दर्शन को आते । कोई ब्राह्मण भोजन कराकर, कोई शक्कर बाँट कर संकल्प पूरा करते । यह देखकर हरि अपने मनमें सोचने लगा, ये ज्ञान सागर है । इनके चरणों के सन्निध आकर भी मुझे विन्मुख जाना पड़ेगा, क्योंकि मेरा भाग्य कठिन है । मेरा दैव ही पत्थर है, फिर उसपर दूर्वा कहाँ से उग सकती है ? आज भोजन प्राप्त हुआ , कल का भरोसा नहीं ऐसी अवस्थामें ही आजतक मेरा जीवन बीता । मेरेपास धनसंग्रह नहीं , खेतीबाड़ी या मल्ला नहीं । मैं विद्वान भी नहीं हूँ, सो मुझे कौन अपनी कन्या देगा ? "हे गजानन स्वामी, सच्चिदानंद, दयानंद, मेरी संसार सुख की वासना बलवत्तर हो गई है, वह आप पूरी करें । पहले मुझे पत्नि मिले, बाद में उसे बालबच्चे हो वे सब आज्ञाधारक हो । ऐसी इच्छा करते ही महाराज ने उसके ऊपर थूँक दिया । मनमें महाराज ने सोचा, रसाल वृक्ष खोदकर इसने मुझसे बाँवची (कंटेरी) मांगी । इसीलिये इस मूर्खपर थूँकना पड़ा । लोग संसार के छुटनेपर मेरे पास आते हैं, इसने यहाँ आकर संसार सुख मांगा । क्या उल्टी रिती है संसारकी! सब संसार चाहते हैं, सच्चिदानंद की प्राप्ति कोई नहीं चाहता । बादमें जाखडयासे बोले,' तुमने जो जो इच्छा की वह सब तुम्हें प्राप्त होगी, थोड़ा धन संग्रह भी होगा । पुत्र पौत्र होंगे । अब घरपर जाओ , संसार करो और संसार में परमेश्वरको स्मरण रखो उसे भूलो मत' ऐसा कहकर प्रसादरूपमें उसे थोड़ा धन दिया। बादमें हरि जाखडया संगमनेर में सुखी संसारी हुआ । भला संतवचन मिथ्या कैसे हो सकते हैं ?

ऐसे ही रामचंद्र गोविंद निमोणकर नामक ओवरसीयर थे । उनके साथ बासुदेव बेन्द्रे नाम का सर्व्हेअर था । ये दोनों मुकना नदी पर आये । यह मुकना नाला सहयाद्री पहाड़ में नासिक जिले में ईगतपुरी तालुके में है । यहाँ की वनश्री बड़ी संपन्न है । बड़ी सुन्दर है । मैं उसका वर्णन कैसे करूँ? मृग शावक निर्भय होकर यहाँ के जंगलमें विचरते हैं । फलों से लदे वृक्ष झुके हुए हैं । वन्य पशु, चीते, सियार तथा पक्षी यहाँ विचरण करते हैं । इस मुकना नाले के एक जल धाराको " कपिला धारा" कहाँ जाता है । यहाँ पर पर्व काल में भाविक जन स्नान करने आते हैं और आसपास में यह तीर्थस्थल प्रसिद्ध है । विद्वज्जन् ऐसेही एक पर्वणी में निमोणकर यहाँ स्नान करने आये । इनको थोड़ा योग का अभ्यास था । इनकी इच्छा वह पूर्ण करने की थी सो वहाँ के जोगी बैरागीयों से ये योग का रहस्य पूछने लगे । जिनसे पूछते वह नकार देता , जिससे निमोणकर हताश हो गये । मनमें सोचने लगे , हे भगवान, ऐसा कौन मिलेगा, जो मेरा योगाभ्यास पूर्ण करायेगा । ऐसा विचार करते समय " कपिलाधारापर" उन्हें एक पुरुष दीख पडा, जो अधिकारी जान पडता था, जो आजानुबाहु था । उंचा तथा शांतमुद्रा युक्त था । वह ध्यानस्थ बैठा था । उसे देखकर निमोणकर ने दंड प्रणाम किया । बहुत समय बीत गया किन्तु वह योगी कुछ बोलता नहीं था ।

अस्त समय समीप आ गया । पेट में तिल भर भी अन्न नहीं था, डेरा तो बड़ी दूर था । ऐसे समय कपिलाधारा मे तुंबा दुबोकर जलभरकर गुसाईजी चले । यह देखकर निमोणकर बोले, महाराज, मेरा कितना अन्त देखोगे ? यदि आपको कुछ योगक्रिया का ज्ञान है तो मुझे सिखईये । सो अस्त समय कैवल्यदानी ने एक चित्रपट देखकर कहाँ," ये ले जाकर अपना काम करो । इसपर षोडशाक्षरी मंत्र लिखा है, वाणी से उसका जप करते रहना । जप से तुम्हें थोड़ा योग का ज्ञान होगा । योगमार्ग सब मार्गों में अत्यंत कठिन है । क्या घोंघा हिमालय को वेष्टनकर सकता है ? शक्ति क्या मेरु चढ सकती है ? बडे कठिनता से यदि यत्न करोगे तो दस पाँच आसन आयेंगे । ब्रम्हाचर्य का

पालन करोगे और नेती, धौती क्रियाये करोगे तो थोड़ी प्राप्ती होगी । जाओ, अब जादा मुझसे न पुछो ।" ऐसा कहकर एक लाल पत्थर उसको दिया और वे अंतर्धान हो गये । वेही बाद मे नासिक में गोदावरीपर मिले, जिन्हे देखकर निमोणकर ने चरणोपर मस्तक रखकर प्रश्न किया," महाराज, आपने इस प्रकार मुझे क्यों टाला? आपने अपना नाँवगाँव कुछ नहीं बताया । सुनकर आँखें तरेरकर महाराजने उत्तर दिया," अरे लाल पत्थर देकर मैंने अपना नाम तुम्हें बताया । नर्मदाका गणपती लाल होता है । तू मुलतः जडबुद्धि है जिससे रहस्य न जान सका, इसी कारण तुम्हें पता नहीं चला, मेरा नाम गजानन है, मैं शेगाँव का रहनेवाला हूँ । धुमाल के घर तक तुम मेरे साथ चलो । वहाँ तुम्हे मैं फिर मिलूंगा" ऐसा कहकर महाराज अदृश्य हो गये । निमोणकर चारों ओर देखने लगा किन्तु महाराज कहीं भी दिखाई नहीं दिये । अन्तमें श्रान्त होकर धुमाल के घर आये, तो देखा कि गजानन महाराज धुमाल के घर के बरामदे में बैठे हैं । तब उन्होंने मौनसे ही महाराज की वन्दना की और धुमाल को कपिलाधारासे यहाँ तक का वृत्तान्त बताया ।

सुनकर धुमाल को बडा आनंद हुआ और उसने कहाँ की, महाराज सर्व सामर्थ्य के सागर हैं भला इन योगीराज को वस्तु कमी है । इनकी सत्ता के आगे सार्वभौम सत्ता की भी कोई कीमत नहीं । तुम्हें महाराज ने जो लाल पत्थर दिया है उसको पीढेपर स्नान पूजन-अर्चन सदुभावसे किया करो उसके सामने ही योगाभ्यास किया करो । उसकी कृपा से थोडा बहुत योगाभ्यास सिद्ध होगा । आगे चलकर वही बात सत्य हुई । गजानन महाराजकी कृपा से निमोणकरको योगाभ्यासमे थोडी बहुत सिद्धी प्राप्त हुई ।

शेगाँव में तुकाराम कोकाटे नामक व्यक्ति थी। उसके बच्चे जन्म लेते ही मर जाते थे। यह देख कर उसने समर्थ के पास संकल्प किया। गुरुदेव, यही आप दीर्घायु संतती दोगे तो एक लड़का मैं आपको अर्पण करूँगा। गजानन महाराज ने उसका मनोरथ पूर्ण किया। उसको दो-तीन बच्चे हुए और वे जीवित रहे। किन्तु कोकाटे को अपने संकल्प का स्मरण न रहा। दूसरे संतती का मोह भी था। उसका नारायण नामक बड़ा लड़का व्याधिग्रस्त हो गया। बहुत औषधी देनेपर भी उसे स्वास्थ्य नहीं मिला। नाड़ी मंद होने लगी। नेत्रतेज क्षीण हो गया। उसकी छाती की किंचित धड़कन शेष थी अर्थात् वह मृतप्रायः हो गया। ऐसे समयमें तुकाराम को अपने किये हुए संकल्प का स्मरण हो आया। उसने प्रार्थना की, गुरुदेव यदि यह मेरा पुत्र अच्छा हो गया तो आपकी सेवामें इसे अर्पण करूँगा। ऐसा वचन उच्चारते ही नाड़ी ठीक हो गई। उसने धीरे-धीरे नेत्र खोले और वह देखने लगा। उसकी व्याधि ठीक हो गई। वह अच्छा हो जानेपर नारायणको मठापर लाकर संकल्पानुसार उसे महाराज को समर्पित किया।

ये नारायण अभितक मठ में सेवाधारी है। सौ महाराज के पास किया हुआ संकल्प अवश्य पूरा करना चाहिये। यह बतानेके लिये ही नारायण अभितक जीवित है। यह संत चरित्र है, कल्पित कादंबरी नहीं।

आगे आषाढ मास में गजानन महाराज विठ्ठल को मिलने पंढरपूर हरि पातीलके साथ गये। वही सब संतों का ध्येय (ध्यान का विषय) है। भक्तों कल्पवृक्ष है। पंढरपूर आनेपर चन्द्रभागा में स्नान करके विठ्ठल दर्शन को गये। जो जगताधिष्ठान जगत्पति है। वेद जिसका निरंतर गुणगान करते हैं, जो रूक्मिणी दयाधन संतोंके हृदय में रहता है, उसके दर्शन करके महाराज प्रार्थना करने लगे, " हे पंढरीनाथ ! हे अचिन्त्य अद्वय ! हे भक्तों के परमेश ! मेरी बिनती सुनिये, आपकी आज्ञा से मैं आजतक भूमीपर फिरता रहा। जो जो भाविक जन थे उनके मनोरथ

पूर्ण किये । अब मेरा अवतार कार्य पूर्ण हो गया है, सो मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये, ये आप जानते है । मैं भाद्रपद महिनें में आपके चरणों के समीप अक्षय निवास के लिये वैकुंठ को जाना चाहता हूँ ।" ऐसी प्रार्थना कर्के समर्थ ने हाथ जोडे । विरह असहाय होकर महाराज के नेत्रों मे अश्रु आ गये । यह देखकर पास में खडे हरि पाटील ने पूछ, " गुरुदेव ! आपके आँखों में आँसु क्यो आये ? क्या मुझसे सेवामें कोई गलती हुई ? जिससे आपको खेद हुआ ।" इसपर हरि पाटील का हाथ पकडकर महाराज बोले," चलो ! यह गहन रहस्य है । तुम्हे बतलानेपरभी तुम समझ न पाओगे । इतनाही बताता हूँ कि, अब मेरा साथ थोडा है । चलो, शेगाँव चलो, जहाँ अपना स्थान है । तुम्हारे पाटील वंश को कभी कमी नहीं पडेगी"। इस प्रकार पंढरपूर तीर्थ करके हरी पाटील के साथ महाराज शेगाँव आये । किन्तु हरि पाटील का मन चिन्ताग्रस्त हो गया । वह सब लोगोंसे बोला की ' महाराज ने मुझे पंढरपूर में कहाँ है कि, विठ्ठलकी संगती अब थोडे दिनकी है । आगे श्रावण मास समाप्त हुआ । महाराज के शरीर में थोडी क्षीणता आ गई । भाद्रपद महीने में महाराज ने सबसे कहाँ कि, गणेश चतुर्थी को गणपती विजर्सनके लिये सब लोग मठ मे आओ । गणेशपुराण में कथा है कि, भाद्रपद चतुर्थी को गणपती की मूर्ती बनाकर उसकी यथाविधि पूजा अर्चना करनी चाहिये । नैवैद्य समर्पण करके दूसरे दिन उसका विजर्सन करना चाहिये । वह चतुर्थी का दिन आज आ गया है । वह संपन्न करना चाहिये । इस पार्थिव शरीर को तुम लोग आनंदपूर्वक विसर्जित करना । किंचित भी दुःख न करना । मैं तुम्हारा प्रतिपालन करने के लिये यही स्थित हूँ । मैं तुम्हें कभी भूलूंगा नहीं यह शरीर वस्त्रके समान है । उसे बदलना अनिवार्य है । ऐसा भगवान कृष्णने गीता में अर्जुन से कहाँ है ।

वांसासिजीर्णानि यथाविहाय नवानि गृण्हाति नरोऽपराणि ।  
तथा शरीराणि विहाय जिर्णानन्यानि गृप्ताति नवानिदेही ।

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

( गीता -२-२२)

जोजो ब्रम्हवेत्ता हुए हैं उन्होंने ऐसाही किया है । उसी तरह मैंने यह शरीर बदला है, यह मत भूलो । चतुर्थी का संपूर्ण दिन बड़े आनंद से बिताया । बालाभाऊ का हाथ पकड़कर अपने आसन पर बैठकर महाराज बोले, " मैं गया ऐसा न समझना, मैं यहीपर हूँ । भक्तों को अन्तर मत देना, मेरा विस्मरण न करना।"

ऐसा कहकर योगसे प्राण का निरोध करके महाराज ने उसे मस्तके स्थिर किया । जैसा गीता मे कहाँ है ।

प्रयाण काले मनसा चलेन भक्त्या युक्तो योगबलेनचैव ।  
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् संत परंपुरुष मुपैति दिव्यम्

( गीता-८-१८)

सर्व द्वाराणि संयम्य मनो हृदिनिरुध्य च ।  
मूर्ध्न्या धायात्मनः प्राण मास्थितो योगधारणम् ॥

( गीता-८-२०)

शके अठारसौ बतीस भाद्रपद शुद्ध पंचमी गुरुवार के प्रथम प्रहर मे प्राणरोधन करके " जय गजानन" ऐसा ध्वनी करके ये महापुरुष सच्चिदानंद में लीन हो गये, शेगाँव में । देह की हलचल बंद हो गई । स्वामी को समाधिस्थ देखकर लोग बिव्हल हो गये, वार्ता सारे गाँव में फैल गई, कि स्वामी स्माधिस्थ हो गये । यह सुनकर स्त्री-पुरुष हृदय पीटकर रोने लगे । हमारा चलता फिरता श्रीहरी, दीनजनों का रक्षणकर्ता, साक्षात्कारी चला गया । हम लोगों का विश्रांतिस्थान-सुखका निधी, ज्ञान का दीपक , कालरूप वायु में बूझ गया । हे गजानन स्वामीसमर्थ! अब हमारी रक्षा कौन करेगा

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

? हे पुण्यशील ! इतनी जल्दी आपने हमको क्यों छोड़ दिया ? मार्तंड पाटील , हरि पाटील , विष्णुसा, बंकटलाल, प्रेमी भक्त ताराचंद और श्रीपतराव कुलकर्णी सब मठ में आये । सबने मिलकर विचार किया कि आज पंचमी का दिन है । आज स्वामी को समाधि न दी जाय। सब लोगों के दर्शनार्थ अस्त समयतक राह देखी जाय । जिनके नसीब में होगा उन्हें दर्शन होगा।

सब तरफ़ वार्ता भेज दी जाय । डोणगाँव के एक विद्वान गोविंद शास्त्री थे, उन्होंने कहाँ, महाराज के प्रिय भक्तों को दर्शन अवश्य होंगे । तबतक महाराज मस्तक मे प्राण रखेंगे । उसकी प्रचिती देखने कहीं दूर जानेकी आवश्यकता नहीं । महाराज के मस्तकपर मख्खन रखिये । तदनुसार मस्तकपर लोनी रखा गया, तो पिघलने लगा । यह देखकर सब लोग योगबल की प्रशंसा करने लगे । तब गोबिंदशास्त्री ने कहाँ , एक दिन की क्या बात है ये एक वर्षभर भी इस अवस्था में रहेंगे । स्वामीजी के सामने हजार तालधारी भजन करने लगे ।दूर दूर के भक्तों को सूचना हो गई । भजनवालों के कई जुथ जमा हुए । रास्तोंपर स्त्रीयोंने गोमयजलसे संमार्जन किया । अनेक रंग की रंगावलीयां निकाली गई । मूर्तिरथ में बिठाई गई । बड़े आनंदपूर्वक जुलूस निकाला गया । वह रातभर चला, जिसका वर्णन असम्भव है । जुथ के जुथ भजनवाले भजन करते और विट्ठल क जयकार करते । तुलसी गुलाल-बुक्का-उड़ाया गया । महाराज फूलोंसे आच्छादित हो गये । लोग बर्फी-पेडे प्रसादरूपमें बांटते, जिसकी कोई गणना नहीं की जा सकती । कई लोगोंने रूपये भी उछाले । इस प्रकार रातभर जुलूस फिराकर सूर्योदय के समय मठमें रथ पहुंचा । समाधि के जगहपर मूर्ति रखी गई । उसपर रूद्राभिषेक किया गया । पंचोपकार से पूजा की गई । आरती उतारी गई । भक्तोंने गजानन महाराज के नाम का ध्वनी किया ।

"जय जय अवलीया गजानन हे नरूपधारी नारायण! अविनाशी आनंदघन। परात्पर जगत्पति, आप की जय हो। "

ऐसे भजन घोष के साथ आसनपर उत्तराभिमुख मूर्ति रखी गई, शास्त्रनिर्देशानुसार सबने अन्तिम दर्शन लिया," जय स्वामी गजानन" का घोष किया । नमक, अर्गजा और अबीर से स्थान भर दिया गया । शीला द्वारपर रखकर समाधिस्थल बंद किया । दस दिन तक वहाँपर समाराधना की गई । असंख्य लोगो ने महाराज का प्रसाद ग्रहण किया । वस्तुतः संतों का अधिकार अत्यंत श्रेष्ठ होता है । जिसके सामने सार्वभौम राजाकी भी कोई गिनती नहीं । यही श्री दासगणू विरचित, श्रीगजानन विजय नामक ग्रंथ भाविकोंको हरिभक्ति का सन्मार्ग बताये, उन्हे भक्ति परायण करे ।

॥ शुभं भवतु श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्री गजानन विजय ग्रंथस्य एकोनविंशोऽध्यायः समाप्तः ॥

## ॥ अध्याय २० ॥

श्रीगणेशाय नमः । हे रुक्मिणीके पति! चन्द्रभागातट बिहारी भगवन्। इस दासगणु के मस्तकपर अपना वरदहस्त रखिये। आप तो राजाधिराज हो। सबकुछ आप के हाथमें है। फिर मेरी दुर्दशा क्यों कर रहे हो ?आपकी कृपारूप अग्नि से मेरे पाप -तापों का दहन करिये और यह मेरा मन आपके भजन को सदा आनन्दयुक्त रहे ,ऐसा करिये। यदी यह नहीं करोगे तो आपको ही दोष लगेला। अपने नाम को वृथादोष न लगने दो। हे श्यामसुन्दर !राही रुक्मिणीपती ,परमउदार पांडुरंग !मेरी इच्छा पूर्ण करो। अस्तु।।श्री गजानन महाराज समाधिस्थ हो जानेपर वहाँ के स्त्रीपुरुष कहने लगे, अब शेगाँव में क्या रखा है ?अब वहाँ क्या मिट्टी समुद्र का जल सुखनेपर, पुष्प वृक्षों की बहार नष्ट होनेपर इस संसार में उसकी प्रशंसा कौन करेगा ? मंदिर में देवता न रहनेपर गर्भगृह को माला चढ़ाना व्यर्थ है। किंतु उनके यह सब तर्क व्यर्थ सिद्ध हुए। उनमेंसे कुछ कहते कि, तुम लोगो की यह भ्रान्ति है। महाराज की दिव्य ज्योति यहींपर अदृश्य रूपसे स्थित है। जैसे इंद्रायणी के किनारे ज्ञानेश्वर महाराज समाधिस्त है और भक्तों को वे वही मिलते हैं। वैसेही शेगाँव मे श्रीस्वामी गजानन जिनका जैसा सिद्धान्त है उन्हे वही दर्शन देते हैं। इस सम्बन्ध में एक कथा बताता हूँ। शेगाँव में गणपत कोठाडे नाम का एक गृहस्थ था। उसका नित्य दर्शन का नियम था। वह उस समय रायली नामक एक कंपनी थी ,उसका प्रतिनिधी था। अस्त समय प्रतिदिन वह दर्शन के लिये जाता और समाधि के पास बैठकर एक निष्ठासे महाराज की स्तुति करता।

एक बार उसने मनमें संकल्प लीया कि विजयादशमी को समाधि को अभिषेक करके ब्राम्हण भोजन करायेंगे। उसनेसब सिद्धता की। अभिषेक की सामग्री तथा ब्राम्हणभोजन का विपुल सिधा मठमे भेजा। यह देखकर उसकी पत्निने कहा,'प्राणनाथ !आप बड़े मुक्तहस्त है। यह आप क्या करते है ? हमारे बाल बच्चे है, उन्हे कपड़े और अलंकार बनाईये। इस प्रकार का अभिषेक और ब्राम्हणभोजन बार बार करना ठिक नही। मेरे शरीर पर फूटा हुआ मणी भी नही है। मैं लंकाकी पार्वती ऐसी हूँ, जो सुवर्ण लंका मे रहकरभी रुद्राक्ष पहनती थी। क्या यह गृहस्थाश्रम की पद्धति है? गृहस्थको धनसंचय करना चाहिये। वह पत्निका यह उपदेश गणपतराव को नही जचा। उन्होंने पत्निसे कहा कि, प्रिये मैं परमार्थ को प्रपंच से अधिक मानता हूँ। ऐसे समयमे उसकी पत्निको स्वप्न हुआ ,उसमें महाराज ने उससे कहा,"पागल ! बीना अर्थके पतिको त्रस्त न करो, जो वह करता है उसे करने दो। इसमें तुम्हारे बाप का क्या जाता है? अशाश्वत का प्रेम नही रखना चाहिये। इस प्रपंचमे कोई तत्व नही है। धन भूमि का भूमीपर ही रह जाता है। किया हुआ पाप -पुण्य प्राणीके साथ जाता है। अभिषेक और ब्राम्हण भोजन यह पारमार्थिक पुण्य है । इस के निमित्त खर्च हुआ धन कभी व्यर्थ नहीं होता। जैसे भूमि में बोया हुआ बीज एक का हजारो होता है ऐसे ही इस पुण्य की स्थिती है, वह अनंत होता है, इसीलिये उसे रोको मत"। इस स्वप्नकी बात उसने पतिसे बताई, आज से प्रपंच, बाल बच्चे, धनसंपत्ति की चिन्ता छोड़ दो। यह सब महाराज का है। अस्तु, गणपतराव ने बड़े आनंद से दसरे के मुहूर्तमें पूजन किया और खर्च भी किया ।

पहलेसे ही गणपतराव की दृढ़ श्रद्धा समर्थ चरणों में थी। इसी प्रकारका एक अनुभव हरी लक्ष्मण जांजालको बोरीबंदर स्टेशनपर हुआ था, वह प्रसंग में बताता हूँ। किसी कामके लिये लक्ष्मण बम्बई गया था। वह बोरीबंदर स्टेशनपर घर जानो को आया, तो उसे एक परमहंस मिले। उंची शरीरयष्टि, आजानुबाहु और नासाग्रपर उनकी दृष्टि स्थिर थी। मुँहसे ॐ कारका जप चल रहा था। वे लक्ष्मणसे बोले "अरे ! तुम गजानन के शिष्य होकर ऐसे निराश क्यों होते है ? जब तुमने अपने घरमें पुण्यतिथि के निमित्त चारसौ पत्तलों की व्यवस्था कि थी, तब गोपालराव पेठकर और बापटमास्टर तुम्हारे घर आये थे की नहीं ? स्मरण करो। कैसे आये, उनके स्वप्नमें आकर गजानन महाराज ने उन्हें बुलाया था। बापट को पुत्र शोक पत्तलों की व्यवस्था के थी, बापट को पुत्र शोक था फिर भी वह तुम्हारे घर प्रसाद के लिये आया था। क्या सब भूल गये? "यह सत्य घटनाये सुनकर लक्ष्मण शंकित हो गया। उसने आदरपूर्वक परमहंस को नमस्कार किया। किन्तु वे देखते देखते बोरीबंदर स्टेशनपर अदृश्य हो गये। तब लक्ष्मण घरपर आया और पूर्ववत् व्यवहार करने लगा। प्रतिवर्ष वह पुण्यतिथी मनाने लगा। उसी प्रकार जयराम खेडकर को महाराज राहीत -साहित गाँव में संन्यासी के रूपमें मिले। श्रोतागण एक मार्तंड माधव जोशी नामक गृहस्थ -कलंब कसुरागाँव में जमीन मोजने के लिये आया। यह सरकारी नौकर था और कृषी विभाग में मंडल अधिकारी था। उसकी गजानन महाराज पर पूर्ण श्रद्धा थी। दिनभर जमीन मोजने का काम करने के बाद अस्त समय उसकी शेगाँव दर्शन करनेकी इच्छा हुई। सोचा आज गुरुवार का दिन है। चलकर समर्थ के दर्शन करेंगे सो अपने सिपाही को आदेश दिया ,की अपनी दमनी जोतो, शेगाँव दर्शन करने चलेंगे और रातको वही रहेंगे।

प्रातःकाल लौट आरेंगे। तब उनका सिपाही कुतुबुद्दीन नामका था उसने कहाँ,"आपको हाथ जोड़कर कहता हूँ, की बादल छाये हुए हैं, इसका भी विचार कीजिये। उसी तरह मन नदीका पानीभी बढ़ रहा है। सुनकर जोशीने कहाँ, अरे", अभी नदी पार कर लेते हैं,बिना काम की किंतु परंतु न बढ़ाओ, जाओ दमनी तैयार करो।" सुनकर वह दमनी जोतकर ले आया। जोशी अंदर बैठे और सिपहिने दमनी जैसेही नदीमे घुसाई वैसेही अकस्मात नदीमे बाढ़ आ गई और उसपार जानेका अवसर न रहा। जोरसे आँधी चली और मुसलाधार वर्षा होने लगी। कई किसानोंके छप्पर उड़ गये। तब कुतुबुद्दीन सिपाही जोशीसे बोला,"साहेब! अब हम लोगोंका बचना मुश्किल है। यही मरना है। " सुनकर मार्तंड जोशी अपने मनमे घबरा गये और करुणायुक्त वचनोंसे समर्थ की याचना करने लगे,"हे समर्थ गजानन हमारे प्राणोंकी रक्षा करिये। आपके बिना दूसरा कोई हमें नहीं बचा सकता। इस संकटमे आपके बिना और कोई त्राता नहीं है। आप असामान्य संत हो। करुणा के निधान हो। ब्रह्मवेत्ता हो। हमारी इस बाढसे रक्षा कीजिये। दमनीमे पानी भर आया, बैल घबरा गये तब जोशी आगे होकर सिपाहिसे बोले," तू अब पीछे बैठ अवलिया का भजन कर, वोही बेडा पार करेंगे चिन्ता मत करो। "ऐसा कहकर जोशीने बैलोंकी रस्सी छोड़ दी और समर्थसे बोले,"समर्थ आपकी सत्ता अगाध है। आपके मनमे हो वैसा करिये। तारिये चाहे डूबाइये। " दोनोंने आँखे मूँद ली सो क्या हुआ वह सुनिये। ऐसे महापुरमे भी दमनी दूसरे किनारेपर आकर शेगाँव के रास्तेपर खड़ी हुई। यह देखकर दोनोंको अत्यानंद हुआ। देखो, अवलिया बाबाकी सत्ता कितनी अगाध है। बाढ़ से हम लोगोंकी रक्षा की, अपने भक्तको डूबने नही दिया। एक घड़ी रात्री बीतनेपर जोशी शेगाँव आये। समाधि को वंदन किया। पालकी का उत्सव देखा और दूसरे रोज बहुतसा दान धर्म किया। उसी प्रकार बालाभाऊ के पास ब्राम्हण भोजनके लिये कुछ रूपये दिये, संपूर्ण वृत्तांत बालाभाऊ से बताया और कहा कि ,"यह संकल्पना ब्राम्हण भोजन की आप मेरी ओरसे करिये। क्योंकि मुझे अवकाश नहीं है, ऐसा कहकर जोशी जल्दी से चले गये।

हिंङनी गाँव का रहनेवाला एक यादव गणेश सुभेदार नामक कपास का व्यापारी था। एक वर्ष उसको व्यापार में दस हजार रुपयों का घाटा आ गया ,जिससे वह बड़ा चिंतित हो गया। व्यापार तो छूट नहीं सकता ,फायदा होता नहीं और उसके बिना मन की चिंता जाती नहीं। वह मुनाफा मिलाने का बड़ा प्रयत्न करता ,किंतु सफलता नहीं मिलती। एक बार वह किसी काम से वर्धा आया और विनायक असिरकर के घरमें ठहरा। इतने में एक भिक्षुक वहाँ आया। उसका वेष महाराष्ट्री था। जो देखकर असिरकर क्रोधित हो गए। जा पिछले दरवाजे में तुम्हें भिख मिलेगी ,छपरी की सीढ़ी मत चढ़ो। लेकिन भिक्षुकने उसकी बात न मानी और छपरीमें यादव के पास आकर बैठ गया, कहने लगा,"कुछ तो भीख डाल।"ऐसा कहकर भिक्षुपात्र आगे बढ़ाया। यादवने मनमें सोचा, यह भिखारी बड़ा लालची और धीट मालूम पड़ता है, मना करनेपर भी छपरी में आ गया, हटता नहीं है। किन्तु जब उसने भिखारी को अच्छी तरहसे निरखा तो वह उसे शेगाँव का राजयोगी सा दिखने लगा। उसकी मुद्रा तेजयुक्त और आवाज समर्थके समान थी। केवल कंपही असमानता थी। यादव सोचने लगा की, इसे गजानन मानू तो वे तो समाधिस्थ हो गये हैं, अब हमारे दुष्टिपथ में महाराज कैसे आ सकते हैं ?कुछ भी हो, दो पैसे दे देता हूँ गजानन समझकर, तर्क वितर्क करनेका कारण नहीं। भिखारीने पैसे ले लिये और कहा , "गजानन महाराज को प्रसाद बाँटना है सो और कुछ पैसे दो। तू बार बार वचन देता है और पूरा नहीं करता। तुझे दस हजार का घाटा हुआ है ना? ऐसा सोचकर जल्दी से पाकिट निकालकर मुझे कुछ और पैसे दो। यह सुनकर सुभेदार ने कुछ रूपये निकालकर दिये। इसपर पुनः भिखारीने कहा,"आज मैं इतनेपर संतुष्ट नहीं हो सकता। मुझे और कुछ रूपये दो ।"सुभेदारने और रूपये निकालकर भिखारीको अर्पण किये। इतने में असिरकर घर के अंदर गये। जब यादव अकेले हो गये तो भिखारी बोला , "गजानन के विषयमें शंका क्यों करते हो ?इस समय कपड़े निकालकर मेरे सामने खड़े हो जाव। तुम्हारे सर्वांगपर दृष्टी पड़ने दो जिससे तुम्हारी व्याधी दूर हो जायेगी। तुम मेरे पुत्रके समान हो। लजाते क्यों हो?" ऐसा कहकर पिठपर हाथ फिराया और बाद में नखशिखांत

शरीरपर हाथ फिराया। इतनेमें असिरकर फिरसे वहाँ आये और भिखारी दरवाजे से बाहर हो गया। यादवने बहुत पता लगाया किन्तु भिखारी का पता न चला। सो उसने मनमें निश्चय किया की हो न हो यह गजानन महाराजही थे। अपने दिलमें सोचा, अगर ये समर्थ है तो आज अवश्य व्यापर में लाभ होगा। इतनेमें उसकी कपासकी गाड़ियाँ वर्षों के बजारमें बिकने आई। बिक्री होनेपर उसे बहुत किंमत मिली, जिससे यादव बड़ा संतुष्ट हुआ। उसका दृढ़ निश्चय हो गया कि, भिखारी के रूपमें गजानन महाराजही मिले। दृढ़ निष्ठा होने पर समर्थ सदैव रातदिन अपने भक्तों की रक्षा करते हैं।

भाऊ राजाराम कंवर नामक एक डॉक्टर खामगाँव में था। उसकी बदली तेल्हारा नामक शेगाँव से उत्तर में गाँव है वहाँ हो गई। वह तेल्हारा जानेके लिये सह कुटुंब खामगाँवसे निकला और मठ में श्रीगजानन महाराज का दर्शन करनेके बाद गाड़ीसे तेल्हारा जानेके लिये वह तैयार हुआ। सायं समय हो गया था ,सो मठाधिपति बालाभाऊ उसे कहने लगा ,कि "आप प्रसाद लेकर फिर तेल्हारा जाइये। आप तो आज तक कभी भी प्रसाद ग्रहण किये बिना नहीं गए हैं। फिर आज ऐसे क्यों ?जिसमें आज व्यतिपात है ,यह सोचिये। "इसपर इसपर कवरने कहा , "आज रातको प्रसाद ग्रहणकर अगली रातमें निकल जाऊँगा,क्यों कि मुझे जल्दी है। आप आग्रह मत करिये। "इस प्रकार कहकर वह दमनी जोतकर बाल बच्चोंके साथ तेल्हारा जानेको उद्दत हुआ। अंधेरी रात थी और थंडी भयंकर लग रही थी। मानो ,रात्री अपने पत्नीके वियोग में शोक कर रही थी। इस समय ऐसा चमत्कार हुआ किं ,गाड़ीवाला तेल्हाराका रास्ता भूल गया। गाड़ी बड़ेही संकीर्ण रास्तेपर चल रही थी। दोनों तरफ काँटे थे। रातका समय होनेसे रास्ता पूछनेके लिये कोई था नहीं, क्या करे? अन्तमें एक बड़े सरोवरपे गाड़ी खड़ी हुई, तब गाड़ीवालेने कहाँ,"साहब रास्ता भूल गया, यह सुनकर कंवरको बड़ा आश्चर्य हुआ। निचे उतरकर देखा तो कुछ भी न दिखता था, सो वह गाड़ीवालेको बहुत बात

बोलने लगा और कहा की," तुम तेल्हारेके हो इसलिये मैंने तुम्हारी गाड़ी की , सो तुमने यहाँ एकांत जगह लाकर खड़ा किया है। क्या तुमने मद्यपान किया था, जिससे तुम्हे रास्ता नहीं दिखा ? तेल्हाराका रास्ता बड़ा रास्ता है उसपर आवागमन सदैव रहता है। फिर तुम्हारी गाड़ी यहाँ कैसे आई ? इसपर गाड़ीवाला हाथ जोड़कर बोला,"साहब, मुझको गालियाँ क्यों देते हो ? मैं हमेशा भाडेपर गाड़ी चलाता हूँ। रात, दिन का मेरा तेल्हाराका रास्ता परिचित है। बैल भी कही मुड़े नहीं, सिधे यहीपर आये और सरोवर देखकर रुक गये। यह कैसे हुआ मैं नहीं जानता। "तब कवर मनमें समझ गया की हो न हो यह समर्थका ही कृत्य है। मैं प्रसाद ग्रहण करके नहीं निकला। बालाभाऊ का कहना नहीं माना इसीका ये परिणाम है। मनमें प्रार्थना करने लगा। " हे गजानन !यह तो भयानक जंगल दिखाई पड़ रहा है। यहाँ आपके बिना मेरी रक्षा कौन कर सकता है ?इतनेमें तालाब के दूसरी बाजूसे घुंगरू-घंटीकी ध्वनि सुनाई पड़ी, तब डाक्टरने गाडीवानसे कहाँ, इस संकेतपर बैलको हाँको। प्रमुख रास्ता दूर नहीं है। " वह सुनकर उसी आवाजकी दिशामें दमनी लेकर बढ़ा - कांटे क्षुपोउमे बैल हाक कर प्रमुख रास्तेपर पहुँचा। डाक्टरने जब अन्य गाडीवालोंसे पूछा, तो पता चला की वह शेगाँवकाही सीमान्त था। तो कंवरने गाडीवानसे कहा की,"शेगाँव वापस चलो। सूर्योदयके समय कंवर शेगाँव पहुँचा। उसने सारा वृत्तान्त बालाभाऊ से बताया। यह सुनकर बालाभाऊने कहा,"व्यतिपात मैं आपको महाराजने जाने नहीं दिया, यह ठीक ही हुआ। आज प्रसाद ग्रहण करके कल तेल्हारा जाओ। प्रसादका परित्याग कभी नहीं करना चाहिये। आप समर्थके भक्त हो इसीलिये उन्होंने तुम्हे वापस लाया। मानवके सारे प्रयत्न सफलही होंगे, ऐसा कोई निश्चय नहीं। संतके मनमे जो होगा वही होकर रहेगा। इसीलिये महाराजके चरणोंमें श्रद्धा रखकर स्वस्थ हो जाओ।" इसतरह कंवर दूसरे दिन प्रसाद लेकर फिर तेल्हारा गया, अस्तु।

रतनसा नामक एक भावसार जातिका गृहस्थ था। उसको दिनकर नामक एक वर्ष का एक लड़का था । उसको मूडदुस की बीमारी हो गई। यह सुखंडी रोग प्रायः बालकोंको होता है। महाराष्ट्री भाषामे इसको सटवी भी कहते है। बच्चा एकदम सुख गया। केवल त्वचा रह गई , सारी अस्थियाँ अपना अस्तित्व त्वचाके बाहर ले आने लगी। बड़े बड़े वैद्य लाये किन्तु कुछ फायदा नहीं हुआ। उसे सतत ज्वर रहता और दूध, पानी भी उसका छूट गया। वैद्योने रतनसासे कहा कि , "अब यह तुम्हारे हाथ नहीं लग सकता। इसे औषधि देना व्यर्थ है। साध्य -असाध्यता का विचार अवश्य करना चाहिये। भला कही समुद्रपर पुल बांध सकता है ? यह सुनकर रतनसा रोने लगा। अन्तमे उसने मनमें विचार किया की आखरी उपाय करके देखनेमें कोई हर्ज नहीं। उस बच्चेकी अवस्था देखकर घरके लोग रुदन करने लगे। उसके हाथ पैर ठंडे पड गये, नाडी छुट गई और नेत्रतेज क्षीण हो गया। ऐसी अवस्थामें रतनसाने बच्चा दो हाथोंपर उठाया, गजानन महाराजके द्वारपर रखा और संकल्प किया की, मेरा यह बालक रोगमुक्त हो गया तो मैं पाँच रुपयेका प्रसाद बाँटूँगा। आपने सबको सफलता दी, मैं आपकाही हूँ, मेरी उपेक्षा मत कीजिये। इस बालकपर कृपा करिये। यदि मेरा यह बालक आपके द्वारपर मर जाता है तो सारे बराड़मे आपकी अपकीर्ति होगी। सारे लोग आजतक कहते आये है कि , "आपके चरण अमृत है, इस बालकपर कृपा करिये। मैंने निश्चय किया है कि यदि मेरा यह बालक नहीं उठा तो मैं आपके चरणोंपर सिर पटककर मर जाऊँगा। हे महापुरुष ! मुझे इसके दुःखमे कष्टि मत करिये। थोड़ी देरमें चमत्कार ऐसा हुआ की वह बालक हाथ पैर चलाने लगा। उसकी नाडी व्यवस्थित हो गई और वह रुदन करने लगा। यह देखकर सबको बड़ा आनंद हुआ। भला समर्थकी कृपा होनेपर दुःख कैसे रह सकता है भला सूरजके सामने अंधकार रहना सम्भव है दिनकर थोड़े दिनोंमें पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस प्रकार महाराज सत्य संकल्प दाता है।

संतोंकी कृपा अनमोल होती है।, उसका मूल्य नहीं किया जा सकता। राजा नामक कोल्हटकरका पुत्र संतकृपा का ही फल है। रामचंद्र पाटीलकी चन्द्रभागा नामक एक कन्या थी, जिसकी ससुराल लाडेगाँव में थी। वह अठराह वर्षकी थी, वह गर्भवति हुई तो बड़ी अद्भुत घटना घटी। प्रसूतीमे स्त्रियाँका दूसरा जन्मही होता है। जनरीतिके अनुसार चन्द्रभागाको प्रसूतिके लिये मायके शेगाँव लाया गया। वहाँपर प्रसूतिके बड़े कष्टमें थी और उसे प्रसूतिके ज्वरमे आक्रांत कर दिया। पाटीलने कई डाक्टरोंसे इलाज करवाया किन्तु उसके ज्वरमे कोई लाभ नहीं हुआ। थोड़ा बहुत आराम हुआ क्योंकि व्याधि किंचित कालको दबी किन्तु निःशेष नहीं हुई। जिससे चन्द्रभागा बार बार बीमार पड़ने लगी। एक बार उसे औषधोपचार को आकोला ले गये। तो वहाँके कुछ वैद्य बोले,"इसे नलसंग्रहणी हो गई। कईयोंने कहा,"उसे राजयक्ष्मा हो गया। " इसतरह किसिसेभी निश्चित निदान न हुआ। अन्तमे पाटील ने विचार किया की अब वैद्य गजानन ही हैं। "औषधं जान्हवी तोयं, वैद्यो नारायणो हरिः "ऐसी कहावत है। उन्होंने कहा, "महाराजकी भस्म प्रतिदिन लगाओ और महाराजका चरण तीर्थ पिलाओ। चाहे महाराज तारे या मारे, दूसरा कोई उपाय नहीं। पिता रामचन्द्र पाटील महाराजके बड़े निष्ठावान भक्त थे। धीरे धीरे उस लडकीको लाभ होने लगा। जो शय्यासे उठ नहीं सकती थी, वह चलकर पैदल मठ में महाराजके दर्शनको आई। ऐसा भस्मका अमित प्रभाव है। जिसकी दृढ़ निष्ठा है उसको अवश्य फल मिलता है। उपास्य देवतापर उपासक की दृढ़ श्रद्धा होनी चाहिये। रामचन्द्र पाटील की पत्नि जानकीबाई, जो बड़ी सुलक्षणा थी किन्तु दैवयोग किसीको चुकता नहीं। बार बार उसके पेटमें दर्द होता था। वह वायूशूल था। अनेक औषधियाँ दी किन्तु तात्कालिक लाभ होता और फिर पेटमें दर्द होताही था। यह स्थिती कई दिन रही। अन्तमे उसका परिणाम यह हुआ कि वह वायू मस्तिष्क में प्रविष्ट होकर उन्मादमे परिवर्तित हो गया। जिससे वह उन्मत्तवत आचरण करने लगी। कभी सो जाती तो कभी खातीही रहती। कई लोग कहने लगे,"इसे पिशाच्चबाधा हो गई। कुछ कहने लगे की यह करनी का प्रभाव है। किसीने करनी कर दी। जो सत्ताधीश होते हैं

उनकी शत्रुता कईओंसे होती है। सो दुर्बल शत्रु करनी टोना से अपना जोर बताते है। "कई प्रकार के औषध दिये। ओझा लोगोंको बुलाकर झाड़ फूंक की। कई प्रकार के धागे दोरे बाँधे उस जानकीबाई के हाथ में, किन्तु लाभ नहीं हुआ। पाटील धनवान थे और इस व्याधी से संकट में पड गये थे। उसका दांभिक लोग, लाभ उठाकर उनसे धन लूटते थे। जो जैसा उपाय बताता पाटील अपनी पत्नि के लिये वही करते किन्तु वह ठीक नहीं हुई। अन्त में पाटील ने विचार किया कि, मैं गजानन पुत्र हूँ और मेरी पत्नि उनकी बहू लगती है। अब ओझा गजानन ही है, दूसरे ओझाकी आवश्यकता नहीं। उन्होंने अपनी पत्नीसे कहा, कलसे तुम मठमे जाकर समाधिको प्रदक्षिणा करने लगो। वह पतीका कहना मान गई। और प्रतिदिन स्नान करके समाधिको प्रदक्षणा करने लगी। सद्गुरुनाथको की गई प्रदक्षिणाये सफल हुई। उसका वातविकार नष्ट होकर वह निर्दोष हो गयी। सच्चे संतोंकी सेवा कभी व्यर्थ नहीं होती किन्तु मनुष्य की निष्ठा बैठना कठिन होता है।

समर्थ के बाद बालाभाऊ गादीपर बैठे। महाराजके प्रतापसे उनके भी कुछ थोड़े चमत्कार हुए। ये वैशाख वद्य षष्ठि को शेगाँव में ही बैकुंठ को प्राप्त हुए। उनके बाद नारायण गादीपर बैठे। बालाभाऊ जब गये तो नारायण को नांदुरा गाँव में स्वप्न पड़ा था। वह कथा बताता हूँ। स्वप्न में महाराज बोले,"अरे नारायण माली ! तुम भाविक जनोंकी रक्षा करने शेगाँव जाओ। "ऐसा कहकर गजानन महाराज चले गये। वह सुनकर नारायण शेगाँव आये। कुछ दिन इन्होंने भी अधिकार चलाया। ये चैत्र शुद्ध शष्ठि को समाधिस्थ हुए। पूर्व स्वीकृतिके बिना संतसेवा नहीं मिलती। संतसेवाके पुण्य का पार नहीं। इस तरह श्री गजानन की लीला का कभी पार नहीं लगेगा, जैसे गगन के तारकाओंकी गणना नहीं ही सकती। मैं अज्ञानी हूँ, पामर हूँ, बुद्धितों मुझमे तिलमात्र नहीं है। फिर भला श्री गजानन लीला के समुद्र का मैं मुखसे वर्णन कैसे कर सकता हूँ ? उन्होंने जो कुछ कहलवाया वाही मैंने कहा, इसमे मेरा कुछ नहीं।

लेखनीने अक्षर लिखे किन्तु वह उसका कहलवाया, वही मैंने कहा, इसमे मेरा कुछ नहीं। लेखनीने अक्षर लिखे किन्तु वह उसका सामर्थ्य नहीं। यह लेखनी जिसके हाथमें होती है वही सारे अक्षर लिखता है। लेखनी लिखनेमें केवल निमित्तकारण होती है। वह उसका सामर्थ्य नहीं। वैसेही यहाँ हुआ है। मैंने लेखनीका काम किया। लिखने -लिखानेवाले स्वामी गजानन है। उन्हीकी कृपासे मैंने यह लिखा। विद्वज्जनों ! इसमें मेरा कोई बड़प्पन नहीं। स्वस्ति श्री दासगणू विरचित यह श्री गजानन विजय ग्रन्थ अब कलशके समिप आ गया। अगला अध्याय कलशाध्याय है।

॥ शुभं भवतु। श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्री गजानन विजय ग्रन्थस्य विंशतितमोऽध्यायः समाप्तः ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

## ॥अध्याय २१॥

श्री गणेशाय नमः। हे अनंतवेष अविनाशी! परेश ब्रम्हाण्डाधिपति, आप की जय हो। हे भगवन! आपका नाम पतितपावन है। इसका विचार करिये। हे प्रभो! पापी जनोंपर आपका अमित प्रेम होता है और पापीजनोनें ही आपकी महत्ता बढ़ाई है। पतित और पापी न होते तो आपका पतित पावन व हरिनाम कैसे पड़ता? इसीलिये हे ऋषिकेश !मेरे पातकोंकी ओर न देखिये। ज़ल से मल स्वच्छ होता है इसीलिये मैला कपड़ा जलके पास जाता है। हे घननील !पतितों का तिरस्कार मत करिये !क्या भूमी सौंदड वृक्ष को त्याग देती है। (सौंदड वृक्ष में काँटे होते हैं )आप ही पतितपावन हो। आप ही पुण्यपावन हो फिर भी ये दोनो दोषोंसे आप अलग हो। जैसे सूर्य अंधकार का नाश करता है तो क्या उसको कुछ कष्ट पड़ता है ?उसको तमनाश के लिये कुछ नहीं करना पड़ता। अंधकार जैसे जैसे सूर्य से मिलने आता वैसे वह स्वयं प्रकाशरूप हो जाता है और उसका तमस्वरूप चला जाता है, हे नारायण !पापी और पुण्यात्मा आपही अपना श्रेष्ठत्व रखने के लिये निर्माण करते हो। कुछ भी हो, अब इस दासगणु को चिंता रहित करके अपनी शरण में ले लो। आपके बिना इस संसार में मेरा कोई आश्रय नहीं है। हे पांडुरंग !सब कुछ आपके हाथ में है। श्रोतागण अब सावधान होकर इस कलशाध्याय का श्रवण कर करिये। आप लोग महान भाग्यशाली है,जो संतकथा का श्रवण कर रहे हो। जिसकी एकनिष्ठ श्रद्धा गजानन महाराज के चरणों में हो गई, उसकी दुःख तथा संकटों की होलीका ही होती है, इस में शंका का कोई स्थल नहीं है।

मंदिर का शिखर बाँधते समय गवंडी के हाथतले एक मजूर काम कर रहा था। मिस्तरी को पत्थर देते समय उस का तोल चला गया और वह तीस फूट उँची से नीचे तांसे हुये पत्थरपर गिर पड़ा। उस को गिरते हुए लोगोने देखा और सोचा कीं, इतनी ऊँचाईसे गिरनेपर इसकी मृत्यु निश्चित है, बचना कठिन है। किन्तु आश्चर्य की बात यह हुई कि ,उसे कहीपर भी चोट नहीं आई। जैसे गेंद झेलकर रखी जाती है ,वैसे हुआ। जैसे कोई सीढ़ियों से जमीनपर उतरता है वैसेही उस मजदूर का हुआ। उसने लोगों से कहा कि, जब मेरा तोल गया तो किसीने मेरा हाथ पकड़कर भूमिपर खड़ा किया। भूमिपर मेरे पैर लगते ही वह अदृश्य हो गया। यह वृत्तांत सुनकर लोगोंको अत्यानंद हुआ। समर्थ किसीका अभिशाप नहीं लेते। दैवयोग से ही यह तेरे पतन का योग आया। इस समय साक्षात समर्थ के हाथ का स्पर्श तुझे हुआ, भला ऐसा किसीका भाग्य कहाँ ?

एक राजपूतनी जयपूर से शेगाँव आई। उसको पिशाच्च बाधा थी। उसको जयपूर में दत्तात्रयजीने सलाह दी कि, इस रामनवमीके दिन तुम शेगाँव जाओ। वहाँपर संत गजानन महाराज जागृत दैवत है, वे तेरे पिशाच्च को मुक्ति देंगे। ऐसा दृष्टांत होनेपर अपने दो पुत्रोंको लेकर वह राजपूतनी शेगाँव आई। प्रतिपदा से ही उत्सव का प्रारंभ हुआ और नवमी में अपार जन समुदाय इकठ्ठा हुआ। सभामंडप का काम चल रहा था और बड़े घड़े हुए स्तंभ खड़े किये थे। ये सब संगमरवर के पत्थर के थे। जो हरेक स्तंभ पाँच फूट ऊँचा और डेढ़ फूट चौड़ा था। उत्सव के कारण भक्तोंने काम बंद कर दिया था। स्तंभ केवल खड़े किये थे। श्रीरामचन्द्र का जन्म हुआ और और प्रसाद के लिये प्रचंड जन समुदाय उमड़ पड़ा, जिसका वर्णन मुझ से नहीं किया जाता।

ऐसी भीड़ में वह राजपुतनी एक स्तंभ के आश्रय से खड़ी थी किन्तु उल्टा ही हुआ। वह स्तंभ उसके शरीरपर गिर पड़ा और वह स्तंभ के नीचे दब गई। सब लोग सोचने लगे ,कि वह दबकर मर गई। यह स्त्री पूर्ववत् स्वस्थ होकर जयपुर गई और आनंदपूर्वक प्रपंच करने लगी। ऐसा स्वामी गजानन का अमित प्रभाव है। कहाँकी है ?कौन है ?इसके दो बच्चे भी नीचे दबे दीखते हैं। दस-बीस जनोंने मिलकर स्तंभ उठाकर और उसके मुखमें जल डाला तथा उपचारार्थ महिला चिकित्सालय में भेजा। उस समय सईबाई मोटे चिकित्सालय में 'लोबो 'नामक एक ख्रिश्चन महिला चिकित्सक थी। उस काल में वह प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक थी। उसने उस राजपूतनीपर सामान्य उपचार करके भेज दिया और खा कि इसे कही भी कोई चोट नहीं आई है, यह स्वस्थ है। यह 'लोबो 'येशु ख्रिस्त की बड़ी भक्त थी। वास्तव में यह आश्चर्यकारक घटना है, कि इतना बड़ा वजनदार स्तंभ उसपर गिरा और उसे बिल्कुल चोट नहीं आई। उसका शरीर कैसे सुरक्षित रहा? उस घटना का कारण शायद यह है कि जो स्तंभ गिरा वह उस पिशाच को मुक्त करने के लिये गजानन महाराजने गिराया। यद्यपि लौकिक लोगोंके दृष्टिमें वह स्तंभ राजपूतनीके शरीरपर गिरा किन्तु वह उसपर गिरही नहीं उसके शरीर में जो पिशाच था उसपर गिरा और वह मुक्त हो गया। वह स्त्री पूर्ववत् स्वस्थ होकर जयपुर गई और आनंदपूर्वक प्रपंच करने लगी। ऐसा स्वामी गजानन का अमित प्रभाव है।

ऐसे ही एक उस्तव के समय मंडप खोलते समय नाईक नवरे नामक व्यक्तिपर एक बड़ी बल्ली गिर पड़ी। वह बड़ी बल्ली थी किन्तु महाराज की कृपासे नाईक नवरे को बिल्कुल कहीं भी चोट नहीं आई, वे बालंबाल बच गये।

कृष्णाजी पाटील के पुत्र रामचंद्र पाटील। जो महाराज के परमभक्त थे इन्होंने अंततक मंदिर का कार्यवहन कर महाराज की सेवा की। इनके घरपर एक रोज मध्यान्हके समय एक साक्षात्कारी गोसाँई के रूपमें आये और रामचन्द्र पाटील को आवाज दी कि ,मुझे भूक लगी है। कुछ अन्न खानेको दोगे क्या? पाटील बड़े भाविक वृत्ति के थे। गोसाँई की आवाज सुनकर बाहर आये।

जब सूक्ष्मता से निरक्षण करके देखा तो वह इस निश्चयपर पहुँचा कि हो न हो, ये गजानन महाराज ही है। गोसाँई का हाथ पकड़कर घरमें ला कर पिढेपर बिठाया और यथाविधि पूजन किया। गोसाँईने पाटील से कहा,'बच्चा !आज मैं जानबूझकर तुम्हें कुछ बतानेके लिये आया हूँ, ध्यान देकर सुनो। ग्रिशम काल में गोदावरी का जल थोड़ा सुख जाता है। वैसेही यह हुआ है। तुम ऋण की चिंता मत करो। वह समाप्त हो जायगा, संपन्नता की बाढ़ आयेगी। श्री हरि की कृपारूपी मेघवर्षा से सब होगा। जहाँपर मेरा जूठन गिरता है वहाँ किसी चिज की न्यूनता नहीं होती। थाल परोस कर लाओ। सुग्रास भोजन दो और इच्छा हो तो एकाद वस्त्र शरीरपर डालो। याचककी की हुई पूजा और दक्षिणा उसे दिया हुआ अन्न साक्षात नारायण को प्राप्त होता है। क्योंकि श्रुति कहती है "अतिथी देवो भव "किन्तु वह अतिथि शुद्ध होना चाहिये। उसके बिना यह कौतुक असम्भव है। पाटीलने थाल परोसकर लाया और गोसाँईने बड़े प्रेमसे भोजन किया। उसपर उसके हाथपर पाटीलने दक्षिणा के रूपमे पाँच रूपये रखे। तब गोसाँईने कहाँ, पाटील हम बैरागी है, यह दक्षिणा मुझे नहीं चाहिये, दक्षिणाके रूपमे आप वचन दिजीये की गजाननके मठ का कर्णवहन तुम करोगे, यही मेरी दक्षिणा है, इसे बतानेकोही मैं आया हूँ। समर्थ सेवारूप दक्षिणा देनेवाला तुम्हारे बिना दुसरा वर्तमानमे कोई नहीं है। तुम्हारी पत्नी जो बारबार बिमार पड़ती है वह भी इस दक्षिणा से व्याधिमुक्त हो जायेगी। तुम अपने पुत्र को बुलाओ। उसके गलेमे एक ताबीज़ बांधूंगा जिससे उसे कोई बाधा नहीं होगी। क्योंकि सत्ता संसारमे बैरका मूल है। पानीही

पानीका शत्रु होता है। तुम्हारी पाटीलकी वतनदारी अवश्य सम्हालो वह एक प्रकारका कवच है। उसका उपयोग बड़ा सम्हालकर करना। किसीका द्वेष मत करना और सन्निति नही छोड़ना। वर्तमान शासनके विरुद्ध कभी न जाना। उसी प्रकार दांभिक और संतोकी पहचान करके व्यवहार करना, ऐसा आचरण करनेपर साक्षात् लक्ष्मीपती तुम्हारे ऋणी रहेंगे, यह मेरा वचन सत्य समझो। आवकके अनुसार खर्च करो। संतका अपमान करनेपर ईश्वरका कोप होता है। सो सच्चे संतका कभी अपमान न करना। संत चरणोमे प्रेम करो। अपने वंशजोकी न्युनता मनमे कभी न रखना। बाहर देखनेको भलेही क्रोध करो किन्तु हृदयमे दया रखना जैसे कटहलके फलपर उपर कांटे होते हैं किन्तु अंदर मधुर और पुष्ट गिरि होती है। मैं सदैव तुम्हारे पिछे खड़ा हूँ " ऐसा कहकर गलेमे ताबीज बांधकर गोसाँई रास्तेपर चल पड़ा। और अदृश्य हो गया। पाटीलने सोचा की स्वयं गजानन महाराजही मुझे उपदेश देने गोसाँई रूपमे आये थे। रात्रिको स्वप्नमे आकर पाटीलकी शंकाका निवारण किया। ऐसे श्री गजानन महाराज भक्तवत्सल हैं। यह गजानन महाराजका चरित्र परम पवित्र तथा तारक है किन्तु दृढ़ निष्ठा चाहिये। अब ग्रन्थकी अवतरणीका देता हूँ, पूर्ण सावधान होकर सुनो, समय मत बिताओ।

पहले अध्यायमे मंगलाचरण और गुरु वंदनाके पश्चात् महाराजके पूर्व चरित्रके बारेमे बताया और माघ वद्य सप्तमीको देवीदासके घरके पास प्रकट होना और चाणाक्ष बंकटलाल और दामोदर द्वारा उनका परीक्षण बताया।

दूसरे अध्यायमे गोविंदबुवा के कीर्तन मे महाराजका आकर बैठना। पीतांबरका चमत्कार और महाराजका बंकटलालके घर जाना वर्णन किया।

तिसरे अध्यायमें गोसाँई द्वारा गांजा अर्पणका संकल्प, उसकी पूर्ती और तबसे मठमें गांजाकी प्रथका वर्णन किया। जानराव देशमुखका संकट टालना -तीर्थ द्वारा मृत्यु के प्रकार विस्तारपूर्वक बताकर विठोबा घाटोळ को महाराज ने ताड़न किया वह कथा कही।

चतुर्थ अध्याय में जानकीराम ने चिलीम के लिये अग्नि नहीं दिया उनके चिंचणीमें कीड़े पड़ना, अन्न का व्यर्थ होना, प्रार्थना के बाद उसको क्षमा और पूर्ववत् अन्न होना तथा जानकीराम महाराज का भक्त हो गया उसी प्रकार घड़े में रखे गोझीया की कथा का वर्णन किया। चिंचोली में माधव को यमलोक बताकर मुक्त करना -शिष्योके द्वारा वसंतपूजा इत्यादि का वर्णन।

पाँचवे अध्याय में महाराज का पिंपलगॉव के शिवमंदिर में बैठना, गोपालों का पूजन, महाराज को पिंपलगॉव ले जाना तथा बंकटलाल का वहाँ जाकर महाराज को वापस शेगाँव लाना बताया। अकोली में महाराज का जाना, सूखे कुँएको जलपूर्ण करके भास्कर की भ्रान्ति नष्ट करना, उसका महाराज, साथ शेगाँव आना बताया।

छठे अध्याय में मकईके भुट्टे खानेके लिए महाराजका जाना ,मधुमक्षिकाओं का विक्षोभ, महाराज को उसकी बाधा न होना, बंकटलाल की शिष्यत्व परीक्षा, योग सामर्थ से मधुमक्षियों के काँटे निकालना। आकोट के नरसिंगजी को महाराज का मिलने जाना -उनसे वार्तालाप चंद्रभागा के किनारे, ब्रजभूषणपर कृपा, हनुमानजी के मंदिर में श्रावण मास के उत्सव में महाराज का रहने को आना इत्यादि का वर्णन।

सप्तमोऽध्याय में हरि पाटील की उद्दामता, उसका गर्वहरण, हरि पाटील को मल्ल विद्या का प्रत्यंतर बताना। गन्नेका चमत्कार बताकर खंडू पाटील को भिका नाम का पुत्र देना बताया।

आठवे अध्याय में पाटील कि विरुद्ध देशमुखों के बैर का वर्णन, पाटील के विरुद्ध देशमुखोने दि हुई अर्जी, उसका निर्दोष छूटना और तैलंग ब्राम्हणों के वेद पठन की शुद्धि बताकर, संकेतसे अपना परिचय देना। कृष्णाजीके मल्ले में शंकर मंदिर के पास निवास, 'नैनं छिन्दन्ति' श्लोक का प्रात्यक्षिक, ब्रम्हगिरी गोसाँई का गर्वहरण बताया जलते पलंग की कथा का वर्णन।

नववे अध्याय के उद्दाम घोड़ेको सरल करना। गांजा की कथा, दासनवमी के, उत्सव में समर्थ के रूप में बालकृष्ण के घर जाना, उसको समर्थरूप में दर्शन देना, आदि कथाए हैं।

दसवे अध्याय में अमरावती की कथा है। गणेश अप्पा चन्द्राबाई का महाराजके चरणों में संसार का अर्पण -बालाभाऊ की उपरती, गणेश दादा खापर्डे को आशीर्वाद और बालाभाऊ को छाते से मारने की कथा। सुखलाल की उददंड गाय को गरीब करना, घूड़े की दांभिक भक्ति का वर्णन।

ग्यारहवे अध्याय में -भास्करको श्वान दंश, त्र्यंबकेश्वर दर्शन को महाराज का जाना। गोपालदासका मिलन, झ्यामसिंग की प्रार्थना स्वीकारकर आड़गाँव जाना। उसी प्रकार भास्कर का निजधाम गमन - द्वारकेश्वर के पास सतीबाई के

पास उसके देहका रखना, कागोको आज्ञा और गणू जवरे की सुरंग उडनेपर कुँएँमें रक्षा करना आदि कथाएँ कही।  
शेठ बच्चुलाल की कथा इसी में है।

बारहवे अध्यायमे महाराज की निरिच्छता -पीतांबर स्वामीके वस्त्र पहनना - उसका स्वेच्छा से कोंडाली में जाना -  
वहाँ उसका स्थिर होना और वहाँ समाधी ग्रहण करना- उसके मठ की स्थापना आदि का वर्णन, श्री गजानन  
महाराजका रेतीकी गाड़ीमे बैठकर नये मठ में आना।

तेरहवे अध्यायमे गोसाइके गलीत कुष्ठ का नाश किया, गजानन महाराज ने बंडुतात्या को धन बताकर उसको  
ऋणमुक्त करना, झ्यामसिंग द्वारा महाराजको मुंडगाँव ले जाया जाना -पर्जन्य से भंडार का विक्षेप, झ्यामसिंग द्वारा  
अपनी इस्टेट महाराज को अर्पण करना, पुंडलिक की सन्निपातीक ज्वर की ग्रन्थि का बैठना, आदिका वर्णन है।

चौदहवे अध्यायमे सोमवती अमावस्याको नर्मदा स्नान के लिये जाना - स्वयं नर्मदा द्वारा फूटी नौका किनारे लगाने  
का वर्णन है। माधवनाथ का बीरा भेजने की कथा है।

पंदहरवे अध्याय में शिव जयंती निमित्त आकोला की सभामे बाल गंगाधर तिलकको आशीर्वाद, कोल्हटकर द्वारा  
उन्हें रोटी प्रसाद रूप में भेजने की कथा है। श्रीधर काले को विलायत जानेसे रोकना आदि कथाएँ है।

सोलहवे अध्यायमे पुंडलिक को अन्य गुरु करनेसे रोकने का, अंजनगाँव में सपने में आदेश, पादुकाओंका प्रसाद देना, कंवर की रोटी- भाजी का भोजन करना, तुकाराम के छर्रे का उसके कानमेसे गिरनेकी कथा का वर्णन है।

सतरहवे अध्यायमे विष्णुसा के घर मलकापुर जाते समय ट्रेन के अंदर हुआ वृतान्त, पुलिस द्वारा अभियान और नग्नता के लिये भास्कर को दंड , महेताबशा को पंजाब भेजना -हिंदू -यवनोंकी एकता के लिये उपदेश - बापूराव के पत्नीकी भानामती -बाधा का निवारण।

अठरावे में आकोट में गंगाभारती की भेंट, बायजा गौलन की कथा का समावेश है। महाराज का पंढरपूर जाना, बापूना काले को विठ्ठल दर्शन, कवठे बहादूर के वारकरी की विषुचिका से प्राण रक्षा आदि का वर्णन है।

उन्नीसवें अध्याय में काशीनाथपंत को आशीर्वाद देना। नागपुर के गोपाल बुटी द्वारा महाराज को नागपुर ले जाना, महाराज को वहाँ रखना, हरि पाटील द्वारा महाराजको वापस शेगाँव लाना। धारकल्याण के रंगनाथ साधू की भेंट, वासुदेवानंद सरस्वती की - शेगाँव में महाराज की भेंट, बालाभाऊ का संशय निराकरण, खलीहान की राशी का संरक्षण, नारायण नाम हवालदार का महाराजको बालापुरमे ताडन करनेके कारण उसकी मृत्यू, जाखडे का विवाह, निमोणकरको कपिलधारा पर दर्शन, तुकाराम द्वारा अपना नारायण नामका पुत्र महाराज के सेवार्थ अर्पण करनेकी कथा और भाद्रपद माहमे आधुनिक काल के महर्षि का समाधिस्थ होनेका वर्णन है।

बीसवे अध्यायमे समाधिग्रहण के बाद जो चमत्कार हुए उनका वर्णन है। जो जो भाविक एकनिष्ठा से महाराजकी सेवा करते है उन्हें महाराज अभी भी दर्शन देते है।

यह एकविसावा अध्याय सबका कलशरूप है, जो सब अध्यायोंका सार रूप है। भक्तोने बड़ी मेहनत से चंदा जमा करके इतना सुंदर समाधी का काम किया, जो भूमी पर कही नहीं है, चारों ओर धर्मशालाये है। इस भव्य कार्य में कईयोने सहायता की, उनके नाम गिनने पर ग्रन्थका बहुत विस्तार बढ़ेगा, किन्तु जो प्रमुख थे उन थोड़ोंके नाम बताता हूँ।

कुकाजी पाटील का पुत्र हरि पाटील, सांगवी गाँव का बनाजी, उमरी गाँव का गणाजी और मेसाजी वटवाड़ी का, लाडेगाँव का गंगाराम, भागु -नंदू गुजाबाई ,आकोलेकी बनाबाई जो सुखदेव पाटील की माता थी , इन्होने हजारो रुपये दिये। रामचंद्र कृष्णजी पाटील, दत्तू भीकाजी पाटील, पलासखेड़का सुखदेव जी और शेगाँव का मार्तंड गणपती पाटील। बालचंद्र का रतनलाल और पंचगव्हान का दत्तूलाल उसी गाँवका बिसनलाल और टाकळीगाँव का अंबरसिंग किसन बेल मंडलेकर। हसनापूर का रहनेवाला गंगाराम विठोबा पाटील सावरेकर। इन दानशूर लोगोने बड़ी बड़ी रकमें देकर मठ का काम पूरा किया। ये सब समर्थ के परम भक्त थे।

कोठीया -कार्यालय, रसोईघर इत्यादि समाधि के चारो ओर बाँधे हुये है। लोगोने जो चंदा दिया था सो सब इन कामोमे खर्च हो गया और बहुतसे काम अधूरे रहे थे, सो इस प्रकार की युक्ति की, समर्थ के इस कार्य के लिये लगानपर एक आना धार्मिक कर के रूप लगाया। वैसेही बाजार में विक्रीके लिये आनेवाली गाडियोंपर दो पैसे कर

लगाया, जो अति सामान्य होनेसे लोग बड़े हर्षसे देते थे। आज तक समाधिके सामने हजारो स्वाहाकार हो गये। उनमे चार बहुत बड़े और सर्वश्रुत हुए। किसनलाल शैठने ब्राह्मणोंके द्वारा एक शतचंडी अनुष्ठान भी करवाया। शतचंडी का अनुष्ठान बड़ा कड़क और कठिन होता है, थोड़ी सी भी न्यूनता से विपरीत परिणाम होते हैं। क्योंकि जगदंबा कालिका को कमी जादा , बिल्कुल नहीं चलता। किसनलाल के पिता बंकटलाल पहलेसे ही महाराज के परम भक्त थे। इस शतचंडीके पूर्णाहुति के दिन बंकटलाल को बड़ी प्रणान्तिक व्याधि उत्पन्न हो गई। सब लोग घबरा गये की पूर्णाहुति के दिन इस शतचंडी अनुष्ठान में विपरीत विघ्न कैसे हो गया ? बंकटलालने, किसनलाल, अपने पुत्रसे कहाँ,"घबराने का कोई कारण नहीं, मेरे रक्षक पुण्यराशी यहाँ बैठे हैं। "

ऐसा कहकर यह समाधिके पास जाकर बैठ गया। पूर्णाहुति का काम करो सब ठीक हो जायेगा। मेरे स्वामी गजानन यहाँ बैठे हैं, वो भक्तोंका संरक्षण करते हैं, कभी विघ्न नहीं आने देंगे। आगे चलकर वह सत्य हुआ, व्याधि शांत हो गई, और इस शतचंडीसे एक स्त्रीकी पिशाच्य बाधा ठीक हो गई। बनाजी तिडके करके सङ्गविके रहनेवाले इन्होंने यह स्वाहाकार किया। कसूर की गुजाबाई नामक स्त्रीने भी स्वाहाकार कराया था। उसी प्रकार चापड़गाँव के रहनेवाले वामन शामराव के पुत्र ने समाधिके सामने यज्ञ करवाया था। ऐसे हजारो धर्मकृत्य समाधिके सामने हुए- सत्य - सत्य है की गजानन महाराज साक्षत्कारी हैं। जबतक लोग निष्ठावान थे तब तक बराड़ सुखी था। जैसे जैसे निष्ठां काम होती गई वैसे वैसे बराड़को विपन्नावस्था आई और उस चांडाली ने दारिद्र्य माला बराड़ को पहनाई। बराड़ की उर्वराभूमिने पैदावार काम कर दी। नयी हवा बहाने लगी जिसमे श्रद्धा शिथिल हो गई और बराड़ दुर्दशा को प्राप्त हुआ। महाराजको यह दुःख असह्य हो गया इसलिये उन्होंने अपनेको जलमे डुबो लिया, जिससे ऐसा लगता है की महाराजने क्रोधित होकर यह जल निर्माण किया। यदि बराड़ के लोगोंके मनमे पूर्ववत् सुख संपन्नता हो ऐसी कामना

है, तो सबको महाराजके चरणोमे दृढ़ निष्ठा रखकर उनकी सेवा करनी चाहिये। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो इससे भी ज्यादा विपन्नावस्था बराड़ की होगी। इस गजानन रूपी भूमिमें जो जो आप बोयेंगे वही बहुत होकर आपको प्राप्त होगा। यदि पत्थर पर बीज डाला जाय तो क्या वह झाड़ उत्पन्न होंगे ? इसका विचार करो। जो जो प्रान्त संत सेवा से विन्मुख होता है, वहाँ अकाल और आपत्ती पड़ती है। धर्मश्रद्धा वह बाघिन के सामान है। यदि वह मनरूपी कगार छोड़ देती है तो वहाँ दुर्वासन रूपी सियारोंका वास अवश्य होगा।

भक्ति यह पवित्र स्त्री है। अभक्ति वारांगना है, जिसके साथसे भला कभी किसीका कल्याण हुआ है ? सान्निधि मत छोड़िये, धर्मश्रद्धा मत छोड़िये, परस्पर प्रेमभाव रखिये तो ही शक्ति बढ़ेगी, यदि आप लोग इस प्रकारका आचरण करोगे तोही बराड़को अच्छे दिन प्राप्त होंगे। वर्षमें कमसेकम एक बार श्री गजानन महाराजका दर्शन लीजिये। और वर्षमें कमसेकम एक बार गजानन चरित्र का पाठ कीजिये। इस एकविंशति अध्यायवाले गजानन चरित्ररूपी मोदकोंका नैवेद्य श्री गजानन महाराजको समर्पित करिये। ये सब अध्याय एकविस डुबके गुच्छ पारायण करके महाराजको चढ़ाइये। मानव का जो सद्भाव है वही चतुर्थिका दिन है, और प्रेमरूपी चंद्र का उदय हो तोही महाराजको नैवेद्य चढ़ेगा। विद्वतजनों बादमे इस ग्रंथ के एक एक अक्षर को डुबके अंकुर समझकर पारायण रूपी व्रतसे महाराजको चढ़ाइये और इस ग्रन्थका जो अर्थ है, वही मोदक है सो अविलंब महाराजको चढ़ाकर पर्व साधन करिये। यह ग्रन्थ -कादंबरी नहीं है। यह श्री गजानन महाराजकी सत्य लीला है। जो इसपर अविश्वास करेगा वह अवश्य डूबेगा। इसमे कोई संदेह नहीं। यह गजानन चरित्र जो नियमपूर्वक पठान करेगा उसके सब मनोरथ गजानन कृपासे पूर्ण होंगे। श्री गजानन चरित्र यही ग्रंथ है, और इसके अन्तर्गत जो कथाये है वह शीतल पवित्र भागीरथी जल है और मराठी ओवियाँही मानो तरंग है। यह स्वामी चरित्र कल्पवृक्ष है और अध्याय जो है वे इस कल्पवृक्ष की शाखाएँ हैं।

पद्यरचना वही इसके पत्ते है। जो इस कल्पवृक्षमें भाव रखेगा उसे स्वामीदर्शन होंगे और संकट समय में उसका रक्षण करने समर्थ अवश्य आयेंगे। जिस घरमें इस गजानन चरित्रका पाठ नित्य होगा वहाँ चिरकाल लक्ष्मी का निवास रहेगा। यह ग्रन्थ साक्षात् चिन्तामणि है, जो भी आप चिंतन करेंगे वैसा फल आपको अवश्य मिलेगा।

किन्तु मन में दृढतर विश्वास होना चाहिये। दरिद्र को धनप्राप्ति होगी, रोगियोंका रोग नष्ट होगा, साध्वी स्त्री का वंध्यत्व दूर होकर पुत्र प्राप्ति होगी। निपुत्रिक को पुत्रप्राप्ति और निष्कपट पर मित्रप्राप्ति होगी। इस ग्रन्थ के पठन से तिलमात्र भी चिन्ता नहीं रहेगी। दशमी एकादशी द्वादशी को जो ग्रन्थ पठन करेगा उसको श्री गजानन कृपासे अनुपम भाग्य प्राप्त होगा। जो गुरुपुष्प योगपर शुचिर्भूत होकर एकसान में बैठकर पाठ करेगा उसकी सारी मनोकामनायें पूर्ण होकर किसी भी प्रकार की यातना हो, वह दूर होगी। जिस घर में यह ग्रन्थ रखा होगा वहा कभी भी पिशाच या ब्रह्मसमंधका प्रवेश नहीं हो सकता। ऐसा इस ग्रन्थ का माहात्म्य है। जो भाविक है उनको अवश्य प्रचिती प्राप्त होगी, जो दुष्टहृदय या कुटिल है उनको इसकी अनुभूती असम्भव हैं। जैसे मानससरोवर की उत्पत्ति रचना हंसोंके लिये है, कौओंको वहाँ प्रवेश नहीं होता। उसी प्रकार यह स्वामी चरित्र मानस सरोवर है, संतसज्जन जो राजहंस होते है, उन्हिका इसमें प्रवेश है। जैसे पूर्वकालमें ज्ञानेश्वर, मीराबाई, नरसिंह महेता, कबीर, नामदेव, साँवता माली, चोखा महार, गोरा कुम्भार, बोधला और दामाजी, उंबरखेड में एकनाथ, अमलनेर में सखाराम - नासिक में देव मामलेदार, यशवंत और हुमणाबादमे माणिक प्रभु हो गये, वैसे ही बराड़मे शेगाँव में श्री गजानन महाराज हो गये। उनमे और इनमे कोई अंतर नहीं। अन्तमे आप सब भाविकोंसे यह प्रार्थना है कि, श्री गजानन चरणोंमें अत्यंत प्रेम रखिये। जिससे आप सब का जन्म मरणका चक्कर छूट जायेगा और आप लोग इस दुस्तर भवसागरसे पार

होंगे। हे स्वामी दयाघन ! आपको मेरे लिये करुणा उत्पन्न हो और दासगणू की सब यातनायें कृपा करके निवारण करिये। मैं आपका भाट हो गया हूँ।

मुझे सन्मार्ग बताइये और मेरे मनमे दुर्वसनाओंके प्रति तिरस्कार निर्माण कीजिये। आमरण वारी होती रहे। संत चरणोंमें अखंड प्रेम हो। सदैव गोदावरीपर मेरा निवास हो। मेरा अभिमान आप रखिये और दासगणको अन्य की याचना करने का प्रसंग न लाइये। मैं सब संतोंकी चरण धुली हूँ। मेरा लाज रखिये। पदर पसारकर मैं यह वरदान आपसे माँगता हूँ। जैसी आपने प्रेरणा की वैसेही मैंने लिखा, यह आपका चरित्र लिखते समय शेगाँव के मठमें जो कागदपत्र उपलब्ध थे वह रतनसा ने मुझे लाकर बताये। उन्हीके आधार पर मैंने यह ग्रंथ लिखा है। कही पर भी कल्पना का आश्रय नहीं लिया। इसलिये कम-जादा के लिये मैं कारण नहीं हूँ। यदि इसमे कुछ कम-जादा हुआ हो तो हे गजानन ! मुझे क्षमा करें, यही प्रार्थना।

शके अठरासो एकसष्ठ प्रमाथि नाम संवत्सर में चैत्र शुद्ध प्रतिपदाको यह ग्रन्थ कलश को पहुँचा शेगाँव मे । वह समर्थ गजानन ने पूर्ण किया। बुधवार प्रथम प्रहर को स्वस्ति श्री दासगणू विरचित यह गजानन विजय ग्रन्थ भविकोंके लिये नौका स्वरूप हो, इस भवसागर को तरने के लिये।

॥ शुभं भवतु श्री हरिहरार्पणमस्तु ॥

॥ इति श्री गजानन विजय ग्रन्थस्य एकविंशतिअध्याय समाप्तः ॥

---

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

॥ पुंडलिकवरदा हरी विठ्ठल ॥  
॥ सीताकांत स्मरण जयजयराम ॥  
॥ पार्वतीपते हर हर महादेव ॥

॥ समाप्त ॥

## ॥ भूपाली ॥

जगाइये अपनों को, श्रीगुरुवर !

रात अब खतम हो

नेको ॥ दयाघन ॥

उषःकाल का यह रहा पवन,

और कुक्कुट का, यह चला कवन ॥ ध्रु ॥

सूर्य, सारथी अरुण देखकर , प्राची निज चित में ॥

प्रभूत पुलकित वर्णन करने, शब्द न संग्रह में ॥ १ ॥

उलूक- पिंगल देख अरुण को, भीति -ग्रस्त भये ॥

प्राची -प्रांतर सदगुरु राय ! लाल गुलाल हो गये ॥ २ ॥

चक्रवाक, चंडोल द्विज सब, प्रभात -बेला में ॥

सूर्य दरसने उत्सुक होकर, मँडरा रहे नभ में ॥ ३ ॥

दर्शनार्थ तब आगत अनुगत आँगन-आँचल में ॥

कृपा -किरण से कृतार्थ करिये, कहे 'गणू' भव में ॥ ४ ॥

अनुवादक : श्री प. मु. डांगरे, पुणे

## ॥ प्रभात - आरती ॥

सदगुरुराय श्री गजानन आरती प्रभाती उतारत ॥  
उद्धारार्थ बहु आदर से श्रीचरण -द्वय पकडत ॥ ध्रु ॥  
कृपा- किरणसे होनिरस्त अब जड़ताकी रजनी ॥  
आशा डाइन टी - टी करके नचा रही अवनी ॥  
उस कृत्या का बल है माया -महामोह पूरा ॥  
तुझ सम्मुख उनका वारा - न्यारा, है विश्वास हमारा ॥  
षड्विकार बहु नटखट नित खड़े करत जंगाल ॥  
भँवरां में हैं देत डुबो , और बढ़ा लेत भव- जाल ॥  
भव-भँवरों में तुम ही नौका, पाद -पद्य तारण ॥  
सवार उसपर भक्त तुम्हारे, हो उनका उद्धरण ॥  
दासगणू की यह विनती है तुमको वारंवार ॥  
सुखमय जीवन जीव जनका हो, कभी न उनकी अबार ॥

अनुवादक : श्री प. मु. डांगरे, पुणे

## आरती

जय देव जय देव स्वामी गणराय। भाव-आरती स्वीकारें जन-कल्याणाय ॥ ध्रु ॥  
जय जय सत चित स्वरूप स्वामी गजानन। भू पर अवतरण हुआ जड़ मति उद्धरन  
॥ जय देव जय देव ॥

निर्गुण ब्रह्म सनातन अव्यय अविनाश। स्थिरचर व्याप्त जगत में मूर्त रहा शेष ॥  
तत त्वं सत्य असंभय शिव सुंदर नाम। लीला शुद्ध विनोदन धृत मानव धाम  
॥ जय देव जय देव ॥

भान न होने देता मायावृत्त रखता। "गण गण गणांत बोतें "नित भजन रहता ॥  
धाता हरिहर गुरुवर तूही सुख सदन दृष्टि जहाँ भी ठहरे तुम देखत नयन ॥ जय देव जय देव ॥  
लीला अनंत दिखायी बंकट के भवन। सुलगा ली चिलम बिना अग्नि- गहन ॥  
अंधकूपमें फूटा छिन में मधु नीर। कृपा ब्रह्मगिरी - गरब खरब किया चूर ॥ जय देव जय देव ॥  
आधि -व्याधि निवारित किये बहुत सधन। कराये भक्तोंके हित श्रीविठ्ठल-दर्शन॥  
भवसागर तरने नौका तव् चरण । स्वामी दासगणू का मान्य करें कवन ॥ जय देव जय देव ॥  
जय देव जय देव स्वामी गणराय। भाव-आरती स्वीकारें जन-कल्याणाय ॥ ध्रु ॥  
अनुवादक : श्री प. मु. डांगरे, पुणे

## नमस्काराष्टकम्

लोकादभवोपहत सर्व विचारशक्तिन्। अंधाम् च मोहतमसामरण भिभूतान्।  
उद्धर्तुमेव धृतमानवविग्रहं तं। श्रीमद् गजानन गुरु शिरसा नमामि ॥ १ ॥  
शास्त्रैरनाकलितमस्ति महायदीयं। सम्बोधितं श्रुतिगणैर्वचनेन नेति।  
आविर्भवभूव सगुणान्वित तत परं तं। श्रीमद्गजाननगुरुमं शिरसा नमामि ॥ २ ॥  
यद्दर्शनात् भवति फुल्लतरं हृदाब्जम्। अन्तर्दधात्युङ्गणं मदमोह रूपं।  
अज्ञानघोरतिमिरस्य दिवाकरं तं। श्रीमद्गजाननगुरुमं शिरसा नमामि ॥ ३ ॥  
कुण्ठं मनो भवति यद्विषये विचारे। मुकायते च रसना स्तवने प्रवृत्ता।  
टी भक्तिगम्यमृतं त्रिगुणैरतितं। श्रीमद्गजाननगुरुमं शिरसा नमामि ॥ ४ ॥  
सच्चित्सुखं परममंगलमात्मरूपं। जागृत्सुषुप्तिरहितं सततं तुरीयं।  
ध्यानस्थितं पदनता त्रिविनाशिनं तं। श्रीमद्गजाननगुरुमं शिरसा नमामि ॥ ५ ॥  
पादोदकेन खलु येन सुधामयेन। श्री गजानरावमरणं कृपा निरस्तं।  
मार्कंडंसुनुवरदं शिवरूपिणं तं। श्रीमद्गजाननगुरुमं शिरसा नमामि ॥ ६ ॥  
वापी जलेन रहितापि चकार पूर्णा। योवारिणा सुमधुरेण निजप्रभावात्।  
भक्त्या च शुष्क हृदयं सजलं करोत। श्रीमद्गजाननगुरुमं शिरसा नमामि ॥ ७ ॥  
भक्तिर्द्रुढास्तु सततं हृदये मदिये। मा मे मनो भवतु मोहमयं कदापि।  
श्लोकैरतो वसुमितैर्गणुदास शिष्यः। तं श्रीमद्गजाननगुरुं सदयं स्तुनोति ॥ ८ ॥

॥ इति शम् ॥

संत रजचरण - अ. दा. आठवले

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

ह. भ. प. संतकवि श्री दासगणू महाराज कृत  
'गण गण गणात बोते' स्तो का स्तवराज (अभंग)

गणी गण गण गणात बोते। प्रिय भजन सद्गुरु गाते॥  
वरणीय गजानन गुरुको। सुमिरते रहो नितं इनको ॥  
यह स्तोत्र नहीं है अमृत। सिद्ध मंत्र ऋषि -दर्शित ॥  
संजीवनी रसायन शुद्ध। सारण अर्थ न संबुद्ध ॥  
मंत्र का रहस्य समझते। जो यथार्थ मंत्रविद होते ॥  
मंत्र पाठसे दुःख हरता। साधक का निज सुख बढ़ता ॥  
निश्चित यह अनुग्रह भारी। श्री गजाननके आभारी ॥  
इस भजन - मंत्र को साधो। मन भाव भक्तिसे शोधा ॥  
कल्याण निरंतर होगा। दुःख लवलेख न रहेगा ॥  
प्रारब्ध रोग -भोग मिटेंगे। अभिसिप्त सकल सिद्ध होंगे ॥  
बाते घटीत ये स्वानुभवकी। बतायी सबके मंगल की ॥  
शेगाँव (=शिवगाँव ) क्षेत्र में रहकर। स्तोत्र की प्रतीती लो सुखकर ॥  
दंतकथा कदापि न समझो। श्री गजानन साक्ष को बूझो ॥

अनुवादक : श्री पं. मु. डांगरे, पुणे

## श्री सदगुरु गजानन स्तोत्रम्

अव्यक्त -व्यक्त निखिलात्मक बोधरूपम्। मायाश्रयं -विदित तत्त्व मगाध बोधम्। अज्ञान-मोह निशिध्यं सदिवाकरोयं। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय॥१॥ अज्ञात -जाति कुल ज्ञात पराश्च सता। तेजस्विनो न विचिकित्स्य भवन्ति एतैः ॥ दिव्यानि यस्य चरितानी कथयन्ति सत्यम्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय॥२॥ बोते गणागण गणेतीति संस्मरन्तम्। यः निर्भयो परमहंस चचार भूमिम् ॥ आर्तान रुगान सृजि मला द्यो उज्जहार। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय॥३॥ जानस्य मृत्यूपद तीर्थ जलाद विहाता। साक्षात्करो त्सुदृद्यःमधुमक्षिकादिन ॥ दुष्टान् -ताडन - परोयः विचिनोत धर्मम्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय॥४॥ शुष्कं च कूप परिपूर्ण जलम् करोद्यः । श्री भास्कराय प्रिय शिष्य द्रुगीक्षणाय ॥ मल्लाय शिष्य कृन्मित्र -२ नृसिंग वराय। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥५॥ नैनंछिन्दन्ति नदहन्तीं इमं च श्लोकम्। प्रात्यिक्षकेकृत परिश्रम येन दृष्टम्। ब्रह्मगीरे रहज्वरः शमं तप्तराय। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥६॥ यस्य प्रभावमतुलं न विलङ्गयन्तः । ये वायसा बलि भुजा च त्तत्याज स्थानम्। कृपेषु रक्षण परो यो जवाय स्फोद्रात। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥७॥ पीतांबराय निज शिष्य वराय येन। सरसः कृतम् च जड काष्ठ युतं रसालम् ॥ यो बालुका शकट लीलयावरोह। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥८॥ यो सर्वसाक्षि कृत साक्षि नृपोत्तमेन। स्त्रीणां स्थले निविश अग्निरथं सरोधुम। सन्यासीनं विगत कुण्ठ करोत्ययासम। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥९॥ या नर्मदा जलमगाध ततार शिष्यान्। संभेदिता च परिपूर्ण जलाच नावम् ॥ यस्या शिषात तिलक मान्यतरो बभूव। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥१०॥ योऽदात् भीषं च कबराय भीषग्वराय। साक्षात् कृतं परम दर्शन बापूनाय ॥ कट्यास्थितः स्थारभुजः च कृपालु देवम्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥११॥ आरक्षयन् च निशी धान्यक्षयः खरातः तस्मै कृपालु गुरुणां कृपा करोऽस्ति ॥ श्री पांडुरंग द्रुकपथ यः परो दयालु। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥१२॥ यो कर्म योग प्रगटीकृत लीलया स्वः।

॥ श्री गजानन विजय ग्रन्थ ॥

अष्टांग योग मधिगम्य च शास्त्र दृष्टिम् ॥ श्री भक्तियोग मधिगम्य स्व आचरन्तम्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥१३॥ संसार पीडित जनान् कृपया यो रक्षन। योऽतारयन मति दुरूहः जनान भवाब्धिम् ॥ यस्या कृपैव सततं भव भेषजोऽभूत्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥१४॥ उन्मत्वच्य जइवच्य कृताच लीला। यो पर्यटन भूवि सदाङ्गम कान्तियुक्तम् यस्मात् पुरातन पथ : दृगोच्चरो ऽ भूत्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥१५॥ नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद्। वाण्यां पिधाय सरलं गहनं विचिन्वन्। यो आचरोति च चिनोति पदस्य मूलम्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥१६॥ नानां पथाः श्रुतियुता इति अन्वविदन। यो भ्रामकः जनद्रुहाः बहु जल्पयिष्येत। नाना पथा श्रुतिऋचं अकरोत् सिद्धम्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥१७॥ हे आर्तरक्षक दयालु परार्थ विन्दक। हे दीनबंधु शरणागत बाल रक्षक॥ हे रामचंद्र पदलीन विराम काम। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥१८॥ योगेश्वरो। परमहंस कृपालु संतः सन्मार्ग रक्षक कुमार्ग कुठार धारः ॥ मायापरो विगत देह सदेह लक्ष्यम्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥१९॥ त्वन्नाम नाम सद्दशो न गुणो न कर्म। आस्ते त्वदीय गुण कीर्तन दीप मार्गे ॥ संसार -ताप अभितापित माम् रक्ष। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥२०॥ शेगाँव ग्राम अभिराम विराम नाम। यत्र जना तव कथा श्रुति सारवन्ताः ॥ त्वंये प्रदीप भवन्तु सकलानभीष्टान्। तस्मै नमामि गुरवे श्री गजाननाय ॥२१॥ इत्येववाक -कुसुम गुम्फित पुष्पमाला। शुद्धा सदा तव गले च श्रियम् तनोतु ॥ ये स्तोत्र पाठन परा तब पाद लग्ना। भक्ता भवन्तु सुखिनः च भवत्प्रसादात् ॥

॥ इति श्री सद्गुरु श्री गजानन स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

श्री अनंतकोटी ब्रह्मांडनायक महाराजाधिराज योगिराज परब्रह्म सच्चिदानंद भक्तप्रतिपालक शेगाँव निवासी समर्थ सद्गुरु श्री गजानन महाराजकी जय

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः